लघु कथा संग्रह

जगदीश प्रसाद मण्डल

श्रुति प्रकाशन

ISBN : ९७८-८१-९०७७२९-४-५
Price Rs. 200/- (for individual buyers)
US $ 60 for Library and Institutions (India and abroad)

पहिल संस्करण : २००९
दोसर संस्करण : २०१३

श्रुति प्रकाशन
रजिस्टर्ड ऑफिस : ८/२१, भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर,
नई दिल्ली-११०००८.
दूरभाष-(०११) २५८८९६५६-५८ फैक्स-(०११)२५८८९६५७
Website : http ://www.shruti-publication.com
e-mail : shruti.publication@shruti-publication.com

Typeset by Sh. Umesh Mandal

Printed at : Ajay Arts, Delhi-110002

Distributor:
AJAY ARTS
4393/4A, Ist Floor, Ansari Road, Darya Ganj, New Delhi-110002.
Telephone: 2328-8341

Gamak Jingi- collection of Maithili short stories
by
Jagdish Prasad Mandal

परिचए-पात : जगदीश प्रसाद मण्डल

जन्म : ५ जुलाइ १९४७ ई.मे
पिताक नाओं : स्व. दल्लू मण्डल।
माताक नाओं : स्व. मकोबती देवी।
पत्नी : श्रीमती रामसखी देवी।
पुत्र : सुरेश मण्डल, उमेश मण्डल, मिथिलेश मण्डल।
मातृक : मनसारा, भाया- घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा।
मूलगाम : बेरमा, भाया- तमुरिया, जिला-मधुबनी, (बिहार) पिन- ८४७४१०
मोबाइल : ०९९३१६५४७४२, ०९५७०९३८६११, ०९९३१७०६५३१
ई-पत्र : jpmandal.berma@gmail.com
शिक्षा : एम.ए. (हिन्दी आ राजनीति शास्त्र) मार्क्सवादक गहन अध्ययन। हिनकर साहित्यमे मनुखक जिजीविषाक वर्णन आ नव दृष्टिकोण दृष्टिगोचर होइत अछि।
सम्मान : गामक जिनगी लघुकथा संग्रह लेल विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार २०११क मूल पुरस्कार आ टैगोर साहित्य सम्मान २०११; तथा समग्र योगदान लेल वैदेही सम्मान- २०१२; एवं बाल-प्रेरक विहनि कथा संग्रह "तरेगन" लेल "बाल साहित्य विदेह सम्मान" २०१२ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कार रूपेँ प्रसिद्ध) प्राप्त।
साहित्यिक कृति :
उपन्यास : (१) मौलाइल गाछक फूल (२००९), (२) उत्थान-पतन (२००९), (३) जिनगीक जीत (२००९), (४) जीवन-मरण (पहिल संस्करण २०१० आ दोसर २०१३), (५) जीवन संघर्ष (पहिल संस्करण २०१० आ दोसर २०१३), (६) नै धाड़ैए (२०१३) प्रकाशित। (७) सधबा-विधवा, (८) बड़की बहिन तथा (९) भादवक आठ अन्हार शीघ्र प्रकाश्य।

नाटक : (१) मिथिलाक बेटी (२००९), (२) कम्प्रोमाइज (२०१३), (३) झमेलिया बिआह (२०१३), (४) रत्नाकर डकैत (२०१३), (५) स्वयंवर (२०१३) प्रकाशित।

लघु कथा संग्रह : (१) गामक जिनगी (२००९), (२) अर्द्धांगिनी (२०१३), (३) सतभैंया पोखरि (२०१३), (४) उलबा चाउर (२०१३), (५) भकमोड़ (२०१३)

विहनि कथा संग्रह : (१) बजन्ता-बुझन्ता (२०१३), (२) तरेगन (बाल-प्रेरक विहनि कथा संग्रह) (२०१० पहिल संस्करण, २०१३ दोसर संस्करण)

एकांकी संग्रह : (१) पंचवटी (२०१३)

दीर्घ कथा संग्रह : (१) शंभुदास (२०१३)

कविता संग्रह : (१) इंद्रधनुषी अकास (२०१३), (२) राति-दिन (२०१३), (३) सतबेध (२०१३)

गीत संग्रह : (१) गीतांजलि (२०१३), (२) तीन जेठ एगारहम माघ (२०१३), (३) सरिता (२०१३), (४) सुखाएल पोखरिक जाइठ (२०१३)

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ बालुक ढेरपर
बैसल फुलवाड़ी लगौनिहार
एवं
नवविहान अननिहारकेँ
सादर समरपित...

आमुख

मैथिली साहित्यमे जगदीश प्रसाद मंडलक पदार्पण किछु-किछु ओहिना भेल अछि जेना कहियो विवेकानन्द ठाकुरक भेल छल। जहिना विवेकानन्द ठाकुर अपन जीवनक उत्तरार्धमे बहुत आकस्मिक ढगे मैथिलीमे प्रगट भेला, तहिना जगदीश प्रसाद मण्डल एकबैग अपन अनेक कथा आ उपन्यास लऽ कऽ उपस्थित भेल छथि। विवेकानन्द ठाकुरक काव्यमे पाठककेँ ग्रामीण परिवेशक जेहेन टटका बिम्ब आ नव सुआद भेटल छेलनि, जगदीश प्रसाद मण्डलक कथामे ओहने टटका चित्र आ नव आस्वाद भेटतनि। दुनू रचनाकार मिथिलाक ग्राम्य-जीवन संस्कृतिसँ मोहाविष्ट छथि। दुनुक शैली वर्णनात्मक अछि।

लेकिन आगमन, विषयवस्तु, दृष्टि आ शैलीमे समानता होइतहुँ दुनूमे क्यो ने तँ केकरो अनुकरण केने छथि, ने एक दोसरासँ प्रभाव ग्रहण केने छथि। दुनुक अपन स्वतंत्र लेखकीय व्यक्तित्व छन्हि।

ठेलाबला, रिक्शाबला, चुनवाली, इन्जीनीयर, डाक्टर इत्यादि शीर्षकसँ लागत जेना जगदीश प्रसाद मण्डल वर्ग संघर्षक कथाकार हेता, लेकिन ओ जनवादी या प्रकृतिवादी कथाकार नै छथि, जीवन-संघर्षक कथाकार छथि।

हुनक कथाक सन्दर्भमे जे सर्वाधिक उल्लेखनीय बात अछि से ई जे हुनक सभ कथामे औपन्यासिक विस्तार अछि। वर्तमान समैमे प्रचलित आ मान्य कथासँ हुनक कथा भिन्न अछि। हुनक कथा घटना बहुलता आ ऋजुसँ युक्त अछि।

जगदीश प्रसाद मण्डल जीवनमे प्राप्य जिजीविषा, मानवीयता एवं आदर्शकेँ सुदृढ़ आ पुनर्प्रतिष्ठित करबाक उद्देश्यसँ अनुप्राणित छथि।

-सुभाष चन्द्र यादव

१९४२-४३क बंगालक अकालक विषएमे अमर्त्य सेन लिखै छथि जे ऐ अकालमे बंगालमे लाखक लाख लोक मुइला (फेमीन इन्क्वायरी कमीशनक अनुसार १५ लाख) मुदा अमर्त्यक एकोटा सर-सम्बन्धीक मृत्यु ओइमे नै भेल। तहिना मिथिलाक १९६७ इस्वीक अकालमे भारतक प्रधानमंत्रीकेँ देखौल गेलन्हि जे केना मुसहर लोकनि बिसाँढ़ खा कऽ अकालसँ लड़ि रहल छथि मुदा ऐपर कथा लिखल गेल २००९ ई.मे जगदीश प्रसाद मण्डलजी द्वारा। आ ऐ विलम्बक कारण सेहो स्पष्ट अछि। मैथिली साहित्यमे जे एकभगाह प्रवृत्ति रहल अछि, तइ कारणसँ अमर्त्य सेन जकाँ हमरो साहित्यकार सभ ओइ महाविभीषिकासँ ओतेक प्रभावित नै भेल होएता। आ एतए जगदीश प्रसाद मण्डल जीक कथा मैथिली कथा धाराक यात्राकेँ एकभगाह हेबासँ बचा लैत अछि...।

ऐ संग्रहक सभटा कथा उत्कृष्ट अछि, रिक्त स्थानक पूर्ति करैत अछि आ मैथिली साहित्यक पुनर्जागरणक प्रमाण उपलब्ध करबैत अछि। **-गजेन्द्र ठाकुर**

क्रम

भेंटक लावा

पछिला बाढ़ि मोन पड़िते देह भुटैक जाइए। रूइयाँ-रूइयाँ ठाढ़ भऽ जाइए। बाढ़िक विकराल दृश्य आँखिक आगू नाचए लगैए। घोड़ोसँ तेज गतिसँ पानि दौगैत। बाढ़िओ छोटकी नै, जुअनकी नै, बुढ़िया। बुढ़िया रूप बना नृत्य करैत। केकरा कहूँ बड़की धार आ केकरा कहूँ छोटकी, सभ अपन-अपन चिन्ह-पहचिन्ह मेटा समुद्र जकाँ बनि गेल। जेम्हर देखू तेम्हर पाँक घोराएल पानि, निछोहे दछिन मुहेँ दौगल जाइत। केतेक गाम-घर पजेबाक नै रहने घर-विहिन भऽ गेल। इनार, पोखरि, बोरिंग, चापाकल पानिक तरमे डुबकुनियाँ काटए लगल। एहेन भयंकर दृश्य देखि लोककेँ डरे छने-छन पियास लगलोपर पीबैक पानि नै भेटैत। जीवन-मरण आगूमे ठाढ़ भऽ झिक्कम-झिक्का करैत। घर खसल, घरक कोठी खसल, कोठीक अन्न भँसल। जेहने दुरगति घरक तेहने गाएओ-महिंस, गाछो-बिरिछ आ खेतो-पथारक।

घरक नूआँ-बिस्तर आ आनो-आन समानक मोटरी बान्हि माथपर लऽ अपनो डाँड़मे दू भत्ता खरौआ डोरी बान्हि आ बेटोक डाँड़मे बान्हि आगू-आगू मुसना आ पाछू-पाछू घरवाली जीबछी, बेटी दुखनीकेँ कोरामे लऽ कन्हा लगौने पोखरिक ऊँचका महार दिस चलल। अखनि धरि ओ महार बोन-झाड़ आ पर-पैखानाक जगह छल। जइमे साँप-कीड़ा बसेरा बनौने, बाढ़ि ओकरा घराड़ी बना देलक। जहिना इजोतमे छाँह लोकक संग नै छोड़ैत, तहिना बर्खा बाढ़िक संग छोड़ैले तैयार नै। निच्चाँ पानिक तेज गति आ ऊपर सँ बर्खाक नम्हर बुन्न। महारपर मुसनाकेँ पहुँचैसँ पहिनइ बीस-पच्चीस गोटे अप्पन-अप्पन धिया-पुता, चीज-वस्तु आ माल-जालक संग पहुँच चुकल छल। महारपर पहुँच मुसना रहैक जगह हियाबए लगल। शौच करैक ढलान लग खाली जगह देखि मुसना मोटरी रखलक। मोटरी रखि बिसनाइरिक डारि तोड़ि खर्ड़ा बनौलक। ओइ खर्ड़ासँ खर्ड़ए लगल। एक बेर खरड़ि कऽ देखलक तँ मनमे पड़पन नै भेलै।

फेर दोहरा कऽ खरड़ि चिक्कन बनौलक। चिक्कन जगह देखि दुनू बेकतीक मनमे चैन भेलै। मोटरी खोलि मुसना एकटा बोरा निकालि चारिटा बत्तीक खुट्टा गाड़ि, खरौआ जौरसँ चारू खूट बान्हि, बत्तीमे बान्हि कऽ घर बनौलक। दोसर बोरा निच्चाँमे ओछा धियो-पुतोकेँ बैसौलक आ मोटरीओक समान रखलक। चिन्तासँ दुनू परानीक मुँह सुखाएल रहए। एक दिस दुनू बच्चाकेँ मुसना देखए आ दोसर दिस गनगनाइत बाढ़िकेँ। माथपर दुनू हाथ दऽ जीबछी मोने-मन कोसी-कमला महरानीकेँ गरियेबो करैत आ जान बँचबैले निहोरो करैत। दुनू बच्चो कखनो कऽ बाढ़ि देखि हँसैत तँ कखनो जाड़े कनैत।

बाढ़िक वेगमे एकटा घर भँसियाएल अबैत देखि मुसना बाँसक टोन आ कुड़हरि लऽ दौगल। पानिमे पैसि हियाबे लगल जे कोन सोझे घर औत। ठेकना कऽ हाँइ-हाँइ पाँचटा खुट्टा ठोकलक। आस्ते-आस्ते घर आबि कऽ खुट्टामे अड़कल, खुट्टामे अड़ल घर देखि घरवालीकेँ हाक पाड़ि कहलक-

"हाँसू नेने आउ। घरक समचा सभ उघि-उघि लऽ जाउ।"

घरक ऊपरमे एकटा कुकुर सेहो भँसैत आएल। लोकक सुन-गुन पाबि कुकुर कूदि कऽ महारपर चलि गेल। ठाठक बत्तीमे जहाँ मुसना हाँसू लगौलक आकि एकटा साँप लप दऽ हाथेमे हबक मारि देलकै। घरक भार थालमे गड़ल खुट्टा नै सम्हारि सकल। पाँचो खुट्टा पानिमे गिर पड़लै। घर भँसि गेलै। खूब जोरसँ मुसना कनबो करैत आ हल्लो करैत जे हौ लोक सभ, दौड़ै जाइ जा हौ, हमरा साँप काटि लेलक। मुसनाक कानब सुनि घरवाली सेहो बपहारि काटए लागलि। बपहारि कटैत घरवालीकेँ मुसना कहलक-

> "हे गए दुखनी माए, नाग डसि लेलकौ। छाती लग बिख आबि गेल। कनीए बाँकी अछि कंठ छुबैले। धिया-पुताकेँ हाक पाड़ि कनी मुँह देखा दे। आब नै बँचबौ।"

जीबछी हल्लो करए आ घरबलाक बाँहि पकड़ि ऊपरो करैत। महारक किनछरिमे पहुँच जहाँ ऊपर हुअ लगल आकि दुनू गोटे पिछड़ि कऽ तरे-ऊपरे निच्चाँमे खसल। दुनू परानी भीजल तँ रहबे करै, आरो

नहा गेल। मुदा तैयो ओरिया-ओरिया कऽ ऊपर भेल। महारपर आबि जीबछी चुनक कोहीसँ चुन निकालि दाढ़मे लगौलक।

साँपक बिख झाड़निहार गाममे एकोटा नै। मुदा रौदिया अही बेरक दशमीमे चनौरा गहबरमे चाटी सिखने छल। सभ कियो रौदियाक खोज करए लगल। रौदिया माछ मारैले सोहत लऽ कऽ बाध दिस गेल छल। एक गोटे ओकरा बजा अनलक। अबिते रौदिया सोहत कातमे रखि हाथ-पएर धोइ मुसना लग आबि बाजल-

> "हौ भाय, हमर चाटी सिद्ध नै भेल अछि, किएक तँ हम अखनि धरि गंगा स्नान नै केलौं हेन। मुदा तैयो बिसहाराकेँ सुमरि देखै छिऐ।"

मुसनाकेँ आगूमे बैसा रौदिया हाथेसँ जगहकेँ झाड़ि चाटी रखलक। सभ रौदिया दिस देखैत। मुदा चाटी चलबे ने कएल। बाढ़ि दुआरे आन गामसँ झाड़निहार आ चट्टिबाहकेँ बजाएब महाग मोसकिल रहए। सभ निराश भऽ गेल। छाती पीटि-पीटि जीबछी कनबो करए आ देवी-देवताकेँ कबुलो करए। मुदा ढोढ़ साँप कटने छेलै तँए बिख लगबे ने केलै।

गोसाँइ लूक-झूक करए लगल। गामक ढेरबा, बूढ़ आ जुआन स्त्रीगण सभ चङेरीओ आ चङेरोमे काँच माटिक दियारी लऽ पोखरिक घाट लग जमा भऽ कमला महरानीकेँ साँझ दऽ गीत गाबए लागलि। बच्चा सभ जय-जयकार करैत। तैबीच लुखिया कमला महरानीकेँ पाठी कबुला केलक, सुबधी एक सेर मधुर। दोसरि साँझ धरि गीत-गाबि सभ घूमि कऽ आँगन आएल।

एक रफ्तारमे बाढ़ि पाँच दिन रहल। मुदा पोह फटिते छठम दिन पानि कमए लगल। बाढ़िक पानि जहिना हुहुआ कऽ अबैए, तहिना जाइए। बेर झुकैत-झुकैत घर-अँगनाक पानि निकलि गेलै। मुदा थाल-खिचार रहबे करए। सातम दिनसँ लोक घर ठाढ़ करए लगल। बाढ़ि सटकिते लोक परदेश दिस पड़ाए लगल। गाममे ने एक्कोटा धानक गब बँचल आ ने खेत रोपैले बिराड़। नारक टाल सभ केतए भँसि कऽ गेल तेकर ठेकान नै। गहुमक भुस्सी भुसकाँरैमे सड़ि-सड़ि गोबर बनि गेल। मनुखसँ बेसी दिक्कत माल-जालकेँ भऽ गेलै। आमक पात, बाँसक पात आन-आन गाछ सबहक पात काटि-काटि माल-जालकेँ लोक खुआबए लगल। आन-आन गामसँ

नार, भुस्सी कीनि-कीनि आनए लगल। मुदा माल-जाल तैयो अनधुन मुइलै। जे बँचल रहै, ऊहो सुखा कऽ संठी जकाँ भऽ गेलै। तैपर सँ रंग-बिरंगक बिमारी सभ सेहो आबि गेलै। केकरो खुरहा तँ केकरो पेटझड़ी। किछु गोटे अपन सभ मालकेँ कुटमैती सभमे दऽ आएल।

चारिक अमल। पिसुआ भांग पीब श्रीकान्त मैदान दिससँ आबि दलानपर बैसि चाह पीबैत रहथि। सोगसँ अधमरु जकाँ भेल। मोने-मन सोचथि जे महाजनी तँ चलिए गेल जे आब अपनो साल भरि की खाएब? अगते धान सबाइ लगा देलौं। बड़ पैघ गलती भेल जे एक्को बखाड़ी पछुआ कऽ नै रखलौं। मुदा एक बखाड़ी रखनइ की होइत। के केकरा मदति करत। ठीके कहब छै जे सभकेँ अपना भरोसे जीबाक चाही। भने दुआर परक बखाड़ीक धान सठि गेल। कियो दरबज्जापर औत तँ देखा देबै। मुदा अपनो तँ जरूरत अछि, से केतएसँ आनब? लऽ दऽ कऽ घरक कोठीमे जे चाउर अछि, ओतबे अछि। एक्को धूर धान नै बँचल अछि जे अगहनोक आशा हएत। आब अवाद कएल नै हएत। आगू रब्बीएक आशा। जे सभ दिन कीनि-बेसाहि कऽ खाइए ओकरा तँ कोनो नै, मुदा हमरा लोक की कहत...?

चाह पीबिते-पीबिते श्रीकान्तकेँ चौन्ह आबए लगलनि। मन पड़लनि जे बाबा कहने रहथि जे दरबज्जापर जँ कियो दू-सेर वा दू-टका मांगैले आबए तँ ओकरा ओहिना नै घुमबिहक। ओइसँ लछमी पड़ाइ छथिन। जीबछीकेँ अबैत देखि श्रीकान्त हाक पाड़लखिन। सालो भरि जीबछी हुनके कुटाउन कऽ गुजर करै छलि। चाउर-चूड़ा कुटैमे जीबछी गाममे सभसँ बेसी लूरिगर। श्रीकान्तक लग आबि जीबछी हँसैत कहलकनि-

> ‘‘एते किए सोगाएल छथि काका, हिनका एते छन्हि तहन एते दुख होइ छन्हि, हमरा तँ किछु ने अछि तँए कि मरि जाएब।’’

जीबछीक बात सुनि भखरल स्वरमे श्रीकान्त कहलखिन-

> ‘‘जहिना सभ किछु बाढ़िमे दहा गेल तहिना जौं अपनो सभ तूर भँसि जैतौं, से नीक होइत। जाबे पराण छुटैत, तेतबे काल ने दुख होइत। आगू तँ दुख नै काटए पड़ैत।’’

मुस्की दैत जीबछी बाजलि-

“एक्केटा बाढ़िमे एते चिन्ता करै छथि काका, कनी नीक की कनी अधला, दिन तँ बितबे करतनि।”

चीलम पीबैत मुसना ओसारपर बैसल। कसि कऽ सोँठ मारि मोने-मन सोचए लगल, दू मास अगहन-पूस मुसहनि खुनि-खुनि गुजर करै छेलौं। दस सेर जमो भऽ जाइ छल आ गुजरो कऽ लइ छेलौं। ऊहो चलि गेल। ने एक्को गब केतौ धान बँचल आ ने गाममे एकोटा मूस। दोसर दम घीच धूँआकेँ घोटिते मनमे एलै, मूसक तीमन आ धुसरी चाउरक भात जँ जाड़क मासमे भेटए तँ ऐसँ नीक दोसर की हएत। एहेन खेनाइ तँ रजो-महरजोकेँ सिहिन्ते लागल रहतनि। ओ-हो-हो, भगवान गरीबेक सुख छीनि लेलनि!

मुसनाक पहुलका नाओं मकसूदन छल। मुदा मूस आ मुसहनिसँ बेसी सिनेह रहने लोक ओकरा मुसना कहए लगल। जीबछी आँगनक चुल्हिपर रोटी पकबैत। इनारपर हाथ-पएर धोय मुसना लोटामे पानि नेने आँगन आबि जलखै करैले बैसल। टिनही छिपलीमे रोटी-नून जीबछी घरबलाक आगूमे देलक। अँगनामे दुखबाकेँ नै देखि मुसना जोरसँ शोर पाड़लक। पिताक अवाज सुनिते दुखबा दौगल आबि धुराइले हाथे-पएरे खाइले बैसि रहल। दुनू बापूत खाए लगल। चुल्हिए लगसँ मुस्की दैत जीबछी बाजलि-

“केकरो किछु होउ, जेकरा लूरि रहतै ओ जीबे करत। ऐठाम तँ देखै छिऐ जे एक्के दहारमे किदनि बहारक खिस्सा अछि। सभ हाकरोस करैए।”

मुँहक रोटी मुसना हाँइ-हाँइ चिबा जीबछी दिस देखि कऽ बाजल-

“तेते ने माछ भँसि-भँसि आएल अछि जे खत्ता-खुत्तीमे सह-सह करैए। कनी पानि तँ कम होउ। जखने पानि कम भऽ उपछै जोकर भेल आकि मछबारि शुरू कऽ देब। खेबो करब आ बेचबो करब। हरिदम दू पाइ हाथेमे रहत।”

अपन नहिराक बात मन पड़िते जीबछी कहए लागलि-

> ''हमरा नैहरमे पूबसँ कोसी आ पच्छिमसँ गंडकक बाढ़ि सभ साल अबै छेलै। तैबीच जे धार अछि ओकर पानि तँ घुमैत-फिरैत रहिते छल। सगरे गाम साउनेसँ जलोदीप भऽ जाइ छेलै। टापू जकाँ एकटा परती टा सूखल रहै छेलै। ओइपर सौंसे गामक लोक बरसाती घर बना कऽ रहै छल। कातिक अबैत-अबैत खेत सभ जागए लगै छेलै। तेकर पछाति लोक खेती करै छल। गहिंरका खेत आ खाधि-खुधिमे भैंटक गाछ सोहरी लागल जनमै छल। अगहन बीतैत-बीतैत ओ तोड़ैबला हुअ लगै छेलै। हम सभ ओइ भैंटकेँ तोड़ि-तोड़ि आनी, ओकरे दाना निकालि सुखा कऽ लावा भूजी। तेते लावा हुअए जे अपनो खाइ आ बेचबो करी। काल्हि गिरहतकाका ओइठाम जाएब आ कहबनि जे चौरीमे मनसम्फे भैंट जनमल अछि, ओ हमरा दऽ दिअ।''

अखनि धरि दुनू परानी मुसना, चाउर आ चूड़ा कुट्टी करै छल, सेहो ढेकीमे। किएक तँ गाममे एक्कोटा छोटको मशीन धनकुटियाक नै छल। अधिकतर परिवार अपन-अपन ढेकी-उक्खड़ि रखै छल। मुसना सेहो कुट्टी दुआरे अपन ढेकी-उक्खड़ि रखने अछि। नीक चाउर बनबैमे जीबछीकेँ सभ लोहा मानैए। ऐ बेर तँ धनकुट्टी चलत नै। मुदा बाढ़िमे आन गामसँ तेते भैंट दहा कऽ चौरीमे आएल जे सापरपिट्टा गाछ सौंसे चौरीमे जनमि गेल अछि। तँए जीबछी मोने-मन चपचपाइत। दोसरकेँ भैंटक भाँज बुझले नै छेलै।

सभ दिन नहाइ बेरमे जीबछी चौरी जा भैंट देखि-देखि अबै छलि। चौरगर-चकरगर पात सौंसे चौरीकेँ छेकने। गोटि-पङरा फूल हुअ लगलै। फूल देखि जीबछीक मनमे होइ जे एतेटा फुलवाड़ी इन्द्रो भगवानकेँ हेतनि की नै। पाँचे दिनमे सौंसे चौरी फूल फुला गेल। अगता फूलक पत्ती झड़ि-झड़ि खसए लगल, फूलमे नुकाएल फड़ निकलए लगल। गोल-गोल, हरिअर-हरिअर। फड़ देखि जीबछी आमदनी बूझि, चौरी कातमे बैस, नव-नव योजना मोने-मन बनबए लागलि, ऐ बेर एकटा खूब निम्मन महिंस किनब। जौं महिंस जोकर आमदनी नै हएत तँ दूटा गाइए कीनि लेब। अप्पन तँ सम्पति भऽ जाएत। ओकरे खूब चराएब-बझाएब। ओहीसँ तँ

चारू परानीक गुजर चलत। जिनगी भरि तँ कुटाओने करैत रहलौं मुदा ऐ बेर कमलो महरानी आ कोसीओ महरानी दुख हेरि लेलथि। मोने-मन जीबछी दुनूकँ गोड़ लगलकनि। अपन धन हएत, तैपर सँ मेहनति करब तँ कोन दरिदराहा दुख आबि कऽ हम्मर सुख छीनि लेत? मजगूत घर बान्हब, बेटा-बेटीक बिआह करब। नाति-पोता हएत, बाबा-दादी बनि कऽ जेते दिन जीबी ओ कि देवलोकसँ कम भेलै। अहीले ने सभ हरान अछि। केलासँ सभ किछु होइ छै, बिनु केने पतरो फूसि।

घनगर गाछ देखि जीबछीक मनमे एलै, बीच-बीचमे सँ जँ गाछ उखारि देबै तँ सौरखीओ करहर भऽ जाएत आ छेहर गाछ रहने फड़ो नम्हर हएत। जइसँ दानो नीक हएत। अखनेसँ आमदनी शुरू भऽ जाएत। उत्साहित भऽ जीबछी भैंटक कमठौन शुरू केलक। मुदा करहर उखाड़ैमे तेते डाँड़ दुखाइ जे हूबा कमि गेलै। कमठौन छोड़ि देलक। देखते-देखते फड़मे लाली पकड़ए लगलै।

अगता फूल अगता फड़ भेल। नम्हर-नम्हर, पोछल-पोछल, गोल-गोल पुष्ट, रंगल फड़ देखि जीबछी बूझि गेलि जे आब ई तोड़ैबला भऽ गेल। दोसर दिनसँ फड़ तोड़ैक विचार जीबछी मोने-मन कऽ लेलक।

दोसर दिन भोरे जीबछी रोटी पका, दुनू बच्चो आ अपनो दुनू परानी

खेनाइ खा प्लास्टिकक बोरा लऽ फड़ तोड़ैले विदा हुअ लगल आकि धक दऽ मन पड़लै, बोरामे तँ फड़ राखब मुदा पानिमे तोड़ि-तोड़ि केतए राखब। फड़ तोड़ैले तँ झोराक जरूरत हएत। झोरा तँ अपना अछि नै! आब की करब? लगले जीबछी पुरना साड़ीकँ फाड़ि दूटा झोरा सीलक। झोरा सीबि बोरो आ झोरोकँ चौपेत एकटा झोरामे रखि, दुनू बच्चो आ दुनू गोटे अपनो चौर दिस विदा भेल।

फड़क रूप-रंगसँ जीबछीक मन गद-गद। मुदा अनभुआर काज बूझि मुसना तर्क-वितर्क करैत। चौरक कात पहुँच ऊपरका खेत जे सुखाएल छल तइमे दुनू बच्चो, बोरो आ रोटी-पानिकँ रखि दुनू परानी भैंट तोड़ैले पानिमे पैसल। पानिमे पैसिते जीबछीक नजरि भैंटक फड़क ऊपरे-ऊपर नाचए लगल। जहिना केकरो रूपैआक थैली भेटलासँ खुशी होइ

छै, तहिना जीबछीक मनमे भेलै। एक टकसँ देखि जीबछी दुनू हाथे हाँइ-हाँइ फड़ तोड़ए लागलि। खिच्चा फड़ देखि जीबछी पतिकेँ कहलक-

> "जुएलके फड़टा तोड़ब। अजोहा अखनि छोड़ि दियौ। पछाति तोड़ब।"

झोरा भरिते जीबछी ऊपर आबि-आबि बोरामे रखैत। मुसनो सएह करैत। दुनू बोरा भरि गेल। ऊपर आबि जीबछी पतिकेँ कहलक-

> "कनी काल सुस्ता लिअ। पानिमे निहुड़ल-निहुड़ल डाँड़ो दुखा गेल हएत। अहाँ एत्तै रहू, हम एक बेर अँगनासँ रखने अबै छी।"

जीबछी एकटा बोरा उठा आँगन विदा भेल। एक तँ पानिक भीजल, दोसर ओजनगर वस्तु। मुदा जीबछी भारी बुझबे ने करए। किएक तँ सम्पतिक मोटरी रहै किने! आँगन आबि ओसारपर बोरा रखि पुनः जीबछी चौर दिस रमकल विदा भेल। चौर पहुँच पतिकेँ कहलक-

> "हम बोरा लइ छी, अहाँ दुनू बच्चो आ डोलोकेँ सम्हारने चलू।"

आगू-आगू मुसना बेटीकेँ एक कोरामे लेने दोसर हाथमे डोल आ बेटाकेँ लऽ चलल। पाछू-पाछू जीबछी माथपर बोरा लेने। थोड़े दूर बढ़लापर जीबछी पतिकेँ कहलक-

> "भगवान दुःख हेरि लेलनि।"

मुदा स्त्रीक बात सुनि मुसनाकेँ ओ खुशी नै एलै जे जीबछीकेँ रहए। आँगन आबि जीबछी पहिलुके बोरा लग दोसरो बोरा रखि भानसक ओरियान करए लागलि।

चारिम दिन पहिलुके खेप भेंट तोड़ै काल मुसनाकेँ एकटा ठेङी बाँहिमे पकड़ि लेलकै। जे ओ देखबे ने केलक। मुदा जहन ठेङी भरि पोख खून पीब भरिआ गेलै, तहन मुसनाक नजरि पड़लै। ठेङीकेँ देखिते ओकर पराण उड़ि गेलै। थर-थर काँपए लगल। खूब जोरसँ घरवालीकेँ कहलक-

"बाप रे बाप! देहक सभटा खून ठेडी पीब लेलक। कोन पाप लागल जे ऐ मौगीया भाँजमे पड़लौं। एक तँ बाढ़िक मारल छी जे भरि पोख अन्न नै होइए। सुखा कऽ संठी भेल छी। तैपर जेहो खून देहमे छेलए सेहो ठेडीए पीब गेल। झब दे आउ नै तँ हम पानिएमे खसि पड़ब।"

मुसना बातकेँ अनठबैत जीबछी हाँइ-हाँइ फड़ो तोड़ैत आ मोने-मन बजबो करैत-

"जेना नाग डसि नेने होइ, तहिना अर्ड़ाहैए। भभटपन ने देखू। एहने-एहने पुरुख बुते परिवार चलत?"

दुन झोरा भरिते जीबछी मुसना लग आबि हाथेसँ ठेडी पकड़ि एकटा चिचोरमे बान्हि देलक। मुदा जैठाम ठेडी धेने रहै तैठामसँ छर्ड़-छर्ड़ खून बोहैत। अपन दहिना औंठासँ जीबछी दाबि देलक। कनीए खानक पछाति खून बन्न भऽ गेलै। जीबछी फेर फड़ तोड़ैले पानिमे पैसल। तोड़ि कनीकाल पछाति जीबछी कहलक-

"आउ ने, आब किछु ने हएत।"

जीबछीक बात सुनि मुसना आँखि गुड़रि कऽ बाजल-

"ई मौगीया, जान मारैपर लागल अछि। जे कहुना मरि जाए। एकरा की, दुनियाँमे सँएक कमी छै? दोसर कऽ लेत।"

दुनू बच्चा दिस देखैत मुसना पुन: बाजल-

"मुदा ऐ टेल्हुक सबहक की हेतै? बिलटि कऽ मरत की नै?"

पति दिस देखि जीबछी मुस्की दैत बाजलि-

"नै तोड़ब तँ नै तोड़ू। ओत्तै बैसि बच्चा सभकेँ खेलाउ।"

दुनू बोरा भरि कऽ जीबछी आँगन अनलक। सभकेँ सम्हारने मुसना सेहो आएल। आँगन आबि जीबछी चुल्हि पजारि भानस कऽ दुनू बच्चो आ अपनो दुनू परानी खेलक। खा कऽ जीबछी हाँसू लऽ भैंटक फड़ चीरि-चीरि दाना निकालए लागलि। लाल-लाल, गोल-गोल दाना। मुसना सेहो

दाना निकालए लगल। दुनू बच्चा दुनू भाग बैसि दूटा फड़कँ गुड़कबैत। दानाकँ एकटा चटकुन्नीपर थोपि-थोपि रखैत जाए। मुदा कनीए खान पछाति मुसनाकँ चीलम पीबैक मन भेलै। ओ उठि कऽ चुल्हि लग जा आगिओ तपए लगल आ चीलमो पीबए लगल। दानाक ढेरी देखि जीबछी गर अँटबए लागलि जे एते राखब केतए। गुनधुन करैत। एकाएक नैहरक बात मन पड़लै। मन पड़िते मुहसँ हँसी फुटलै। जीबछीकँ हँसैत देखि मुसना अह्लादित भऽ पुछलक-

> "अँइ गै, कोन सोनाक तमघैल तोरा भेट गेलौहँ जे एना खिखिआइ छँ?"

मुदा पाशा बदलैत जीबछी बाजलि-

> "अखनि तँ अन्हार भऽ गेलै, काल्हि भोरे एकटा खाधि टाटक कात अँगनेमे खुनि देबै।"

भोरे मुसना ढक जकाँ गोल-मोल खाधि खुनलक। जीबछी दुलेब कऽ लेबि, सुखौलक। ओइमे भैंटक दाना सुखा-सुखा रखैत गेल। ऊपरसँ टाटक झँपना बना मुसना दऽ देलक।

मास दिनक मेहनतिसँ जीबछीक आँगन भैंटक दानासँ भरि गेल। अनभुआर चीज तँए चोरी-चपाटीक कोनो डरे नै। भरल आँगन देखि जीबछीक मनमे समुद्रक लहरि जकाँ खुशी हिलकोर मारए लगलै। कनडेरिए आँखिए मुसना दिस देखि जीबछी मुस्किया देलक। घरवालीक मुस्की देखि मुसना खिसिआ कऽ बाजल-

> "हमरा देखि-देखि तोरा हँसी लगै छौ। हँसि ले, जेते हँसमे से हँसि ले। जाबे जीबै छियौ ताबे। भगवान केलखुन आ मरलियौ तहन तोहर हँसी नगरक लोक देखतौ।"

मुदा जीबछी लेल धैनसन। किएक तँ खुशीसँ मन एते भरल रहै जे घरबलाक बात ओइमे पैसिबे ने केलै। मोने-मन जीबछी लावा भुजैक विचार करए लागलि। लावा भुजैले एकटा नम्हर खापड़ि चाही। बालु रखैले एकटा कोहा चाही। लाड़नि तँ अपनो खरहीसँ बना लेब। बालुओ नदी कातसँ लऽ आनब। जहन कुम्हनि ओइठाम जाएब तँ कँचकूह ताकि

कऽ एकटा नम्हर तौला लऽ आएब। ओकरे खापड़ि बना लेब। बालु धिपबैले मझोलको कोहासँ काज चलि जाएत। एकटा सरबा सेहो चाही। किएक तँ बालु जे देबै से तँ हाथसँ नै हएत। ओइमे एकटा बत्तीक डाँट लगबए पड़त। लगा लेब। मुसनाकेँ कहलक-

"लावा भुजैले जारनिक ओरियान करए पड़त।"

लावाक नाओं सुनि मुसनाक मनमे खुशी भेलै। मुस्कीआइत उत्तर देलक-

"अखनि टेंगारी सुढ़िया लइ छी। बेरू पहर गिरहतकक्काक गाछीसँ बाँझीओ आ सूखल ठौहरीओ सभ आनि देब।"

भरि दिनमे दुनू परानी जीबछी सभ कथूक ओरियान कऽ लेलक।

पराते भने जीबछी लावा भुजब शुरू केलक। दू चुल्हिया चुल्हि। एक मुँहमे खापड़ि, दोसरमे कोहा। खापड़िमे भैंटक दाना भुजैत आ कोहामे बालु धिपैत। पहिल घानी भूजि जीबछी एक चुटकी चुल्हिमे दऽ दोसर घानी भुजब शुरू केलक। दोसर घानीक लावा देखि जीबछीक मन तर-ऊपर हुअ लगलै। पहुलका घानीक लावा चङेरीमे लऽ दुनू बच्चो आ घरोबलाकेँ आगूमे देलक। आगूमे लावा देखि मुसना मोने-मन सोचए लगल, ई मौगीया बड़ लूरिगर अछि। एहेन स्त्री भगवान सभकेँ देथुन। कहूँ जे अखनि तक हम जे बुझितो ने छेलौं से आइ खाइ छी। धिया-पुताकेँ पोसब कोन बड़का भारी बात छिऐ, समाजो लेल लोक बहुत किछु कऽ सकैए।

लावाक गमक पुर्बा हवामे मिलि गामकेँ सुगंधित कऽ देलक। सुगंध पाबि टोलोक आ गामोक स्त्रीगण सभ लावा किनैले एक्के-दुइए जीबछीक आँगन आबए लगल। मुदा एक्केटा जवाब जीबछी सभकेँ दैत-

"पहिने गिरहतकाकाकेँ खुएबनि, तहन केकरो देब।"

भरि दुपहर जीबछी लावा भुजलक। दू छिट्टा। दुनू छिट्टा लावा घरमे रखि ओइमे सँ एक मुजेला लऽ साड़ीसँ झाँपि जीबछी मुसनाकेँ कहलक-

"हम गिरहतकाका ओइठाम जाइ छी। अहाँ अँगनेमे रहब।"

कहि जीबछी माथपर मुजेला लेने श्रीकान्त ऐठाम विदा भेल। जीबछीक माथपर मुजेला देखि श्रीकान्त गौरसँ मुस्कीआइत पुछलखिन-

> ''बड़ खुशी देखै छी लछमी महरानी। मुजेलामे की चोराकऽ अनलौं हेन। कनी हमरो देखए दिअ?''

अनसुनी करैत जीबछी मुस्की दैत आँगन जा गिरहतनीक आगूमे मुजेला रखि कहलकनि-

> ''काकी, थोड़ेकैँ लाइ बना लिहथि आ अखनि कनीमे नोन-मरीच-तेल मिला कऽ दथु। जे काकाकैँ दऽ अबै छियनि।''

छिपलीमे लावा नेने जीबछी दरबज्जापर जा श्रीकान्तक आगूमे देलकनि। ओ छिपलीमे उज्जर-उज्जर रमदाना-लावा जकाँ लावाकैँ निहारि-निहारि देखए लगला। जीबछी कहलकनि-

> ''काका, की निङहारै छथिन, पहिने एक मुट्ठी मुँहमे दऽ कऽ देखथुन ने। भैंटक लावा छिऐ।''

एक मुट्ठी उठा श्रीकान्त मुँहमे लेलखिन। लावाक कोमलता आ सुआद पाबि श्रीकान्त खुशीसँ पत्नीकैँ हाक पाड़ि कहलखिन-

> ''एते सुन्नर वस्तुकैँ अखनि धरि जनितौं ने छेलौं। धन्य अछि जीबछीक ज्ञान आ लूरि जे एहेन सुन्नर हराएल वस्तुकैँ ऊपर केलक। साक्षात् देवी छी जीबछी। जाउ, सन्दूकसँ एकजोड़ साड़ी आ आङी निकालने आउ। जीबछीकैँ अपना ऐठामसँ पहिरा कऽ विदा करब। गरीब-दुखियाक देवी छी जीबछी।''

सभ दिन जीबछी लावा भुजै छलि आ अँगनेसँ लोक सभ कीनि-कीनि लऽ जाइत। पनरह दिनक जमा कएल रूपैओ आ फुटकुरीओ जीबछी मुसनाकैँ गनैले आगूमे देलक। पाइ देखि मुसनाक मन उड़ि गेल। मुहसँ ठहाका निकलल। एक टकसँ मुसना जीबछी दिस देखि कैंचा गीनए लगल।

OOO

बिसाँढ़

पछिला चारि सालसँ रौदी भेने गामक सुर्खीए बेदरंग भऽ गेल। जे गाम हरिअर-हरिअर गाछ-बिरिछ, अन्नसँ लहलहाइत खेत, पानिसँ भरल इनार-पोखरि, सैकड़ो रंगक चिड़ै-चुनमुनी, हजारो रंगक कीट-पतंगसँ लऽ कऽ गाए-महिंस आ बकरीसँ भरल रहै छल ओ मरनासन्न भऽ गेल। सुन-मसान जकाँ। बीरान। सबहक मनमे एक्केटा विचार अबैत जे आब ई गाम नै रहत। जँ रहबो करत तँ खाली माटिएटा। किएक तँ जइ गाममे खाइले अन्न नै उपजत, पीबैले पानि नै रहत, तइ गामक लोक की हवा पीब कऽ रहत? जइ मातृभूमिक महिमा अदौसँ सभ गबैत एला ओ भूमि चारिए सालक रौदीमे पेटकान लाधि देलक। मुदा तैयो लोकक टुटैत आशाक वृक्षमे नव-नव फुलक कोढ़ी टुस्सा संग जरूर निकलि रहल अछि। किएक तँ आखिर जनकक राज मिथिला छिऐ किने। जइ राज्यमे बारह-बर्खक रौदीक फल सीता सन भेटल तइ राजमे, हो-ने-हो, जँ कहीं ओहने फल फेर भेटए। एक दिस रौदीक सघन मृत्युवाण चलैत तँ दोसर दिससँ आशाक प्रज्वलित वाण सेहो ओकर मुकाबला करैत। जेकर हँसेरीओ नम्हर। एहनो स्थितिमे दुनू परानी डोमनक मनमे जीबैक ओहने आशा बनल रहल, जेहने सुभ्यस्त समैमे। कान्हपर कोदारि नेने आगू-आगू डोमन आ माथपर सिंगही माछ आ बिसाँढ़सँ भरल पथिया नेने पाछू-पाछू सुगिया, बड़की पोखरिसँ आँगन, जिनगीक गप-सप्प करैत अबैत रहए। चानिक पसीना दहिना हाथसँ पोछि, मुस्कीआइत सुगिया बाजलि-

> “जेकरा खाइ-पीबैक ओरियान करैक लूरि बूझल छै ओ कथीक चिन्ता करत?”, पत्नीक बात सुनि डोमन पाछू घूमि सुगियाक चेहरा देखि बिनु किछु बजनइ नजरि निच्चाँ केने आगू डेग बढ़बए लगल। किएक तँ खाइक ओते चिन्ता मनमे नै, जेते पानि पीबैक।

....

डोमनकेँ अपन खेत-पथार नै। मुदा दुनू बेकती तेहेन मेहनती जे नहियोँ किछु रहने नीक-नहाँति गुजर करैत। गिरहस्तीक सभ काजक

लूरि रहितो ओ कोनो गिरहस्तसँ बन्हाएल नै, ओना समए-कुसमए अपना काज नै रहने बोइनो कऽ लैत। अपना खेत नै रहने खेती तँ नहियेँ करैत मुदा दस कट्ठा मरूआ सभ साल बटाइ रोपि लैत, जइसँ पाँच मन अन्नो घर लऽ अबैत। मरूआ बीआ उपजबैमे बेसी मिहनत होइए। सभ दिन बीआ पटबए पड़ैए। शुरूहे रोहणिमे बड़की पोखरिक किनछरिमे डोमन बीआ पाड़ि लैत। लगमे पानि रहने पटबैओक सुविधा। आरू बीराड़ तँए बीओ नीक उमझैत। पनरहे दिनमे बीआ रोपाउ भऽ जाइत। मिरगिसिरामे पानि होइते अगते मरूआ रोपि लैत। मुदा ऐ बेर से नै भेलै। बर्खा नै भेने बीआ बीराड़ेमे बुड़हा गेलै। एक्को धूर मरूआक खेती गाममे नै भेलै। आ ने कियो अखनि धरि धानक बीराड़क खेत जोतलक आ ने बीआ बागु केलक। रौदीक आगम सबहक मनमे हुअ लगल। मुदा तैयो केकरो मनमे अन्देशा नै! किएक तँ ढेनुआर नक्षत्र सभ पछुआइले रहए।

जहिना रोहणि-मिरगिसिरा फोंक गेल तहिना अद्रो। समए सेहो खूब तबि गेलै। दस बजेसँ पहिनइ सभ बाधसँ आँगन आबि जाइत। किएक तँ लू लगैक डर सबहक मनमे। मरूआ खेती नै भेने दुनू परानी डोमनक मनमे चिन्ता पैसए लगलै।

बड़की पोखरिसँ दुनू परानी पुरैनिक पातक बोझ माथपर नेने अँगना अबैत। बाटमे सुगिया बाजलि-

> “ऐ बेर एक्को कनमा मरूआ नै भेल। बटाइओ केने आन साल ओते भऽ जाइ छल जे सालो भरि जलखै चलि जाइ छेलए। ऐ बेर तँ जलखैओ बेसाहिए कऽ चलत।”

माथ परक पुरैनिक पातक बोझसँ पानि चुबैत। जे डोमनो आ सुगियोकेँ अधभिज्जु कऽ देने। नाक परक पानि पोछैत डोमन उत्तर देलक-

> “कोनो कि अपनेटा नै भेल आकि गाममे केकरो नै भेलै। अनका होइतै आ अपना नै होइत तहन ने दुख होइतए। मुदा जब केकरो नै भेलै तँ हमरे किए दुख हएत। जे दसक गति हेतै से अपनो हएत। अपना तँ पुरैन-पातक रोजगारो अछि आ जेकरा ईहो ने छै?”

डोमनक उत्तर सुनि मिरमिरा कऽ सुगिया बाजलि-

> “हँ, से तँ ठीके। मुदा ठनका ठनकै छै तँ कियो अपने माथपर ने हाथ दइए। तहन तँ ई रौदी इसरक डाँग छी, लोकक कोन साध।”

अखनि धरिक समैकेँ कियो रौदी नै बुझलक। सबहक मनमे यएह होइत जे ई तँ भगवानक लीले छियनि। कोनो साल अगतेसँ पानि हुअ लगैत तँ कोनो साल अंतमे होइत। कोनो साल बेसीओ होइत तँ कोनो साल कम्मो। कोनो-कोनो साल नहियेँ होइत। जइ साल अगते बिहरिया हाल भऽ जाइत ओइ साल समैपर गिरहस्ती चलैत मुदा जइ साल पचता बर्खा होइत तइ साल अधखड्डू खेती भऽ जाइत। मुदा जहन हथिया नक्षत्र धरिमे बर्खा नै भेलै तहन सबहक मनमे आबए लगल जे ऐ बेर रौदी भऽ गेल! ओहिना जोतल-बिनु-जोतल खेतसँ गरदा उड़ैत। घास-पातक केतौ दरस नै। मुदा तँए कि लोक हारि मानि लेत? कथमपि नै! सभ दिनसँ गामक लोकमे सीना तानि कऽ जीबैक जे अभियास बनल अछि ओ पीठ केना देखौत? भऽ सकैए जे इन्द्र भगवानकेँ कोनो चीजक दुख भऽ गेल हेतनि। जइसँ बिगड़ि कऽ एना केलनि। तँए हुनका बौसब जरूरी अछि। जखने फेर सुधरि जेता तखनेसँ सभ काज सुढ़िया जाएत। यएह सोचि कियो भूखल-दुखलकेँ अन्न दान तँ कियो कीर्तन-अष्टयाम-नवाह तँ कियो चंडी, विष्णु यज्ञ-जप तँ कियो महादेव पूजा इत्यादि अनेको रंगक बौसैक ओरियान शुरू केलक। जनिजाति सभ कमला-कोसीकेँ छागर-पाठी कबुला सेहो करए लगली। किएक तँ जँ हुनकर महिमा जगतनि तँ बिनु बर्खोक बाढ़ि अनती। बाढ़ि औत पोखरि-झाखड़िसँ लऽ कऽ चर-चौरी, डीह-डाबर सभ भरत। रौदी कमत। अदहा-छिदहा उपजो हेबे करत।

बर्खाक मकमकी देखि नेङराकाका महाजनी बन्न कऽ लेलनि। ओ बूझि गेलखिन जे ऐ बेरक रौदी अगिला साल बिसाएत। मुदा सोझमतिया बौकीकाकी सभटा चाउर लगा लेलनि जइसँ सठि गेलनि। ओना बौकीकाकीक लहनो छोट। खाली चाउरेक। सेहो पावनिए-तिहार धरि समटल। हुनकर महाजनी मातृ-नवमी, पितृपक्षसँ शुरू होइत। पाहुन-परक लेल दुर्गापूजा, कोजगरा होइत दिवाली परेब, गोवर्धनपूजा, भरदुतिया, छठि

होइत सामा धरि अबैत-अबैत सम्पन्न भऽ जाइ छेलनि। किएक तँ सामाकेँ सभ नवका चूड़ा खुअबैत। खुएबेटा नै करैत संग भारो दैत। ताधरि कोला-कोली धानो पकि जाइत। मुदा से बात बौकीकाकी बुझबे ने केलखिन जे ऐ बेर रौदी भऽ गेल। तँए अपनो खाइले नै रखलथि। जहिना बोनिहार-किसान तहिना महाजन बौकीओकाकी भऽ गेली।

अगहन अबैत-अबैत सभकेँ चिन्ता हुअ लगलै जे अपने की खाएब आ माल-जालकेँ की खुआएब। किएक तँ कातिक धरिक ओरियान -अपनो आ मालो-जाल लेल- तँ अधिकांश लोक पहिनइ सँ करि कऽ रखैत। जे नेङराकाका छोड़ि सबहक सठि गेलनि। धानोक बीआ सभ कुटि-छाँटि कऽ खा गेल। धानक कोन गप जे हाल दुआरे रब्बीओ-राइ हएब कठिन। सबहक भक्क खुजल! भक्क खुजिते मनमे चिन्ता समाए लगल। जेना-जेना समए बीतैत तेना-तेना चिन्तो फौदाइत। एक तँ ओहिना चुल्हि सभ बन्न हुअ लगल तैपर सँ सुरसा जकाँ समए मुँह बाबि आगूमे ठाढ़। चिन्तासँ लोक रोगाए लगल। भोर होइते धिया-पुताक बाजा सौंसे गाम बाजए लगैत। मौगी पुरुखकेँ करमघट्टू तँ पुरुख मौगीकेँ राक्षसनी कहए लगल। जइसँ धिया-पुताक बाजा संग दुनू परानीक नाच शुरू भऽ जाइत। मुदा एहेन समए भेलोपर दुनू परानी डोमनक मनमे एक्को मिसिआ चिन्ता नै। किएक तँ जुड़ेशीतलसँ पुरैनिक पातक कारोबार शुरू केलक। कारोबार नम्हर। बावन बीघाक बड़की पोखरि। जइमे सापर-पिट्टा पुरैनिक गाछ। बजारो नम्हर। निर्मली, घोघरडीहा, झंझारपुर स्टेशनो आ पुरनो बजार। असगरे सुगिया केते बेचत। पुरैनिक पात किनिनिहार हलुआइसँ लऽ कऽ मुरही-कचड़ीवाली धरि। तैपर सँ भोज-काजमे सेहो बिकाइत। तँए आठ दिनपर पार लगौने रहए। भरि दिन डोमन पत्ता तोड़ि-तोड़ि जमा करैत। एक दिन सुगिया पात तोड़ैत, दोसर दिन सेरियबैत आ तेसरा दिनपर भोरुके गाड़ीसँ बेचैले जाइत। जे पात उगरि जाए ओकरा डोमन सुखा-सुखा रखैत। किएक तँ सुखेलहो पातक बिकरी होइए।

आइ निर्मलीसँ पात बेचि कऽ सुगिया आबि पतिकेँ कहलक-

''रौदी भेने अपन चलती आबि गेल।''

चलतीक नाओं सुनि मुस्की दैत डोमन पुछलक-

“से की?”

“सभ पात बेचिनिहार वेपारी थस लऽ लेलक। सभ गामक पोखरि सूखि गेलै जइसँ सबहक कारबार बन्न भऽ गेलै। अपनेटा पात बजार पहुँचैए। आइ तँ जहाँ गाड़ीसँ उतरलौं आकि दोकानदार आबि-आबि बुझ्झू जे झपटि लेलक। टीशनेपर छुहुक्का उड़ि गेल।”

डोमन-

“अहाँकेँ लूरि नै छेलए जे दाम बढ़ा दैतिऐ, एकक दू होइत।”

सुगिया-

“अगिला खेपसँ सएह करब। आब तँ बड़ीं सेहो जुआइत हएत किने?”

डोमन-

“गोटे-गोटे जुआएल अछि। मुदा बीछि-बीछि तोड़ए पड़त। तँए पाँच दिन आरो छोड़ि दइ छिऐ।”

तेसर साल चढ़ैत-चढ़ैत गामक एकटा बड़की पोखरि आ पाँचटा इनार छोड़ि सभ सूखि गेल। नम्हर आँट-पेटक बड़की पोखरि। किएक तँ दाँइत खुनने अछि किने? लोकक खूनल थोड़े छिऐ। देव अंश अछि। तँए ने गामक सभ अपन बेटाकेँ उपनयनो आ बिआहोमे ओही पोखरि जा पहिने नहबैए। तेतबे नै छठिमे हाथो उठबैए। हमरा इलाकाक पृथ्वीओक बनाबटि अजीब अछि। बुझ्झू तँ माटिक पहाड़। पाँच सए फुटसँ निच्चाँ धरि ने बालु अछि आ ने पानि। शुद्ध माटि। जइसँ ने एक्कोटा चापाकल आ ने बोरिंग गाममे। पानि दुआरे गामक-गाम लोककेँ पड़ाइन लागि गेल। माल-जाल उपटि गेल। सभटा गाए-माल चाहे तँ लोक बेचि लेलक वा खढ़ पानि दुआरे मरि गेलै। अदहासँ बेसी गाछो-बिरिछ सूखि गेल। चिड़ै-चुनमुनी इलाका छोड़ि देलक। जे मूस अगहनमे अंग्रेजी बाजा बजा-बजा सत-सतटा बिआह करै छल ओ या तँ बिलेमे मरि गेल वा केतए पड़ा गेल तेकर ठेकान नै। हमरो गामक अदहासँ बेसीए लोक पड़ा गेल। मुदा

तैयो जिबठगर लोक गाम छोड़ैले तैयार नै। पुरुख सभ गाम छोड़ि परदेश खटैले चलि गेल। मुदा बाल-बच्चा आ जनि-जाति गामेमे रहल। पोखरि-इनारकेँ सुखैत देखि लोक पानि पीबैलै बड़कीए पोखरिक कतबाहिमे कूप खुनि-खुनि लेलक। अपन-अपन कूप सभकेँ। पानिक कमी नै। तीन सालक जे रौदी, परोपट्टा लेल बाम भऽ गेल रहए, वएह डोमन लेल दहीन भऽ गेल। काज तँ आने साल जकाँ मुदा आमदनी दोबर-तेबर भऽ गेलै। गामक जमीनोक दर घटल। जइसँ डोमन खेत किनए लगल। ओना सुगियाक इच्छा खेत किनैक नै। किएक तँ मनमे होइ जे अहिना रौदी रहत आ खेत सभ पड़ता रहत। तँए अनेरे खेत लऽ कऽ की करब। मालो-जाल तँ घास-पानि दुआरे नहियेँ लेब नीक हएत। डोमनक मनमे आशा रहै जे जहिना लूल्हीओ कनियाँ बेटा जनमा कऽ गिरथाइन बनि जाइए, तहिना तँ पानि भेने परतीओ खेत हएत किने।

योगी-तपस्वीक भूमि मिथिला अदौसँ रहल। जे अपन देह जीव-जन्तुक कल्याण लेल गला लेलनि। ओ कि ऐ बातकेँ नै जनै छेलखिन? जनै छेलखिन! तँए ने गाममे अट्ठारह गण्डा (माने ७२ टा) पोखरि, सत्ताइस गण्डा (माने १०८ टा) इनार संग-संग चौरीमे सैकड़ो कोचाढ़ि-बिरै खुनि पानिक बखाड़ी बनौने छला। सोलहो आना बरखे भरोसे नै, अपनो जोगार केने छला।

तीन साल तँ दुनू परानी डोमन चैनसँ बितौलक। मुदा चारिम साल अबैत-अबैत बेचैन हुअ लगल। गामक सभ पोखरि-इनार तँ पहिनइ सूखि गेल छल। लऽ दऽ कऽ बड़की पोखरिटा बँचल। तहूमे सुखैत-सुखैत मात्र कट्ठा पाँचेमे पानि बँचल। सूखल दिस पुरैनिओ उपटि गेल। बीचमे जे पानि रहए मात्र ओहीमे पुरैनिक गाछ बँचल, मुदा तइमे जाँघ भरिसँ ऊपरे गादि। पैसब महाग मोसकिल रहए। पएर दैते सरसड़ा कऽ जाँघ भरि गड़ि जाइत। के जान गमबए पैसत। निराशाक जंगलमे डोमन बौआ गेल। मनमे हुअ लगलै, जहिना गामक लोक चलि गेल तहिना हमहूँ चलि जाएब। जानि कऽ परानो गमाएब नीक नै। जिनगी बँचत, समए-साल बदलतै तँ फेर घूमि कऽ आएब नै तँ केतौ मरि जाएब। जहिना गामक सभ किछु बिलटि गेल, समाजक लोक बिलटि गेल, तहिना हमहूँ बिलटि जाएब...।

पतिकेँ चिन्तित देखि सुगिया पुछलक-

"किछु होइए की? एना किए मन खसल अछि?"

पत्नीक प्रश्न सुनि डोमन आँखि उठा कऽ देखि पुनः आँखि निच्चाँ कऽ लेलक। आँखि निच्चाँ करिते सुगिया दोहरा कऽ पुछलक-

"मन-तन खराप अछि?"

नजरि उठा डोमन उत्तर देलक-

"तन तँ नै खराब अछि मुदा तनेक दुख देखि मन सोगाएल अछि। जइ आशापर अखनि धरि खेपलौं ओ तँ चलिए गेल। जे अगिलोक कोनो आशा नै देखै छी। की करब आब?"

सुगिया-

"अपना केने किछु ने होइ छै। जे भगवान जनम देलनि, मुँह चीड़ने छथि, अहारो तँ वहए ने देता। तइले एते चिन्ता किए करै छी?"

डोमन-

"गामक सभ किछु बिलटि गेल। एहेन सुन्दर गाम छल, सेहो उपटि रहल अछि। खाली माटिटा बँचल अछि। की माटि खुनि-खुनि खाएब? बिनु अन्न-पानिक काए दिन ठाढ़ रहब?"

"चिन्ता छोड़ू। जहिया जे हेबाक हेतै से हेतै। अखनि तँ पाइनो अइछै आ अन्नो अछिए। जाधरि ऐ धरतीपर दाना-पानी लिखल हएत ताधरि भेटबे करत। जहिया उठि जाएत तहिया केकरो रोकने रोकेबै! तइले एते चिन्ता किए करै छी?"

कहि सुगिया भानसक ओरियान करए लागलि। पत्नीक बात सुनि डोमन मोने-मन सोचए लगल जे हमरा तँ मरैओक डर होइए मुदा एकरा कहाँ होइ छै। ई तँ मरैओले तैयारे अछि। फेर मनमे उठलै, जीवन-मृत्युक बीच सदासँ संघर्ष होइत आएल अछि आ होइत रहत। तइसँ पाछू हटब कायरता छी। जे मनुख कायर अछि ओ कोन जिनगीक आशामे

अनेरे दुनियाँकेँ अजबारने अछि। पुनः अपना दिस तकलक। अपना दिस तकिते मनमे एलै, जीबैक बाट हरा गेल अछि। तँए एते चिन्ता दबने अछि। तमाकुल चुना कऽ मुँहमे लेलक। तमाकुल मुँहमे लइते डोमनकेँ अपन माए-बापसँ लऽ कऽ पछिला पुरखा दिस घोड़ा जकाँ नजरि दौगलै। मुदा केतौ रूकलै नै। जाइत-जाइत मनुक्खक जड़ि धरि पहुँच गेलै। पुनः घूमि कऽ आबि नजरि माए लग अँटकि गेलै। मन पड़लै माए संग बितौलहा जिनगी। मन पड़लै माएक ओ बात जे दस बर्खक अवस्थामे रौदी बितौने छल। रौदी मन पड़िते बड़की पोखरिक बिसाँढ़ आ अन्है माँछ आँखिक सोझमे आबि गेलै। कनीकाल गुम्म भऽ मन पाड़ए लगल।

मन पड़लै, अही पुरैनिक जड़िमे तँ बिसाँढ़ो फड़ैए। अल्हुए जकाँ। जहिना माटिक तरमे अल्हुआक सिरो आ अल्हुओ रहै छै तहिना पुरैनिक जड़िमे सिरो आ बिसाँढ़ो रहैए। अनासुरती मुहसँ निकललै-

> ''बाप रे! बाबन बीघाक पोखरिमे तँ केते-ने-केते बिसाँढ़ हेतै। ओकरे खुनैमे माछो भेटत। खाधि बना-बना सिंही-माङुर रहैए।''

एक पंथ दू काज। मनमे खुशी अबिते पत्नीकेँ हाक पाड़ि कहलक-

> ''भगवान बड़ीटा छथिन। जहिना अरबो-खरबो जीव-जंतुकेँ जनम देने छथिन तहिना ओकर अहारोक जोगार केने छथिन।''

पतिक बात सुनि सुगिया अकबका गेलि। बुझबे ने केलक। मुँह बाबि पति दिस देखैत रहल। जीबछीकेँ टकटक तकैत देखि डोमन बाजल-

> ''चुल्हि मिझा दियौ। घूमि कऽ आएब तहन भानस करब।''

पतिक उत्साह देखि सुगिया मोने-मन सोचए लगली जे मन ने तँ सनकि गेलनि हेन। अखने मुर्दा जकाँ पनिमरु छला। आ लगले की भऽ गेलनि। दोसर बात परखैक खियालसँ चुप-चाप ठाढ़ रहली।

डोमन फेर बाजल-

> ''की कहलौं? पहिने आँच मिझा दियौ। फट्टक लगा छिट्टा लऽ कऽ संगे चलू।''

सुगिया पुछलक-

"केतए।"

"बड़की पोखरि।"

"किए?"

"एहेन-एहेन सएओ रौदी कटैक खेनाइ पोखरिमे दाबल अछि। आनैले चलू।"

सबाल-जवाब नै कऽ सुगिया आगि पझा, फट्टक लगा छिट्टा लऽ तैयार
भेल। घरसँ कोदारि निकालि डोमन विदा भेल। आगू-आगू डोमन आ पाछू-पाछू सुगिया। बड़की पोखरिक महारपर पहुँच डोमन हाथक इशारासँ पत्नीकेँ देखबैत बाजल-

"जेते पोखरिक पेट सूखल अछि ओइमे तेते खाइक वस्तु गड़ाएल अछि जे ने खाइक कमी रहत आ ने पीबैक पानिक। जेना-जेना पानि सुखैत जेतै तेना-तेना कूपकेँ गहींर करैत जाएब। जेते पुरैनिक गाछ सुखाएल अछि ओइमे घौर्छा जकाँ बिसाँढ़ फड़ल हएत।"

पोखरि धँसि डोमन तीन डेग उत्तरे-दछिने आ तीन डेग पूबे पछिमे नापि कोदारिसँ चेन्ह देलक। एक धूर। उत्तरबरिया-पुबरिया कोनपर कोदारि मारलक। माटि तेते सक्कत जे कोदारि धँसबे ने कएल। दोहरा कऽ फेर जोरसँ कोदारि मारलक। कोदारि फेर नै धँसल। आगू दिस देखि हियाबए लगल जे किछु दूर आगूक माटि नरम हएत। खुनैमे असान हएत। मनक खुशी उफनि कऽ आगू बढ़ल-

"अँइ यइ ढोरबा माए, हम पुरुख नै छी? देखियौ हमरा माटि गुदानबे ने करैए! अहाँ हमरासँ पनिगर छी, दू छअ मारि कऽ देखियौ।"

सुगिया-

"हमर चूड़ी-साड़ी पहिरि लिअ आ हमरा धोती दिअ। तहन

कोदारि पाड़ि कऽ देखा दइ छी।''

मुस्की दैत दुनू आगू मुहेँ ससरल। एक लग्गा आगू बढ़लापर माटि नरम बूझि पड़लै। कोदारि मारि कऽ देखलक तँ माटि सहगर लगलै। एक धूर नापि डोमन खुनए लगल। पहिले छअमे एकटा बिसाँढ़क लोली जगलै। लोल देखिते उछलि कऽ बाजल-

''हे देखियौ। यएह छी बिसाँढ़।''

सुगिया-

''लोल देखने नै बूझब। सौंसे खुनि कऽ देखा दिअ?''

पत्नीक बात सुनि डोमनकेँ हुअ लगल जे हो-ने-हो कहीं अधेपर सँ ने कटि जाए। से नै तँ लोल पकड़ि डोला कऽ उखाड़ि लइ छी। मुदा नै उखड़ल। कनी हटि दमसा कऽ दोसर छअ मारलक। छअ मारिते एक बीतक देखलाहा आ चारि-चारि आँगरीक दूटा आरो देखलक। तीनूकेँ खुनि दुनू परानी निङहारि-निङहारि देखए लगल।

उज्जर-उज्जर। नाम-नाम। लठिआहा बाँस जकाँ गोल-गोल। मोट। हाथी दाँत जकाँ चिक्कन। बीत भरिसँ हाथ भरिक। पाव भरिसँ आध सेर धरिक।

सुगिया दिस नजरि उठा कऽ डोमन देखलक तँ पचास वर्षक आगूक जिनगी बूझि पड़लै। पति दिस नजरि उठा कऽ सुगिया देखलक तँ चूड़ीक मधुर स्वर आ चमकैत मांगक सिनुर देखलक।''

छिट्टा भरि बिसाँढ़ आ सेर चारिएक सिंही माछ नेने दुनू परानी डोमन-जीबछी खुशीसँ हलसैत विदा भेल।

ooo

पीराड़क फड़

गोल-गोल हरिअर-हरिअर भुआ जकाँ सोहरी लागल डारिमे जेहने हरिअर पात तेहने फड़, वएह छी पीराड़क फड़। पाँचेटा पुरान गाछ गाममे, बड़का-बड़का आम, जामुन शिशो गाछक जन्म ओ पाँचो पीराड़क गाछ देखने। सए बर्खक करियाबाबा कहैत जे जहियासँ मोन अछि ओ पाँचो गाछ ओहिना बूझि पड़ैए। एते ठनका खसल, बिहाड़ि आएल मुदा ओइ पाँचो गाछक रूइयाँ भगन नै भेलै। दस गजसँ नम्हर नै, ने मेघडम्मर जकाँ बहुत पसरल आ ने छिड़ियाएल। छोट-छीन बर्खाकेँ रोकि पानिक बुन्नकेँ माटिक मुँह नै देखए दैत घनगर पात सजा-सजा पाँचो गाछ सजल। सोहत-कोथी सन चोखगर काँट सभ डारि रूपी पहरुदारकेँ सजौने। छड़गर-छड़गर डारिमे चौरगर-चौरगर पात जेना इन्द्रकमल वा तगड़ फूलक होइत। तहिना फूलो।

पाँचो पीराड़क गाछ सएओ बिहाड़ि, हजारो बर्खा, नम्हरसँ छोट धरि सएओ बेर पाथरक चोट खेलक, बाढ़ि रौदीकेँ हँसैत-हँसैत सहलक। जहिना गामक उत्तरबरिया बाधमे एक्के आड़िपर पतिआनी लगा पाँचो गाछ ठाढ़ तहिना देखैओमे पाँचो एक्के रंग। ने नम्हर ने छोट डारि जे एक-दोसरसँ हक-हिस्सा लेल झगड़ैत। पाँचोमे अटुट प्रेम। जहन पाँचो फूलसँ सजैत तहन बूझि पड़ैत जे एक-दोसरक जुआनीक रंग देखि हृदैसँ खिलखिला-खिलखिला हँसैत हुअए। एतेक नम्हर जिनगीमे ने कियो जड़िकेँ तामि-कोड़ि पानि देलक आ ने ठारिकेँ छकड़ि-छुकड़ि गाछकेँ सुन्दर बनौलक। सोलहो आना देखभाल भगवानेक ऊपर। तँए पाँचो गाछ स्वाभिमानसँ भरल जे केकरो एहसान रूपी कर्ज जिनगीमे नै लेलौं। हरिदम पाँचो हँसैत-इठलाइत मन्द हवामे झुमैत।

पहिने पाँचो गाछक फूल फुला फड़ बनि झड़ि जाइत। बादमे फड़ पूर्ण जिनगीक सुख भोगि अंतिम अवस्थामे पकलापर पवन रूपी न्योतहारीकेँ पठा चिड़ै-चुनमुनीकेँ बजा-बजा अपन शरीर दान करैत, यएह पाँचो गाछक जिनगी भरिक धरम रहल।

ओइ गाछसँ हटिए कऽ लोक सभ खेतक जोत-कोर कऽ उपजबैत जे ओइ गाछपर सुगबा साँप रहैए। सुगबा साँप लोककेँ देखैमे अबिते ने

छै ओ हरिअर-लत्ती जकाँ रहैए। जेकरा कटलासँ स्वर्ग-नरकक द्वार अनेरे खुजि जाइ छै। बीचमे केतौ कोनो रूकाबटि नै होइए।

उत्तरबारि बाधक रखबारि रतना करै छल। दू साल पहिनइ दुनू परानी रतना मरि गेल। दू सालसँ कियो बाधक रखबारि करैले तैयारे ने होइत। डर होइत जे पीराड़क गाछपर सुगबा साँप रहैए तँए के अपन जान गमौत, दू-चारि सेर अन्न सालमे हेतै आकि नै।

साल भरि पहिने पिचकुन नोकरी करैले मोरंग गेल। रौदियाह समए भेने जहन किसानो सबहक दशा नीक नै तहन जन-बोनिहारक चर्चे की। साँझक-साँझ चुल्हि नै पजरैत। गरीब-गुरबा गाए-बकरी बेचि-बेचि मोरंग, सिलीगुड़ी, आसाम नोकरी करए गेल। पिचकुन सेहो रखबारीवाली नवकी कनियाँसँ पनरह रूपैआ कर्जा लऽ गेल रहए। अखनि धरि गाममे पिचकुनकेँ बकलेले-ढहलेले बुझै छल। जेते गोटेक मेड़िया नोकरी करए गेल छल ओइमे सँ किछु गोटे विराटनगर, किछु गोटे रंगैली, किछु गोटे सिलीगुड़ी आ किछु गोटे आसाम गेल। पिचकुनमाकेँ बकलेल बूझि सभ छोड़ि अपन-अपन गर लगबए लगल। असगरे पिचकुनमा इटहरी चौकसँ थोड़े आगू जा एकटा गाछक निच्चाँमे बैसि चूड़ा आ घुघनी खाए लगल। खाइते छल आकि दू गोटेकेँ उत्तर मुहेँ जाइत देखि चूड़ा-घुघनीकेँ गमछाक खोंचड़ि बना खाइते संगे विदा भेल। खेबो करए आ गप्पो-सप्प करए।

जाइत-जाइत धनकुटासँ कोस भरि पाछुए पहुँचल। जइ दुनू गोटे संग रहए ओ दुनू किसान। ओहीमे सँ एक गोटे मंगतराम जे पिचकुनकेँ नोकरी रखि लेलक। मरद-मौगी मिला पचासोटा जन मंगतराम खटबैत। मंगतराम सखुआ लकड़ीक तीन महला घर बनौने। किछु खेत पहाड़ोपर रहए। जइमे मरूआ, सामी-कौनी उपजैत। नेबो समतोला सबहक गाछ सेहो रोपने छल। पहाड़क ऊपरमे रौद देखि पिचकुन उजड़ा पहाड़ बुझैत। छोट-छोट गाछसँ लऽ कऽ पैघ-पैघ गाछक जंगल। छोट-छोट पहाड़सँ लऽ कऽ नम्हर-नम्हर पहाड़ देखि पिचकुन मोने-मन सोचए जे दोसर दुनियाँमे चलि एलौं। मुदा रस्ताक ठेकान रहने भरोस रहै जे तीन दिनमे अपन गाम चलि जाएब। बड़का-बड़का बखाड़ी, नारक बड़का-बड़का टाल देखि पिचकुन मोने-मन खुशी होइत जे मालिक खूब धनिक

अछि। कहियो नोकरीसँ हटौत नै। जब गाम जाइक मन हएत छुट्टी लऽ कऽ चलि जाएब आ फेरो चलि आएब। रस्तो तँ देखले अछि।

साल भरि नोकरी केला पछाति पिचकुनकेँ गाम अबैक मन भेलै। जहियासँ पिचकुन नोकरी कऽ रहल छल तैबीच एक्को पाइ घर नै पठौलक। पठैबतए केना? ने डाकघरक ज्ञान रहै आ ने केकरो अबैत-जाइत देखै। एकटा थारूनसँ पिचकुनकेँ लाट-घाट भऽ गेलै। अठारह-उन्नैस बर्खक ओ थारून। मंगते रामक जन। ओकर नाओं छल धनियाँ। पिचकुन संग अबैले धनियाँ राजी भऽ गेलि। साल भरिक पछाति पिचकुन गाम औत तँए माए लेल ऊनी स्वीटर, चद्दरि आ अपनो लेल फुलपेंट, भरि बाँहिक स्वीटर, चद्दरि सेहो कीनि लेलक। समाज सभ लेल समतोला किनलक। कपड़ा, समतोला आदिक मोटरी बान्हि, रूपैआकेँ फुलपेंटक जेबीमे लऽ मोटरीमे रखि बन्हलक। बटखर्चा लेल मुरही लऽ लेलक। धनियाँ अपन धएल-धरल रूपैआ कपड़ा सभ बान्हि रातिएमे तैयार भऽ गेलि। जंगल-झार दुआरे रातिमे नै निकलल। भुरूकबा उगिते दुनू गोटे अपन-अपन मोटरी लऽ चुपचाप विदा भऽ गेल। जही रस्तासँ पिचकुन गेल रहए ओही रस्तासँ विदा भेल। इटहरी आबि दुनू गोटे बस पकड़लक। बससँ बथनाहा आबि पएरे विदा भेल। कोसीमे नावपर पार भऽ निर्मली तक पएरे आएल। निर्मलीमे ट्रेन-गाड़ी पकड़ि गाम आएल।

फुलपेंट कमीज आ पएरमे चप्पल पहिरने बाबड़ी उनटौने, कान्हपर मोटरी लेने आगू-आगू पिचकुन आ पाछू-पाछू धनियाँ आबि माएकेँ गोड़ लगलक। टोल-पड़ोसक लोक पिचकुनकेँ चिन्हबे ने करैत। पिचकुन माएकेँ गोड़ लागि ओलतीमे चप्पल खोलि माएकेँ घर लऽ जा मोटरी खोलि रूपैआक गड्डी चुपचाप देखौलक। देखिते बुझू ऊसरमे दूबि जनमि गेल। रूपैआक गड्डी देखि माएक मोन उड़ि गेलै। हसोथि-पसोथि कऽ सभ कपड़ा समेटि, रूपैआ तरमे घोंसिआ मोटरी बान्हि धरैनपर रखलक। धनियाँ ओसारपर बैसलि। धनियाँक सम्बन्धमे माए पिचकुनकेँ पुछलक-

"ई कनियाँ के छेथिन?"

मुसकी दैत पिचकुन कहलक-

"तोरे पुतोहु। ओत्तै बिआह कऽ लेलौं।"

एक्के-दुइए टोलक जनिजाति आबए लागलि। पिचकुनक माए सभकेँ एक-एकटा समतोला देलक। एकटा दसटकही जेबीसँ निकालि पिचकुन माएकेँ दैत कहलक-

> ''माए, भूख लागल अछि। जो दोकानसँ बेसाहि सभ किछु लऽ आन। पहिने भानस कर। ताबे हम नहा लइ छी। तीन दिनक रस्ताक झमारल छी, ओँघीसँ देह भँसिआइए।''

पुतोहु देखि पिचकुनक माए मुनेसरी सौंसे टोल पुतोहु देखैले हकार देलक। जातिकेँ भोजो गछलक।

सातम दिन पिचकुन दुनू परानी साँझमे सोमनीदादी ऐठाम गेल, आँगनमे बिछान बिछा सोमनीदादी पोता-पोती सभकेँ खेलबैत रहथि। दादीकेँ पिचकुन गोड़ लागि इशारासँ धनियाँकेँ सेहो गोड़ लगै लऽ कहलक। धनियाँ सेहो दादीकेँ गोड़ लगलक। ओछाइनिक कोनपर बैसि पिचकुन आँखिक इशारासँ दादीकेँ जाँतैले कहलक। धनियाँ सोमनीदादीकेँ जाँतब शुरू केलक तखने पिचकुन सोमनीदादीकेँ कहए लगल-

> ''दादी, गाममे तँ सभ बकलेले-ढहलेल बुझै छेलए। साल भरि पहिनइ मोरंग गेलौं। कमेबो केलौं आ ओत्तै बिआहो कऽ लेलौं। आब गामेमे रहब। गाममे अहाँ, सभसँ पैघ छी दुनू परानीकेँ असिरबाद दिअ।''

उत्तरबारि बाधमे, सभसँ बेसी खेत सोमनीदादीक। जइ बाधमे दू सालसँ रखबार नै। पिचकुनकेँ दादी उत्तरबारि बाध रखबारि करैले कहलक। संगे पाँच कट्ठा खेत बटाइओ करैले कहलक। रोजी देखि पिचकुन गछि लेलक। पिचकुनकेँ खोपड़ी बन्हैले दादी दूटा बाँस, एक बोझ खढ़ आ एक मुट्ठी साबे गछलक।

दोसर दिन पिचकुन दुनू परानी उत्तरबारि बाध जा कऽ खोपड़ी बन्हैक जगह टेबलक। एकटा ऊँचगर परती छल जैपर बरसातोमे पानि नै अँटकै। धनियाँक नजरि पीराड़क गाछपर पड़लै, गाछ लग जा धनियाँ गाछमे फड़ तजबीज करए लागलि। फड़ देखि धनियाँ साड़ीक फाँड़ बान्हि गाछपर चढ़ि गेलि। गाछमे लुबधल पीराड़क फड़ देखि धनियाँक मोन चपचपा गेलै। तीमन करैले दसटा तोड़िओ लेलक। जेना केकरो

माटिमे गड़ल रूपैआक तमघैल भेटलासँ खुशी होइत तहिना धनियाँक मोन खुशीसँ चपचपा गेलै। पिचकुन कोदारिसँ परतीकेँ छिलए-बनबए लगल। मोने-मन धनियाँ एक मनसँ ऊपरे फड़ एक-एकटा गाछमे ठेकलक। खुशीसँ धनियाँक मुहसँ गीत निकलए लगल। गीत गुनगुनाइत पिचकुनकेँ हाक पाड़ि धनियाँ कहलक-

> "तकदीर जागि गेल। देखै छिऐ गाछमे कोंकची लागल फड़ छै। काल्हिसँ तोड़ि हाट लऽ जाएब। खूब महग बिकाएत।"

पिचकुनकेँ बुझले ने। धनियाँक बातपर बिसबासे ने करए। खिसिआ कऽ पिचकुन पुछलक-

> "अहाँ चिन्है छिऐ जे की छिऐ? जँ लोक खइतै तँ अहिना लुधकी लगल रहितै?"

पीराड़ देखि मोने-मन धनियाँ अपन गरीबीकेँ खुशहाली दिस बढ़ैत देखए। गरीबीक मनमे अमीरीक ज्योति अबैत देखए। धनियाँसँ रक्का-टोकी नै कऽ पिचकुन बाजल-

> "हमरा हाट-बजार करैक लूरि नै अछि। केना बेचब?"

धनियाँ नैहरमे हाटो-बाजार करै छलि। खेतीक सभ काजक लूरि सेहो छेलै। ओतबे नै, हाँस-बत्तक पोसबो करए आ हाट जा बेचबो करए। निर्भीक भऽ धनियाँ कहलक-

> "कड़चीक लग्गी बना कऽ सभ दिन तोड़बो करब आ बेचबो करब। अहाँ संगमे रहब आ देखबै।"

आसिन आबि गेल। बर्खा ठमकल। सबारी समए। अधिक बर्खा भेने खेत सभमे धान ऊपरा-ऊपरी। जेतए धरि नजरि जाइत तेतए धरि एकरंग हरिअर धान बूझि पड़ैत। बेर टगिते धानक पातपर ओसक बुन्न चमकए लगैत। जहिना कोनो बाला हरिअर साड़ी, हरिअर आङी पहिर माथमे मङटिका पहिर देखैमे लगैत तहिना खेत रूपी बाला देखैमे लगैत। पुर्बाक मन्द-मन्द हवा चलए लगल। जेत्तै बैसू तेत्तै आलस आबि जाएत। बाधमे तीनठाम पानि बोहैक कटारि। जइसँ ऊपरका खेतक पानि निचला

खेत दिस बोहैत। पिचकुन तीनू कटारिकँ दुनू भागसँ बान्हि अपियारी बनौलक। अपियारीक पानि उपछिते अनेरूआ माछ कूदि-कूदि फँसए लगल। धनियाँ अपियारीओ ओगरै आ माछो बिछैत। पिचकुन छिट्टामे लऽ हाटो जा बेचै आ गामोमे घूमि-घूमि बेचए लगल। दोसर-दोसर माछ बेचनिहार पिचकुनकँ एकटा साइकिल कीनि लइले कहलक। माथपर माछक छिट्टा लऽ घुमने देहो महकै। साइकिलक नाओं सुनि पिचकुनक सूतल मन फुड़फुड़ा कऽ उठल। मुदा साइकिल चढ़ब नै एने पिचकुन थतमतमे पड़ि गेल। मोने-मन पिचकुन सोचलक, जहन साइकिल भऽ जाएत तहन चढ़ब सिखबो करब आ जाबे सीखल नै हएत ताबे पछिला सीटपर छिट्टा रखि गुड़काइए कऽ घूमि-घूमि बेचब। हाटसँ घुमैत काल पिचकुन धनियाँकँ कहलक-

"अधपुराने एकटा साइकिल कीनि लेब।"

आमदनीक खुशी धनियाँकँ रहबे करए। मुस्कीआइत बाजलि-

"जहन साइकिले किनब तँ अधपुरान किए किनब? लबके कीनि लिअ।"

जितिआ पावनि। मरूआ रोटी माछक पावनि। एक दिन पहिने पिचकुनकँ माछक बेना लोक सभ दऽ गेल। सुतली रातिमे पिचकुन चहा-चहा कऽ उठै आ घरवाली धनियाँकँ कहै-

"अपियारीक सभ माछ बीछि लेलक।"

सपना बूझि फेर सूति रहए। अन्हरोखे दुनू परानी पिचकुन टौहकी-छिट्टा लऽ अपियारी लग गेल। अन्हार रहने माछ देखबे ने करए। एकटा अपियारी लग पिचकुन बैसल। दोसर लग धनियाँ। बीड़ी लगा-लगा पिचकुन पीबैत। फरिच्छ होइते एकटा अपियारीमे पिचकुन आ दोसरमे धनियाँ माछ बिछए लागलि। माछ हएत की नै तइ दुआरे लोक-सभ अपियारीए लग पहुँचए लगल। तरजू-बटिखाड़ा नै रहने पिचकुन अन्दाजेसँ बेचए लागल। छिट्टासँ ऊपरे माछ बीकि गेलै। बँचलाहा माछ दुनू परानी आँगन नेने आएल। अदहासँ बेसीए अँगनोमे बीकल। पावनिक दिन रहने हाटक भरोसे रहब पिचकुन नीक नै बूझि धनियाँकँ कहलक-

''झब दे जलखै बनाउ। अखने माछ बेचए जाएब।''

हाँइ-हाँइ कऽ धनियाँ रोटी पका माछक सन्ना बनौलक। साइकिलपर छिट्टा लादि पिचकुन अँगने-अँगने माछ बेचए लगल। बारह बजैत-बजैत सभटा माछ बीकि गेलै।

रौदो तीखर। पिचकुन माछ बेचि पसिखाना पहुँच गेल। पसिखाना ताड़ी पिआकसँ भरल। दुनू परानी पासी गहिंकी सम्हारैमे तंग-तंग रहए। बैसैक जगह नै देखि पिचकुन पासी लग जा एक बम्मा ताड़ी लऽ ठाढ़े-ठाढ़ पीब कैंचा दऽ साइकिलपर चढ़ि विदा भेल। धनियाँकेँ भाँज लगि गेलै जे पिचकुन ताड़ी पीबैए। दूरेसँ पिचकुनकेँ साइकिलपर अबैत देखि धनियाँ ओसारपर ओछाइन ओछा सुजनी ओढ़ि कुहरए लागलि। आँगन अबिते पिचकुन धनियाँकेँ कुहरैत देखलक। धनियाँक लगमे जा पिचकुन पुछलक-

''की-इ-इ होइ-इ-इ अए-ए-ए?''

पिचकुनक बोली सुनि धनियाँ आरो जोर-जोरसँ कुहरए लागलि। धनियाँक मुँह उघारि पिचकुन फेर पुछलक। नकियाइत धनियाँ बाजलि-

''मरि जाएब। बड़का दुख पकड़ि लेलक। छाती दुखाइए। जाउ दोकानसँ करूतेल नेने आउ। सगरे देह मालिस करू, तखने छूटत।''

लटपटाइते पिचकुन शीशी लऽ दोकानसँ तेल आनि धनियाँकेँ मालिस करए लगल। कर घूमि-घूमि धनियाँ पिचकुनसँ भरि पोख मालिस करौलक। जहन पिचकुनकेँ हाथ दुखा गेलै तहन धनियाँ बाजलि-

''आब, कन्नी मन हल्लुक लगैए।''

मन हल्लुक सुनि पिचकुनक मनमे आशा जगलै। पुनः मालिस करए लगल। धीरे-धीरे पिचकुनोक निशाँ उतरै आ धनियोक तामस कमै। पिचकुन खुशी जे घरवाली बँचि गेलै आ धनियाँ खुशी जे ताड़ी पीबैक नीक सजा देलियनि।

आसिन कातिकक आमदनीसँ पिचकुनक जिनगीक नींव पड़ल, पीराड़सँ लऽ कऽ माछ तकमे नीक कमेलक। जइ पिचकुनक जिनगी गरीबीसँ जर्जर छल जे जानवरोसँ बत्तर जिनगी जीबै छल। जहिना मनुख

जानवरक विकसित रूप छी तहिना पिचकुनो जानवरक जिनगी टपि मनुखक जिनगीमे प्रवेश केलक। जहिना हमर पूर्वज खोपड़ी बना रहै छला आ धीरे-धीरे आइ नीक मकानमे रहै छथि तहिना पिचकुन माटिक भीतक देबालक घर बनबैक विचार केलक। ओना पानि पीबैक अपना कोनो उपए नै छै जेकरा लेल आगू साल जोगार करैक विचार दुनू परानी मिलि केलक। खाली घरे आ पानिएक दिक्कत पिचकुनकेँ नै। ने घरमे सुतैले चौकी आ ने भानस करैले बरतन छेलै जे सभ रसे-रसे जोगार करैक विचार केलक।

सौंसे बाधमे धान फूटि लबल। हरिअर-उज्जर-लाल-कारी शीशसँ बाध चमकए लगल। दुनू परानी पिचकुन घर-आँगन छोड़ि भरि-भरि दिन बाधेमे रहए लगल। जँ बाधमे नै रहैत तँ साँढ़-पाड़ाक उपद्रव, घसवहिनीक उपद्रवसँ गिरहस्तक मुहेँ फज्झति सुनैत।

साँझू पहरकेँ धनियाँ सोमनीदादी लग जा खेतमे लुबधल धानक प्रशंसा करैत। सोमनीदादी हृदैसँ धनियाँकेँ असिरवाद दैत। सामा पावनि भऽ गेल। गोटि-पङरा खेतक धान सेहो पाकए लगल। बैसारी देखि धनियाँ पिचकुनकेँ कहलक-

> "पीराड़क गाछक जड़िकेँ तामि-कोड़ि कऽ सेरिया दियौ जे आगू नीक-नहाँति फड़त।"

धनियाँक बात सुनि पिचकुन बढ़ियाँ जकाँ पीराड़क गाछक जड़िकेँ तामि बकरी भेराड़ी मिलल छाउर पाँचो गाछमे चारि-चारि पथिया दऽ दू-दू घैल पानि सेहो देलक। पनरहे दिनक पछाति पाँचो गाछक रंग बदलि हरिअर-कचोर भऽ गेलै। सभ मुड़ीमे नवका कलश सेहो भेलै। जहिना मनुख अपन बच्चाकेँ सेवा करैत तहिना दुनू परानी पिचकुन पीराड़क गाछकेँ करए लगल। अपन सेवा देखि पाँचो पीराड़क गाछ हृदैसँ दुनू परानी पिचकुनकेँ असिरवाद देमए लगल।

OOO

अनेरूआ बेटा

तेसरि साँझ। अन्हरिआ चौठ रहने चान तँ नै उगल छल मुदा पूब दिस धाही छिटकए लगल छेलै। सुनसान अन्हार देखि किछु क्षण पहिनइ एकटा कुमारि, समाजमे लोक-लाज बँचबैक खिआलसँ दस दिनक जनमल बच्चाकेँ रस्ताक किनछरिमे रखि अढ़े-अढ़ आँगन चलि गेलि। बच्चाकेँ नओ दिन तँ झाँपि-तोपि कऽ बिमारीक बहाना बना रखलक। मुदा घटना खुलै दुआरे दसम दिन जी-जाँति कऽ फेकलक नै, रस्ताक कातमे ओरिया कऽ रखि देलक। पाँचे-सात मिनटक पछाति गंगाराम हाटसँ घर अबैत रहए। जनमौटी बच्चाक रुदन गंगाराम सुनलक, एकाएक पएर अस्थिर भऽ गेलै। बीच बाटपर ठाढ़ भऽ ओ अवाज अकानए लगल। ई अवाज तँ कोनो जानवर वा जन्तुक वा चिड़ै-चुनमुनीक तँ नै छी। मनुखक बच्चाकेँ बोली बूझि पड़ैए। मुदा ऐठाम मनुखक बच्चाकेँ बोली भऽ केना सकैए? तहूमे केकरो देखबो ने करै छिऐ। बाँसक गारल खुट्टा जकाँ गंगाराम बीच बाटपर ठाढ़ भऽ गेल। कनीकाल ठाढ़ रहि ओ आस्ते-आस्ते बच्चा दिस पएर बढ़बए लगल। झल-अन्हार रहने अधिक दूर देखबो ने करै छल। खेतमे कीड़ी-मकोड़ी, कियो अपन माए-बापकेँ हाक पाड़ैत तँ कियो अरामसँ गीत गबैत। तइसँ सौंसे बाध अनघोल होइत रहए।

लग पहुँच गंगाराम बैसि बच्चाकेँ निहारए लगल। एक मन कहलकै, ई तँ मनुखक बच्चा छी। मुदा दोसर मन कहलकै, ऐठाम बच्चा आएल केना? तरकारीबला झोरा दूबिपर रखि, दहिना हाथ बच्चाक देहपर दऽ हसोथए लगल। देह सिहरि गेलै। सगर देहक रोइयाँ-रोइयाँ ठाढ़ भऽ गेलै। मुदा मनमे खुशी उपकलै। मन थीर कऽ बच्चाकेँ दुनू हाथे उठा लेलक। उठा कऽ बच्चाकेँ पेटमे साटि, बामा हाथे बच्चाकेँ थाम्हि दहिना हाथे खढ़-पात पोछए लगल। बच्चा ओहिना पूर्ववते कनैत रहए। खढ़ पोछि गंगाराम कान्हपर सँ गमछा उतारि बच्चाकेँ लपेटि लेलक। तरकारीक झोरा कान्हमे टाँगि छाती लगौने बच्चाकेँ अपना ओइठाम अनलक।

आँगन आबि गंगाराम हँसैत घरवालीकेँ कहलक-

"आइ भगवान खुश भऽ एकटा बेटा देलनि।"

पतिक बात सुनि अकचकाइत भुलिया लगमे दौगल आबि पतिक कोरासँ बच्चा अपना कोरामे लैत पुछलक-

> ''केतए ई बच्चा भेटल? आ-हा-हा, बच्चा तँ बड़ दीब अछि।''
>
> ''हाटसँ घुमैत काल बाटपर भेटल। एकर सेवा करू। जँ अप्पन बनि कऽ आएल हएत तँ जीबे करत नै तँ जहिना रस्ते-रस्ते आएल तहिना चलि जाएत।''

पतिक बात सुनि भुलिया मोने-मन सोचए लागलि, अपना तँ ने गाए अछि आ ने बकरी, जेकर दूध पिआ बच्चाकेँ पालितौं। अपने तँ दूध हेबे ने करत किएक तँ बुढ़ाड़ीमे सभ अंग सुखा गेल। निराश मनमे भुलियाक आशा जगलै। मनमे एलै, अपन ने छाती सूखि गेल मुदा पितियौत दियादनी तँ चिलकौर अछि। मन पड़िते भुलिया भगवानकेँ धैनवाद दैत बाजलि-

> ''जहिना भगवान सुखाएल बोनमे फूल फुलौलनि तहिना ओकर अहारोक ओरियान तँ वएह करथिन।''

पचास बर्खक गंगाराम। अड़तालीस बर्खक भुलिया। मुदा जेते थेहगर गंगाराम तइसँ कम भुलिया। अड़तालीस बर्खक भुलिया साठि बर्खसँ ऊपर बूझि पड़ैत अछि। झुनकुट बूढ़ जकाँ। बूढ़क सभ लक्षण भुलियामे आबि गेल अछि मुदा कोरामे बच्चा देखि भुलियाक शरीरमे जुआनीक खून दौगए लगलै। नव उत्साह, नव-जीवन। आनन्दित भऽ विह्वल होइत नजरिसँ भुलिया पतिकेँ देखैत आ गंगाराम पत्नीकेँ। दुनूक मनमे खुशीक हिलोर उठैत रहए। पानिक गुब्बारा जकाँ खुशी मुँहसँ निकलए चाहैत रहए। बच्चाकेँ चुप रहै दुआरे भुलिया अपन छातीमे बच्चाकेँ लगा लेलक। कनी काल बच्चा छातीमे लागि मुँह बन्न केलक मुदा दूध नै भेटने फेर ओहिना कानए लगल।

गंगारामक घरक बगलेमे पितियौत भाए रूपलालक घर। बच्चाकेँ छाती लगौने भुलिया रूपलालक आँगन पहुँचलि। रूपलालक स्त्री-कबुतरी अपना बच्चाकेँ दूध पिअबैत रहए। तीन मासक बच्चा रहै। भुलियाक कोरामे बच्चाकेँ कनैत देखि अपना बच्चाकेँ ओछाइनपर सुता भुलिया कोरासँ बच्चाकेँ लैत दूध पीआबए लागलि। भूखल बच्चा, हपसि-हपसि

दूध पीबए लगल। बच्चाकेँ दूध पीबैत देखि भुलिया कबुतरीकेँ कहलक-

''भगवान तोरा सात गो बेटा औरो देथुन।''

भुलियाक बातकेँ हँसीमे उड़बैत कबुतरी बाजलि-

''चारिएटा मे तँ अकछि गेलौं आ सातटा आरो पोसब पार लागत। अपन असिरवाद घुमा लथु। जेतबे अछि तेकरे निमेड़ा होइ तहीसँ बहुत हएत।''

फेर बात बदलैत बाजलि-

''दीदी, बुढ़ाड़ीओमे जे हिनका बेटा भेलनि से केहेन पोरगर छन्हि। हिनके जकाँ आँखि, मुँह, नाक लगै छन्हि। भैया जकाँ किछु ने बूझि पड़ैए।''

भुलिया-

''सभ दिन तूँ एक्के रंग रहि गेलैं। कहियो तोरा बजै-भुकैक लूरि नै भेलौ। जेठ-छोटक विचार तँ बुझबे ने करै छीही। केकरो किछु कहि दइ छीही। कोनो गत्तरमे लाज-सरम तँ छौहे नै।''

हँसैत कबुतरी दोहरबैत कहलक-

''एँह दीदी, हिनका अखनि की भेलनि हेन, एकटाकेँ के कहाए जे जोड़ो लगि जेतनि।''

कबुतरीक बातसँ भुलियाकेँ तामस नै उठै। बच्चाक आनन्द हृदैकेँ पानि जकाँ कोमल बना देने छेलै। भुलिया उद्‌गारमे हृदए खोलि देलक-

''तोरे भैयाकेँ हाटसँ अबै काल रस्तामे ई बच्चा भेटलै।''

कबुतरी-

''भेटुआ बच्चाक मुँह हिनका मुहसँ किए मिलै छन्हि? ई हमरासँ छिपबै छथि।''

खौंझा कऽ भुलिया बाजलि-

''अच्छा हो, हमरे भेल। आब तँ मनमे सबुर भेलौ।''

बात बदलैत कबुतरी बाजलि-

"दीदी, जहिना एकटा बच्चाकेँ दूध पीयबै छी तहिना अहू बच्चाकेँ दूध पिआ देबनि। कोनो कि हमरा घरमे मौसरी नै अछि जे बच्चाकेँ दूधकटू हुअए देबनि। लोकेक काज समाजमे लोककेँ होइ छै किने। हिनका अन्हार घरमे दीप जरलनि। तइसँ कि हमरा खुशी नै होइए।"

कबुतरीक बात सुनि भुलियाक मन गद्-गद् भऽ गेलै। भुखाएल बच्चाकेँ पेट भरिते निन्न आबि गेलै। बच्चाकेँ बिछौनपर सुतबैत कबुतरी बाजलि-

"दीदी, बच्चाकेँ एतै रहए देथुन। राति-बिराति जहन भुख लगतै, पिया देबै।"

"बड़बढ़ियाँ।"

कहि भुलिया अपना आँगन आबि पतिकेँ कहलक-

"आब बच्चा जीबे करत। बड़ दूध गोधनपुरवालीकेँ होइ छै। दुनू बच्चाकेँ पालि लेत।"

बच्चा लेल गंगारामक मन कनैत। मुदा भुलियाक बात सुनि मन हरिया गेलै। मनमे एकटा शंका जरूर उठलै, बाजल-

"बच्चाकेँ अपना अँगना किए ने नेने अएलौं? आन तँ आने छी।"

पतिकेँ चोहटैत भुलिया कहलक-

"अहाँ पुरुख छी, तँ की बुझबै? माएक की मासचर्ज होइ छै? से स्त्रीगणे बूझि सकैए। जे माए एक दिन बच्चाकेँ छातीसँ लगा लेत ओ जिनगीमे कहियो ओइ बच्चाक अधला नै सोचत।"

गंगाराम चुप भऽ गेल। मुदा एकटा बात मन पड़लै। पुछलक-

"अपने दुनू गोटे ने ओकर बाप-माए हेबै, तँए कोनो नाओं तँ रखि देबै किने।"

पतिक बात सुनि भुलिया मनमे छठियारक दृश्य आबि गेलै। मुस्की दैत बाजलि-

> ''आन बच्चाकेँ तँ स्त्रीगण सभ मिलि कऽ नाओंँ रखै छै। मुदा से तँ ऐ बच्चाकेँ नै भेलै। अपने दुनू गोटे मिलि कऽ नाओं रखि दियौ।''

भुलियाक विचार सुनि पति बिहुँसैत बाजल-

''मंगल नाओं रखि दियौ।''

सात मासक पछाति बच्चाक मुँहमे दाँतो जनमए लगल आ ठाढ़ भऽ कऽ डेगा-डेगी चलौ लगल। अन्न सेहो चाटए लगल आ पानि सेहो पीबए लगल। बच्चाक सिनेह एते अधिक दुनू परानी गंगाराममे रहै जे कखनो आँखिक परोछ हुअए, से नै चाहए। भुलिया बोइन करब छोड़ि देलक। अँगना-घरक काज सम्हारि साबेक जौर ओसारेपर बैसि बाँटए लागलि। ओकरे बेचि-बेचि दू पाइ कमा लइ छलि। अपना तँ साबे नै रहै मुदा अधियापर बँटैले गाममे साबे भेटै। दुनू परानी गंगारामकेँ एते उत्साह बढ़ि गेलै जेते दस बर्ख पहिने छेलै। भरि-भरि दिन काज करैत मुदा थाकनि बुझिए ने पड़ै। भुलियाकेँ जखनि मंगल माए कहैत तहन आनन्दसँ ओ उन्मत भऽ जाए।

पाँच बर्खक अवस्थामे मंगलक नाओं पिता स्कूलमे लिखा देलक। मंगल पढ़ए लगल। पाँचे किलास तक पढ़ाइ गामक स्कूलमे होइत रहए। पँचमा तक मंगल पढ़ि लेलक। दस बर्खक भइओ गेल। मुदा दुनू परानीमे गंगारामक देह एते अव्वल भऽ गेलै जे काज करैले लोक अढ़ौनाइ छोड़ि देलकै। कहुना-कहुना दुनू परानी जौर बाँटि-बाँटि गुजर करए। जिनगी भारी लागए लगलै। मुदा दसे बर्खक मंगलमे ज्ञानक उदए कनी-मनी भऽ गेलै। जहिना बच्चेमे हनुमान बाल सुरूजकेँ गीरि गेल छला, तहिना। मंगल बापकेँ कहलक-

> ''बाबू अहाँ दुनू गोटे काज करै जोकर नै रहलौं। हमरा मन होइए जे चाहक दोकान खोली। अपने डेढ़ियापर एकटा एकचारी बान्हि दिअ, ओइमे हम दोकान खोलब।''

गंगारामक मनमे जँचलै। मुदा चाह तँ गामक लोक पीबैत नै अछि, तहन दोकान चलतै केना? मुदा तैयो एकचारी बान्हि देलक। बाड़ीमे एकटा जीमहर-गाछ रहै ओकरा पच्चीस रूपैआमे बेचि, चाह बनबैक बरतन-बासन मंगल कीनि लेलक।

चाहक दोकान मंगल शुरू केलक। नव वस्तुक दोकान गाममे। मुदा पहिल दोकानकेँ तँ मोनोपोली -एकाधिकार- होइ छै। शुरूमे तँ गामक लोक नव चीज पेय बूझि सिहन्ते पिनाइ शुरू केलक। मुदा धीरे-धीरे दोकान जमि गेलै। जइसँ एते कमाइ हुअ लगलै जे कहुना-कहुना गुजर चलि जाइ। तीन साल बीतैत-बीतैत दुनू परानी गंगाराम मरि गेल। जाधरि गंगाराम जीबै छल ताधरि गाममे मंगलक प्रति कोनो तरहक घृणा नै छेलै मुदा गंगारामक मरला पछाति लोकमे घृणा जागए लगलै। मुदा तैयो दोकानक बिकरीमे कमी नै एलै, किएक तँ समाजक लोक चाह-पानि पीअब शुरू कऽ देने छल।

चाहक दोकान केलाक उपरान्तो मंगलक मनमे पढ़ैक जिज्ञासा जीविते रहए। खाइ-पीबैसँ जे पाइ उगड़ै ओइसँ किताब-कागत-कलम कीनि-कीनि पढ़बौ करए आ लिखबो करए। मरै काल गंगाराम मंगलकेँ जनमक इतिहास सुना देने रहथिन। जइसँ मंगलमे समाजक कुरीति-कुबेवस्था जे करमी लत्ती जकाँ छाड़ने अछि, ओइ बिन्दुपर नजरि पहुँच गेल छेलै। तँए किताबक अध्ययन संग-संग समाजक बेवहारक अध्ययन करए लागल। चाहक दोकान चलबैत तँए दस गोटे संग गप-सप्प करैक लूरि सेहो सीखि लेलक। तेतबे नै...।

रूपचन गामक खिसक्कर। मुदा बड़ गरीब। साँझू पहर एक झोँक चाहक बिकरी खूब होइ, बादमे गहिंकी पतरा जाइ। जहन गहिंकी पतरा जाइ तहन रूपचन मंगलक दोकानपर अबै। दू गिलास चाह पिया मंगल रूपचनक दिमाग साफ कऽ दइ। दू-चारिटा पछुएलहा गहिंकीओ रहै, तैबीच रूपचन पुरना खिस्सा उठाबै। एक घंटा, दू घंटा, तीन-तीन घंटा तक रूपचन खिस्सा मंगलकेँ सुनबै। खिस्सा सभ दिन बदलि-बदलि कऽ कहै। कहियो राजा-रानी, तँ कहियो रानी सरंगा तँ कहियो रजनी-सजनीक। कहियो गोनू झा तँ कहियो डाकक। कहियो अल्हा-रुदल तँ कहियो दीना-भदरीक। कहियो लोरिक तँ कहियो सलहेसक।

ऐ रूपे मंगलक बुधिक बखाड़ीमे किताबक ज्ञान, समाजक ज्ञान आ खिस्साक ज्ञान जमा हुअ लगलै। रातिमे जे खिस्सा सुनै ओ दिनमे जहन समए भेटै, लिखि लिअए। लिखैत-लिखैत पाँति सेहो सोझ-साझ हुअ लगलै आ जिज्ञासो बढ़ए लगलै।

एक दिन बेर टगैत एक गोटे मंगलक ऐठाम चाह पीबए आएल। देह-दशासँ बिल्कुल साधारण। हाथमे एकटा चमड़ाक बैग। ओ आदमी "भारत जागरण" पत्रिकाक सम्पादक रहथि। गामक दशा-दिशाक अध्ययन करैले गाम दिस आएल छला। मंगलसँ गप-सप्प करैत ओ सम्पादक हरा गेला। उन्मत्त भऽ गेला। जेना मंगलक हृदए आ सम्पादकक हृदए एकठाम भऽ केतौ सफरमे निकलल हुअए, तहिना।

भक्क टुटिते दुनू गोटे हँसए लगल। सम्पादक कहलखिन-

"बौआ, अहाँ चाह बनाउ। अखनि धरि हमहूँ आइ चाह नै पीने छेलौं। आइ हम रहब। निचेनसँ गप-सप्प करब।"

मंगल चाह बनबए लगल। चाह बनल। दुनू गोटे पीलनि।

खेला-पीला पछाति, रातिमे दुनू गोटे एक्के बिछानपर बैसि गप-सप्प करए लगल। जे किछु खिस्सा-पिहानी मंगल लिखने छल ओ हुनका -सम्पादकक- आगूमे रखि देलकनि। उनटा-पुनटा सम्पादकजी देखए लगला। भाषा-शैली तँ नै जँचलनि मुदा विषए-वस्तु हृदैकेँ पकड़ि लेलकनि। हँसैत बजला-

"बड़ सुन्दर वस्तु सभ अछि। एकरे तकैले हम आएल छी।"

कहि बैग खोलि किछु पत्रिका आ किछु किताब दैत कहलखिन-

"ऐमे लिखैक तौर-तरीका निर्धारित कएल अछि। एकरा ठीकसँ पढ़ि जे आधार निर्धारित अछि, ओइ आधारपर लिखब। हम सम्पादक छी। मासिक पत्रिका चलबै छी। अहाँक एक-एक कथा सभ मासक पत्रिकामे छापब। एक कॉपी अहूँकेँ पठा देल करब।"

तीन-चारि घंटा धरि सम्पादकजी मंगलकेँ बुझबैत रहलखिन। भोरे सूति उठि चाह पीब ओ चलि गेला।

मंगलक कथा पत्रिकामे मासे-मास छापए लगल। मंगलक अनेको पाठकमे एकटा लड़की सेहो। नाओं सुनयना। दर्शन शास्त्रसँ एम.ए.मे पढ़ैत। पाँचम मासक पत्रिकामे सम्पादकजी मंगलक परिचएमे एकटा उपन्यासक चर्चा सेहो कऽ देलखिन, नाओं छेलै ''मरल गाम''। सुनयनाक पिता ओकील। सुनयनाक मन ''मरल गाम'' नाओं पढ़ि नाचए लागलि। मनमे आबए लगलै, हमर देश तँ गामक देश छी। जहन गामे मरल अछि तहन देशकेँ की कहबै? ई विचार सुनयनाक मनमे उड़ी-बीड़ी लगा देलक। जे सुनयना, पिताक सोझाँमे भरि मुँह कहिओ बजैत नै ओ सुनयना आइ पितासँ डिस्कस करैले तैयार भऽ गेलि।

कोर्टसँ आबि ओकील साहेब चाह पीब टहलैले गेला। टहलि-बूलि कऽ दोसर साँझमे आबि कौल्हुका केसक तैयारी लेल फाइल निकाललनि। पत्नी चाह आनि कऽ देलखिन। चाह पीब, पान खा फाइल खोलैत रहथि आकि सुनयना आबि कऽ आगूक कुरसीपर बैसि बाजलि-

> ''बाबूजी, एकटा सबाल मनमे घुरिया रहल अछि। ओ कनी बुझा दिअ?''

> ''की?''

> ''आइ पत्रिकामे पढ़ने छेलौं जे सचमुच गाम मरल अछि। जँ गाम मरल अछि तँ देश गामक छी। देशकेँ की कहबै?''

सुनयनाक प्रश्नक गंभीरतापर नजरि नै दऽ ओकील साहेब कहलखिन-

> ''ई साहित्यकार लोकनिक समझ छियनि, तँए ऐ पर किछु नै कहि सकै छिअ।''

साहित्यकारो तँ अही समाजक लोक होइ छथि। हुनको आने लोक जकाँ जिनगी छन्हि। तहन ओ एहेन विचार किए लिखलनि?''

> ''साहित्यकारक बात साहित्यकारे बूझि सकै छथि। हम तँ ओकील छी कानूनक बात बुझै छिऐ। अखनि तूँ जा, हम एकटा केसक तैयारी करब।''

सुनयना उठि कऽ चलि गेलि। अपना कोठरीमे बैसि कऽ विचार करए लागलि। जइ देशक गाममे ने पानि पीबैक ओरियान छै, ने खाइले सभकेँ संतुलित भोजन भेटै छै, ने भरि देह कपड़ा भेटै छै आ ने रहैले घर छै, ओइ देशकेँ मरल नै कहबै? तँ की कहबै। अखनो लोक सरल पानि पीबैए, कहुनाकेँ किछु खा दिन कटैए, गाछक निच्चाँमे आगि तापि समए बितबैए, हजारो रंगक रोग-बिआदिसँ घेरल अछि, ओइ देशकेँ की कहबै? हजारो बर्खक मनुखक इतिहासमे अखनो धरि सरस्वतीक आगमन सभ मनुख धरि नै भेल अछि, ओइ देशकेँ की कहबै?

ढेरो प्रश्न सुनयनाक आगूमे ठाढ़ भऽ गेल। मन घोर-घोर हुअ लगलै। अचेत जकाँ सुनयना कुरसीपर ओंगठि सोचए लागलि। सोचैत-विचारैत अंतमे ऐ प्रश्नपर आबि अँटकि गेलि जे किताबक भाँज लगा कऽ पढ़ी। मुदा किताब भेटत केतए। फेर मनमे एलै, किताब लिखनिहारे लग पहुँच किताबक भाँज लगाबी। पत्रिका निकालि लेखकक पता पुरजीपर लिखलक।

दोसर दिन सुनयना मंगलक भाँज लगबैले विदा भेल। नओ बजेक समए। भिनसुरका गहिंकीकेँ सम्हारि मंगल केतली, टोपिया, ससपेन, गिलास इत्यादि बरतन दोकानक आगूमे रखि, चुल्हिसँ छाउर निकालि चुल्हि निपैत रहए। सुनयना चाहक दोकानपर ऐ दुआरे पहुँचल जे ऐठामसँ सौंसे गामक लोकक भाँज लगि सकैए। दोकानपर पहुँच मंगलकेँ पुछलक-

> ''ऐ गाममे मंगल नामक एक बेकती छथि, हुनकर घर बता दिअ।''

अपन नाओं सुनि मंगल चौंकि गेल। मुदा चुप्पे रहल। जेना मोने-मन गाममे मंगलकेँ तकैत रहए। सुनयनो सएह बुझलक। कनी काल गुम्म रहि बाजल-

> ''बहिनजी, अगर मंगल ऐ गाममे हएत तँ जरूर भाँज लगा देब। मुदा अखनि हमरा ऐठाम आएल छी, तँए बिनु खेने-पीने केना जाएब? ई तँ मिथिला छिऐ। जहिना घरवारी लेल स्वागत करब अनिवार्य अछि तहिना तँ अतिथिओ लेल।''

मंगलक बात सुनि सुनयनाक मनमे जेना पियासलकेँ शीतल पानि

भेट गेने होइत, तहिना भेल। बाँसक फट्ठाक बनौल बेंचपर सुनयना बैसि गेलि। हाथ धोइ मंगल सस्पेन अखारि, चुल्हि पजारि चाह बनबए लगल। विरिंचपर सँ उठि सुनयना चुल्हि लग जाए चाहलक आकि कुर्तीक निचला कोन फट्टीमे फँसि गेलै, जइसँ कनी फाटि गेलै। मुदा तेकर चिन्ता नै कऽ सुनयना मंगल लग बैसि गेल। लगमे सुनयनाकेँ बैसैत देखि मंगल पुछलक-

"मंगलसँ कोन काज अछि?"

सुनयना-

"मंगल साहित्यकार छथि। हुनकर लिखल एकटा उपन्यास 'मरल गाम' छन्हि। ओइ पोथीक भाँज हम बजारमे लगेलौं मुदा केतौ नै भेटल। तँए लिखिनिहारेक भाँज लगबए एलौं।"

सुनयनाक बात सुनि मंगल नम्हर साँस छोड़ि बाजल-

"मंगलकेँ अहाँ केना जनै छी?"

सुनयना-

"हुनकर लिखल कथा हम 'भारत जागरण' मे पढ़ै छी ओइमे 'मरल गाम' उपन्यासक चर्चा देखलिऐ। जेकरा पढ़ैक इच्छा मनमे भेल। तँए एलौं हेन।"

मंगल बूझि गेल। खुशीसँ मन ओलरि गेलै। मनमे एलै, पियासलकेँ पानि देब ओहने आवश्यक होइए जेना भूखलकेँ अन्न। मुदा हमरा तँ एक्के काँपी अछि जे लिखने छी। जँ ई काँपी दऽ देबै तँ अपन साल भरिक मेहनति चलि जाएत। मुदा नै देब तँ आरो महापाप हएत। फेर मनमे एलै, अपना ऐठाम पढ़ैले दऽ दिऐ आ कहि दिऐ जे जहिया हमर दिन-दुनियाँ घुमत तहिया छपाएब। छपेला पछाति अहुँकेँ देब। ताबे ऐठाम रहि पढ़ि लिअ।

तैबीच चाह बनल। दुनू गोटे पीलक। चाह पीब सुनयना बाजलि-

"मंगलक भाँज लगा दिअ।"

विष्मित भऽ मंगल बाजल-

> ''हमरे नाओं मंगल छी। हमहीं उपन्यास लिखने छी। मुदा छपौल नै अछि। खाली लिखलेहेटा अछि। तँए हम आग्रह करब जे ऐठाम रहि पढ़ि लिअ। जहिया छपाएब तहिया अहाँकेँ एक काँपी जरूर देब।''

मंगलक बात सुनि सुनयना अचंभित भऽ गेलि। पएरसँ माथ धरि मंगलकेँ निङहारए लागलि। आगिक धुआँ आ चुल्हिक कारीखसँ मंगल बेदरंग भेल। देहक वस्त्र परसौती-वस्त्र जकाँ, सौंसे देहसँ गरीबी झक-झक करैत। मंगलक बगए देखि सुनयनाक आँखि नोरा गेलै। नोर पोछैत सुनयना बाजलि-

> ''ऐठाम रहि कऽ हम उपन्यास नै पढ़ि सकब। किएक तँ कोनो पोथी पढ़ैक मतलब होइए जे ओइ पोथीक विषए-वस्तुकेँ नीक जकाँ बूझब। से धड़-फड़मे केना संभव अछि?''

सुनयनाक विचारमे गंभीरता देखि मोने-मन मंगल सोचए लगल। आत्माक उत्साह बढ़ए लगलै। सुनयना दिस तकलक। सुनयनाक आँखिमे पढ़ैक भूख जोर पकड़ने देखलक। मनमे एलै, हमहूँ तँ अनके लेल लिखने छी। तहन छपौलासँ हजारो हाथ जेत्तै मुदा अखनि तँ एक्के हाथ जा रहल अछि। मनमे सबुर भेलै, कम-सँ-कम एक्कोटा पढ़निहारक हाथ तँ जाएत। तैबीच सुनयना बाजलि-

> ''जहिना हम काँपी ऐठामसँ लऽ जाएब तहिना पढ़ला पछाति घुमा देब। तँए पोथी हरेबाक कोनो संभवने ने अछि। ऐठाम रहि पढ़ैमे हमरो लाचारी अछि। लाचारी ई अछि जे भरि दिन तँ हम केतौ रहि सकै छी मुदा सूर्यास्त पछाति घर पहुँचब जरूरी अछि।''

मंगलक विचारमे कनी सिनेह एलै। बाजल-

> ''बड़बढ़ियाँ, हम अहाँकेँ पोथी दऽ दइ छी। आगूक बात अहाँ जानी।''

हाथमे पोथी अबिते सुनयनाक मनमे खुशी एलै। एक टकसँ पोथी देखि मंगल दिस ताकि मुस्किया देलक। मोने-मन मंगल सुनयनाकेँ पढ़ैत

आ सुनयना मंगलकेँ। सुनयना हँसैत विदा भऽ गेलि।

सुनयना एम.ए. नीक जकाँ पास केलक। नारी अधिकारक सर्मथक ओकील साहैब। मुदा मन ओतए ओझरा जान्हि जेतए देखथि जे नारी खाली एक्के-आध बिन्दुपर नै, जीवनक सभ क्षेत्रमे जकड़ल अछि। जेकरा मेटाएब धिया-पुताक खेल नै। कठिन संघर्षसँ हएत। केतौ वैचारिक संघर्ष करए पड़त तँ केतौ बलक। ऐ विचारमे ओकील साहैब कुरसीपर बैसि सोचैत रहथि। साँझक समए। पत्नी चाह बनौने एलखिन। टेबुलपर चाह रखि, बगलक खाली कुरसीपर बैसि कहलखिन-

> "अपना सबहक पढ़ल-लिखल समाजक परिवारमे सुनयना अछि तँए ने, मुदा जँ एहेन बेटी किसानक घरमे रहैत तँ लोक एना उन्मुक्त रहए दैतै!"

चाहक चुसकी लैत ओकील साहेब पुछलखिन-

> "अहाँ की कहए चाहै छी, कनी खोलि कऽ बाजू।"

> "सुनयनाक बिआह कऽ लिअ। तहन तँ मनोज रहत किने ओ तँ बेटा धन छी। बेटा-बेटीक बिआह करब माए-बापक अनिवार्य कर्तव्य छी।"

> "हमरा मनमे एकटा नव विचार अछि। ओ ई जे सुनयनाकेँ सेहो पूछि लिऐ?"

सुनयनासँ पुछैक बात सुनि पत्नी ढोढ़ साँप जकाँ हनहनाइत बाजलि-

> "लोक की कहत? आइ धरि केकरा देखलिऐ जे माए-बाप बेटा-बेटीसँ पूछि कऽ बिआह करैए।"

पत्नीक विचार सुनि ओकील साहेब मोने-मन सोचए लगला जे नारीकेँ मात्र पुरुखे नै नारीओ दाबि कऽ राखए चाहैए। अजीब घेरा-बंदीमे नारी फँसल अछि। मुदा अपन विचारकेँ मोनेमे रखि सुनयनाकेँ हाक पाड़लखिन। अपना कोठरीसँ निकलि सुनयना आएल। कुरसीपर बैसलि। सुनयना माए दिस देखए लागल। तामसे माए पति दिस देखैत। ओकील

साहेब सुनयनाकेँ कहलखिन-

“बाउ, आब तूँ एम.ए. पास कइए लेलह। माए-बापक दायित्व होइ छै बेटा-बेटीक बिआह करब। तँए हमहूँ अपन भार उतारए चाहै छी। तोरो किछु बजैक छह?”

पिताक बात सुनि सुनयनाक देहमे कँप-कँपी आबि गेलै। मनमे थोड़े ओज। मुदा असथिरसँ बाजलि-

“बाबूजी, बिआह तँ सभ पुरुष-नारी लेल अनिवार्य प्रक्रिया छिऐ। जइसँ सृष्टिक विकास प्रक्रियामे सहयोग होइ छै। रहल बात जे बिआह केहेन हुअए। अखनि जे देखि रहल छी ओ नब्बे-पनचानबे प्रतिशत अनमेल बिआह होइए। केतौ धनक मिलानीसँ तँ केतौ दहेजक चलैत, केतौ कुल-मूलक चलैत तँ केतौ किछु। मुदा हमरा विचारेसँ बिआह हेबाक चाही मनक मिलानीसँ। जे टिकाउएटा नै आनन्दमय सेहो हएत।”

सुनयनाक बात सुनि माए उत्तेजित होइत बाजलि-

“बेटी, हमरा सबहक मिथिलाक परम्परा रहल अछि जे ई काज माए-बापक विचारसँ होइ नै कि बेटा-बेटीक विचारे। किन्तु जौं बेटा-बेटीक विचारसँ बिआह हएत तँ समाज ढनमना जाएत।”

सुनयना बाजलि-

“बड़ सुन्नर बात कहलीही माए मुदा परम्पराक भीतर जे दुरगुण छै ओहूपर नजरि देमए पड़तौ।”

मुँहपर हाथ लेने ओकील साहैब चुप-चाप सुनैत रहथि। सुनयना तर्कक आगू माए कमजोर पड़ैत गेली। मुदा तैयो चुप होइले तैयारे नै छेली। सामंजस्य करैत ओकील साहेब सुनयनाकेँ कहलखिन-

“बाउ, तूँ अप्पन विचार दैह?”

सुनयना बाजलि-

“अहाँ खर्च केते करए चाहै छी बाबूजी?”

खर्चक नाओं सुनि ओकील साहैब चौंकि गेला। मुदा अपनाकेँ अस्थिर रखि बजला-

"बाउ, अप्पन की ओकाइत अछि से तहूँ जनिते छह। मुदा जे ओकाइत अछि ओइमे हम कंजूसी नै करबह। दू भाए-बहिन छह। ई सम्पति तँ तोरे सबहक छिअ।"

सुनयना बाजलि-

"बाबूजी, मनुख देहे आ धने पैघ नै होइए, पैघ होइए ज्ञान आ कर्तव्यसँ। सभ स्त्री चाहैए जे हमर जीवन-संगी बुधियार आ कर्मठ हुअए। अखनि हम अहाँकेँ अंतिम निर्णए नै दऽ रहल छी मुदा एते जरूर कहब जे सोनपुरमे मंगल नामक एकटा चाहक दोकानदार अछि। ओकरा कियो ने छै। मुदा ओकर जे काज आ बुधि छै ओ ओकरा एक दिन महान साहित्यकारक रूपमे दुनियाँक बीच अनतै। अखनि ओकरा गरीबी जर्जर बनेने छै। गरीबी जालमे ओ एना ओझरा गेल अछि जइसँ निकलब कठिन छै। किन्तु जँ ओकरा ओइ गरीबीक जालसँ निकालल जाए तँ ओ जरूर उगैत सुरूज जकाँ अकासमे चमकए लगत।"

ओकील साहैब कहलखिन-

"बाउ, यदि तूँ हृदैसँ ओकरा चाहै छह तँ हमरा दिससँ कोनो आपति नै। मुदा अखनि समए रहैत विचारि लैह।"

सुनयना बाजलि-

"अनेक विषमता रहितो हमरा दुनू गोटेक बीच आत्माक समता अछि। हमहूँ नारीक सम्बन्धमे किछु लिखए चाहै छी। किएक तँ अपना ऐठाम नारीक प्रति जे अदौसँ अखनि धरि अन्याय होइत रहल अछि ओ हमरा हृदैकेँ दलमलित कऽ देने अछि। दुनियाँक सुन्दरसँ सुन्दर वस्तु हमरा फिक्का लगि रहल अछि।"

ओकील साहैब कहलखिन-

"बाउ, हम तोहर विचारकेँ मानि लेलिअ। तूँ अपनेसँ जा कऽ

देखि आबह जे केते मददिसँ मंगल उठि कऽ ठाढ़ हएत। हम ओते मदति कऽ देबै।''

पिताक विचार सुनि सुनयना हँसैत अपना कोठरी दिस विदा भेल। सुनयनाक विचारपर ओकील साहैब मोने-मन गौर करए लगला। मुदा पत्नीक मनक तामस आरो बढ़िते गेलनि।

OOO

दूटा पाइ

हलहोरिमे फेकुओ दिल्लीक रैलीमे जाइक विचार केलक। परसू सँझुका गाड़ी सभ पकड़त। दिल्लीक लड्डूक बात फेकुआकेँ बूझल। तँए खाइक मन रहए। अवसर भेटल छेलै। किएक तँ ने गाड़ीमे टिकट लागत आ ने संगबेक कमी। मात्र चारि दिनक खेनाइटा अपन खर्च। गाड़ीमे लोक बेसी खाइतो नै अछि किएक तँ पेशाब-पैखानाक समस्या रहै छै। फेकुआ माएकेँ कहलक-

"माए, परसू दिल्ली जेबौ। बटखर्चाक ओरियान कऽ दिहेँ?"

माए पुछलकै-

"की सभ लेबही?"

"दू सेर चूड़ा लऽ कऽ डाक्टर साहैब-नागेंद्रजी चलैले कहलखिनहेँ। हमरो दू सेर चूड़ा कूटि दिहेँ।"

फेकुआक बातक बिसवास माएकेँ नै भेलै। मोने-मन सोचलक जे दू सेर चूड़ा तँ एक दिनमे लोक खाइए। चारि दिन केना पुरतै? फेर मनमे एलै, दू सेर चूड़ो आ चारि-दुना आठटा रोटीओ पका कऽ दऽ देबै। कहुना भेल तँ रोटी सिद्ध अन्न भेल।

गाड़ी अबैसँ पहिनइ जुलुस संग फेकुआ स्टेशन पहुँचल। जिनगीक पहिल दिन फेकुआ ट्रेन-गाड़ीमे चढ़त। प्लेटफार्मपर भीड़ देखि फेकुआक मन घबड़ेबो करए आ उत्साहो जगै जे एते लोक चढ़त से हेतै आ हमरा बुते की नै चढ़ि हएत। निर्मली-सकरी बीच छोटी लाइन। गाड़ीओ छोटकीए। मुदा सकरीसँ दिल्ली लेल गाड़ीओ बड़की आ लाइनो बड़की। गाड़ीमे चढ़ि फेकुआ सकरी पहुँचल। दिल्लीक गाड़ी सकरीमे लगले रहए। हाँइ-हाँइ कऽ निर्मलीक गाड़ीसँ उतरि दिल्लीवाली गाड़ीमे सभ चढ़ल। गाड़ी खुजल।

ओना सकरीसँ दिल्ली जाइले चौबीस घंटा लगैत। मुदा आइ से नै भेल। चालीस घंटामे पहुँचल। मुदा चालीस घंटा केना बितल से फेकुआ बुझबे ने केलक। हलहोरिएमे पहुँच गेल। ने एक्को बेर खेलक आ ने पानि

पीलक। मुदा तैयो भुख बुझिए ने पड़ैए। गाड़ीसँ उतरै काल फेकुआ खिड़की देने प्लेटफार्म दिस तकलक, जेरक-जेर सिपाही घुमैत। मुदा फेकुआक नजरि केतौ नै अँटकि, मोटका सिपाहीपर अँटकल। ओकर मनही पेटपर नजरि गेलै। तैपर सँ छह आँगुर चाकर ललका बेल्ट। जे बेर-बेर निच्चाँ ससरैत। चानिपर सँ पसीनाक टघार। दस किलोक बन्दुक कान्हमे लटकल। मुदा तखने नागेन्द्रजी सेहो अपन छबो संगी संग हाथसँ सभकेँ उतरैक इशारा दैत। औगता कऽ फेकुओ उतरल।

प्लेटफार्म टपि जहाँ फेकुआ मुसाफिर खाना प्रवेश करए लगल आकि ममियौत भायपर नजरि गेलै। ममियौत भाय रतना चरिपहिया गाड़ीक ड्राइवर। अपना मालिककेँ गाड़ी पकड़बैले आएल। भायपर नजरि पड़िते फेकुआ गोड़ लगलक। गोड़ लगि लालकिला मैदान दिसक रस्ता धेलक। पाछूसँ झटकि कऽ आगू बढ़ि रतना फेकुआसँ घरक कुशल पुछलक। कुशलक जवाब नै दऽ फेकुआ कहलक-

> ''काल्हि साँझ धरि लालकिला मैदानमे रहब तँए ओत्तै अबिहऽ। अखनि नै रूकबह।''
>
> ''कनी चाहो पीब ने ले?''
>
> ''नै अखनि कुछो नै पीबह।''

फेकुआ बढ़ि गेल। मुदा रतनाकेँ पाछू घुमैक डेगे ने उठैत। फेकुए दिस तकैत। मोने-मन विचारए लगल, जे हो-ने-हो काल्हि भेँट नै हुअए। ओते लोकमे के केतए रहत तेकर कोन ठीक। तहूमे सँझुका बात कहलक। दिल्ली छिऐ। कोन ठीक जे बिजलीक इजोत रहतै की नै। एते लोकमे तँ दिनोमे अन्हराएले रहत। एक्को दिन मेजमानीओ ने करौलिऐ। गाममे दीदी सुनत तँ की कहत? ओ की कोनो दिल्लीकेँ दिल्ली बुझैत हएत। ओ तँ गामे जकाँ बुझैत हएत। जहिना गाममे सभकेँ सभ चिन्है छै तहिना। मुदा ई तँ दिल्ली छी। भाड़ाक एक कोठरीमे सोहर गौल जाइ छै आ दोसरमे कन्नारोहट होइ छै...।

विचित्र स्थितिमे रतना पड़ि गेल। आइ धरि रतनाक बुधिपर एहेन भार कहियो नै पड़ल। एकाएक मनमे एलै, कौल्हुका छुट्टी लऽ कऽ भोरे फेकुआक भेँट करब। भेँट भेलापर लालकिला, जामा मस्जिद देखा देबै।

दोसर दिन भोरे रतना फेकुआक भेँट करै विदा भेल। लालकिला मैदान पहुँचिते भेँट भऽ गेलै। भेँट होइते दुनू भाँइ गामेक बसिआ रोटी खा पानि पीलक। भरि दिन संगे, रैली समाप्त कऽ दुनू गोटे डेरापर आएल। पैघ सेठक ड्राइवर रतना, तँए डेरो नीक। सभ सुविधा। मुदा रतनाक डेरासँ फेकुआक मनमे खूब खुशी नै भेलै। मन पड़ि गेलै माएक ओ बात जे हरिदम बजैत-

"अनकर पहिर कऽ साज-बाज छीनि लेलक तँ बड़ लाज।"

अपना जएह रहए ओइसँ सबुर करी। मुदा माएक बात फेकुआक मनमे बेसी काल नै अँटकल। किएक तँ तीन दिनसँ नहाएल नै छल। जइसँ देहमे लज्जतिए ने बूझि पड़ै। रतनाकेँ कहलक-

"भैया, पहिने हम नहेबह। बिनु नहेने मन खनहन नै हएत। ओना ओँघीओ लगल अछि। तँए नहा कऽ खेबह आ भरि मन सुतबह।"

फेकुआकेँ रतना बाथरूम देखा देलक। बिजली जरैत, पानि चलैत बाथरूम देखा रतना गैस चुल्हि पजारि भानस करए लगल। भरि मन फेकुआ नहाएल। मन शान्त भेलै। मनमे उठलै, जहन दिल्ली आबि गेलौं तँ किछु लइए कऽ जाएब। रतना लग आबि बैसल। भानसमे देरी देखि रतना कहलकै-

"बौआ देखही, ई दिल्ली छिऐ। ऐठाम लोक सोलह-सोलह घंटा खटैए। दरमाहा संग ओभरटाइमोक पाइ भेटै छै। मुदा जिनगी जीबैक लूरि नै रहने सभ चलि जाइ छै। ने गामक कर्जसँ मुक्ति होइ छै आ ने अहीठाम चैनसँ रहैए। भुतलग्गु जकाँ हरिदम बूझि पड़तौ। तोरा ऐ दुआरे कहि दइ छियौ जे तूँ अपन छोट भाए छँह।"

रतनाक बात सुनि कनीकाल गुम रहि फेकुआ कहलक-

"भैया, तूँ सभ तरहे पैघ छहक। जहन तोरा लग छी तँ तोहीं ने हमर नीक-बेजाए बुझबहक।"

फेकुआक बातसँ रतनाकेँ अपन जिम्माक भार बूझि पड़लै। बाजल-

"देखही बौआ, अखनि जे कहलियौ से स्टील फैक्ट्रीक स्टाफक बात कहलिऔ। मुदा सभ एहने अछि सेहो बात नै छै। एहनो लोक अछि जे अपन मेहनति आ लूरिसँ गरीब रहितो अमीर बनि गेल। अपने इलाकाक ढोरबा छी। जेकरा हम तँ ढोरबे कहै छिऐ मुदा ओ ढोढ़ाइबाबू बनि गेल। जहन गामसँ आएल तँ बौआ-ढहना कऽ चारि दिन पछाति ऐठीम आएल। ओकरा शैलूनमे नोकरी लगा देलिऐ। किछु दिन तँ काज करैमे लाज होइ। किएक तँ ओ धानुक छी। मुदा किछुए दिनक पछाति तेहेन हाथ बैस गेलै जे लौओकेँ उन्नैस करए लगल। अपनो खूब मन लागए लगलै। दरमहो बढ़ि गेलै। तीन साल पछाति जेना ओकरा ऐठीमसँ मन उचटि गेलै। सोचलक जे जहन लूरि भऽ गेल अछि तहन केतौ कमा कऽ खा सकै छी। से नै तँ गामेक चौकपर दोकान खोलब। अपना जँ दू पाइ कम्मो हएत तइसँ की, समाजक उपकार तँ हेतै। सएह केलक। ले बलैया, गामक लोक कियो ठाकुर तँ कियो नौआ तँ कियो हजमा कहए लगलै। घरक जनिजातिकेँ नौआइन कहए लगलै। सभसँ दुखद घटना तहन भेलै जहन कथा-कुटुमैती आ जातिक काजसँ अलग कएल गेलै। मुदा ऊहो कर्म-योगी। गामकेँ प्रणाम कऽ अपन परिवार संग दिल्ली शहर चलि आएल। वाह रे वनक फूल, ऐठाम आबि कऽ अपन शैलूनक कारोबार ठाढ़ कऽ लेलक। छअटा स्टाफ रखने अछि अखनि। बहिनक बिआह इंजीनियरसँ केलक। हमहूँ बिआहमे रहिऐ।"

फेकुआ बाजल-

"हमरो कोनो लाज-सरम नै हएत। जे काजमे लगा देबह, हम पाछू नै हटबह।"

रतना-

"परसू रवि छिऐ। हमरो छुट्टी रहत। ताबे दू दिन अरामे कर।"

फेकुआ-

"हमरा ओते सूतल नीक नै लगतअ। चलि जेबह बुलैले।"

रतना-

"रौ बुड़िबक! गाममे लोक खिस्सा कहै छै जे फल्लां तेहेन काबिल छै जे एक्के पाइमे बेचि लेतौ। मुदा ऐठीम सभ काबिले छै। तँए देखबिही जे ऐठीम सभसँ पैघ कारबार मनुक्खेक खरीद-बिकरीक छै। देहाती बूझि कोइ ठकि कऽ बेचि लेतौ। कहतौ जे हवा-जहाजक नोकरी धड़ा देबौ आ चलि जेमए आन देश।"

रतनाक बात सुनि फेकुआ क्षुब्ध भऽ गेल। मुदा मनमे एलै, जेना हम बेदरा रही तहिना भैया कहैए। मुदा किछु बाजल नै। दम साधि कऽ रहि गेल।

तीन दिनक पछाति फेकुआ कपड़ा सिलाइक टेलरमे काज शुरू केलक। दू हजार रूपैआ दरमाहा। भिनसर छह बजेसँ राति नअ बजे धरिक डयूटी। बीचमे एक बेर अदहा घंटा जलखै करैले आ एक घंटा खाइ बेर छुट्टी। फेकुआक मनमे उठल जे ड्यूटी तँ बीसो घंटा कऽ सकै छी मुदा सुतैक जे आठ घंटा छै से केना पुरत। मुदा फेर मनमे एलै, जहन दू पाइ कमाए चाहै छी तहन तँ सभ सुख-भोग कमबए पड़त...।

दोकानमे आठटा कारीगर। आठो नोकरे। फेकुआ अनारी, तँए दोकानक झाड़-बहारसँ काज शुरू केलक। कपड़ा काटब आ सिलाइ मशीन चलौनाइ सेहो कनी-कनी सीखए लगल।

दुइए माए-बेटा फेकुआ। दस साल पहिनइ बाप मरि गेल। अपने दिल्ली धेलक आ माए गाममे। मुदा माएओ थेहगरि। पुरुखे जकाँ बोनि-बुत्ता करैत। नोकरी होइते फेकुआकेँ माए मन पड़लै। माइए नै गामो मन पड़लै। मन पड़ल गामक स्मृति। माएक ममता जागि मनकेँ खोरए लगलै। मनमे उठलै, परदेशिआ परिवारमे गेटक-गेट कपड़ा.., राशि-राशिक चीज-बौस.., रेडियो, घड़ी, टी.भी, मोबाइल इत्यादि। केकरा नै नीक वस्तुक सिहन्ता होइ छै? मुदा ओहेन सिहन्ते की जेकरा पुरबैक ओकातिए ने रहए? दू हजार महिना रूपैआक गरमी फेकुआक मनमे तरे-तर चढ़ि

गेल। केना नै चढ़ैत? मुदा आमदनिएक गरमी चढ़ल, खर्चक पानि परबे ने कएल। सोचलक जे सभसँ पहिने माएकेँ चिट्ठी लिखि जना दिऐ।

आठ दिन पछाति फेकुआ रतनाकेँ कहलक-

"भैया, हमरा तँ लिखल-पढ़ल नै होइए। मुदा जहन नोकरी लगि गेल तँ माएकेँ जनतब देब जरूरी अछि। किएक तँ ओकरा होइत हेतै जे केतए बौआइ-ढहनाइए।"

रतनोक मनमे जँचल। वी.आइ.पी. बैगसँ पोस्ट-कार्ड निकालि रतना चिट्ठी लिखैले तैयार भेल। पुछलक-

"बाज की सभ दीदीकेँ लिखबीही?"

फेकुआ लिखबए लगल-

स्थान- दिल्ली

ता.- ०५.०६.२००७

माए,

गोड़ लगै छियौ,

भगवानक दया आ तोरा सबहक असीरवादसँ तेहेन नोकरी भेटल जे कहियो मनमे नै आएल छल। दू हजार रूपैआ महिनाक तलब। अपना केते खर्च हएत। जे उगड़त से मासे-मास पठा देबौ। बेङबाकाकाकेँ कहियनि जे चिमनीपर जा कऽ ईंटाक दाम बूझि अबैले। पहिने घर बना लेब। अपना कलो नै छौ, सेहो गड़ा लेब। घरक आगू जे मलिकाबाक चौमास छै, ऊहो कीनि लेब।

तोरे फेकुआ।

सात बजे भिनसर। मेघौन समए। कखनो-कखनो सुरूज देखि पड़ैत आ फेर झँपा जाइत। झिहिर-झिहिर पुर्बा हवा चलैत। पान-छह गोटे संग फेकुआक माए रामसुनरि धन-रोपनी करए विदा भेल। किछुए आगू बढ़लापर डाक-प्यूनकेँ देखलक। मुदा आन स्त्रीगण जकाँ रामसुनरि नै जे दिनमे दू बेर मोबाइलसँ तीन पन्नाक चिट्ठी आ तैपर सँ जे समदिया भेटल ओकरा दिया समाद पठौत। मनमे कोनो हलचल नै। रामसुनरिक

आगूमे आबि हँसैत डाकप्यून कहलक-

“काकी, फेकुआक चिट्ठी एलौहें।”

कहि झोरासँ निकालि पोस्ट कार्ड देलक। छबो स्त्रीगण डाकप्यूनकेँ चारू भागसँ घेरि कऽ ठाढ़ भेल। हाथमे पोस्ट-कार्ड अबिते रामसुनरिक मन बिहाड़िमे उड़ैत ओइ सूखल पात जकाँ जे सरंगोलिया उठि अकासमे उड़ैत, तहिना उड़ि गेल। जिनगीक पहिल पत्र। मनमे एलै, पहिने केकरोसँ पत्र पढ़ा ली। ओना डाकप्यून लगमे सँ चलि गेल। मुदा तेकर अपशोच नै भेलै। किएक तँ जाधरि प्यून लगमे छल ताधरि पत्र पढ़ेबाक विचार मनमे आएलो नै छेलै। फेर मनमे एलै, काज कामै नै करब। अखनि खूटमे बान्हि कऽ रखि लइ छी आ जहन निचेन हएब तहन पढ़ा लेब। सएह केलक।

गोसाँइ डुमैत रामसुनरि निचेन भेल। निचेन होइते चिट्ठी पढ़बै लऽ श्याम ओइठाम विदा भेल। श्यामोक घर लगे। पोस्ट-कार्ड हाथमे लऽ श्याम सत्यनारायण कथा जकाँ पढ़ए लगल। मुदा दोसरे पाँति- दू हजार रूपैआ महिना तलब- मे रामसुनरि ओझरा गेलि। मोने-मन सोचए लागलि, छौड़ाकेँ घरक सोह एलै। बुधिओ फुटैक उमेर भेल जाइ छै। आब कहिया चेतन हएत। अगिला साल तक बिआहो कइए देबै। असगरे राकश जकाँ अँगनामे रहै छी। लगले विचार बदलि गेलै। बुदबुदाए लागलि- केना लोक कहै छै जे मसोमातक बेटा दुइर भऽ जाइ छै। विचारमे डुमल रामसुनरि। तैबीच श्याम बाजल-

“सभ बात बुझलिऐ ने काकी?”

श्यामक पुछबसँ रामसुनरिक भक्क खुजल। बाजलि-

“बौआ, चिट्ठी पढ़ल भऽ गेलह। की सभ छौड़ा लिखने अछि?”

काकीक मनक बात नै बूझि श्याम खौंझा गेल। मुदा किछु बाजल नै। चिट्ठीकेँ निच्चाँमे रखि श्याम ओहिना मुहजुआनीए कहए लागल। मुदा पोस्ट-कार्डकेँ निच्चाँमे राखल देखि वेचारी रामसुनरिकेँ भेलै जे अपने दिससँ कहैए। जइसँ विश्वासे ने भेलै। मुदा झगड़ो करब उचित नै बुझलक। किएक तँ बेटाक पहिल चिट्ठी छी तँए अशुभ बेवहार नीक नै।

दोसर दिन एकटा पोस्टकार्ड कीनि रामसुनरि चिट्ठी पढ़बैओ आ लिखबैओ लेल सोहन ऐठाम गेलि। दुनू पोस्टकार्ड- लिखलहो आ सदो- रामसुनरि सोहनकेँ दैत कहलक-

''बौआ, पहिने पढ़ि कऽ सुना दैह। तहन लिखिओ दिहऽ।''

पत्र पढ़ि कऽ सोहन सुना देलकै। समाचार सुनि रामसुनरिक मन खुशीसँ उत्साहित भऽ गेलै। बाजलि-

''बौआ आब चिट्ठी लिखि दियौ। सोहन चिट्ठी लिखए लगल-

परमानपुर
ता. ०३.०७.२००७
फेकू।
असीरवाद।

अखनि हम अपने थेहगर छी तँए हम्मर चिन्ता जुनि कर। रहैले घरो अछिए। एक घैल पानि स्कूलबला कलपर सँ लऽ अबै छी वएह भरि दिन चलैए। तँए पानिओक दिक्कत नहियेँ अछि। नहाइले धारो आ पोखरिओ अछि। कहियो-काल बर्खोमे नहा लइ छी। तँए ऐ सभले तूँ चिन्ता किए करै छेँ? अखनि खाइ-खेलाइक उमेर छौ। तँए कमा कऽ जे मन फुड़ौ से करिहेँ। अगिला साल धरि अबिहेँ, बिआहो कऽ देबौ। असगरे अँगनामे नीक नै लगैए।

माए, रामसुनरि।

साल भरि बित गेल। जहिना गाममे रामसुनरि अपना काजमे हराएल तहिना दिल्लीमे फेकुओ। साले भरिमे फेकुआ कपड़ा सिलाइक कारीगर बनि गेल। अपना देहक कपड़ा-लत्ता किनैत-किनैत फेकुआक सालो भरिक दरमाहा सठि गेल। माएक जिनगी तँ जहिनाक तहिना रहल मुदा फेकुआक जिनगीमे बदलाउ आएल। दुब्बर-दानर फेकुआ फूटि कऽ जुआन भऽ गेल। कपड़ा सिआइक लूरि भेने आत्मबलो मजगूत भेलै। मुदा गामक जिनगी आ दिल्लीक जिनगीक बीचक संघर्ष फेकुआक मनमे चलिते रहल।

रवि दिन। रतनो आ फेकुओक छुट्टी रहए। सूति उठि दुनू

ममियौत-पिसियौत विचारलक जे साल भरिसँ बगेरी नै खेलौं। से नै तँ आइ बगेड़ीए आनब। तैबीच रोडपर देखलक जे पुलिसक गाड़ी इम्हरसँ-इम्हर कऽ रहल छै। दुनू भाँइकेँ कोनो भाँजे ने लगै। कोठरीसँ निकलि रतना चाहबलासँ पुछलक। चाहबलासँ भाँज लगलै जे महल्लासँ एकटा जुआन लड़की आ एकटा सेठक बेटाक अपहरण रातिमे भऽ गेलै। समाचार सुनि दुनू भाँइ डरा गेल। बगेरीक विचार छोड़ि गामक गप-सप्प करए लगल।

रतना बाजल-

> "बौआ, तोरा साल लगि गेलह। एक बेर गाम जा सबहक भेँट केने आबह।"

गामक नाओं सुनिते फेकुआक मन उड़ि कऽ दोसर दुनियाँमे पहुँच गेलै। मन पड़लै- चिमनीक ईंटा.., चापाकल.., घरक आगूक चौमास...।

मन गामक सीमापर अँटकि गेलै। सीमापर सँ अँगना पहुँचैक साहसे ने होइ। किएक तँ बाटेपर माएकेँ ठाढ़ भेल देखए। की कहैत हएत माए? साल भरि भऽ गेलै, ने एक्कोटा पाइ पठौलक आ ने एक्को खण्ड साड़ी। कहियो काल जे अस्सक पड़ैत हएत तँ के दबाइओ आनि कऽ दैत हेतै। पौरुकाँ जे चिट्ठी आएल, तइ दिनसँ दोसर चिट्ठीओ ने आएल हेन। हमहूँ तँ नहियेँ पठौलिऐ। छुच्छे चिट्ठीए लिखने की हेतै। मोने-मन बुढ़िया सरापैत हएत। कहैत हएत जे छौंड़ा ढहलेलक ढहलेल रहिए गेल। मुदा हमहीं की करब? छुच्छे हाथे गामे जा कऽ की करब? टिकटो जोकर पाइ नइए। चिन्ता आ सोगसँ फेकुआक मन दबा गेल। कोनो बाटे ने सुझैत। मनक भीतर बिर्ड़ो उठि गेलै। बिर्ड़ोक हवामे फेकुआक मन सोंगक तरसँ निकलि गेल। मनमे एलै, गाम तँ गाम छी। जैठाम लोक माघक शीतलहरी आगि तापि कऽ काटि लइए। बिनु कम्मल-सीरकक जाड़ बिता लइए, गाछ तर जेठक रौद काटि लइए। मुदा दिल्लीमे से हएत? साल भरिक कमाइ साल भरिक मौसिमक अनुकूल कपड़ेमे चलि गेल। नै लैतौं तँ सेहो नै बनैत। लेलौं तँ गाम छूटि गेल। जहिना घनघोर वादलक फाँटसँ सुरूजक रोशनी छिटकैत तहिना फेकुओक मनमे भेल। रतनाकेँ कहलक-

"भैया, एकटा चिट्ठी लिखि दैह।"

लगेमे रतनाकँ सभ किछु छेलै। पोस्ट-कार्ड निकालि लिखैले तैयार भेल। फेकुआ लिखबए लगल-

दिल्ली

ता. ११.०८.२००८

माए,

गोड़ लगै छियौ।

मनमे बहुत रहल हेतौ जे तोरो बेटा दिल्लीमे नोकरी करै छौ। मुदा सभ हरा गेल। खाली एक्केटा चीज बँचल जे ऐठाम -दिल्लीसँ, ओइठाम-गाम धरि जीबैक रस्ता धड़ा देत। तँए खुशी अछि। हाथ खाली अछि। गाम केना आएब?

फेकुआ।

चारिए दिनमे चिट्ठी माएक हाथ पहुँचल। चिट्ठी हाथमे अबिते रामसुनरि निङहारि-निङहारि देखए लागलि। छौड़ा केतौ अछि जीबैत तँ अछि। बेटा धन छी। केतौ रहऽ। आब तँ फूटि कऽ जुआन भऽ गेल हएत। जहिना चाह-पान खा-पी बड़का लोकक धोधि फूटि जाइ छै, तहिना तँ फेकुओकँ भेल हएत। किएक तँ ऊहो ने चाह-पान खाइत-पीबैत हएत। गोराइओ गेल हएत। मोछो-दाढ़ी भऽ गेल हेतै। जहिना भगवान घरसँ पुरुख उठा लेलनि, तहिना तँ फेर दैयो देलनि। जुआन बेटापर नजरि पहुँचिते रामसुनरिक मन खुशीसँ नाचि उठलै। मोने-मन बुदबुदाए लागलि-

> "दस बर्खसँ घरमे पुरुख नै छल तँए कि कोनो पुरुखक घरसँ हमर घर अधला चलल। संतोषे गाछमे मेबा फड़ैए।"

परसुका बात मन पड़लै, चाहक दोकानपर परसू पंडीजी कहैत रहथिन जे ऐ बेर शुरूहे अगहनसँ घन-घनौआ लगन अछि। हमहूँ फेकुआक बिआह कइए लेब। बिआह मनमे अबिते सोचलक, बहुत दिनसँ पाँच गोटेकँ अँगनामे हाथो नै धुऐलौं। सेहो कइए लेब। समाजक भोजमे तँ नै सकब मुदा जहाँ धरि सकरता हएत, तइमे पाछुओ नै हटब। लोक

ई नै बुझै जे मसोमातक बेटाक बिआह होइ छै। डफरा-बौसली हवागाड़ी सेहो लइए जाएब। अनका जकाँ एक ढकियाक मुँह नै पसारब। अपना बेटी-जमाएकेँ जे देत से देत। हम किए मंगिऔ। जे आदमी पोसि-पालि कऽ एकटा मनुख देबे करत तेकरासँ फेर की मंगिऔ? किछु नै मंगबै। लूरि रहत तँ कामधेनु बना कऽ राखब नै तँ माटिक मुरूत रहत। एकाएक रामसुनरिक नजरि चिट्ठीपर पहुँचल। पोस्ट-कार्ड निकालि हियासि-हियासि देखए लगली। फुटा-फुटा करिया अक्षर तँ नै बुझैत मुदा कृष्ण जकाँ कारी मुरूत जरूर बूझि पड़ैत। चिट्ठी पढ़ाबै लऽ रामसुनरि विदा भेल। अँगनासँ निकलिते मनमे उठलनि, आब की कोनो पहुलका जकाँ लोककेँ बारह बर्ख कटिया सोन्हबए पड़ै छै। आब तँ साले भरिमे लोककेँ धिया-पुता भऽ जाइए। कहुना भेल तँ हमरो फेकुआ शहरे-बजारक भेल किने। एते बात मनमे अबिते मुहसँ हँसी निकलल। असगरे। तँए कानकेँ सुनै दुआरे तेना रामसुनरि जोरसँ बजैत जेना दोसरकेँ कहैत होइ। फुसीयाहोक बेटी जुग जितलक। भाग तँ मुँह-कान नीक नै छै। नै तँ जुगमे भूर करैत। बिआहक आठमे मासमे बेटी भऽ गेलै। ई तँ धैनवाद ऐ समाजकेँ दी जे एक सूरे सभ बाजल जे सतमसुआ बच्चा छिऐ। जँ एना बिआहक बिदागरीमे हएत तँ केहेन होएत? मुदा ओ बच्चा सतमसुआ नै। समाज झूठो बाजि ओकरा पालन-पोसन कऽ बचेलक।

रविक दरबज्जा लग अबिते रामसुनरिक नजरि चिट्ठीपर पहुँचल। रवि दरबज्जेपर बैसि किछु लिखै छल। रामसुनरिकेँ लग अबिते रबि उठि कऽ चौकीपर बैसबैत पुछलक-

> "काकी फेकू भैयाक बिआह कहिया करबीही? हमहूँ बरियाती जेबौ?"

रविक बात सुनिते रामसुनरिक मन वृन्दाबनक रास लीलापर पहुँच गेल। कनीए खान कृष्णक रास-लीला देखि घूमि कऽ आबि चिट्ठी पढ़बो आ लिखबो लेल रबिकेँ कहलक। चिट्ठी पढ़ि कऽ रबि सुना देलक। पत्र लिखैले तैयार होइत बाजल-

> "की सभ लिखब?"

रामसुनरि लिखबए लागलि-

परमानपुर

ता. १५.०८.२००८

बौआ फेकू।

हम तोरा कमाइक कोनो आशा केने छी जे पाइ नै छौ तँ गाम केना ऐमे? केकरोसँ पैंच-खोंइच लऽ कऽ चलि आ। तीन भुरकुरी धान-गहुम रखने छी, वएह बेचि कऽ दऽ देबै। आब तहूँ चेतन भेलेँ। लोक कलंक जोड़त। हमरो आब ऐ दुनियाँमे नीक नै लगैए। तँए सोचै छी जे अपन काज जल्दी पुरा ली। अगते अगहनमे चलि अबिहेँ। ताबे कनियाँ ठेमा कऽ रखबौ। अखनि हमहूँ थेहगर छी मुदा ऐ जिनगीक कोन ठेकान छै। आब ई परिवारो आ दुनियाँ तोरे सबहक ने हेतौ। समैपर चलि अबिहेँ, जइसँ काज बिथुत ने होउ।''

माए ।

माएक पत्र सुनि फेकुआ मोने-मन खूब खुशी भेल। मनमे भेलै, हमरो काज ऐ दुनियाँ, ऐ समाजमे छै। मुदा मनमे खुशी बेसी काल टिकलै नै। लगले माघक कुहेस जकाँ बुधि अन्हरा गेलै। कोन मुँह लऽ कऽ गाम जाएब। साल भरिक कमाइ माएक हाथमे की देबै। ई बात सत्य जे हमरा भरोसे माए नै जीबैए। मुदा हमरा ओकर कोनो दायित्व नै अछि, सेहो तँ नै। हे भगवान कोनो गर सुझाबअ।

पनरहे दिनक पछाति एकटा घटना घटल। फेकुआक नोकरी छूटि गेल। ओना नओ गोटे संग फेकुआ काज करैत। मुदा आठो पुरना कारीगर समयानुसार अपनाकेँ बदलैत जाइत रहए नव-नव डिजानिक कपड़ा सिबैक लूरि सिखैत छेलए। फेकुआ अनाड़ी, तँए शुरूहसँ सिलाइक काज सिखए पड़लै। साल भरिमे कहुना कऽ पुरना दिल्लीक कारीगर बनल। मुदा फैशनमे बिहाड़ि एने फेकुआ उड़ि कऽ कातमे खसल। ओना मालिकोक मनमे बेइमानी घोंसियाएल रहए। बेइमानीक कारण छल पाइबलाक चसकल मन। एकटा अट्ठारह बर्खक लड़की कारीगर दू हजार दरमाहामे भेँट गेलै।

सबा बर्खसँ शहरमे रहैत-रहैत फेकुओक सूतल बुधि जागि कऽ करोट लिअ लगलै। जइसँ आत्मबलोक जनम भऽ चुकल छेलै। मुदा खिच्चा। सक्कत बनिए रहल छेलै। जहिना मालिक नोकरीसँ हटैक बात

कहलकै तहिना फेकुआ हिसाब मंगलक। हिसाब लऽ फेकुआ डेरा विदा भेल। पाइ रहबे करैए। रस्तेमे कॉफी पीब डेरा आएल। डेरा आबि पंखा खोलि पलंगपर ओंघरा गेल। ओंघराइते मनमे आबए लगलै- ई शहर छी, गाम नै। शहरमे जइ तेजीसँ मशीन, फैशन आ जीवन-शैली बदलि रहल अछि, ओइमे हमरा सन-सन मुरूखक कोन बात जे पढ़लो-लिखल लोक ओंघरनियाँ देत। नवका मशीन पुरना इंजीनियरकेँ धक्का देत। पुरना बुधिकेँ नवका बुधि धक्का देत। मुदा नीक-अधला के बूझत? सभ भोग-विलासक जिनगीक पाछू आन्हर बनि गेल अछि। बाप रे! ई तँ भुमकमक लक्षण छी। फेर मनमे एलै, भरिसक हमर माथ, नोकरी छुटने तँ ने चढ़ि गेल। ओह! अनका विषएमे अनेरे ओझराइ छी। जेकरा भोगए पड़तै ओकरा सुआस बूझि पड़ै छै, तँ हमरे की। ठनका ठनकै छै तँ कियो अपना माथपर हाथ लऽ साहोर-साहोर करैए। फेर मनमे एलै, हमहूँ तँ जूड़शीतलक नढ़िए जकाँ भेल छी। एक दिस चारूभागसँ कुकुर दाँतसँ पकड़ि-पकड़ि तीड़ैए तँ दोसर दिस शिकारी सभ लाठी बरिसबैए। गामक लूरि सीखलौं नै, सीखि लेलौं शहरक लूरि। तँ लिअ आब। क्विन्टलिया बोरामे भरि-भरि रखने जाउ। फेकुआक मन औनाए गेल। दुबट्टिएमे हरा गेल। तिनबटिया-चारिबट्टिया तँ बाँकीए अछि। माएपर तामस उठलै। बुदबुदाए लगल-

> ''ई बुढ़िया गछा लेलक जे शुरूहे अगहनमे चलि अबिहेँ। कनियाँ ठेमा कऽ रखबौ। बिआह कइए देबौ।''

एक दिस केचुआएल कनियाँक बदलैत रूप तँ दोसर दिस माएक सिनेह। समुद्रक पानि जकाँ फेकुआक मनकेँ अस्थिर कऽ देलक। सोचए लगल जे माए नीक छोड़ि कहियो अधला नै केलक आ ने कहियो सोचलक, ओकरापर आँखि उठाएब अनुचित छी। काल्हिए गाम चलि जाएब। बिआहो कइए लेब। दू गोटे पति-पत्नी ओहेन लोक एकठाम हएब जे किछु कऽ सकैए।

फेकुआ दू-पाइक आशा हृदैमे समेटि सँझुका गाड़ी पकड़ि, तेसर दिन गाम पहुँच गेल।

OOO

बोनिहारिन मरनी

छोट-छीन गाम छतौनी। तीनिए जातिक लोक गाममे। साइए घरक बस्तीओ। छेहा बोनिहारक गाम। ओना पास-परोसक गामक लोक छतौनीकेँ प्रतिष्ठित गाम नै बुझैत। किएक तँ ओइ गाम सबहक लोकक विचारे प्रतिष्ठित गाम ओ होइत जइमे छत्तीसो जातिक लोक बसैत। जइसँ समाजक सभ तरहक जरूरतिक पूर्ति गामेमे होइत। मुदा से छतौनीमे नै। तँए छतौनी जमाबंदी गाम भऽ सकैए, प्रतिष्ठित नै। मुदा ऐ विचारकेँ छतौनीक लोक मानैले तैयारे नै। छतौनीक लोकक कहब जे जहियासँ हमर गाम बनल तहियासँ ने कहियो अपनामे झगड़ा-झंझटि भेल आ ने मारि-पीट। जइसँ ने कहियो कियो कोट-कचहरी देखलक आ ने थाना-बहाना। तेतबे नै, तीन जातिक लोक रहितो सभ मिलि-जुलि एकठाम बैसि खेबो-पीबो करए आ तीन जातिक तीनू देवस्थानमे पूजो-पाठ करैए आ परसादीओ खाइए। सभ जातिक लोक संगे-संग कमेबो करैए आ एक-दोसराकेँ मौका-मोसीबत पड़लापर, संगो पूरैए। आन-आन गामबला छतौनीकेँ ऐ दुआरे गाम नै मानैत जे ओ सभ बहरबैया छी आ हमरा सबहक पूर्वज अदौसँ रहल अछि।

छतौनीवासी सभ दिनसँ बोनिहारे नै रहल अछि। पहिने एकरो सभकेँ अपन-अपन खेत-पथार छेलै। खेत-पथार गेलै केना? ऐ सम्बन्धमे छतौनीक बूढ़-बुढ़ानुस लोकक कहब छन्हि, हमरा सबहक पूर्वज रौदीक चलैत खेतक बाँकी-मालगुजारी राज दरभंगाकेँ समैपर नै दऽ सकलनि, तहीसँ ओ सभ जमीन निलाम कऽ अबधिया, छपरिया हाथे बेचि लेलक। हमरा सबहक जमीनक मलिकाना हक खतम भऽ गेल। अबधिओ आ छपरिओ राजमे नोकरी करै छेलै जे ऐ इलाकामे आबि जमीनो हथिया लेलक आ मुखिओ सरपंच बनि मैनजनी करैए। मुदा एकटा चलाकी ओ सभ जरूर केलक जे जेना अंग्रेज आबि सत्ता हथिऔलक तेना चलि नै गेल बल्की मुगल जकाँ बसि गेल।

जहियासँ देश अजाद भेल आ सत्ता लेल भोट-भाँट शुरू भेल, तहिएसँ ने एक्कोटा कोनो पार्टीक नेता भोट मंगैले ऐ गाम आएल आ ने एक्को बेर गौआँ भोट खसौलक। किएक तँ आइ धरि छतौनीमे भोटक बूथ

बनबे ने कएल। तँए नेतो किए औत? गाममे ने चरिपहिया गाड़ी चलैक रस्ता छै आ ने सार्वजनिक जगह स्कूल-अस्पताल, जैठाम भाषण-भुषण हएत। जइ गाममे छतौनीक बूथ बनैत ओइ गामक लोक सभ छतौनीओक भोट खसा लैत। छतौनीक लोकक जिनगीओ छोट। ने पढ़ै-लिखैक झंझटि, ने चोर-चहारक झंझटि आ ने रोग-बियादिक झंझटि । किएक तँ गामक सभ बुझैत जे जेकरा कपारमे विद्या लिखल रहत ओ डुमिओ-मरि कऽ पढ़िए लेत। चोर-चहार एबे कथीले करत। रोग-बियाधि लेल पूजो-पाठ आ झाड़ो-फूक अछिए। तहूसँ पैघ बात जे जे ऐ धरतीपर रहैले आएल अछि ओ जीबे करत। पानि, पाथर, ठनका ओकर कथी बिगाड़ि लेतै। आ जे नै रहैबला अछि ओकरा फूलोक गाछपर साँप काटि लेतै आ मरि जाएत...।

तँए की, छतौनीबलाकेँ भगवानपर बिसवास नै छै? जरूर छै। जँ से नै रहितै तँ देवस्थानमे सालमे एक बेर एते धुमधामसँ पूजा किए करैए? उपास किए करैए? दसनमो स्थान -देवस्थान- आ अपनो-अपनो घरमे गोसाउनिक पीड़ी किए बनौने अछि? साले-साल कामौर लऽ कऽ बैजनाथ किए जाइए?

सभ अभाव रहितो छतौनीक लोक हँसी-खुशीसँ जीवन बितबैए। अगर जँ कियो गाममे मरैत वा साँप-ताँप कटैत आकि आगि-छाइ लगैत तँ सभ कियो दासो-दास भऽ लगि जाइत...।

पचास बर्खक मरनी सेहो तइमे सँ एक। जे अपना आँखिसँ अपन पति, बेटा आ पुतोहुकेँ गाछक तरमे खून बोकरि कऽ मरैत देखने। आइ वेचारी पाँच बर्खक पोता आ आठ बर्खक पोतीक बीच आशा संग जीब रहल अछि। कारी झामर एक हड़डा देह, ताड़-खजुरपर बनौल चिड़ैक खोंता सन केश, आँगुर भरि-भरिक पीअर दाँत, फुटल घैलक कनखा जकाँ नाक, गाए-बरदक आँखि जकाँ बड़का-बड़का आँखि, साइओ चेफड़ी लागल साड़ी, दुरगमनियाँ आङी फटला पछाति कहियो देहमे आङीक नसीब नै भेल, बिनु साया-डेढ़ियाक साड़ी पहिरने। यएह छी मरनी।

चारि साल पहिने सुबध, मनोहर आ तौनकी धान रोपए बाध गेल। जाधरि तौनकीकेँ दोसर सन्तान नै भेल ताधरि मरनीए पति-सुबध आ मनोहर-बेटा संग काज करए जाइत। धनरोपनी, धनकटनी, कमठाउन,

रब्बी-राइ उखाड़ै-काटैले संगे जाइत। पुतोहु-तौनकी अँगनाक काज सम्हारैत। मुदा जहन दूटा पोता-पोती भेलै तहियासँ मरनी अँगनाक काज सम्हारए लागलि। अंगनोमे कम काज नै। भानस-भात करब, पोता-पोती खेलाएब, खुट्टा परक बाछीक सेवा करब। आने परिवार जकाँ मरनीओक परिवार भरल-पूरल।

दस आँटीक जोड़ा। तीन-तीन जोड़ा बीआ उखाड़ि सुबध आ मनोहर पटैपर टँगलक आ राड़ीक जुन्ना बना तौनकी बीआक बोझ बान्हि माथपर लऽ कदबा खेत पहुँचल। कदबा एक दिन पहिने गिरहत करा देने छेलै। तँए तीनू गोटेक मनमे खुशी होइत जे सबेर-सकाल रोपि कऽ चलि जाएब। आन दिन कदबे दुआरे अबेर भऽ जाइ छेलए। मोने-मन सुबध सोचैत, बेरू पहर अपनो जे कट्ठा भरिक खेत अछि ऊहो सभ तूर मिलि कऽ हाथे-पाथे रोपि लेब। कदबामे बीआ रखि सुबध आड़िपर बैसि, तमाकुल चुनबए लगल। मनोहर आ तौनकी खेतमे बीआ पसारए लगल। सौंसे खेत बीओ पसरि गेलै आ सुबधो तमाकुल खा लेलक। तीनू गोटे एक-एक आँटी खोलि खुज्जा पसारि एक-एक खुज्जा रोपैले बामा हाथमे रखलक। आड़िक कात पच्छिमसँ तौनकी बीचमे मनोहर आ पूबसँ सुबध पाहि धेलक। एक पाँति रोपि दोसर धेलक आकि पूब दिस एक चिड़की मेघ उठैत देखलक। मेघक छोट टुकड़ी देखि केकरो मनमे पानिक शंका नै उठलै। कनी-कनी सिहकी सेहो चलए लगलै। जहिना-जहिना हवा तेज होइत जाइत, तहिना-तहिना करिया मेघक टुकड़ी सेहो उधिया-उधिया ऊपर चढ़ए लगलै। ऊपर चढ़ि-चढ़ि ओ टुकड़ी एक-दोसरमे मिलए लगल। मुदा पच्छिम दिस रौद उगलै। कनीए खान पछाति सुरूज झँपा गेल। हवो तेज हुअ लगलै। बिजलोका चमकए लगलै। बुन्दा-बुन्दी पानि पड़ए लगलै। जेते मेघ सघन होइत जाइत तेते पानिओक बुन्न जोर पकड़ैत गेल। संगे बिजलोको बेसीयाएल जाइत। घन-घनौआ बर्खा हुअ लगल। पानिमे भीजै दुआरे तीनू गोटे दौग कऽ आमक गाछ लग पहुँचल। खेतसँ बीघे भरि हटि कऽ आमक गाछ। खूब झमटगर। चारि हाथ ऊपरेमे दू फेंड़ भऽ गेल। सरही आम। गाछक पँजरेमे पच्छिमसँ तौनकी बैसलि आ पूबसँ सुबध आ मनोहर। तौनकी साड़ी ओढ़ि दुनू हाथक मुट्ठी बान्हि काँखमे लऽ लेलक। मुदा सुबधो आ मनोहरो छुच्छे देहे। गमछाक

मुरेठा बान्हि लेलक। मुदा तैयो जाड़े दुनू बापूत थर-थर कँपैत। नम्हर-नम्हर बुन्न कखनो काल देहपर खसै। सौंसे देहक रूइयाँ भुलैक कऽ ठाढ़ भऽ गेलै। मुदा की करैत? कोनो उपए नै। पछिमो मेघ पकड़ि बरिसए लगल। जइसँ दूर-दूर धरि बर्खा हुअ लगलै। रहि-रहि कऽ मेघो गरजै आ बिजलोको चमकै। एक बेर खूब जोरसँ बिजलोका चमकलै। मुदा आन बेरक चमकलहासँ बिजलोकाक रंग बदलल। आन बेर पिरौंछ इजोत होइत जहन कि ऐ बेर लाल टुह-टुह। दुरकाल समए देखि तौनकी मोने-मन खौंझा कऽ भगवानकेँ कोसैत, कोनो काजक समए होइ छै। अखनि पानिक कोन काज छै। जहिना तगतगर लोक हरिदम बलउमकी करैए तहिना ई टिकजरौना इन्द्रो भगवान करैए। अनेरे काजकेँ बरदा जाड़े कठुअबैए। लोक सभ कहै छै जे देवता-पितरकेँ बड़का-बड़का आँखि होइ छै जे एक्केठीम बैसल-बैसल सगरे दुनियाँ देखैए। से आँखि अखनि केतए चलि गेलै। देवीओ-देवता गरीबे-गुरबाकेँ जान मारै पाछू लागल रहैए। जन-बोनिहारक काज करैक दू उखड़ाहा होइए। भिनसुरका आ दुपहरिया। भिनसुरका उखड़ाहामे जँ एगारहो बजे पानि भेल वा कोनो बाधा भेल तँ गिरहत थोड़े बोइन देत। अगर जँ जलखै भऽ गेल रहलै तँ बड़बढ़ियाँ नै तँ जलखैओ पार। यएह तँ ऐठामक चलनि अछि। ई टिकजरूआ भगवान गिरहतेकेँ मददि करै छै।

जाड़सँ कँपैत सुबध मनोहरकेँ कहलक-

> "बौआ, सोचै छेलौं जे आन दिन रोपैन करैमे अबेर भऽ जाइ छेलए जइसँ अपन काज नै सम्हरै छेलए मुदा आइ सबेरे-सकाल रोपैन भऽ जाइत तँ अपनो बाड़ी रोपि लैतौं। से सभ भङठि गेल। कखनि पानि छुटत कखनि नै।"

दुनू बापूत गप-सप्प करिते छल आकि तड़-तड़ा कऽ ठनका ओही गाछपर खसल। जइठीनसँ दुनू डारि फुटल छेलै तेकरा चिड़ैत माटिमे चलि गेल। चिड़ा कऽ गाछ दुनू भाग खसल। एक फाँकक तरमे तौनकी आ दोसर फाँकक तरमे दुनू बापूत पड़ि गेल।

पानि छुटल। सौंसे गाममे हल्ला हुअ लगलै जे बाधमे जे आमक गाछ छेलै से खसि पड़लै। भरिसक ओहीपर ठनका खसलै। एक्के-दुइए लोक देखैले जाए लगल। कातेमे ठाढ़ भऽ भऽ लोक देखैत। गाछोपर आ

गाछक निच्चाँ जमीनोपर तेते घोरन पसरि गेलै जे लोक गाछक भीर जाइक हिम्मते ने करैत। मुदा जीबठ बान्हि करिया गाछक जड़ि देखैले बढ़ल। घोरन तँ खूब कटै मुदा तैयो हिम्मत कऽ करिया जड़ि लग पहुँचल। ठनकाक आगिक चेन्ह ओहिना दुनू फाँकमे लागल। जड़ि लग ठाढ़ भऽ करिया हिया-हिया देखए लगल। देखैत-देखैत मनोहरक टाँगपर नजरि पड़लै। टाँगपर नजरि पड़िते हल्ला करए लगल-

> ''एक गोटे तरमे पिचाएल अछि। दौग कऽ अबै जाइ जा, एकरा बहार करह?''

करियाक बात सुनि चारू भरसँ लोक बढ़ल। देखैत-देखैत तीनू गोटेपर नजरि पड़लै। हल्ला करैत करिया कुड़हरि आनए घरपर दौगल। तीनू खून बोकरि-बोकरि मरल। मुदा तैयो सभ बचा-बचा कऽ डारि काटए लगल। डारि काटि शील उनटौलक तँ तीनू थकुचा-थकुचा भेल देखलक। पहिने तँ कियो नै चिन्हलक, किएक तँ तीनू बेदरंग भऽ गेल रहए। मुदा भाँज लगौलापर पता चललै जे दुनू बापूत सुबधकाका छी आ पुतोहु छिऐ।

अखनि धरि मरनी, अँगनेमे दुनू बच्चाकेँ खेलबैत रहए। गौरिया आबि कऽ कहलकै-

> ''दादी, तोरे अँगनाक सभ, गाछक तरमे दबि कऽ मरि गेलौ।''

गौरियाक बात सुनिते मरनी अचेत भऽ खसि पड़ल। दुनू बच्चा सेहो चिचियाए लगलै। मरनीकेँ अचेत देखि अलोधनी मुँहपर पानि छीटि बिअनि हौंकए लागलि। कनीए खान पछाति होश भेलै। होशमे अबिते मरनी फेर बपहारि काटए लगल।

बच्चाकेँ कोरामे लऽ मरनी संग अलोधनी देखैले विदा भेल। गाछ लग पहुँचिते तीनू गोटेकेँ मुइल देखि मरनी ओंघरनियाँ काटए लागलि। ओंघरनियाँ कटैत देखि करिया पँजिया कऽ पकड़ि मरनीकेँ कात लऽ गेल। मरनीक दशा देखि सभ सांत्वना दिअ लगल। मुदा मरनीक करेज थीरे ने होइत! विचित्र स्थितिमे पड़ल। एक दिस परिवारकेँ नाश होइत देखए तँ दोसर दिस दुनू बच्चाक मुँह देखि कनी-मनी आशा मनमे जगै।

चारि साल पहुलका नै अखुनका, बदलल नव-मरनी। जहिना

आगिमे तपैसँ पहिने सोनाक जे रंग रहैत तपलापर जहिना चमकि उठैत तहिना। ओना समाजोक बेवहार जे पहुलका छेलै अहूमे बदलाउ एलै। कियो खाइक बौस दऽ जाइत तँ कियो बच्चो आ मरनीओ लए नुआ-बस्तर। जहन केकरो भाँजमे कोनो काज अबै तँ ओ मरनीओकेँ संग कऽ लैत। जहिना परिवारमे बूढ़ आ बच्चाक प्रति जे सिनेह होइत, ओहने सिनेह मरनीक प्रति समाजोक बीच हुअ लगलै। अपनो जीबैक आशा आ बच्चोक, मरनीकेँ नव स्फूर्ति पैदा केलक। एते दिन मरनीक हाथमे पुरने खेतीक औजारटा रहै छेलै ओ आब बढ़ि कऽ दोबर भऽ गेल। हँसुआ, खुरपी, टेंगारी, कोदारि संग-संग हथौरी, गैंचा सेहो आबि गेलै।

समए आगू बढ़ल। देशक विकासक गति सेहो, बहुत तेज नै मुदा किछु गति तँ जरूर पकड़लक। गाम-गाममे बान्ह-सड़क, पुल-पुलिया, स्कूल-अस्पताल सेहो बनए लगल। जइसँ खेतीहर बोनिहारक सेहो काज बढ़ल। मरनीओ छिट्टामे माटि उघब, पजेबा उघब, गिट्टी फोड़ब, सुरखी कुटब सीखि लेलक। जइसँ बेकारी मेटाएल। रोज कमेनाइ रोज खेनाइ धरि गरीबो आबि गेल। भलहिं जिनगीमे बहुत अधिक उन्नति नै एलै मुदा जीबैक आशा जरूर जगलै। मुदा ई सभ काज छतौनीमे नै, पास-पड़ोसक आन-आन गाममे। जइमे छतौनीओक बोनिहार सभ काज करए लगल।

छतौनीओक दिन घुमलै। सात किलोमीटर पक्की सड़क जे एन.एच.सँ लऽ कऽ रेलबे स्टेशनकेँ जोड़ैत, छतौनीए होइत बनब शुरू भेल। जहिएसँ "प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना" छतौनी होइत बनैक चर्चा भेल तहिएसँ छतौनीक लोकक मनमे खुशी आबए लगलै। गामक लोकक तँ ओहेन दशा नै जे बस-ट्रक किनैक विचार करितए। मुदा तैयो एते जरूर भेलै जे बरसातमे जे घरसँ बहराएब कठिन छेलै ओ कठिनाइ आब नै रहतै। किछु गोटेक मनमे ई बात जरूर होइत जे एते दिन बिनु जूत्तो-चप्पलसँ काज चलै छेलए, से आब नै चलत। आड़ि-धुर-माटिपर चललासँ, बेसीसँ बेसी काँट-कुश गड़ै छल मुदा पीच भेने शीशाक टुकड़ी, लोहाक टुकड़ी सेहो गड़त। जइसँ पएरक नोकसान बेसी हएत। मुदा फेर मनमे अबै, एते दिन कम आमदनी रहने जुत्ता-चप्पल नै कीनि पबै छेलौं से आब नै हएत। नै बेसी तँ एक्को जोड़ा जरूरे कीनि लेब। जइसँ पएरमे बेमाएओ ने फटत।

प्रधानमंत्री योजनाक सड़क बनए लगल। मुदा जेते आशा बोनिहारक मनमे छेलै तेते नै भेलै। किएक तँ माटिक काज शुरू होइते रंग-बिरंगक गाड़ी सभ पहुँचए लगल। जे माटिक काज बोनिहार करैत ओ ट्रेक्टर करए लगल। ओना काजक गति तेज रहै मुदा बोनिहारक बेकारी बरकरारे रहलै। सड़कपर माटि पड़िते रौलर आबि सेरियाबए लगल। खेनाइ-पिनाइ छोड़ि धियो-पुतो आ जनिजातिओ भरि-भरि दिन देखते रहैत। ओना बुढ़ो-बुढ़ानुस देखैत मुदा घरक चिन्ता खीचि कऽ काज दिस लऽ जाइत। पनरहे दिनमे सातो किलोमीटर सड़कपर माटिक काज सम्पन्न भऽ गेलै। एकदम चिक्कन, उज्जड़ धप-धप। घरसँ ऊँच सड़क बनि गेल।

माटिक सड़क बनिते बड़का-बड़का ट्रक चिमनीसँ ईटा खसबए लगल। एह, अजीब-अजीब ट्रको सभ। एते दिन छह-पहिए ट्रकटा गामक लोक देखने मुदा ई सड़क बनने दस पहियासँ लऽ कऽ अट्ठारह पहियाबला ट्रक सभकेँ सेहो देखलक। तीनिए दिनमे सातो किलोमीटरक ईंटा खसा देलक। मुदा ईंटा पसारैक काज तँ इंजन नै करत। ओ तँ लोके करत। मुदा ओइले तँ अनुभवी माने एक्सपर्ट लोकक जरूरत हएत। जे छतौनीमे नै। तँए बाहरेसँ अनुभवी मिस्त्री औत! मुदा तेहेन बड़का ठीकेदार सड़क बनबैत जे अनेको सड़कक काज एक संग चलबैत। एक्के दिन तेते अनुभवी मिस्त्री ईंटा पसारैले आएल जे सभकेँ बूझि पड़लै जे दुइए दिनमे सातो किलोमीटर ईंटा पसारि देत। मुदा ईंटा उघैले तँ मजदूर चाही। पहिल दिन छतौनी गामक बोनिहारकेँ काज भेटलै। ईंटा पसरए लगल। धुरझाड़ काज चलए लगल। छतौनीक सभ बोनिहार खुशीसँ काज करए लगल। तैबीच ईंटापर पसारैले फुटलाहा ईंटा ट्रकसँ आबए लगल। दोहरी काज देखि छतौनीक बोनिहारक मन खुशीसँ नाचए लगल। किएक तँ गिट्टी फोड़ैले गामेक बोनिहारकेँ काज भेटतै। मुदा ठीकेदारक मुनसी, अपने खाइ-पीबै दुआरे सस्ते दरसँ गिट्टी फोड़ैक रेट लगा देलक। एक ट्रेक्टर पजेबा फोड़ैक दर साठिए रूपैआ दइले तैयार भेल। एक-दू दिन तँ बोनिहार सभ गिट्टी फोड़ब बन्न केलक मुदा पेटक आगि मजबुरन सभकेँ लऽ गेलै। मरनी सेहो गिट्टी फोड़ए लागलि। एक ट्रेक्टर गिट्टी फोड़ैमे वेचारीकेँ चारि दिन लगैत। मुदा की करैत?

ऐ सड़कसँ पहिने जे सड़क बनै ओ रियाइत-खियाइत रहि जाइ। माटिक काज भेलापर साल-दू-साल ईंटा बैसैमे लगै। जइसँ माटि ढहि-ढूहि कऽ उबड़-खाबड़ बनि जाए। बड़का-बड़का खाधि सड़कपर बनि जाइ। तहूमे तीन नम्मर पजेबा फूटि-भाँगि कऽ गरदा बनि जाइत। गामक धियो-पुतो उठा-उठा खेत-पथारमे फेक दैत। कोठीक गोड़ा बनबैले स्त्रीगण सभ निकहा ईंटा उठा-उठा लऽ जाइत। मुदा ऐ बेर से नै हएत। दुइए मासमे सड़क बनबैक शर्त ठीकेदारकें छै। जाबे बर्खा खसत-खसत ताबे सड़क बनि जेबाक छै। पचास बर्खक मरनी जे देखैमे झुनकुट बूढ़ बूझि पड़ैत। सौंसे देहक हड्डी झक-झक करैत। खपटा जकाँ मुँह। खैनी खाइत-खाइत अगिला चारू दाँत टुटल। गांगी-जमुनी केश हवामे फहराइत। तहूमे सड़कक गरदासँ सभ दिन नहाइत। मुदा तैयो मरनी अपन आँखि बचैने रहैत। जहन पुर्बा हवा बहै तँ पच्छिम मुहेँ घूमि कऽ गिट्टी फोड़ए लगैत आ जहन पछबा बहए लगैत तँ पूब मुहेँ घूमि जाइत। बीच-बीचमे सुसताइओ लैत आ खैनी सेहो खा लैत। मुदा तैयो मरनीक मुँह कखनो मलिन नै होइ। किएक तँ हृदैमे अदम्य साहस आ मनमे असीम बिसवास हरिदम बनल रहैत। तँए हरिदम हँसिते रहए।

भिनसुरके उखड़ाहा। करीब नअ बजैत। पूब मुहेँ घूमि मरनी गिट्टी फोड़ैत रहए। तैबीच पच्चीस-तीस बर्खक सुगिया माथ उघारने, छपुआ बनारसी साड़ी आ ओही रंगक आडी पहिरने, घुमौआ केश सीटि जुट्टी लटकौने, एँड़ीदार चमड़ौ-चप्पल आ मोजा लगौने, मुँहमे पानसए नम्मर पत्ती देल पान खेने, प्लोथिनमे नूनक पौकेट, करूतेलक शीशी, मसल्लाक पुड़िया आ साबुन रखि हाथमे लटकौने आबि कऽ मरनीक लग ठाढ़ भऽ गेल। मरनीक मेहनति आ बगए देखि दिल खोलि मोने-मन हँसए लागल। मरनी गिट्टी फोड़ैमे मस्त। किएक किम्हरो ताकत! सुगियाक हृदैक खुशी मुहसँ हँसी होइत निकलए चाहैत। मुदा मुँहक पानक पीत ठोरक फाटककेँ बन्न केने। तँए पानक पीत फेकब सुगियाकेँ जरूरी भेलै। जइ पजेबाक ढेरीपर बैसि मरनी गिट्टी बनबैत रहए ओही ढेरीपर सुगिया भरि मुँहक पीत फेक देलक। पीतक दू-चारि बुन्न मरनीक देहोपर पड़लै। देहपर पड़िते ओ उनटि कऽ तकलक। टटका पीत चक-चक करैत। कनडेरिए आँखिए मरनी सुगियाक मुँह दिस तकलक। सुगियाकेँ पान

चिबबैत देखि मरनीक मनमे आगि पजरि गेलै। पजेबाक ढेरी देखलक। सौंसे थूक पड़ल। मोने-मन सोचलक जे आब केना गिट्टी फोरब। ढेरीओ आ देहो अँइठ कऽ देलक। आँखि गुड़रि कऽ मरनी सुगियाकेँ कहलक-

''गइ रनडिया, तोरा सुझलौ नै जे ढेरीपर थूक फेकलेँ?''

गरीब मरनीक कटाह बात सुनि सुगिया तमकि कऽ उत्तर देलक-

''तोरे बान्ह छियौ जे हम थूक नै फेकब।''

सुगियाक बोलकेँ दबैत मरनी बाजलि-

''एतेटा बान्ह छै, तइमे तोरा केतौ थूक फेकैक जगह नै भेटलौ जे ऐठाम फेकलेँ।''

सुगिया-

''जदी एतै फेकलिऐ तँ तूँ हमर की करमेँ?''

मरनी-

''की करबौ। आँइ गइ निरलज्जी, तोरा लाज होइ छौ जे सात पुरखाकेँ नाक-कान कटौलही। जेहने कुल-खनदान रहतौ तेहने ने चालि चलमेँ।''

सुगिया-

''अपन देह-दशा नै देखै छीही?''

मरनी-

''की देखबै। ई देह बोनिहारनिक छिऐ। तोरा जकाँ की हम कहियो बमैबला छौड़ा सेने तँ कहियो डिल्लीबला छौड़ा सेने बौआइ छी? एक चुरूक पानिमे डूमि कऽ मरि जो! तीमन चिक्खी नहितन। जहिना सात घरक तीमन चिक्खै छँए तहिना सातटा मुनसा देखै छँए। हमर परतर सातो जिनगीमे हेतौ? जेकरा संगे बाप हाथ पकड़ा देलक, सहि-मरि कऽ तइ घरमे छी। छुछुनरि कहीं कऽ! आगि लगा ले ऐ फुललाहा देहमे।''

मरनीक बातसँ सुगिया सहमि गेलि। मनमे डर पैसि गेलै जे हो-ने-हो कहीं मारबो ने करए। मुँह सकुचबैत मुड़ी गोति विदा भेल। सुगियाकेँ जाइत देखि मरनी साड़ीक खूटसँ तमाकुल-चुन निकालि चुनबए लागलि। मुदा तैयो मन असथिर नै भेलै। मुड़ी उठा-उठा सुगियो दिस देखै आ मोने-मन बजबो करए-

> "देह केहेन सीटने अछि, उढ़डी। जेना रजा-महराजाक बहु हुअए। हाथ-पएरमे लुलही पकड़ने छन्हि जे कमा कऽ खेती। जेहने छुछुनरि छौड़ा सभ तेहने छौड़ी सभ।"

तमाकुल खा मरनी ईंटा फोड़ैले घुमल आकि दादी-दादी करैत पोता दौगल आबि दुनू हाथे दुनू कान्ह पीट्ठीपर लटैक गेल। पाछूसँ पोतीओ एलै। पोताकेँ कोरामे उठा मुँहमे चुम्मा लऽ पोतीकेँ कहलक-

> "दाइ, बौआकेँ रोटी नै देलही। दुनू गोटे चलि जाउ, मोरामे रोटी रखने छी, लऽ कऽ दुनू गोटे खाए लेब। हम अखनि काज करै छी। कनीकालमे आबि कऽ भानस करब।"

पोता-पोती, आँगन दिस विदा भेल। पूब मुहेँ घूमि कऽ मरनी गिट्टी फोड़ए
लगल। चारिटा बन्दूकधारी बड़डी-गार्ड संग सड़कक ठीकेदार उत्तरसँ दछिन मुहेँ सड़क देखैत जाइ छला। आगू-आगू ठीकेदार पाछू-पाछू बन्दूकधारी। ठिकेदारक नजरि मरनीपर पड़लनि। मरनीपर नजरि पड़िते ठिकेदारक डेग छोट हुअ लगलनि। ठिकेदारक आँखि मरनीपर अँटकि गेलनि। डेग तँ आगू मुहेँ बढ़बैत रहथि मुदा आँखिक ज्योति हृदैमे ढुकि कऽ हृदैकेँ हड़बड़बए लगलनि। मनमे अन्हर-तूफान उठए लगलनि। जइसँ मोने-मन विचारए लगल जे जेकरा कमाइपर हमरा चारिटा बड़डी गार्ड अछि, करोड़ो-अरबोक आमदनी अछि, तेकर ई दशा छै। ओ तँ हमर ओहेन समांग जे कमासुत अछि, ओहेन तँ नै जे ऐश-मौजक जिनगी बना कमेलहे सम्पतिकेँ भोगैए। मुदा अँटकला नै। आगू मुहेँ बढ़िते रहला। किछु दूर आगू बढ़लापर जेना मरनीक आत्मा आगूसँ रोकि देलकनि। बिच्चे सड़कपर ठीकेदार ठाढ़ भऽ गेला। ठाढ़ भऽ एकटा सिपाहीकेँ अढ़ेलखिन-

“ओइ गिट्टी फोड़निहारिकेँ कनी बजौने आउ?”

ठीकेदारक बात सुनि एकटा सिपाही मरनी दिस बढ़ल। मरनी लग जा कहलक-

“मालिक बजबै छथुन। से कनी चलही?”

गिट्टी फोड़ब छोड़ि मरनी उनटि कऽ सिपाही दिस तकलक। सिपाहीकेँ देखि मोने-मन सोचए लागलि, ने हम कोनो मेमलामे फँसल छी आ ने कोनो बैंकक करजा नेने छिऐ, तहन किए हमरा सिपाही बजबैए। मन सक्कत करि कऽ बाजलि-

> “तूँ नै देखै छहक जे अखनि हम काज करै छी। जेकर बोइन लेबै ओकर काज नै करबै। अखनि जा। काजक बेर उनैह जेत्तै तब एबह।”

मरनीक बात ठीकेदारो आ सिपाहीओ सुनैत रहथि। एक-दोसरकेँ देखि आँखि निच्चाँ कऽ लथि। मुदा ठीकेदारक मन पीपरक पात जकाँ डोलए लगलनि। कखनो मरनीक इमानदारीपर तँ कखनो ओकर अवस्थापर। जइ देशक श्रमिक श्रममे एते बिसवास करैए ओइ देशक विकास जँ बाधित अछि तँ जरूर केतौ-ने-केतौ संचालनकर्ताक बेइमानी छै। ई बात मनमे अबिते ठीकेदार अपना दिस घूमि कऽ तकला, तँ अपन दोख सामने आबि ठाढ़ भऽ गेलनि।

सिपाही कड़कि कऽ मरनीकेँ कहलक-

“नै जेबही तँ पकड़ि कऽ लऽ जेबौ?”

सिपाहीक गर्म बोली सुनि मरनी बाजलि-

> “तोहर हम कोनो करजा खेने छिअ जे पकड़ि कऽ लऽ जेबह। अपन सुखलो हड्डीकेँ धुनै छी, खाइ छी।”

मरनीक बात सुनि सिपाहीओक मन उनटए-पुनटए लगलै। एक दिस मालिकक आदेश दोसर दिस मरनीक विचार। आखिर, एहेन लोकक बीच एहेन सक्कत विचार अबैक कारण की छै? अनका देखै छिऐ जे खाली सिपाहीक वर्दी देखि डरा जाइए, भलहिं ओ सरकारक सिपाही

नहियों रहए। मुदा हमरा तँ सभ किछु अछि तैयो ऐ बुढ़ियाकेँ डर नै होइ छै। फेर मनमे एलै, हम किछु छी तँ नोकर छी मुदा ई किछु अछि तँ स्वतंत्र बोनिहारिन। स्वतंत्र देशक स्वतंत्र श्रमिक। जे देशक आधार छी। आखिर देश तँ एकरो सबहक छिऐ।

सिपाहीकेँ ठाढ़ देखि ठीकेदारे पाछू ससरि कऽ मरनी लग आएल। मरनीओ सभकेँ देखैत आ मरनीओकेँ सभ। ठीकेदार मरनीक आँखि देखथि। आँखिमे सुरूजक रोशनी जकाँ प्रखर ज्योति। ललाटसँ आत्म-विश्वास छिटकैत। मधुर स्वरमे ठीकेदार पुछलखिन-

"चाची, अहाँक परिवारमे के सभ छथि?"

ठिकेदारक प्रश्न सुनि मरनीक आँखिमे नोर आबए लगलै। मन पड़ि गेलै अपन पति, बेटा आ पुतोहुक मृत्यु। टघरैत नोरकेँ आँचरसँ पोछि बाजलि-

"बौआ, हमर घरबला, बेटा आ पुतोहु ठनकामे मरि गेल। अपने छी आ पिलुआ जकाँ दूटा पोता-पोती अछि।"

"बच्चा सभ स्कूलो जाइए?"

"नै। एक तँ गाममे स्कूल नै छै। तहूमे पहिने गरीब लोकक धिया-पुताकेँ पेट भरतै तब ने जाएत। ने भरि पेट अन होइ छै आ ने भरि देह वस्तर, ने रहैक घर छै, तहन इसकूल केना जाएत।"

मरनीक बात सुनि ठीकेदार सहमि गेला। मोने-मन सोचए लगला, जे आँखिक सोझमे देखै छिऐ ओ झूठ केना भऽ सकैए। एते भारी काज केनिहारक देहपर कारी खट-खट कपड़ा छै, तोहूमे सएओ चेफड़ी लागल छै, काज करै जोकर उमेर नै छै, तैपर एते भारी हथौरी पजेबापर पटकैए। ठिकेदारक मन दहलि गेलनि। जहिना अकास आ पृथ्वीक बीच क्षितिज अछि, जैठाम जा चिड़ै-चुनमुनी लसकि जाइए, तहिना ठीकेदारक मन सुख-दुखक बीच लसकि गेलनि। जेना सभ किछु मनक हरा गेलनि। सुन्न भऽ गेला। ने आगूक बाट सुझैत रहनि आ ने पाछूक। मरनीसँ आगू की पूछब से मनमे रहबे ने केलनि। साहस बटोरि पुछलखिन-

''भरि दिनमे केते रूपैआ कमाइ छी?''

ठिकेदारक प्रश्न सुनि मरनीक मनमे झड़क उठलै। बाजलि-

''केते कमाएब! जेहने बैमान सरकार अछि तेहने ओकर मनसी छै। चारि दिनमे एकटा पजेबा ढेरी फोड़ै छी तँ तीन-बीस रूपैआ दइए। ऐसँ तीन तूरक पेट भरत? भरि दिन ईंटा फोड़ैत-फोड़ैत देह-हाथ दुखाइत रहैए मुदा एकटा गोटीओ किनब से पाइ नै बँचैए।

ठिकेदारक आँखिमे नोर आबि गेलनि। मनुखता जागि गेलनि। मुदा ई मनुखता केते काल जिनगीमे अँटकत? जिनगी तँ उनटल अछि! जइमे मनुखता नामक कोनो छुइतौ ने अछि!

ooo

हारि-जीत

चारिमे दिन दुनू परानी सोमन विचारलक, आब ऐ गाममे जीयब कठिन अछि तँए गामसँ चलिए जाएब नीक हएत। दुनियाँ बड़ीटा छै। जेतए जीबैक जोगार लागत तेतए रहब। सामान सभ बान्हि, करेजपर पाथर रखि गामसँ जाइले दुनू परानी तैयार भऽ गेल। भूखल पेट! सुखाएल मुँह! निराश मन! ओसारपर बैसल दुनू परानीक आँखिसँ दहो-बहो नोर टघरैत रहए! दुनियाँ अन्हार देखि, उठैक साहसे नै होइ छेलै। सोमनक मनमे होइत, की छेलौं आइ की भऽ गेलौं? रंग-बिरंगक विचार पानिक बुलबुला जकाँ दुनूक मनमे उठैत आ विलीन भऽ जाइत! आगूमे मोटरी राखल रहए। जहिना सीमा परहक सिपाही छातीमे गोली लगलासँ घाइल भऽ जमीनपर खसि छटपटाइत, तहिना दुनू परानी सोमन दुखक अथाह समुद्रमे डुमैत-उगैत। भिनसरसँ बारह बाजि गेलै।

सहरसा जिलाक गाम मैरचा। पूबसँ कोसी आबि गामक कटनियाँ करए लागल। गर लगा-लगा गामक लोक जेतए-तेतए पड़ाए लगला। ओना सरकार पुबरिया बान्हक बाहर पुनर्वासक बेवस्था सेहो करैत रहए मुदा ओइसँ बोनिहारकेँ की सुख हएत? ओकरा सबहक तँ रोजगारो छिना गेल रहए।

पत्नी, बेटा-पुतोहु संग फुलचनो पंडित गाम छोड़ि पच्छिम मुहेँ विदा भेला। घराड़ी छोड़ि अपना एक्को बीत जमीन-जत्था नै छेलनि। मुदा अपन बेवसायक सभ लूरि छेलनि तँए मनमे चिन्तो ओतेक नै रहनि। चिन्ता मात्र रहनि ठौर भेटबाक। कखनो-कखनो मनमे होन्हि जे अपन गाम तँ बूझल-गमल अछि, आन गाम केहेन हएत केहेन नै? मुदा उपाइए की? जीबैले तँ मनुख सभ किछु करैए। पछबरिया बान्हसँ मील भरि पाछुए रहथि आकि बान्हपर नजरि पड़लनि। बान्ह देखिते आशा जगलनि। किएक तँ बान्हक पच्छिम कोनो धार-धुर नै अछि। मुस्कीआइत फुलचन पत्नीसँ पुछलक-

"भगवान रामक खिस्सा बूझल अछि?"

फुलचनक मुँह दिस देखि मुनियाँ बजली-

"बहुत दिन पहिने सुनने छेलौं, आब ओते धियान नइए।"

"जहिना अपना सभ गाम छोड़ि कऽ जा रहल छी तहिना ऊहो सभ गेल रहथि। अपना सभकेँ तँ बटखर्चो अछि, हुनका सभकेँ तँ सेहो नै रहनि।"

तैबीच फुलचनक पुतोहु कपली सासुक बाँहि पकड़ि पाछू मुहेँ घुमा कहलक-

"एँड़ीकेँ डोका काटि देलक। खून बहैए। कनी केतौ बैसथु जे लत्ता बान्हि देबै।"

एँड़ी देखि मुनियाँ कहलखिन-

"कनियाँ, केतौ गाछो ने देखै छिऐ जे कनी सुस्ताइओ लैतौं। हमरो पियासे कंठ सुखैए।"

सासु-पुतोहुक बात सुनि फुलचन बजला-

"कनियाँ, जानिए कऽ तँ दैवक डाँग लागल अछि, तहन तँ कहुना कऽ बान्ह धरि चलू। एक तँ रौदाएल छी तैपर सँ जेते काल अँटकब तेते रौदो बेसीए लागत।"

बान्हपर पहुँचिते सभ निसाँस छोड़लनि। बान्हक पच्छिमसँ एकटा आमक गाछ रहए। छाहरि देखि सभ कियो गाछ तर पहुँचलथि। एकटा बटोही पहिनइसँ तौनी बिछा पड़ल छल। कनीकाल सुस्तेला पछाति बटोहीकेँ फुलचन पुछलखिन-

"भाय, तमाकुल खाइ छह?"

जेबीसँ चुनौटी निकालि फुलचनक आगूमे फेकैत ओ बटोही बाजल-

"कोन गाम जेबह?"

कोन गामक नाओं सुनिते फुलचनक हृदए सिहरि गेलनि। मिरमिरा कऽ कहलखिन-

"भाय, कोन गाम जाएब तेकर तँ ठेकान नै अछि। मुदा मैरचासँ एलौं हेन। धारमे गाम कटि रहल अछि। तँए गाम छोड़ि जा

रहल छी। जइ गाममे कुम्हार नै हएत तइ गाममे बसि जाएब।''

कुम्हारक नाओं सुनिते बटोही उठि कऽ बैसैत कहलकनि-

''हमरो गाममे कुम्हार नै अछि। चलह, हमरे गाममे रहि जइहऽ।''

आशा देखि सोमन पुछलखिन-

''ऐठामसँ केते दूर अहाँक गाम अछि?''

''अढ़ाइ कोस। हमहूँ बहिनिए ओठीमसँ अबै छी। गामे जाएब।''

बेर झुकैत पाँचो गोटे विदा भेला। लछमीपुर पहुँचिते बटोही रतीलाल फुलचनकेँ कहलकनि-

''भाइ, यएह हमर गाम छी।''

गाछी बँसबाड़ि देखि फुलचन पंडित मोने-मन खुश! मोने-मन आकलन केलनि जे जारनिक अभाव कहियो नै हएत। गाममे प्रवेश करिते बीघा दुइएक पोखरि देखि फुलचन मोने-मन तँए ई केलनि जे नै कतौं रहैक ठौर भेटत तँ पोखरि महार तँ अछि। पोखरि बगलेमे सभ कियो रूकि जाइ गेला। रत्तीलाल आगू बढ़ि गेल।

जहिना गाममे नट-किच्चककेँ अबिते धिया-पुता देखए अबैत तहिना फुलचनो सभ तूरकेँ देखए गामक धिया-पुता आबए लागल। गाममे कुम्हार एबाक समाचार पसरल। थोड़े काल पछाति फुलचन पंडित बेटा सोमनकेँ हाथ पकड़ि कहलखिन-

''बौआ, तूँ सभ एतै बैसह। हम कनी गामक बाबू-भैया सभसँ भेँट केने अबै छी।''

कहि फुलचन गाम दिस विदा भेला। इजोरिया पख रहै तँए सूर्यास्त भेलोपर दिने जकाँ लगै। जाधरि फुलचन घूमि कऽ एबो ने केला तइसँ पहिनइ गामक पनरह-बीसटा नवयुवक पहुँच गेल। सबहक मनमे नव उत्साह रहए। किएक तँ अखनि धरि जे अभाव कुम्हारक गाममे रहल ओ पूर्ति भऽ रहल अछि। जहिना आवश्यकताक वस्तु पूर्ति भेलासँ किनको मनमे खुशी होइ छै, तहिना फुलचनक एलासँ गामक लोकक

मनमे खुशी रहए। पोखरिसँ थोड़े हटि कट्ठा तीनिएक परती छेलै। सभ युवक विचारलक जे ओही परतीपर बसौल जाए। ताधरि गाम घूमि कऽ फुलचनो एला। फुलचन दुनू बापूत परती देखलनि। परती देखि सोमन पिता दिस घूमि बाजल-

"कुम्हारक बसै जोकर परती अछि, मात्र पिऐबला पानिक दिक्कत अछि।"

तैपर पिता फुलचन पंडित जवाब देलनि-

"अखनि ने पानिक दिक्कत अछि मुदा जहन अपने इनार खुनैओक आ पाटो बनबैक लूरि अछि तहन दिक्कत किए रहत?"

घराड़ी पसिन होइते हो-हा करैत युवक सभ बाँस काटए विदा भेल। जे जेहेन बाँसबला, तिनकामे तइ हिसाबसँ बाँस काटि पच्चीसटा बाँस जमा भेल। ईहो दुनू बापूत संग दैत रहथिन। हाथे-पाथे सभ घरक काजमे जुटि गेला। रातिक बारह बजैत-बजैत तेरह हाथक घर ठाढ़ भऽ गेलै।

प्रात भेने दुनू बापूत विचारलनि जे एक तँ नव गाम, तहूमे नव बाँस। काज तँ बहुत अछि। तँए काजकेँ सोझरा कऽ चलए परत। रहै जोकर घर भलहिं नै भेल मुदा दिन कटै जोकर तँ भइए गेल। घर-आँगन बनबैसँ लऽ कऽ कारोबार धरिक काजमे हाथ लगबए पड़त। फुलचन सोमनसँ पुछलखिन-

"बौआ, मैरचासँ कोन-कोन समान अनने छह?"

सोमन कहलक-

"बाबू, सोचलौं जे आन गाममे लगले सभ किछु थोड़े भऽ जाएत। तँए चाक बनबैक शिला, तख्ता, फट्ठा, जौर, बेलक कील सभ किछु अनने छी।"

खुशीसँ गद-गद होइत फुलचनक मुहसँ निकललनि-

"बाह-बाह। चाकक ओरियान तँ भइए गेलह। आरो की सभ अनने छह?"

"चकैठ, हथमैन, पिटना, पीरहुर, मजनी, छन्ना सेहो अनने छी।"

मुस्कीआइत फुलचन बाजला-

"काजक तँ सभ किछु अछिए। आइए चाको बनबैमे हाथ लगा दहक। एक गोटे पात खरड़ि अनिहऽ। एक गोटे घरक लेबिया-मुनियाँमे हाथ लगा दहक। हमरा तँ समचे सभ ओड़ियबैमे समए बित जेतह।"

दस दिनक मेहनतिसँ रहै जोकर एकटा घर बनि गेलै। चाको सुखा गेलै। जारनोक ओरियान भऽ गेलै। चाक गाड़ि, माटि बना सोमन चाक लग बैसल। जहिना उद्योगपतिकेँ नव कारखानाक उद्घघाटन दिन मनमे खुशी रहै छै, तहिना आइ सभ परानी फुलचनोकेँ रहनि। हँसैत फुलचन पंडित बेटा दिस देखैत बजला-

"बौआ, जेते सामान बनबैक लूरि अछि, सभ सामान बना, पका कऽ खड़िहाँनमे पसारि, सौंसे गौआँकेँ हकार दऽ देखा देबनि। जिनगीक परीक्षा छी।"

आबा उघारि चारू गोटे खल लगा-लगा सभ वस्तु- कूड़, हाथी, ढकना, कोशिया, दीप, पाण्डव, गणेश, लक्ष्मी, मटकूर, छाँछी, डाबा, घैल, सामा-चकेबा, पुरहर, अहिबात, कोहा, फुच्ची, सरबा, सीरी, भरहर, आहूत, धुपदानी, पातिल, तौला, मल्सी, बसनी, उन्नैसमासी, कोही, लाबनि, कलश, कराही, रोटिपक्का, अथरा, कसतारा, लग्जोरी, धिया-पुता खेलैक जात, नादि, लोइट, माँट, टाड़ा, टाड़ी, बधना इत्यादि चारि-चारि खल पावनिक, बिआहक, उपनयनक, श्राद्धक, पोखरिक यज्ञ-कीर्तनक आ घरैलू काजक वस्तु सभ अलग-अलग सजा कऽ पसारि। दुनू बापूत जा गौआँकेँ देखैक हकार देलनि।

चारू परानी फुलचनकेँ अपना लूरिक ठेकान नै छलन्हि किएक तँ सभ काज लेल एक बेर सभ समान कहियो नै बनौने छला। मुदा आइ सभटा बना सभकेँ ई विश्वास भऽ गेलनि जे जहिना बड़का वेपारीक दोकानमे अनेको किसिमक सौदा रहै छै तहिना तँ हमरो अछि!

समए बीतैत गेल। अधिक बएस भेने दुनू परानी फुलचन शरीरसँ कमजोर हुअ लगला। सोमनोकेँ एकटा बेटा, एकटा बेटी भेलै। परिवार

बढ़लै। खरचो बढ़लै।

समए आगू मुहेँ ससरैत गेल। दुनू परानी फुलचन मरि गेला। ....बेटीक बिआह सेहो सोमन कऽ लेलक। सोमनक बेटा रामदत दुर्गापूजा देखए मात्रिक गेल। ओत्तैसँ बौर गेल। माटिक बरतनक जगह द्रव्यक बरतन सभ परिवारमे धीरे-धीरे बढ़ए लगलै। जइसँ माटिक बरतनक मांग कमए लगल। घटैत-घटैत माटिक बरतन परिवार छोड़ि देलक। रहि गेल मात्र पावनि, उपनयन, बिआह आ श्राद्ध।

अपन घटैत कारोबार आ टुटैत परिवारसँ दुनू परानी सोमन चिन्तित हुअए लागल। आगूक जिनगी अन्हार लागए लगलै। कोनो रस्ते नै देखाइ। सोचैत-विचारैत सोमनक नजरि एकटा काजपर पड़लै। खपड़ा बनौनाइ। खपड़ापर नजरि पहुँचिते मुस्कीआइत सोमन पत्नीकेँ कहलक-

"एकटा बड़ सुन्दर काज अछि। कमाइओ नीक आ काजो माटिएक।"

अकचकाइत पत्नी-कपली पुछलकनि-

"कोन काज?"

सोमन-

"खपड़ा बनौनाइ।"

कनीकाल गुम रहि कपली बाजलि-

"थोपुआ खपड़ा तँ हमहूँ बना सकै छी मुदा नड़िया नै हएत।"

जोर दैत सोमन बाजल-

"हँ, हएत! चाक परक भलहिं नै हूअए मगर मुंगरी परक किए ने हएत।"

"हँ, से तँ हएत।"

दुनू परानी खपड़ा बनबए लगल। लोककेँ बूझल नै रहै तँए अगुरबार कियो खोज नै केलक। मुदा जहन एकटा भट्ठा लगौलक तहन गामक लोक देखलक। खपड़ो नीक, पाको बढ़ियाँ। गिनतीए हिसाबसँ

खपड़ा बेचए लगल। बढ़ियाँ आमदनी हुअ लगलै।

बढ़ियाँ कारोबार चलल। मुदा सिमटीबला एस्बेस्टस अबिते खपड़ाक मांग कमए लगल। खपड़ा बनौनिहारकेँ मंदी आबि गेल। ओना सोमनक परिवारो छोट रहए। मात्र दुइए गोटेक परिवार। मुदा तैयो गुजरमे कटमटी हुअ लगलै। फेर जिनगी भारी हुअ लगलै।

हँसी-खुशीसँ जीवन-यापन करैबला परिवार एहेन स्थितिमे पहुँच गेल जे साँझक-साँझ चुल्हि नै पजरैत। दोसर कोनो लूरि नै। अपन खसैत जिनगी देखि कपली पतिक मुँह दिस तकैत बाजलि-

"एना केते दिन दुख काटब? जहन हाथ-पएर तना-उतार अछि आ काज करए चाहै छी तहन की अही गामकेँ सीमा-नाङरि छै? चलू ऐ गामसँ।"

पत्नीक विचार सुनि सोमनक आँखि नोरा गेल। किछु बजैक हिम्मते नै
होइ। मोने-मन सोचए लगल जे जइ लूरिक चलते अखनि धरि जीलौं ओ लूरि
आब मरि रहल अछि। दोसर लूरि तँ अछि नै। की करब? असमंजसमे पड़ल पतिकेँ देखि कपली बजली-

"दुनियाँ बड़ीटा छै। जेत्तै पेट भरत तेत्तै रहब। जहिना मैरचासँ आबि लछमीपुरमे एते दिन रहलौं तहिना ई गाम छोड़ि दोसर गाममे रहब।"

पत्नीक विचारसँ सहमत होइत सोमन बाजल-

"अहाँक विचार मानि लेलौं। ऐ गामसँ चारिम दिन चलि जाएब। बीचमे जे दू दिन बाँचल अछि तइमे अहूँ आ हमहूँ गाममे टहलि कऽ सभकेँ जना दियनु जे जहिना एक दिन हँसी-खुशीसँ छाती लगेलौं तहिना आब जा रहल छी। चुपचाप गामसँ चलि जाएब नीक नै हएत। गामसँ तँ चुपचाप ओ भगैए जे अधला काज केने रहैए।"

दुआरिए-दुआरि दूनू परानी गाममे घूमि सभकेँ कहि देलकनि-

"गामसँ चलि जाएब।"

प्रात होइते दुनू परानी घरक सभ सामानक मोटरी बान्हि ओसारपर रखलक। भूखल पेट! सुखाएल मुँह! निराश मन! तँए आगू बढ़ैक डेगे नै उठैत।

ओसारापर बैसल एक-दोसराक मुहोँ देखैत आ कनबो करैत। दुनूक करेज छहोँछीत भऽ गेल।

सबा बजैत। टहटहौआ रौद। हवा शान्त। साफ मेघ। घामसँ तर-बत्तर, माथपर मोटरी, हाथमे वी.आइ.पी. बैग नेने सोमनक बेटा रामदत आँगन पहुँचल। माए-बापक दशा देखि छाती काँपए लगलै। मेह जकाँ आगूमे ठाढ़। सोगे दुनूक आँखि बन्न। बन्न आँखिसँ नोर टघरैत! दुनू अधीर। करेजकेँ थीर करैत रामदत बाजल-

"बाबू।"

बाबू शब्द कानमे पड़िते दुनू बेकतीक आँखि खुजलै। मुदा नोर टघरिते रहलै। किन्तु आब नोरक रूप बदलए लगल। अखनि धरि जे नोर सोगसँ खसैत रहै ओ सिनेहमे बदलि गेलै। अकचकाइत सोमनक मुहसँ निकलल-

"बौआ।"

बिच्चेमे झपटि कपली बाजलि-

"बे-ट-आ।"

ओसारापर बैग-मोटरी रखि रामदत पिताकेँ गोड़ लगले झुकल आकि तखने कपली उठि कऽ दुनू हाथे पँजिया कऽ पकड़ि चुम्मा लैत पुनः बाजलि-

"भाग नीक छेलौ बेटा, जे हम सभ भेँट भेलिऔ, नै तँ तूँ केतए रहितँ तँए आ हम सभ केतए रहितौं...!"

माएकेँ गोड़ लगि रामदत मोटरी खोलि दू किलो भरिक रसगुल्लाक पलोथिन, किलो भरि कटलेट, किलो भरिक बीकानेरी भुजियाबला झोरा निकालि, घुसुका कऽ रखलक। दुनू परानीक भुखसँ जरल मन। जहिना

गाएक गौजुरा बच्चा माएक थन दिस आँखि गड़ा देखैत रहैत, तहिना रसगुल्ला, भुजिया दिस रामदत आ कपली नजरि एकाग्र केने छल। दुनू लेल नव वस्त्र निकालि फुटा-फुटा रखलक। चमकैत स्टीलक थारी, लोटा, गिलास, बाटी एक भागमे रखलक। चाह बनबैक केटली, कप, छन्ना, आयरन, नारियल तेलक डिब्बा आरो-आरो सामान निकालि चद्दरिकेँ झाड़लक। जहिना चुल्हिक आगिमे ऊपर सँ थोड़बो पानि पड़ला ऊपर ठंढ़ापन आबए लगैत, तहिना दुनूक नजरि चीज-वस्तु देखि शीतल हुअ लगलै। एकदम स्नानोपरान्तक शीतलता जकाँ! सोमनक शीतल मनसँ मधुर शब्द निकललै-

"बच्चा गरमाएल छह। पहिने नहा लैह। तहन मन चैन हेतह।"

माए-बापक मुँह देखि रामदत बाजल-

"बाबू हमरो भूख लागल अछि। पहिने कनी-कनी खा लिअ। पछाति नहाएब।"

कहि रसगुल्लाक पलोथिनक गिड़ह खोलि दू बाकुट सोमनक आगू स्टीलक थारीमे आ दू बाकुट कपलीक थारीमे दऽ कटलेट, भुजियाक गिड़ह खोलि बाजल-

"जेते मन हुअए तेते खाउ। नहाइक कोनो औगताइ थोड़े अछि?"

अपनो मुँहमे रसगुल्ला लैत, बैग खोलि, मनी बैग निकालि रामदत पिता आगूमे रखलक। रूपैआ देखि कपलीक मन टुकली जकाँ पहाड़पर चढ़ि गेल। धरतीकेँ गोड़ लागलक।

खाइत-नहाइत बेर टगि गेलै। पछबरिया घरक छाहरि अदहा आँगन पसरि गेल। घरक कोनमे जहिना मोथीक पुरना बिछान बिछौल छल तहिना बिछौले रहए। घरसँ बिछान निकालि कपली पछबरिया ओसार लगा बिछौलक। ऊपरसँ नवका जाजीम बिछौलक। नवका सिरमा रखलक। तीनू गोटे बैसि गप-सप्प करए लागल। सोमन-

"बौआ, तूँ बौर केना गेलहक?"

मन पाड़ैत रामदत बाजल-

“बाबू, हम बौरलौं कहाँ! मामा गाममे मुजफ्फरपुरक छलगोरिया दुर्गाक मुरती बनबैले आएल रहए। ऊहो कुम्हारे रहए। तीन गोटे रहए। ओकर छोटका बेटा हमरे एतेटा रहए। ओकरासँ हमरा दोस्ती भऽ गेल। ओकरे संगे चलि गेलिअ।”

बिच्चेमे कपली टपकली-

“रौ डकूबा, तोरा चिट्ठीओ-पुरजी नै पठौल भेलौ।”

अपनाकेँ स्मरण करैत रामदत बाजल-

“माए, काज सिखैमे सभ किछु बिसरि गेल रहिऔ। तोरो सबहक हालत तँ बँढ़िए रहौ। तहन चिन्ते कथीक करितौं।”

सामंजस्य करैत सोमन-

“जहिया जे दुख लिखल छल से भोगलौं। यएह तँ भगवानक लीला छियनि। कखनो दुख तँ कखनो सुख।”

रामदत-

“बाबू एहेन दशा भेलह केना?”

बेटाक बात सुनि सोमनक आँखि भरि गेल, उत्तर देलक-

“बौआ, अखनि धरिक जेते लूरि-बुधि छेलए से सभ पुरान भऽ गेल। नवका सिखलौं नै।”

पिताक बात सुनि रामदत नम्हर साँस छोड़ि मुस्कीआइत कहलक-

“बाबू, हमरा तँ छुट्टिए नै दैत रहए। बीस-बीस हजार रूपैआ मासमे कमाइ छी। तैपर सँ मूर्ति बनबौनिहारक कतार लागल रहैए।”

बिच्चेमे कपली बाजलि-

“बेटा, की सभ लूरि छौ?”

मुस्कीआइत रामदत-

“माए, माटिसँ लऽ कऽ सिमटी धरिक मुरती, नाच-तमाशाक परदा, घर सभमे चित्र सभ बनबैक लूरि अछि।”

बेटाक बात सुनि सोमनक अहं जगलै। बाजल-

“बौआ, जहन एते कमाइक लूरि छह, तहन नोकरी किए करै छह?”

मुस्कीआइत रामदत बाजल-

“एते दिन जे नोकरी केलौं ओ नोकरी नै भेल। साल भरि तँ माटिए सनैमे लगि गेल। साल भरि खढ़ बन्हैमे आ पहिल माटि लगबैमे चलि गेल। तेसर साल मुरती बनबैमे लागल। चारिम साल मुरतीक आँखि बनबैमे लागल। ऐ साल पाँचम बर्ख, गुरु दैछना चुका एलौं हेन। आब अपन कारोबार करब। जखने अपन कारोबार हएत तखने ने दू-चारि गोटे सिखबो करत!”

अपन मजबूरी देखबैत सोमन-

“बौआ, अपन चिन्ता जेते शरीरकेँ नै खेलक तइसँ बेसी तोहर खेलक। किए तँ हरिदम मनमे नचैत रहए जे वंश अंत भऽ गेल। जाबे दुनू परानी छी ताबे धरि....। मुदा आइ सबुर भऽ गेल जे जाबे बीटमे बाँसक चढ़न्त रहै छै ताबे उन्नैससँ बीस होइत जाइ छै मुदा निच्चाँ मुहेँ होइते सरसरा कऽ कोँपरो सुखए लगै छै। आशा भऽ गेल जे हमरो वंश एक-सँ-एक्कैस हएत!”

बेटाकेँ आधुनिक मुर्तिकार रूपमे पाबि सोमन गद्-गद् भऽ गेल। हृदए अह्लादसँ भरि गेलै! नजरि सहजहि बेटाक नजरिमे गड़ि गेलै। धियान बढ़ैत बाँसक बीटमे बिचरण करए लगलै...! मनमे एलै, बेटासँ नव गुण सीखब। अखनो ई दुनू बेकती बहुतो काज कऽ सकै छी।

ooo

ठेलाबला

टाबरक घड़ीमे बारह बजेक घंटी बजिते भोलाक निन्न टूटि गेलनि। ओछाइनपर सँ उठि सड़कपर आबि हियासए लगला तँ देखलनि जे डंडी-तराजू माथसँ कनीए पच्छिम झुकल अछि। मेघन दुआरे सतभैयाँ झँपाएल। जेम्हर साफ मेघ रहए ओम्हुरका तरेगण हँसैत मुदा जेम्हर मेघोन रहए ओम्हुरका मलिन। गाड़ी-सबारी एक्कोटा नै। सड़क सुनसान। मुदा बिजलीक इजोत पसरल। गस्तीक सिपाही टहलैत। सड़कपर सँ भोला आबि ओछाइनपर पड़ि रहला। मुदा मन उचला-चाल करैत रहनि। सिनेमाक रील जकाँ पछिला जिनगी मनमे नचैत रहनि। जहिना चुल्हिपर चढ़ल बरतनक पानि तरसँ ऊपर अबैत तहिना भोलोक मनक खुशी हृदैसँ निकलि चिड़ै जकाँ अकासमे उड़ैत रहनि। किएक ने खुशी अबितनि? हराएल वस्तु जे भेट गेल रहनि। मन गेलनि परसुका चिट्ठीपर। जे गामसँ दुनू बेटा पठौने रहनि। असंभव काज बूझि बिसवासे नै होइत रहनि। पत्र तँ नै पढ़ल होइत रहनि मुदा पढ़बै काल जे पाँति सभ सुनने रहथि से ओहिना आँखिक आगू नचैत रहनि। पत्र उघारि आँखि गड़ा देखए लगला। ‘‘बाबू, पाँच तारीखकेँ दुनू भाँइ ज्वाइन करए जाएब। इच्छा अछि जे घरसँ विदा होइकाल अहाँकेँ गोड़ लागि घरसँ निकली। तँए पाँच तारीखकेँ दस बजेसँ पहिनइ अपने गाम पहुँच जाइ।’’ पत्रक बात मनमे अबिते भोला गाम आ शहरक बीचक सीमापर लसकि गेला। मनमे एलनि, समाजसँ निकलि छातीपर ठेला घीचि दूटा शिक्षक समाजकेँ देलिऐ, की ओइ समाजक आरो ऋण बाँकी छै? जँ नै तँ किएक ने छाती लगौता...।

जहिना गामसँ धोती गोल-गोला आ दू टाका लऽ कऽ निकलल छेलौं, तहिना देहक कपड़ा, सनेस, चाह-पानक खर्च छोड़ि किछु ने ऐठामसँ लऽ जाएब...।

चिड़ै टाँहि देलकै, फेर ओछाइनपर सँ उठि निकलला, तँ देखलखिन जे बाँस भरि ऊपर भुरूकबा आबि गेल अछि। चोट्टे घूमि कऽ आबि संगी-साथीकेँ उठा अपन सभ किछु बाँटि देलखिन, अपना लेल खाली मासुलक खर्च, सनेस आ पाँकेट खर्च मिला सए रूपैआ रखि,

कपड़ा पहिर, धरमशालाकेँ गोड़ लागि हँसैत निकलि गेला।

जहन आठे बर्खक भोला रहए तहिए माए मरि गेलखिन। तीनिए मासक पछाति पिता चुमौन कऽ लेलखिन। ओना पहुलको पत्नीसँ रघुनी चारि सन्तान भेल रहनि। मुदा खाली भोलेटा जीवित रहल। सतमाएकेँ परिवारमे ऐने भोलाकेँ सुखे भेलै। ओना गामक जनिजातिओ आ पुरुखोकेँ होइत जे सतमाए भोलाकेँ अलबा-दोलबा कऽ घरसँ भगा देतै, नै तँ परिवारमे भिनौज जरूर कराइए देती। मुदा सबहक अनुमान गलत भेल। भोला घरसँ सोलहन्नी फ्री भऽ गेल। फ्री खाली काजेटा मे भेला, मान-दान बढ़िए गेल। दुनू साँझ भानस होइते माए फुटा कऽ भोलाले सीकपर थारी साँठि कऽ रखि दइ छेली। भलहिं भोला दिनुका खेनाइ साँझमे आ रतुका खेनाइ भोरमे किएक ने खाइत।

परोपट्टामे जालिम सिंह आ उत्तम चन्दक नाच जोर पकड़ने। सभ गाममे तँ नाच पार्टी नै मुदा एक गाममे नाच भेने चारि कोसक लोक देखए अबैत।

भोला गामक नाच पार्टी सभसँ सुन्दर अछि। जेहने नगेड़ा बजौनिहार तेहने बिपटा। जइसँ पार्टीक प्रतिष्ठा दिनानुदिन बढ़िते जाइत। घरसँ फ्री भेने भोला नाचक परमानेंट देखिनिहार भऽ गेल। नाचो भरि रतुका नै कि एक घंटा, दू घंटा, तीन घंटाक। जेहने देखिनिहार जिद्दी तेहने नचिनिहारो। गामक बूढ़-बुढ़ानुससँ लऽ कऽ छौड़ा-मारड़ि भरि मन मनोरंजन करैत। मनोरंजनो सस्ता। ने नाच पार्टीकेँ रूपैआ दिअ पड़ैत आ ने खाइ-पीबैक कोनो झंझटि। ओना गामक बारह-चौदह आना लोकक हालतो रद्दिए। मुदा जे किसान परिवार छल ओ अपना ऐठाम मासमे एक-दू दिन जरूर नाच करबै छला। नटुआकेँ खाइओले दइ छेलखिन आ कोनो-कोनो समानो कीनि कऽ दइ छेलखिन। भोलो नाच पार्टीक अंग बनि गेल, डिग्री सेदैक जिम्मा भेट गेलै। डिग्री सेदैक जिम्मा भेटिते काजो बढ़ि गेलै। घूर लेल जारनोक ओरियान करए पड़ै छेलै। अपना काजमे भोला मस्त रहए लगल। मुदा एतबेसँ ओकर मन शान्त नै भेलै। काजक सृजन ओ अपनोसँ करए लगल। स्टेजक आगूमे जे छोटका धिया-पुता बैसि पीह-पाह करैत रहैए ओकरो सभपर निगरानी करए लगल। आब ओ चुपचाप एकठाम नै बैसैए। घूमि-घूमि कऽ महफिलोक निगरानी करए

लगल। आरो काज बढ़ैलक। नटुआ सभकेँ बीड़ी सेहो लगबए लगल। बीड़ी सुनगबैत-सुनगबैत अपनो बीड़ी पीअब सीखि लेलक। किछुए दिनक पछाति भोला नम्हर बीड़ीक-पियाक भऽ गेल। किएक तँ एक्के-दू दम जँ पीबए तैयो भरि रातिमे तीस-पैंतीस दम भऽ जाइ छेलै। जइसँ भरि राति मूड बनल रहै छेलै।

बीड़ीक कसगर चहटि भोलाकेँ लागि गेलै। रातिमे तँ नटुए सभसँ काज चलि जाइ छेलै मुदा दिनमे जहन अमलक तलक जोर करै तँ मन छटपटाए लगै। मूडे भङठि जाइ छेलै। मूड बनबै दुआरे भोला बापक राखल बीड़ी चोरा-चोरा पीबए लगल। जइक चलतबे सभ दिन किछु-ने-किछु बापक हाथे मारि खाइत। एक दिन एक्केटा बीड़ी रघुनीकेँ रहनि। भोला चोरा कऽ पीब लेलक। कोदारि पाड़ि रघुनी गामपर एला तँ बीड़ी पीबैक मन भेलनि। खोलियासँ आनए गेला तँ बीड़ी नै देखलनि। चोटपर भोला पकड़ा गेल। सभ तामस रघुनी भोलापर उतारि लेलनि। मारि खाए भोला कनैत उत्तर मुहेँक रस्ता पकड़लक। कनीए आगू बढ़ल आकि करियाक्काक नजरि परखलनि। भोलाक कानब सुनि ओ बूझि गेला जे भीतरिया मारि लागल छै। पुचुकारि कऽ पुछलखिन-

"की भेलौ भोला, किए हुचकै छँह?"

करियाक्काक बात सिनेह पाबि भोला आरो हुचकि-हुचकि कानए लगल। हिचकैत भोला कनीए जोरसँ काकाकेँ कहलकनि, हुचकिएमे हरा गेल। काका भोलाक बात नै बुझलनि। मुदा बिगड़लखिन नै, दहिना डेन पकड़ि रघुनीकेँ कहए बढ़लथि। काकाकेँ देखि रघुनीओक मन पघिल गेलनि। लगमे आबि काका कहलखिन-

> "रघुनी, भोला बच्चा अछि किएक तँ बिआह नै भेलैए। तँए नीक हेतह जे बिआह करा दहक। अपन भार उतरि जेतह। परिवारक बोझ पड़तै अपने सुधरत। अखनि मारने दोषी हेबह, समाज अबलट्ट जोड़तह जे बाप कुभेला करै छै। जनिजातिक मुँह रोकि सकबहक ओ कहतह जे 'माए मुइने बाप पित्ती।"

करियाक्काक विचार रघुनीक करेजकेँ छेदि देलकनि। आँखिमे नोर आबि गेलनि। अखनि धरि जे आँखि रघुनीक करियाक्कापर छेलै ओ

भोलाक गाल पड़क सूखल नोरक टघारपर पहुँच अँटकि गेलनि। मारिक चोट भोलाक देहमे निजाइए गेलै जे संग-संग बिआहक बात सुनि मनमे खुशीओ उपकलै। बुधिक हिसाबसँ भलहिं भोला बुड़िबक अछि मुदा नाचमे मेल-फीमेल गीत तँ गबिते अछि।

पिताक हैसियतसँ रघुनी करियाकाकाकेँ कहलखिन-

"काका, हम तँ ओते छह-पाँच नै बुझै छिऐ, काल्हिए चलह केतौ लड़की ठेमा कऽ बिआह कइए देबै।"

"बड़बढ़ियाँ।"

कहि करियाकाका रस्ता घेलनि।

भोलाक बिआह भेला आठे दिन भेल छेलै कि पाँच गोटे संग ससुर आबि रघुनीकेँ कहलकनि-

"बिआहसँ पहिने हम सभ नै बुझलिऐ, परसू पता लागल जे लड़िका नाच पार्टीमे रहैए। नटुआ-फटुआ लड़िका संग अपन बेटीकेँ हम नै जाए देब। तँए ई सम्बन्ध नै रहत। अपना सभमे तँ खुजले अछि। अहूँ अपन बेटाकेँ बिआहि लिअ आ हमहूँ अपना बेटीक दोसर बिआह कऽ देब।"

कहि पाँचो गोटे चलि गेला।

ससुरक बात सुनि भोलाक बुधिए हरा गेलै। जहिना जोरगर बिर्ड़ो उठलापर सभ किछु अन्हरा जाइ छै तहिना भोलोक मन अन्हरा गेलै। दुनियाँ अन्हार लागए लगलै। ओना तीन मास पहिनइ नाच पार्टी टूटि गेल छेलै। एकटा नटुआ एकटा लड़की लऽ कऽ पड़ा गेल छल जइसँ गाम दू फाँक भऽ गेने दू ग्रुपमे गाम बँटा गेलै। सौंसे गाममे सनासनी चलए लगलै। तैपर सँ भोला आरो दू फाँक भऽ गेल।

पाण्डु रोगी जकाँ भोलाक देहक खून तरे-तर सुखए लगलै। मुदा की करैत वेचारा? किछु फुड़बे नै करै छेलै। ग्लानिसँ मन कसाइन हुअ लगलै। मोने-मन अपनाकेँ धिक्कारए लगल, कोन सुगराहा भगवान हमरा जनम देलनि जे बहुओ छोड़ि देलक। विचारलक जे ऐ गामसँ केतौ चलिए जाएब नीक हएत।

घरसँ भोला पड़ा गेल। संगी-साथीक मुहसँ दिल्ली, कलकत्ता, बम्बइक विषएमे सुनन‍इ रहए। जइसँ गाड़ीओक भाँज बुझले रहैए। ने जेबीमे पाइ रहैए आ ने बटखर्चा। खाली दूटा टाका संगमे रहैए। अबधारि कऽ कलकत्ताक गाड़ी पकड़ि लेलक।

हबड़ा स्टेशन गाड़ी पहुँचिते भोला उतरि विदा भेल। टिकट नै रहनौं एक्को मिसिआ डर मनमे नै रहै। निर्मली-सकरीक बीच कहियो टिकट नै कटबै छल। एक बेर पनरह अगस्तकेँ सिमरिया धरि बिनु टिकटे घूमि आएल रहए। प्लेटफार्मक गेटपर दूटा सिपाही संग टी.टी. टिकट ओसुलैत। भोलाकेँ देखि टी.टी.क मनमे भेलै, दरभंगीया छी भीख मंगए आएल अछि। टिकट नै मंगलकै। सिपाहीओकेँ बूझि पड़लै जे जेबीमे किछु छै नै। टिकटेबला यात्री जकाँ भोलो गेट पार भऽ गेल।

सड़कपर आबि आँखि उठा कऽ तकलक तँ नम्हर-नम्हर कोठा चौरगर

सड़क, हजारो छोटका-बड़का गाड़ी आ लोकक भीड़ भोला देखलक। मनमे भेलै, भरिसक आँखिमे ने किछु भऽ गेल अछि। जहिना आँखि गड़बड़ भेने एक्के चान सात बूझि पड़ैत तहिना। दुनू हाथे दुनू आँखि मीड़ि फेर देखलक तँ ओहिना भीड़ देखि मनमे एलै, जहन एते लोकक गुजर-बसर चलै छै तँ हमर किए ने चलत। आगू बढ़ि लोकक बोली अकानए लगल। मुदा केकरो बाजब बुझबे नै करैत। अखनि धरि बुझैत जे जहिना गाए-महिंस सभठाम एक्के रंग बजैए तहिना ने मनुखो बजैत हएत। मुदा से नै देखि भेलै जे भरिसक हम मनुखक जेरिमे हरा ने तँ गेलौं हेन। फेर मनमे एलै, लोक तँ संगीक बीच हराइए, असगरमे केना हराएत। विचित्र स्थितिमे पड़ि गेल। ने आगू बढ़ैक साहस होइ आ ने केकरोसँ किछु पुछैक। हिया हारि उत्तर मुहेँ विदा भेल। सड़कक किनछरिए सभमे खाइ-पीबैक छोट-छोट दोकान पतिआनी लागल देखलक। भुख लगले रहै मुदा अपन पाइ आ बोली सुनि हिम्मते ने होइत। जेबी टोबलक तँ एकटा दू-टकही रहै। मन पड़लै मधुबनीक स्टेशन कातक होटल जइमे पाँच रूपैए प्लेट दैत। ई तँ सहजहि कलकत्ता छी। ऐठाम तँ आरो बेसी महग हेबे करत। एकटा दोकानक आगूमे ठाढ़ भऽ गर अँटबए लगल जे नै भात-रोटी तँ एक गिलास सतुए पीब लेब। बगए

देखि दोकानदारे कहलक-

"आबह, आबह बौआ। ठाढ़ किएक छह?"

अपन बोली सुनि भोला घुसुकि कऽ दोकान लग पहुँच पुछलक-

"दादा, केना खुआबै छहक?"

"तीन मास पहिने धरि आठे आनामे खुअबै छेलिऐ। अखनि बारह आनामे खुअबै छिऐ।"

भोलाक मनमे संतोख भेलै। पाइएबला गहिंकी जकाँ बाजल-

"कुरुड़ करैले पानि लाबह।"

भरि पेट खेनाइ खा भोला आगू बढ़ल। ओना तँ रंग-बिरंगक वस्तु देखैत मुदा भोलाक नजरि खाली दुइएठाम अँटकैत। देबाल सभमे साटल सिनेमाक पोस्टरपर आ सड़कपर चलैत ठेलापर। जइ पोस्टरमे डान्स करैत देखए ओइठाम अँटकि सोचए जे ई नर्तकी मौगी छी आकि मुनसा। गाम-घरमे तँ पुरुखे मौगी बनि डान्स करैए। फेर मन पड़लै संगीक मुहेँ सुनल ओ बात जे कहने रहैए सत्य हरिश्चन्द फिल्ममे मर्दे मौगीओक रौल केने रहए। गुनधुन करैत बढ़ल तँ अपने जकाँ छौड़ाकेँ ठेला ठेलने जाइत देखि सोचए लगल, ई काज तँ हमरो बुते भऽ सकैए। गाड़ीक डरेबरी तँ करल नै अबैए। बिनु सिखने रिक्शो केना चलौल हएत? ततमत करैत आगू बढ़ल। सड़कक बगलेमे एकटा ठेलाबलाकेँ चाह पीबैत देखलक। ओइठाम जा कऽ ठाढ़ भऽ गेल। चाह पीब ठेलाबला पुछलक-

"कोन गाँ रहै छह?"

"बिशौल।"

"हमहूँ तँ सुखेते रहै छी। चलह हमरा संगे।"

गप-सप्प करैत दुनू गोटे धरमतल्लाक पुरना धरमशाला लग पहुँचल, ठेलाकेँ सड़केपर छोड़ि दीनमा भोलाकेँ धरमशालाक भीतर लऽ जा कऽ कहलक-

"समांग असगरे केतौ जइहऽ नै। हरा जेबह। हम एक ट्रीप

मारने अबै छी।''

टंकीपर हाथ-पएर धोइ भोला दीनमासँ बीड़ी मांगि पीब, पीलर लगा औँगठि कऽ बैसि गेल। आँखि उठा कऽ तकलक तँ झड़ल-झुरल देबालक सिमटी, तैपर केतौ-केतौ बर-पीपरक गाछ जनमल देखलक। पैखाना कोठरी आ पानिक टंकीक आगूमे ठेहुन भरि थाल किचार सेहो देखलक मन पड़लै गाम। नाच-पार्टी टूटि गेल, घरवाली छोड़ि देलक। दू पाटी गाम भऽ गेल। सोचिते-सोचिते निन्न आबि गेलै। बैसिले-बैसल सूति रहल।

गोसाँइ डुमिते बुचाइ -दोसर ठेलाबला- आबि भोलाकेँ जगबैत पुछलक-

''कोन गाम रहै छह?''

आशा भरल स्वरमे भोला बाजल-

''बिशौल।''

बिशौलक नाओं सुनिते मुस्की दैत बुचाइ पुछलक-

''रूपनकेँ चिन्है छहक?''

''उ तँ हमरा कक्के हएत।''

अपन भाएक ससुर बूझि भोलासँ सार-बहनोइक सम्बन्ध बनबैत कहलक-

''चलू, पहिने चाह पीबी। तहन निचेनसँ गप-सप्प करब।''

कहि टंकीपर जा बुचन देह-हाथ धोइ, कपड़ा बदलि भोलाकेँ संग केने दोकानपर गेल। आँखिक इशारासँ दोकानदारकेँ दू-दूटा पनितुआ, दू-दूटा समौसा दइले कहलक। दुनू गोटे खा, चाह पीब पानक दोकानपर पहुँच बुचाइ पान मंगलक। पान सुनि भोला बाजल-

''पान छोड़ि दियौ। बीड़ीए कीनि लिअ।''

बीड़ी पीबैत दुनू गोटे धरमशालाक भीतर पहुँचल। समए भेने एका-एकी ठेलाबला सभ आबए लागल। बिशौलक नाओं सुनिते अपन-अपन

सम्बन्ध सभ फरिछाबए लगल। सम्बन्ध स्थापित होइते बेरा-बेरी चाह चलए लगलै। चाह पीबैत-पीबैत भोलाक पेट अगिया गेल। अखनि धरिक जिनगीमे एहेन सिनेह भोलाकेँ पहिल दिन भेटलै। ठेलाबला परिवारक अंग बनि गेल। भोलाक सभ बेवस्था ठेलाबला सभ कऽ देलक। दोसर दिनसँ ठेला ठेलए लगल।

शनि दिनकेँ सभ ठेलाबला रतुका शो सिनेमा देखए जाइत। ओइ शोमे एक क्लासक कन्सेशन भेटै। भोलो सभ शनि सिनेमा देखए लगल।

चौदह मास बितला पछाति भोला गाम आएल। नव चेहरा नव विचार भोलाक। घरक सभ सदस लेल कपड़ा अनने अछि। धिया-पुताकेँ दू-दूटा चौकलेट देलक। धिया-पुताकेँ चौकलेट देखि एका-एकी जनिजातिओ सभ आबए लगली। झबरीदादी आबि भोलाकेँ देखि बाजए लगली-

> "कहूँ तँ ऐसँ सुन्नर पुरुख केहेन होइ छै जे सौंथ जरौनियाँ छोड़ि देलकै।"

दादीक बात भोलाकेँ बेधि देलक। आँखि नोराए लगलै। रघुनीक मन सेहो कानए लगलै। दोसरे दिन रघुनी लड़की ताकए घरसँ निकलल। ओना लड़कीक तँ कमी नै, मुदा गाम-घर देखि कऽ कुटुमैती करैक विचार रघुनिक मनमे रहए। लड़कीक कमी तँ ओइ समाजमे अधिक अछि जइमे भ्रूण-हत्याक रोग धेने छै। समैओ बदलल। गिरहस्त परिवारसँ अधिक पसिन लोक नोकरिया परिवारकेँ करैए। बगलेक गाममे भोलाक बिआह भऽ गेल।

बिआहक तीनिए दिन पछाति कनियाँक बिदागरीओ भऽ गेलै आ पाँचमे दिन अपनो कलकत्ता चलि देलक।

सालक एगारह मास भोला कलकत्ता आ एक मास गाममे गुजारए लगल। गाम अबैत तँ अपनो घरक काज सम्हारि अनको सम्हारि दैत।

तेसर साल चढ़िते भोलाकेँ जौआँ बेटा भेलै। नवम् मास चढ़िते भोला गाम आबि गेल। मनमे आशो बनले रहै जे पाइ-कौड़ीक दिक्कत तँ नहियेँ हएत। सभ ठेलाबला अपन संस्था बना पाइ-कौड़ीक प्रबन्ध अपने केने अछि। मुदा पहिल बेर छी, कनियाँक देखभाल तँ कठिन अछिए। सरकारीक कोनो बेवस्थो नहियेँ छै। मुदा समाजो तँ समुद्र छी। बिनु

कहनौं सेवा भेटैए। जइसँ भोलोकेँ कोनो बेसी परेशानी नहियेँ भेलै।

समय आगू बढ़ल। पाँच बर्ख पुरिते भोला दुनू बेटाकेँ स्कूलमे नाओं लिखौलक। शहरक वातावरणमे रहने भोलोक विचार धिया-पुताकेँ पढ़बै दिस झुकि गेल रहै। मनमे अरोपि लेलक जे भलहिं खटनी दोबर किएक ने बढ़ि जाए मुदा दुनू बेटाकेँ जरूर पढ़ाएब। अपन आमदनी देखि पत्नीक ऑपरेशन करा देलक। जइसँ परिवारो समटले रहलै।

पढ़ैमे जेहने चन्सगर रतन तेहने लाल। क्लासमे रतन फस्ट करैत आ लाल सेकेण्ड। सतमा क्लास धरि दुनू भाँइ फस्ट-सेकेण्ड स्कूलमे करैत रहल। मुदा हाइ स्कूलमे दुनू भाँइ आर्ट लऽ पढ़ए लगल जइसँ क्लासमे कोनो पोजीसन तँ नहियेँ होइत मुदा नीक नम्बरसँ पास करए लगल।

मैट्रिकक परीक्षा दऽ दुनू भाँइ कलकत्ता गेल। अखनि धरि आने परदेशी जकाँ अपनो पिताकेँ बुझै छल। तँए मनमे रंग-बिरंगक इच्छा संयोगने कलकत्ता पहुँचल रहए। मुदा पिताक मेहनति -छाती बले ठेला घीचैत देखि- पराते भने गाम घुमैक विचार दुनू भाँइ कऽ लेलक। पितेक जोरपर तीन दिन अँटकल। मुदा किछु किनैक विचार छोड़ि देलक। मेहनतिक कमाइ देखि अपन इच्छाकेँ मोनेमे दुनू भाँइ दाबि लेलक। मुदा तैयो भोला दुनू बेटाकेँ फुलपेंट, शर्ट, धड़ी, जुत्ता कीनि देलखिन।

तीन मासक पछाति मैट्रिकक रिजल्ट निकलल। दुनू भाँइ-रतनो आ लालो- प्रथम श्रेणीसँ पास केलक। फस्ट डिवीजन भेलोपर आगू पढ़ैक विचार मनमे नै अनलक। उपार्जन लेल सोचए लगल। नोकरीक भाँज-भुँज लगबए लगल। नोकरीओ सबहक तँ वएह हाल। गामक-गाम पढ़ल बिनु पढ़ल नौजवानक फौज तैयार अछि। एक काज लेल हजार हाथ तैयार अछि। जइसँ समाजक मूल पूजी मानवीय-आगिमे जरैत सम्पति जकाँ नष्ट भऽ रहल अछि।

समए मोड़ लेलक। पढ़ल-लिखल नौजवान लेल नोकरीक छोट-छीन दरबज्जा खुजल। गामक स्कूलमे शिक्षा-मित्रक बहाली हुअ लगलै। जइसँ नव ज्योतिक संचार गामोक पढ़ल लिखल नौजवानमे भेलै। ओना समैक हिसाबसँ शिक्षा मित्रक मानदेय मात्र खोराकी भरि अछि मुदा बेरोजगारीक हिसाबसँ तँ नीक अछिए। बगले गामक स्कूलमे रतनो आ

लालोक बहाली भऽ गेलै। पाँच तारीककेँ दुनू भाँइ ज्वाइन करत।

आगू नै पढ़ैक दुख जेते दुनू भाँइक मनमे नै रहै तइसँ बेसी खुशी नोकरीसँ भेलै। कोँपर बुधिमे कलुषताक मिसिओ भरि आगमन नै भेल अछि। दुनू भाँइ बैसि कऽ अपन परिवारक सम्बन्धमे विचारए लगल। रतन लालकेँ कहलक-

> ‘‘बौआ, कोन धरानी बाबू अपना दुनू भाँइकेँ पढ़ौलनि से तँ देखले अछि। अपनो सभ एक सीमा धरि पहुँच गेल छी। तँए अपनो सबहक की दायित्व बनैए से तँ सोचए पड़तह?’’

रतनक बात सुनि लाल बाजल-

> ‘‘भैया, अपना सभ ओइ धरतीक सन्तान छी जइ धरतीपर श्रवण कुमार सन बेटा भऽ चुकल छथि। पाँच तारीखसँ पहिने बाबूकेँ कलकतासँ बजा लहुन। हम सभ ठेलाबलाक बेटा छी, ऐमे कोनो लाज नै अछि। मुदा लाजक बात तहन हएत जहन ओ ठेला घीचता आ अपना सभ कुरसीपर बैसि दोसरकेँ उपदेश देबै।’’

मुड़ी डोला स्वीकार करैत रतना बाजल-

> ‘‘आइए बाबूकेँ चिट्ठी खसा दइ छियनि जे पढ़िते गाड़ी पकड़ि घर चलि आउ। पाँच तारीखकेँ दुनू भाँइ ज्वाइन करए जाएब। दुनू भाँइक विचार अछि जे अहाँकेँ गोड़ लागि घरसँ डेग उठाएब।’’

दुनू भाँइक विचार सुनिते माएक मन सुख-दुखक सीमापर लसकि गेलनि। जरल घराड़ीपर चमकैत कोठा देखए लगली। आँखिमे नोर छिलैक गेलनि। मुदा ओ दुखक नै सुखक रहए।

OOO

जीविका

शिवरातिक प्रात। मध्य मास। जइ डेढ़ मासक शीतलहरीमे सुरूज मरनासन्न भऽ गेल छला तइमे जीबैक नव शक्ति सेहो आबि गेलनि। तँए रौदमे धीरे-धीरे गरमी अबैत। चारि बजे भोरमे उमाकान्तक नीन टुटल। निन्न टुटिते देबाल घड़ीपर नजरि देलक। चारि बजैत। ओछाइनेपर पड़ल-पड़ल उमाकान्त अपन आगूक जिनगी दिस देखए लगल। ओना काल्हिए दिनमे दुनू मित्र उमाकान्त-शोभाकान्त विचारि नेने छल, दुनू गोटे टेम्पू किनए भोरुके गाड़ीसँ दरभंगा जाएत। बदलैत जिनगीक संकल्प उमाकान्तक मनमे। किएक तँ जिनगी मनुखकेँ किछु करैले भेटैए। मनमे एलै, पाँच-पचपनमे गाड़ी अछि तँए पाँच बजे घरसँ निकलब। ओना अधे घंटाक रस्ता स्टेशनक अछि मुदा किछु पहिनइ पहुँचब नीक रहत। ओना कहियो कोनो गाड़ी अपना समैपर नहियेँ अबैए, एकाध घंटा लेट रहिते अछि मुदा तइसँ हमरा की। हम समैपर जाएब। शुभ काज हरिदम समैसँ पहिनइ करैक कोशिश करक चाही। एते बात मनमे अबिते उमाकान्त ओछाइन छोड़ि उठि गेल। उठिते मनमे एलै, हमर ने नीन टूटि गेल मुदा जँ दोसक नीन नै टुटल होइ, तहन तँ गड़बड़ हएत। से नै तँ पर-पैखाना जाइसँ पहिने ओकरो जा कऽ उठा दिऐ। फेर मनमे एलै, दतमनि करिते जाएब। किएक तँ एकटा काज तँ अगुआएल रहत। हाथमे दतमनि लइते मनमे एलै, किछु खा-पी कऽ घरसँ निकलब। रस्ता-बाटक कोन ठेकान। तहूमे लोहा-लक्कड़क सवारी। कखनि नीक रहत कखनि बगदि जाएत तेकर कोन ठेकान। एक बेर अहिना भेल रहए किने। दरभंगे जाइत रही आकि मनीगाछी लोहनाक बीच रेलक इंजिन खराब भऽ गेलै। भोरुके गाड़ी, तँए सोचने रही जे दरभंगे पहुँच किछु खाएब-पीब। ले बलैया, दू बजे तक गाड़ी ओत्तै अँटकि गेल। कखनो गाड़ीक डिब्बामे जा बैसी तँ कखनो उतरि कऽ इंजिन लग पहुँच ड्राइवरकेँ पुछिऐ। ओहू वेचाराक मन घोर-घोर भेल रहै। हमहूँ आशा-बाटीमे रहि गेलौं। से जँ पहिने बुझितिऐ तँ गाड़ी छोड़ि बिदेसर चौकपर चलि जैतौं आ बस पकड़ि सबेर सकाल दरभंगा पहुँच जैतौं। सेहो नै केलौं। तेकर फल भेल जे भूखे-पियासे खूब टटेलौं। तँए, बिनु किछु मुँहमे देने घरसँ नै निकलब।

ई बात मनमे अबिते उमाकान्त पत्नीकेँ उठबैत कहलक-

> ''जाबे हम दोस ऐठामसँ अबै छी ताबे अहाँ चारिटा रोटी आ अल्लूक भुजिया बना लेब।''

कहि उमाकान्त शोभाकान्तक ऐठाम दतमनि करैत विदा भेल। दाँतमे घुस्सो दिअए आ मोने-मन विचारबो करए, काजे एहेन छी जे मनुखकेँ मनुखो बनबैए आ जानवरो। दुनियाँक सभ मनुख तँ किछु-ने-किछु करिते अछि। मुदा कियो देव बनि जाइए तँ कियो दानव। तँए काजकेँ परिखब सभसँ मूल बात छी। शोभाकान्त ऐठाम पहुँचिते उमाकान्त रस्तेपर सँ बोली देलक-

> ''दोस छेँ रौ, रौ दोस।''

ओछाइनपर सँ उठैत शोभाकान्त बाजल-

> ''हँ। दोस छिऐ रौ, हमरो नीन टुटले अछि। अखनि तँ अन्हारे छै।''

उमाकान्त- सबा चारि बजै छै। तैयार होइत-होइत पाँच बजिए जाएत। कनी पहिले स्टेशन जाएब।''

उमाकान्त आ शोभाकान्त एक्के बतारी। दुनूमे उमेरक हिसाबसँ के छोट के पैघ, से तँ ने अपने दुनू गोटे बुझए आ ने कियो टोले-पड़ोसक। किएक तँ टिपनि दुनूमेसँ केकरो नै। बच्चेसँ दुनू गोटे बेसी काल एक्केठाम रहैत तँए समाजोक लोक बिसरि गेल। अपना दुनू गोटेक माएओ-बाप मरिए गेल, आन मोने किएक राखत। मुदा दुनू गोटे ऐ मौकाक लाभ उठबैत। लाभ ई उठबैत जे दुनू एक-दोसराक स्त्रीसँ हँसी-चौल करैत। तइले दुनूमेसँ केकरो मलाल नै। मुदा गामक बुढ़ो-बुढ़ानुस आ नवकीओ कनियाँ दुनू स्त्रीगणकेँ निरलज कहैत। तेकर गम दुनूमे सँ केकरो नै। किएक तँ सभ स्त्रीगणकेँ होइत जे अधिक-सँ-अधिक पुरुख संग गप-सप्प हँसी-मजाक हुअए।

बच्चेसँ दुनू गोटे- उमाकान्त आ शोभाकान्त- एक्केठाम गुल्लीओ-डंडा खेलए आ गामेक स्कूलमे पढ़बो करए। बच्चामे दुनू गोटे दुनूकेँ नामे धऽ-धऽ बजैत। मुदा चेष्टगर भेलापर, कनगुरिया ओंगरीमे ओंगरी भिरा दोस्ती

लगा लेलक। मिडिल तक गामेक स्कूलमे दुनू गोटे पढ़लक। मुदा हाइ स्कूलमे उमाकान्तेटा नाओं लिखेलक। शोभाकान्त गरीब, तँए पढ़ाइ छोड़ि देलक। मुदा उमाकान्तकेँ दू-तीन बीघा खेतो आ पितो गामेक स्कूलमे नोकरी करैत। ओना शोभाकान्त उमाकान्तसँ बेसी चड़फड़ो आ पढ़ैओमे नीक। तँए अपना क्लासक मुनिट्रीआइओ करैत। मुनीटरक बात शिक्षको अधिक मानथि आ चट्टियाक बीच धाखो। पढ़ाइ छोड़ला पछाति शोभाकान्त नोकरी करए पटना गेल। गामसँ तँ यएह सोचि निकलल जे जएह काज भेटत सएह करब। मुदा रस्तामे विचार बदलि गेलै। विचार ई बदललै जे ने चाहक दोकानमे नोकरी करब आ ने होटलमे। ने कोठीमे काज करब आ ने ताड़ी-दारूक दोकानमे। अगर जँ नोकरी नै हएत तँ रिक्शे चलाएब वा मोटिएमे काज करब। सरकारी नोकरीक तँ कोनो आशे नै। किएक तँ उमेरो नै भेल हेन।

गामसँ शहर शोभाकान्त पहिले-पहिल पहुँचल। मुदा जे आकर्षण शहर-बजार देखि लोककेँ होइ ओ आकर्षण शोभाकान्तकेँ नै भेलै। जहिना सोना-चानीक दोकान दिस गरीबक नजरि नै पड़ैए, तहिना। स्टेशनसँ उतरि शोभाकान्त उत्तर दिसक रस्ता धेलक। कोठा-कोठीपर नजरि पड़बे ने करैए। किछु दूर गेलापर एकटा साइकिल मिस्त्रीक दोकान देखलक। रस्तापर ठाढ़ भऽ दोकान हियासए लगल। दोकानदारोक नजरि पड़लै। शोभाकान्तपर नजरि पड़िते दोकानदारक मनमे एलै जे छोटो-छोटो काजमे अपने बरदा जाइ छी जइसँ नम्हर काज पछुआ जाइए। से नै तँ ऐ बच्चाकेँ पुछिऐ जे नोकरी रहत। जँ रहत तँ रखि लेब। हाथक इशारासँ हाक पाड़ि मिस्त्री पुछलक-

"बाउ, की नाओं छी?

"शोभाकान्त।"

"केतए घर छी?"

"मधुबनी जिला।"

"केतए जाएब?"

"नोकरी करए एलौं।"

“ऐठाम रहब?”

“हँ। रहब।”

जहिना अतिथि-अभ्यागतकेँ दुआरपर अबिते घरबारी लोटामे पानि आनि आगूमे दैत, खाइक आग्रह करैत, तहिना शोभाकान्तकेँ मिस्त्री केलक। आठ आना पाइ दैत, आँगुरक इशारासँ मुरही-कचड़ीक दोकान देखबैत कहलक जे ओइ दोकानसँ जलखै केने आउ। झोरा रखि शोभाकान्त विदा भेल। ओना गाड़ीक झमारसँ देहो-हाथ दुखाइत रहै आ भूखो लगलै रहै। मुदा! नोकरी पाबि देहक दरदो आ भूखो कमि गेलै। मुरही-कचड़ीक दोकानपर बैसिते, बगए-बानि देखि दोकानदार पुछलकै-

“बौआ, अहाँक घर केतए छी?”

“मधुबनी जिला।”

“गामक नाओं कहूँ।”

“लालगंज।”

“हमरो घर तँ अहाँक बगलेमे अछि, रूपौली। बीस-पच्चीस बर्खसँ हम ऐठाम रहै छी।”

बिनु पाइ नेनइ दोकानदार शोभाकान्तकेँ भरि पेट खुआ देलक। खा कऽ शोभाकान्त साइकिल दोकानपर आबि मिस्त्रीकेँ पाइ घुमबैत कहलक-

“दोकानदार पाइ नै लेलक।”

मुदा गहिंकी सबहक भीड़-झमेल दुआरे मिस्त्री आगू किछु नै पुछलक।

पंचर सटनाइ, छोट-छोट भङठी केनाइसँ शोभाकान्त अपन जिनगी शुरू केलक। छोट-छोट काज भेने दोकानदारोकेँ आगू बढ़ैक अवसर हाथ लगलै। साइकिल, रिक्शा संग मोटर साइकिल आ टेम्पूक मरम्मत केनाइ सेहो शुरू केलक। शोभाकान्तोकेँ मौका भेटलै। उपार्जनक लूरि आबए लगलै। दुनियाँकेँ बिसरि शोभाकान्त रिन्च-हथौरीमे मगन भऽ गेल।

छह मास बीतैत-बीतैत शोभाकान्त साइकिल-रिक्शाक मिस्त्री बनि

गेल। संगहि मोटर साइकिल आ टेम्पू चलाएब सेहो सीखि लेलक। मेहनति केने शरीरो फौदा गेलै। साले भरिमे जवान भऽ गेल।

डरेबरीक लाइसेंस शोभाकान्त बना लेलक। लाइसेंस बनैबते शोभाकान्तक मनमे द्वन्द उत्पन्न हुअ लगलै जे डरेबरी करी आकि अपन दोकान खोलि मिस्त्रीआइ करी। मुदा अपन दोकान खोलैले घर भाड़ा संग मरम्मत करैक सामानो लिअए पड़त। फेर मनमे एलै, एक तँ मेनरोडमे घर नै भेटत दोसर पाइओ ओते नइए जे सामानो किनब। तइसँ नीक जे डरेबरीए करी। सएह केलक। डरेबरीमे दरमहो नीक आ बाइलीओ आमदनी। महिना दिन तँ अबेवस्थिते रहल मुदा दोसर मास बीतैत-बीतैत असथिर भऽ गेल। दरमाहा जमा करए लगल आ बाइली आमदनी घर पठबए लगल।

सालभरिक दरमाहासँ शोभाकान्त टेम्पू कीनि लेलक। टेम्पू कीनि अपन सभ सामान लादि, सोझे गाम चलि आएल।

सेकेण्ड डिबीजनसँ उमाकान्त बी.ए. पास केलक। ओना पढ़लो-लिखल लोक कम मुदा ओहूसँ कम नोकरी। खेती-पथारी आ कारोबार कियो पढ़ल-लिखल करै नै चाहैत। जइसँ गाम-सबहक दशा दिनो-दिन पाछुए मुहेँ ससरैत। गामक लोको तेहने जे पढ़ल-लिखल लोककेँ खेती करैत देखि दिल खोलि कऽ हँसबो करैत आ लाख तरहक लांछना सेहो लगबैत। जइसँ गामक पढ़ल-लिखल लोककेँ नोकरी करब मजबूरी भऽ जाइत।

नोकरीक भाँजमे उमाकान्त दौग-धूप करए लगल। मुदा मनमे संकल्प रखने जे घूस दऽ कऽ नोकरी नै करब। चाहे नोकरी हुअए वा नै। दौग-धूपसँ मन विचलित हुअ लगलै। संकल्प डोलए लगलै। मनमे अनेको प्रश्न औँढ़ मारए लगलै। कखनो-कखनो मनमे होइ जे पाँच कट्ठा खेत बेचि कऽ नोकरी पकड़ि लेब। फेर मनमे होइ जे जहन घूस दऽ कऽ नोकरी लेब तँ घूस लऽ कऽ लोकक काज किए ने करबै? फेर मनमे होइ जे तहन जिनगी केहेन हएत? अछैते जिबने मुर्दा बनल रहब। लोक शरीर तियागक पछाति मृत्यु धारण करैए आ हम जीवितेमे मरल रहब। फेर मनमे एलै, पत्नी तँ जीवन-संगिनी छथि तँए एक बेर हुनकोसँ पूछि लियनि। मनमे शान्ति एलै। पुछलक-

''बिनु घूस-घासक नोकरी भेटब कठिन अछि, से अहाँक कि विचार?''

मुस्की दैत पत्नी बाजलि-

''आइक जुगमे नोकरी भेटब जिनगी भेटब छी। तँए हमरो गहना-जेबर अछि आ जँ ओइसँ नै पूड़ए तँ थोड़े खेतो बेचि कऽ नोकरी पकड़ि लिअ। देखते छिऐ जे साले भरिमे लोक की-सँ-की कए लइए।''

एक तँ ओहिना उमाकान्तक मन घोर-घोर होइत तैपर सँ पत्नीक बात आरो मरनासन्न बना देलकै। जिनगीक आशा टुटए लगलै। आँखिक रोशनी क्षीण हुअ लगलै। आशाक ज्योति केतौ बुझिए ने पड़ैत। जहिना अन्हारमे सगतरि भूते-प्रेत, चोरे-चौहार, साँपे-छुछुनरि बूझि पड़ैत तहिना उमाकान्तकेँ हुअ लगलै। डुमैत जिनगीक आशामे कनी टिमटिमाइत इजोत बूझि पड़लै। इजोत अबिते शक्तिक संचार हुअ लगलै। मनमे संकल्पक अंकुर अंकुरित हुअ लगलै। जइसँ दृढ़ताक उदए सेहो हुअ लगलै। मोने-मन विचार करए लागल, जिनगीक किछु लक्ष्य हेबाक चाही। मनुख तँ चुट्टी-पिपड़ी नै ने छी जे साधारण केकरो पएर पड़लासँ मरि जाएत। मनुख तँ ब्रहमक अंश छी। ओकरामे विशाल शक्ति छिपल छै। जिनगीमे अहिना हवा-बिहाड़ि अबै छै तइसँ की मनुख मनुखता गमा लेत। मनुखते तँ मनुखक धरोहर सम्पति छी। जेकरा लोक ओहिना केतौ फेक देत! कथमपि नै! मोने-मन विचारलक, जौं हमरा नोकरी नै भेटत। तँ कि हाथपर हाथ दऽ कऽ बपहारि काटब? एते कमजोर छी? की हमरामे मनुखक सभ गुण मरि चुकल अछि। हमरा बुते किछु कएल नै हएत? जरूर हएत!

नोकरी दिससँ नजरि हटा उमाकान्त राशनक दोकान चलबैक विचार केलक। विचार ऐ दुआरे केलक जे जीबैले अर्थक उपार्जन जरूरी होइत। जिनगीक अधिकांश काज अर्थेसँ चलैत। तँए बिनु अर्थे जिनगी जिनगी नै रहि जाइत। हँ ई बात जरूर जे अर्थक उपार्जन आ उपयोगक ढंग नीक हेबाक चाही। राशनक दोकानक जरूरति सभ गाममे अछि, सरकार आ समाजक बीचक कड़ी सेहो छी। ओना डीलरीक लाइसेंसो

बनबैमे पाइएक खेल चलैए। मुदा तैयो जी-जाँति कऽ उमाकान्त लाइसेंस बनबै दिस बढ़ल।

डीलरीक लाइसेंस बनौला पछाति उमाकान्त समान उठबैसँ पहिने मिश्रीलालसँ कारोबारक तौर-तरीका बुझैले गेल। मिश्रीलाल पुरान डीलर। मुदा जहिना गाममे अपन इज्जत बनौने तहिना सरकारीओ ऑफिसमे। इज्जत बनबैक अपन तरीका मिश्रीलालक। तँए ब्लौकक पैंतालिसो डीलर मिलि ओकरा यूनियनक सेक्रेट्री बनौने। जहिना सभ डीलर मिश्रीलालकेँ मानैत तहिना मिश्रीलालो सभकेँ। यएह बूझि उमाकान्त भेँट करब आवश्यक बुझलक। मिश्रीलाल ऐठाम उमाकान्त पहुँचल तँ देखलक जे चारि-पाँचटा धिया-पुता रजिस्टरपर दसखतो करैए आ निशानो लगबैए। किएक तँ पछिला मासक समान बँटबारा भऽ गेल छेलै। तँए बिनु रजिस्टर तैयार भेने अगिला समान केना उठत? जरूरी काज बूझि मिश्रीलाल मगन भऽ अपन काज करैत। उमाकान्तकेँ देखते मिश्रीलाल रजिस्टरक बिच्चेमे, जइ पेजमे निशान आ हस्ताक्षर करबैत रहए तही पेजमे पेनो आ कार्बनो रखि मोड़ैत बेटाकेँ कहलक-

''बौआ, चाह बनबौने आबह?''

उमाकान्त दिस होइत पुछलक-

''किम्हर किम्हर एनाइ भेलै बौआ।''

निर्विकार भऽ उमाकान्त बाजल-

''भैया, अहाँ पुरान डीलर छी। डीलरीक सभ किछु जनै छिऐ। बी.ए. केला पछाति हम दू साल नोकरीक पाछू बौएलौं मुदा केतौ गर नै धेलक। आब तँ नोकरीक उमेरो लगिचाएले अछि, तँए नोकरीक आशा तोड़ि डीलरीक लाइसेंस बनेलौं हेन।''

नोकरीक गर नै लागब सुनि मिश्रीलाल पुछलकै-

''बौआ, जहिना कोनो परिवारमे चारि-पाँच भाँइक भैयारी रहैए। सभ किछु शामिले रहै छै। मुदा सभ भाँइक पत्नीकेँ अप्पन-अप्पन सम्पति सेहो छै। जइमे भाइओ सभ चोरा-नुका शामिल भऽ जाइए। जेकर फल होइ छै घरमे आगि लागब। तहिना

नोकरीओ सभमे भऽ गेल अछि। जे कुरसीपर अछि ओ अपने सार-बहनोइक जोगारमे रहैए। कहीं केतौ बिकरीओ होइ छै। जेकर परिणाम बनि गेल अछि जे नोकरी केनिहारोक वंश बनि गेल अछि। देशक विकास केहेन अछि से तँ तूँ पढ़ले-लिखल छह, सभ किछु जनिते छहक। जँ कनी-मनी एक रत्ती आगूओ बढ़ि रहल अछि तँ ओइसँ बेसी ओइ नोकरिहाराक वंशमे नोकरी केनिहार बढ़ि रहल अछि। तँए देखबहक जे डाक्टरेक बेटा डाक्टर बनत। इंजीनियरेक इंजीनियर। केते कहबह। जे जेते अछि ओ बपौती बूझि ओकरा पकड़ने अछि। तैबीच तेसरकेँ जे गति हेबाक चाही सएह तोरो भेलह। तहूसँ बेसी जुलुम अछि जे किछु गनल-गूथल लोक अछि जे नोकरीओ करैए, खेतो हथिऔने अछि आ जे कोनो सरकारी योजना बनै छै ओकरो हड़पैए। जइसँ देखबहक जे केकरो सम्पति राइ-छित्ती होइए आ कियो सम्पति लेल लल्ल अछि।''

उमाकान्त-

''भैया, दुनियाँ-दारीक गप छोड़ू। अपना काजक विषएमे कहूँ।''

मिश्रीलाल-

''बौआ, अखनि तूँ जुआन-जहान छह। मुदा जे काज कए कऽ अपना जीबए चाहै छह ओ गलती भेलह। तोरा सन आदमीकेँ डीलरी नै करक चाही। हम तँ सभ घाटक पानि पिनाइ सीखि नेने छी। की नीक की अधला से बुझिते ने छिऐ। बुझह तँ नढ़ड़ा-हेल हेलै छी। तँए हमर कारबार ठीक अछि। मुदा तोरा बुते नै हेतह?

उमाकान्त-

''किए?''

तैबीच चाह एलै। दुनू गोटे हाथमे गिलास लेलक। एक घोंट चाह पीब मिश्रीलाल-

''देखहक, डीलरी दू दुनियाँक सीमा परक काज छी। एक दिस सत्ताक दुनियाँ अछि आ दोसर दिस आम लोकक। गड़बड़ दुनू अछि।''

उमाकान्त-

''से की?''

मिश्रीलाल डीलर बाजल-

''पहिने पब्लिकेक बात कहै छिअ। राशनक वस्तु चीनी-मटियातेल तँ हिसाबेसँ भेटैए। नामे छिऐ कोटा। जँ मनमाफित भेटितै तँ खुल्ला बजार होइतै। से तँ नै अछि। गाममे किछु एहेन-एहेन रंगबाज सभ बनि गेल अछि जेकरा खाइ-पीबैले नै देबहक तँ भरि दिन अपनो आ अनको उसका-उसका रग्गड़े करैत रहतह। रग्गड़कैं तँ कोनो सीमा नै होइ छै। जँ कहीं गोटे दिन लाठीए-लठौबलि भऽ जेतह तहन तँ लेनीक देनी पड़ि जेतह। दू पाइ कमाइले धंधा करबह आकि कोट-कचहरीक फेड़मे पड़बह। बुझिते छहक जे कोट-कचहरी लोकेक पाइपर ठाढ़ अछि। ओइ साला रंगबाज सभकैं की अछि। अपने किछु करतह नै आ अनका काजमे हरिदम टाङे अड़ौतह। गामक उत्पातसँ लऽ कऽ थाना-पुलिस, कोट-कचहरीक दलाली भरि दिन करैत रहतह। आब तोंही कहऽ जे बरदास हेतह? नीक लोक लेल ऐ दुनियाँमे केतौ जगह नै अछि। ओइ साला सभकैं की छै, भरि दिन ताड़ी-दारू पीब ढहनाइत रहतह। ने छोट-पैघक विचार करतह आ ने गारि-मारिक। तैपर सँ पंचायतक मुखिओ आ वार्डो-मेम्बर सभकैं कमीशन चाहबे करिऐ। पब्लिको तेहने अछि। देखबहक जे केतेक एहेनो परिवार अछि जेकरा कोटाक वस्तुक जरूरति नै छै जेना चीनी। मुदा ऊहो कोटासँ चीनी उठा दोकानमे किछु नफा लऽ कऽ बेचि लेतह। जहन कि किछु परिवार एहेनो अछि जेकरा कोटाक वस्तुसँ खर्च नै पूड़ै छै। अपनो आँखिसँ देखबहक जे दस-बीस कप चाह आने पीबैए। की ओकरा सभकैं फाजिल नै देबहक? जखने एक गोटेकैं

फाजिल देबहक तँ दोसराक हिस्सा कटबे करत। एहेन स्थितिमे डीलरे की करत। आखिर ऊहो तँ समाजेक लोक छी?''

उमाकान्त-

''सभ गोटे तँ कोटा उठैबतो नै हेतै?''

मिश्रीलाल-

''हँ, सेहो होइए। मुदा ओ तहन होइए जहन कोटाक वस्तुक दाम आ खुल्ला बजारक दाममे अन्तर नै रहैए। मुदा जहन दुनूक दाममे अन्तर रहैए तहन जेकरो ने अपना पाइ रहै छै ऊहो दोकानदार सभसँ अदहा-अदही नफापर पाइ लऽ कऽ समान उठा लइए आ बेचि लइए। तेतबे नै ऊहो चाहतह जे किछु फाजिले कऽ समान भेटए।''

मुँह बिजकबैत उमाकान्त-

''तब तँ बड़ ओझरी अछि।''

उमाकान्तक सोचकँ गहराइ दिस जाइत देखि मुस्की दैत मिश्रीलाल-

''बौआ, एतबेमे छगुन्ता लगै छह। ई तँ एक दिसक बात कहलिअ। अहूमे केते ओझरी छुटिए गेलह। जँ सेरिया कऽ सभ बात कहबह तँ सैकड़ो ओझरी आरो अछि। आब सुनह ऑफिस, बैंक, एफ.सी.आइ. गोदामक सम्बन्धमे। दौग-बरहा जे करए पड़तह ओकरा छोड़ि दइ छिअ। किएक तँ मोटा-मोटी यएह बुझह जे एक दिनक काजमे पनरहो दिनसँ बेसीए लगतह। जइमे समए संग पच्चीस-पचास पौकेटो खर्च हेबे करतह।''

उमाकान्त-

''तब तँ बड़ लफड़ा अछि?''

मिश्रीलाल-

''लफड़ा की लफड़ा जकाँ अछि। जखने ब्लौक पएर देबहक

आकि गीध जकाँ चारू भरसँ अफसरसँ लऽ कऽ चपरासी धरि, नोंचए लगतह। कियो कहतह जे चाह पिआउ तँ कियो कहतह पान खुआउ। कियो कहतह सिगरेट पियाउ तँ कियो मिठाइ खुआउ। सुनि-सुनि मन महुरा जेतह। मुदा की करबहक? भीखमंगोसँ गेल-गुजरल चालि देखबहक। जेना अपना दरमाहा भेटिते ने होइ। मुदा डीलरे की करत? अगर जँ सभकें खुशी नै राखत तँ काजे लटपटेतै। काजो तेहेन अछि जे एक्के टेबुलसँ नै होइ छै। जेते टेबुल तेते खर्च। अखनि हमहू औगताएल छी, तँए नीक-नहाँति नै कहि सकबह। देखते छहक जे रजिस्टर तैयार करै छी। ब्लौक जाएब। मुदा तैयो एक-दूटा बात कहि दइ छियह। सबहक तड़ी-घटी ने हम बुझै छिऐ।''

उमाकान्त-

''कनी-कनी सबहक बात कहि दिअ?''

मिश्रीलाल-

''औगताएलमे की सभ बात मनो पड़ै छै। मुदा जे मन पड़ैए से कहि दइ छिअ। पहिने बैंकक सुनह। कोरियापट्टीमे दुनियाँलाल डीलर अछि। वेचारा बड़ मुँहसच्च। जहिना-जहिना समान बिकाएल रहै तहिना-तहिना पाइ रखने रहए। खुदरा समानक बिकरी तँए खुदरा पाइ। अगिला कोटा लेल जहन बैंकमे जमा करए गेल तँ खुदरा पाइ देखि बैंकमे लेबे ने केलकै। कहलकै जे ओते हमरा छुट्टी अछि जे भरि दिन तोरे पाइ गनैत रहब। भरि दिन वेचारा छटपटा कऽ रहि गेल। बैंकसँ निकलबो ने करए जे पौकेटमार सभ ने कहीं पाइ उड़ा दिअए। दोसर दिन आबि कऽ हमरा कहलक। तामस तँ बड़ उठल। किएक तँ जेना मोटका पाइ सरकारक होइ आ खुदरा नै, तहिना। जहन पाइएक लेन-देन बैंकमे होइ छै तँ गनैले स्टाफ राखह। मुदा की करितिऐ। दोसर दिन गेलौं। मनेजरकें कहलिऐ। तहन दू प्रतिशत कमीशनपर फड़ियाएल। आब तोंही कहऽ जे ई दू प्रतिशत कोन बिलमे चलि गेल। तहिना दोसर बात लैह, सप्लाइ

इन्सपेक्टरक। इन्सपेक्टर बदली भेल। नव इन्सपेक्टर बूझि पनरह-बीस गोटे डीलर ओकरा पाइ नै देलकै। ओना पचास रूपैए प्रति डीलर प्रति मास इन्सपेक्टरकेँ दइए। सभकेँ मनमे भेलै, नव हाकिम छथि तँए छह मास तँ इमानदारी रखबे करता। ले बलैया, जहाँ डीलर दोसर कोटाक सभ समान उठौलक आकि पराते भेने विश्वनाथ डीलर ऐठाम पहुँच गेल। विश्वनाथोकेँ कोनो डर मनमे नै। किएक तँ समान ओहिना पड़ल छेलै। विश्वनाथकेँ इन्सपेक्टर चीनी काँटा करैले कहलक। ऊहो तैयार भऽ काँटा करए लगल। पाँचो बोरा मिला कऽ चौदह किलो चीनी कमि गेलै।

बिच्चेमे उमाकान्त पुछि बैसल-

“किए, चीनी तौलि कऽ नै नेने रहए से?”

मिश्रीलाल-

“ई एफ.सी.आइ. गोदामक खेल छिऐ। एफ.सी.आइ. गोदाम तँ ब्लौके-ब्लौके ने अछि। तँए देखबहक जे डीलर सबहक नम्मर लागल अछि। सभकेँ औगताइ करैत देखबहक। किएक तँ अपन टाएर गाड़ी तँ सभ डीलरक रहै नै छै। अधिक डीलर भड़ेपर गाड़ी लऽ जाइए। तँए मनमे होइत रहै छै जे जेते जल्दी समान हएत तेते कम भाड़ा लगत। तँए कियो समान तौलबै नै अछि। जे कियो पच्चीस रूपैए बोरा मनेजरकेँ दऽ देने रहलै ओकरा तँ नीक समानो आ पुड़ल बोरो देलक। जे पाइ नै देने रहल ओकरा समानो दब आ घटल बोरो देलक। चोर-पर-चोर अछि।”

छुब्ध होइत उमाकान्त बाजल-

“हद लीला सभ अछि।”

मिश्रीलाल-

“आब मार्केटिंग अफसर एम.ओ.क बात सुनह। अखुनका जे

एम.ओ. अछि ओ पीआक अछि। ओना काज करैमे भुते अछि। रस्तो-पेरामे मोटर साइकिल लगा फाइलपर लिखि दइए। मुदा ओहिना नै। पहिले एक बोतल पीआ देबहक, तहन।''

उमाकान्त-

''अफसर भऽ कऽ रस्ता-पेरापर बोतल पीबैए?''

ठहाका मारि हँसि मिश्रीलाल-

''बौआ, तूँ गाम-घरक बात बुझै छहक। गाम-घरमे जे छोट-पैघक, इज्जत-आबरूक विचार अछि ओ केतए पेबह। मुदा तैयो ओकरामे दूटा गुण जरूर छेलै। पहिल गुण छेलै जे आन कोनो स्त्रीगण दिस नै तकितह। आ दोसर गुण छेलै जे केकरोसँ एक्को पाइ नै लइतह। मुदा ऐसँ पहुलका एम.ओ. जे रहए ओ भारी पइखौक। सभ काजक रेट बनौने रहए। जे सभ बुझै। तँए जेकरा जे काज रहै ओ ओइ हिसाबसँ पाइ दऽ दइ आ लगले काज करा लिअए।''

मुस्कीआइत उमाकान्त-

''तब तँ पक्का नटकिया सभ अछि।''

मिश्रीलाल-

''नटकिया कि नटकिया जकाँ अछि। रंग-बिरंगक चोर सभ पसरल अछि। कियो धनक चोर अछि तँ कियो धरमक। कियो बुधिक चोर अछि तँ कियो विवेकक। केते कहबह। तेसराक सुनह। अंदाज करीब पचपन छप्पन बर्खक उमेर ओकर रहए। मुदा फीट-फाटमे जुआनक कान कटैत। जेहने हीरोकट कपड़ा पहिरैत तेहने हिप्पीकट केश रखैत। रंग-बिरंगक तेल आ सेंट लगबै। हरिदम ऊपरका जेबीमे ककही देखबे करितहक। रातिओमे कएक बेर केश सीटै। चौबीस घंटामे दू बेर दाढ़ी बनबै। ओ एम.ओ. भारी नरचोप जेहने अपने तेहने बहुओ। दिन भरिमे पच्चीसो बेर कपड़ा साड़ी-ब्लाउज आ जूत्ता-चप्पल बदलै।

केशमे केते रंगक क्लीप लगबै तेकर ठेकान नै। भरि दिन रिक्शापर ऐ डेरासँ ओइ डेरा आ ऐ बजारसँ ओइ बजार घुमिते रहै छलि। संयोगो ओकरा नीक भेटलै। एके बेर बी.डी.ओ., सी.ओक बदली भऽ गेलै। ओकरे दुनू गोटे चार्ज दऽ कऽ गेल। ओही बीच शिक्षा मित्रक भेकेन्सी भेल। लड़की सभकेँ आरक्षण भेटलै। जइमे जाति प्रमाणपत्रक जरूरति पड़ल।''

अपशोच करैत मिश्रीलाल आगू बाजल-

''बौआ की कहबह, ओइ सालाक डेरा बेश्यालय बनि गेल। कखनो ब्लौक ऑफिसमे नै बैइसै। जहन बैसबो करै तँ आन-आन कागत देखै मुदा एक्कोटा जाति प्रमाणपत्रपर हस्ताक्षर नै करै।''

''परिवारक कियो किछु ने कहै?''

''स्त्रीक विषएमे तँ कहिए देलिअ। जेठकी बेटी बी.ए.मे पढ़ैत रहए। ओकरो चालि-ढालि बापे-माए जकाँ। कौलेजेक एकटा छौंड़ा जे आदिवासी क्रिश्चन छल तेकरा संग भागि गेलै।''

उमाकान्त-

''बाप-माएकेँ लाज नै भेलै?''

''लाज तँ तेहेन भेलै जे राता-राती ऐठीमसँ भागल।''

''अहूँकेँ बहुत काज अछि आ हमरो मन भरि गेल। आखिरीमे एकटा बात बुझा दिअ।''

मिश्रीलाल-

''की?''

उमाकान्त-

''अहाँ केना अप्पन प्रतिष्ठा समाजो आ ऑफिसोमे बना कऽ रखने छी?''

मिश्रीलाल मुस्कीआइत-

''समाजमे जेकरा ऐठाम सराध, बिआह, उपनैन, मूड़न, भनडारा वा आन कोनो तरहक काज होइ छै तँ ओकरा हम जरूर चीन्नीओ आ मोटिओ तेलक पूर्ति कइए दइ छिऐ। भलहिं अपना लग नहियोँ रहल तैयो जेतए-तेतएसँ आनि पुराइए दइ छिऐ। जइसँ समाजक सभ खुशी रहैए। ऑफिसक बात तँ पहिने कहि देलिअ।''

उमाकान्त-

''हमरा की करक चाही? किएक तँ जइ हिसाबे अहाँ कहलौं तइसँ हम्मर मन भटकि रहल अछि।''

मिश्रीलाल-

''बौआ, जहन लाइसेंस बना लेलह तहन कम-सँ-कम एक खेप समान उठा कऽ बाँटि लैह। जइसँ समाजोक चालि-ढालि आ ऑफिसोक चालि-ढालि देखि लेबहक। बेवहारिक ज्ञान भऽ जेतह। बेवहारिके ज्ञान असली ज्ञान छिऐ। अखनि हम एते मदति जरूर कऽ देबह जे तोरा केतौ अड़चन नै हेतह। मुदा दोसर खेपक भार हम नै लेबह। किएक तँ बुझिते छहक जे बिलाइ जे मूससँ दोस्ती करत तँ खाएत की? तोरो सीखैक अवसर भेट जेतह।''

उमाकान्त-

''बड़बढ़ियाँ! जहिना अहाँ कहलौं तहिना हम करब।''

मिश्रीलाल-

''बाउ, आब तँ हम बूढ़ भेलौं। जहिया हम सोलहे बर्खक रही तहिएसँ डीलरी करै छी। मुदा पहुलका आ अखुनकामे अकास-पतालक अंतर भऽ गेल अछि। जेते धन आ शिक्षाक प्रसार भेल जा रहल छै ओते घटिया मनुख सेहो बढ़ि रहल अछि। पहिने इमानदार लोक बेसी छल मुदा आब आँगुरपर गनए पड़तह। हम तँ डीलरीमे रमि गेलौं। सभ घाटक पानि पिनाइ सीखि नेने छी,

तँए नीक छी।''

उमाकान्त-

''चलैत-चलैत किछु...?''

मिश्रीलाल-

''जहिना आमक गाछ होइ छै जे आमक आँठीसँ जनमैए। तहिना तँ मनुखोक होइ छै। दुनियाँमे जेते मनुख अछि, सभ तँ मुरूखे भऽ कऽ जनम लइए। मुदा ऐठाम जेकरा जेहेन परिवार, समाज, वातावरण भेटै छै ओ ओहेन बनैए। जहिना आमक छोट-छोट सरही गाछकेँ नीक-नीक कलमी आमक गाछक डारिमे बान्हि कलम लगा नीक-नीक आम बना लैत, तहिना मनुखोक होइत। मुदा नीक परिवार, नीक समाज अछिए केतेक। अधिकांश तँ गेले-गुजरल अछि। ने सभकेँ भरि पेट खेनाइ भेटै छै आ ने नीक बात-विचार। तहन नीक मनुख बनत केना? जाधरि नीक मनुख नै बनत ताधरि नीक समाज केना बनत? तहन तँ जएह अछि तइमे अपनाकेँ जेते नीक बना जीब सकी, वएह संतोखक बात। तहूँ अखनि सादा कागत जकाँ साफ छह, तँए हम चाहब जे गन्दा नै हुअ। जेहेन विचार, हाथ होइत कर्म बनि निकलतह तेहेन जिनगी हेतह। कियो शरीरांतकेँ मृत्यु बुझैए आ कियो आत्माक हननकेँ। मनुखमे असीम शक्ति छिपल छै, ओकरा जगबैक अछि, जे हमहूँ सेरिया कऽ नहियेँ बुझै छिऐ।''

जहिना तेज हथियार हाथमे एलासँ सक्कत-सक्कत वस्तु कटैक हूबा बनि जाइत तहिना उमाकान्तोकेँ भेल। विचार केलक जे आब बैलगाड़ीक जुग नै रहल। मशीनक जुग आबि गेल। तँए हमहूँ अपना हाथसँ इन्जिने चलाएब।''

OOO

रिक्शाबला

"ओ रिक्शा, ओ रिक्शा।"

कनी फड़िक्केसँ जीबछ जोरसँ बाजल।

हाथमे बम्बैया बैग, जिन्स पेन्ट आ शर्ट पहिरने, दहिना हाथमे चौड़गर घड़ी। फुल जुत्ता, मौजा सेहो लगौने। बम्बैए हिप्पी कट केश, बुच्चा मोछ आ आँखिपर चश्मा। रिक्शाबला-बचनू अपन ताशक संगी संग ताश खेलाइत। ताशो ओहिना नै खेलैत, एक सेटपर चारू गोटेक चाह-पानक खर्च, हारलाहा पार्टीकेँ देमए पड़ैत। पाँचटा लाल बचनूक जोड़ाकेँ। तँए एक्केटा सेठ होइमे बाँकी। एकटा लाल हएत, चाह-पानक जोगार लगत। तँए एकाग्र भऽ बचनू लालक पाछू दिमाग लगौने। ताशक चौखड़ी लग आबि जीबछ दुइभेपर बैग रखि रूमालसँ मुँह लग हौंकए लगल। कनीकाल हौंकि रिक्शाबलाकेँ चड़िअबैत कहलक-

"हौ भाय, हमरा बहुत दूर जाइक अछि, झब दे चलह?"

ताशपर सँ नजरि उठा, जीबछ दिस देखि बचनू बाजल-

"भाय, केहेन सुन्दर ठंढ़ा छै, कनी सुसता लैह। तोरो देखै छिअ जे पसीनासँ तड़-बत्तर भेल छह। हमरो एक्केटा लाल बाँकी अछि, दू-तीन खेपमे भइए जाएत। अगर जँ अपन लाल नहियोँ हएत आ विरोधीएकेँ दूटा कारी भऽ जेतै, तैयो जीत हेबे करत।

बचनूक बात सुनि जीबछ शर्टो आ गंजीओ निकालि कऽ रौदमे पसारि देलक। आसीन मास। तीख रौद। तैपर सँ गुमकी सेहो। रेलबे स्टेशनसँ जीबछ पएरे आएल। किएक तँ स्टेशनक बगलेमे तेहेन हच्चा बाढ़िमे बनि गेल जे रिक्शो आ टमटमोक रस्ता बन्न भऽ गेलै। पएरे लोक कहुना कऽ थाल-पानिमे टपैत। बाढ़ि तँ तेहेन आएल छल जे जँ स्टेशन ऊँचगर जमीनपर नै रहैत तँ ऊहो भँसि कऽ केतए-कहाँ चलि जाइत। मुदा तैयो स्टेशनक पुबरिया गुमती, पुल आ आध किलोमीटर रेलबे लाइन दहाइए गेल। रेलबेक दछिन तेहेन मोइन फोड़ि देलक जे गाड़ीओ बन्न भऽ गेल। डेढ़ मासमे पुलो बनल आ गाड़ीओ चलब शुरू भेल।

भरि गाममे रिक्शा बचनूएटा कें। जइसँ कोनो तरहक प्रतियोगिता नै। प्रतियोगिता तँ शहर-बजारमे होइत, जैठाम सैकड़ो-हजारो रिक्शा रहैत। अनेरो रिक्शाबला सभ रिक्शापर बैस, एम्हरसँ ओम्हर घुमबैत आ बजैत-

> ''कोट-कचहरी..., बैंक..., पोस्ट ऑफिस..., कौलेज..., स्कूल..., स्टेशन..., बस स्टेण्ड..., अस्पताल..., बड़ा बजार..., सिनेमा चौक..., डाकबंगला..., भगतसिंह चौक..., आजाद चौक।

मुदा से तँ गाममे नै। मुदा तँए कि गामक रिक्शाबलाकेँ कमाइ नै होइत। खूब होइत। एक तँ गामक कच्ची रस्ता, तैपर सँ जेतए-तेतए टुटलो आ गह्नुम पटौनिहार सभ कटनौ। एहेन सड़कमे दोसर कोन इंजनबला सवारी सकत। तँए गामक सवारी रिक्शा। जइसँ गामक बेटी-पुतोहुक बिदागरी निमहैत। धैनवाद तँ रिक्शेबलाकेँ दी जे वेचारा छातीपर भार उठा, कखनो चढ़ि कऽ तँ कखनो उतरि कऽ पार लगबैत। कठिन मेहनतिक पाइ कमाइत।

अखनि धरि ताशक खेल नै फड़ियाएल। किएक तँ कखनो लाल कमि जाए तँ कखनो कारी। औगताइत जीबछ बाजल-

> ''भाय, ताश नै फड़िएतह। बहुत दुरस जाइक अछि। झब दे चलह। नै तँ अन्हार भेने तोरो दिक्कत हेतह आ हमरो अबेर भऽ जाएत। कहुना-कहुना तँ ऐठामसँ सुग्गापट्टी पाँच कोस हएत।''

बचनू-

> ''हँ, से तँ पाँच कोससँ कम नहियेँ हएत। मुदा तइसँ की? ई की कोनो शहर-बजार छिऐ जे रातिक कोन बात जे दिने देखार पौकेटमारी, डकैती, अपहरण होइ छै। ने रस्तामे भीड़-भड़क्का आ ने कोनो चीजक डर। निचेनसँ जाएब।''

गामक बीचमे चौबट्टी। जैठाम पान-सातटा छोट-छोट दोकान। जइसँ गामोक आ आनो गामक लोक चौक कहए लगल। चौकक पछबरिया कोनपर एकटा खूब झमटगर पाखरिक गाछ। जैपर हजारो चिड़ैक खोँता। दिन भरि चिड़ै सभ चराउर करए बाहर जाइत आ गोसाँइ

निच्चाँ होइते पतिआनी लगा-लगा गाछपर आबए लगैत। केतेको रंगक चिड़ै तँए सभ जातिक चिड़ै अपन-अपन संगोर बना-बना अबैत। तेतबे नै, गाछक डारिओ बाँटि नेने अछि। एक जातिक चिड़ै एक डारिपर खोँता बनौने अछि तहिना दोसर-तेसर दोसर-तेसर डारिपर। तँए एक जातिक चिड़ैसँ दोसर जातिक चिड़ैक बीच ने कहा-कही होइत आ ने झगड़ा-झंझटि। मुदा अपनामे एक जातिक बीच नीक-अधलाक गप-सप्प जरूर होइत। कथा-कुटुमैतीसँ लऽ कऽ रामायण-महाभारतक खिस्सा-पिहानी जरूर होइत। पान-पुनक चर्चा सेहो करैत। अधला काज केनिहारकेँ डाँटो-फटकार दैत आ जुरिमनो करैत। ओही गाछक निच्चाँमे बाटो-बटोही रौदमे ठंढ़ाइत आ पानि-बुनीमे सेहो जान बँचबैत। ताशक चौखड़ी सेहो जमैत।

बचनूक बात सुनि जीबछ पेन्टक पछिला पौकेटसँ सिगरेटक डिब्बा आ सलाइ निकाललक। एकटा सिगरेट अपनो लेलक आ एकटा बचनूओकेँ देलक। दुनू गोटे सिगरेट लगा, रिक्शापर चढ़ि विदा भेल। कनीए आगू बढ़ल आकि बचनू जीबछकेँ पुछलक-

"भाय तूँ बम्बैमे रहै छह?"

"हँ"

"मन तँ हमरो बहु दिनसँ होइए मुदा पलखतिए ने होइए जे जाएब।"

"ओइठीम मन तँ खूब लगैत हेतह?"

"ऐँह भाय मन। की कहबह? जखनिए डेरासँ निकलबह आकि रंग-बिरंगक छौड़ी सभकेँ देखबहक। उमेरगरो सभ जे कपड़ा लगौने रहतह से देखबहक तँ बूझि पड़तह जे कुमारिए अछि। मुदा छौड़ो सभ की ओइसँ कम अछि। एक तँ ओहिना जे छौडी सभ दामी-दामी कपड़ा पहिरने अछि आ सौंसे देह झक-झक करै छै। तैपर सँ छौड़ो सभ करीक्का चश्मा पहिर लेतह आ निङहारि-निङहारि देखैत रहतह। चश्मो की कोनो एक्की-दुक्की रहै छै। जखनिए आँखिमे लगेबह आकि देहपर कपड़ा बुझिए ने पड़तह।"

"ओहेन चश्मा हमरा सभ दिस कहाँ छै, हौ।"

"एँह, ओइठीन विदेशी चश्मा सभ बिकाइ छै किने। देहातमे ओहेन चश्मा के किनत।"

चौकसँ कनीए उत्तर एकटा ताड़ीक दोकान। चारि-पाँच कट्ठाक खजुरबोनी। बीच-बीचमे ताड़क गाछ सेहो। उत्तरे-दछिने रस्ता। पछबारि भाग ताड़ी दोकान। ताड़ी दोकान देखि जीबछ बचनूक पीठमे आँगुरसँ इशारा करैत रोकैले कहलक। बचनूक मनमे भेलै, भरिसक पेशाब करत। रिक्शा रोकि उतरि गेल। जीबछ बाजल-

"भाय, ताड़ी दोकान देखै छिऐ। चलह दू घोंट मारि दिऐ, तहन चलब। हमहीं पाइओ देबै।"

ताड़ीक नाओं सुनि बचनू कहलक-

"ओना ताड़ी हमहूँ पीबै छी मुदा ताड़ी पीब कऽ ने रिक्शा चलबै छी आ ने ताड़ी पीनिहारकेँ रिक्शापर चढ़बै छी। तँए अखनि ताड़ी-दारू बन्न करह। जहन घरपर पहुँचबह तहन जे मन हुअ से करिहऽ।"

"भाय, ओतए भेटत की नै भेटत, अखनि तँ आगूमे अछि।"

"तब अखनि नै जाह। ताड़ी कीनि कऽ नेने चलह। गामेपर दुनू गोटे पीब लेब आ रातिमे रहि जइहऽ।"

"ऐठीम केतए रहब?"

"से की, हमरा घर-दुआर नै अछि। ओत्तै रहि कऽ राति बिता लिहऽ। भोरे पहुँचा देबह।"

"अच्छा, ठीक छै, चलह।"

दुनू गोटे ताड़ी दोकान दिस बढ़ल। दोकान लग पहुँचिते जीबछ घैलक-घैल ताड़ी फेनाइत देखलक। घैलक पतिआनी देखि मोने-मन सोचए लगल जे हमरा होइ छेलए जे शहरे-बजारक लोक ताड़ी पीबैए। मुदा से नै गामो-घरक लोक खूब पीबैए। पच्चीस-तीस गोटे दोकानक भीतरो आ

बाहरो ताड़क पातक चटाइपर बैसि ताड़ीओ पीबैत आ चखनो खाइत। कियो-कियो असगरे पीबैत तँ कियो-कियो दू-दू, तीन-तीन, चारि-चारि गोटेक संगोरमे। कियो खिस्सा कहैत तँ कियो गीत गबैत। कियो अन्ना-गाहिंस गारिए पढ़ैत। सभ उमंगमे। जहिना ताड़ीक फेन उधियाइत तहिना सबहक मन। ताड़ीक खटाइन गंध लगिते जीबछकें होइ जे कखनि दू गिलास चढ़ा दिऐ।

ताड़ी दोकानसँ कनी हटि दूटा बुढ़िया चखनाक दोकान पसारने। एकटा दोकानमे मुरही, घुघनी बदामक कचड़ी आ दोसरमे चारि पाँच रंगक माछक तरूआ। ओंगरिक इशारासँ मझोलका डाबा देखबैत जीबछ बचनूकें कहलक-

''भाय, दुइए गोटे पीनिहार छी, तँए वएह डाबा लऽ लैह।''

बचनू-

''पहिने दाम पूछि लहक?''

डाबाक कान पकड़ि जीबछ पासीकें दाम पुछलक। तोड़-जोड़ करैत पैंतीस रूपैआमे पटि गेलै। पेन्टक जेबीसँ नमरी निकालि ओ जीबछकें देलक। नमरी पकड़ैत दोकानदार कहलकै-

''ताड़ीए टाक दाम कटै छिअ। डाबा घुमा दिहऽ।''

''बड़बढ़ियाँ।''

कहि बचनू डाबा उठा लेलक। डाबाकें चखना दोकानक आगूमे रखि बचनू मोने-मन सोचए लगल जे औझुका तँ कमाइओ ने भेल। धिया-पुता की खाएत? से नै तँ तेना कऽ मुरही-कचड़ी कीनि ली जे सभ तूर खाएब।

जेहने झुर करि कऽ कचड़ी बनौने तेहने माछक कुटिया। एकदम लाल-बुन्द। माछक कुटिया देखि जीबछक मुँहमे पानि आबए लगल। मन चटपटाए लगल। बचनूकें कहलक-

''भाय, केते चखना लेबह?''

मोने-मन बचनू हिसाब जोड़ए लगल। दू-दूटा कचड़ी आ दू-दूटा

माछ दुनू बच्चाले आ अपना सभ लेल चारि-चारिटा। किएक तँ गरम चीज होइ छै, तँए बेसी खराब करतै। बाजल-

> ‘‘भाय, एक किलो मुरही, एक किलो घुघनी, सोलहटा कचड़ी आ सोलहटा माछक कुटिया लऽ लैह।’’

सएह केलक। ताड़ीक डाबा उठा जीबछ विदा भेल। रिक्शा लग आबि बचनू चखनाक मोटरी सेहो जीबछेकेँ दऽ देलक।

चौक रस्ता छोड़ि बचनू घर दिसक रस्ता धेलक। लगेमे घर। दुइएटा घर बचनूकेँ। रिक्शा रखैले एकचारी भनसे घरक पँजरामे देने। एकटा घरमे भानसो करए आ जरनो-काठी रखए। दोसरमे सभतूर सुतबो करए आ चीजो-बौस रखए। अपना दरबज्जा नै। मुदा घरक आगूमे धूर दसेक परती, जैपर सरकारी चबुतरा बनल। घर लग अबिते बचनू रिक्शा ठाढ़ कऽ आँगन बाढ़नि आनए गेल। बचनूकेँ देखि घरवाली कहलकै-

> ‘‘आइ जे भाड़ा नै कमेलौं, तँ राति खएब की? अपनो दुनू गोटे तँ ओहुना सूति रहब मुदा बच्चा सभ केना रहत?’’

बिनु किछु उत्तर देनइ बचनू बाढ़नि लऽ अँगनासँ निकलि गेल। चबुतराकेँ दोहरा कऽ बहारलक। चबुतराक बनाबट सुन्दर, तँए बहारिते चमकए लगल। चबुतराक चमकी देखि जीबछ बाजल-

> ‘‘भाय, जेहने मजगूत चबुतरा छह तेहने सुन्दर। संगमरमर जकाँ चमकै छह।’’

जीबछक बात सुनि बचनूकेँ ओ दिन मन पड़लै जइ दिन ओ ठीकेदारकेँ गरिऔने रहए। मुस्कीआइत कहलकै-

> ‘‘भाय, ओहिना एहेन सुन्दर बनल अछि। जे ठीकेदार बनबाबैक ठीकेदारी नेने रहए ओ नमरी चोर। तीन नम्बर ईंटा आ कोसीकातक बालुसँ बनबए चाहैत रहए। हम गामपर नै रही। जहन एलौं तँ देखलिऐ। देखिते सौंसे देह आगि लागि गेल। मुदा ऐठाम रहए कियो ने। दोसर दिन नाओ कोड़ए ठीकेदारो आ जनो एलै। हमरा तँ गरमी चढ़ले रहए। जखने कोदारि लगौलक आकि जनक हाथसँ कोदारि छीनि ठीकेदारकेँ गरियाबए लगलौं।

जहाँ गारि पढ़लिऐ आकि ठीकेदारो गहुमन साँप जकाँ हुहुआ कऽ उठल। जहाँ ओ जोरसँ बाजल आकि हमहूँ गरियेबिते दुनू हाथे कोदारिक बेंट पकड़ि कहलिऐ, सार नाओं लइसँ पहिने तोरे काटि देबह। मुदा सभ पकड़ि लेलक। डरे ठीकेदारो थर-थर कँपए लगल। तहन जा कऽ एक नम्मर सभ किछु -ईंटा, सिमटी, बालु आनि बनौलक।"

जीबछ बाजल-

"बाह।"

बचनू-

"कनी ऊपर आबि कऽ देखहक जे की सभ बनबौने छी। देखहक ई खेलाइ लऽ पच्चीसी घर छी, कौड़ीसँ खेलाएल जाइए। मुदा ई खेल समैया छी। एकर चलती खाली आसिनेटा मे रहैए। कोजगरा दिन तँ लोक भरि राति खेलते रहैए।"

दोसरकँ देखबैत-

"ई मुगल पैठानक घर छी। हमरा गाममे लोक एकरा मुगल-पैठान कहै छै मुदा आन-आन गाममे एकरा कौआ-ठुट्ठी कहै छै। गोटीसँ खेलाएल जाइए।"

तेसर घर देखबैत-

"ई बच्चा सबहक छिऐ। एकरा चैरखी-चैरखी घर कहैए। झुटकासँ खेलल जाइए।"

जीबछ बाजल- हौ भाय, तूँ तँ बड़ खेलौड़िया बूझि पड़ै छह।"
बचनू-

"हौ, जिनगीमे आउर छै की? खाइत-पीबैत, हँसी-चौल करैत बिता ली। सभ दिन कमेनाइ, सभ दिन खेनाइ। कोनो हर-हर, खट-खट नै। धिया-पुताले तँ हम अपने स्कूल खोलि देने छिऐ। खेती-पथारीक काजसँ लऽ कऽ रिक्शा चलौनाइ, ईंटा बनौनाइ सभ लूरि हमरा अछि। धिया-पुता तँ देखिए कऽ सीखि लेत।"

ओना जीबछ बचनूक गप सुनैत मुदा मन ताड़ीक खटाइन गंधपर अँटकल। होइ जे कखनि दू गिलास चढ़ाएब। नै तँ कम-सँ-कम आँगुरमे भिड़ा नाकोक दुनू पुड़ामे लगा ली। जीबछकेँ बचनू कहलक-

"भाय, ताबे तूँ सभ किछु सेरियाबह, हम घरमे रिक्शा रखि दइ छिऐ। काजसँ निचेन भऽ जाएब।"

जीबछ सभ समान सेरियाबए लगल। रिक्शाकेँ गुड़कौने बचनू एकचारीमे
रखि आँगन जा दुनू बच्चो आ पत्नीओकेँ कहलक-

"दुनू बाटिओ आ दुनू छिपलीओ नेने चलू।"

कहि बचनू आगू बढ़ि गेल। पत्नीक मन खुशीसँ झूमि उठल। दुनू बच्चा दुनू बाटी नेने आगू बढ़ल। दुनू छिपली नेने पत्नी डेढ़िया लग ठाढ़ भऽ मुँहपर नुआ नेने कनडेरिए आँखिए दुनूकेँ देखैत। अपना दुनू गोटेले बचनू चारि-चारिटा पीस माछ, चारि-चारिटा कचड़ी आ अदहा किलो करीब मुरही-घुघनी मिला कऽ रखि, दुनू बच्चाकेँ एक-एक कचड़ी, एक-एक माछक कुटिया आ दू-दू मुट्ठी मुरही-घुघनी मिला कऽ देलक। दुनू बच्चा देखि कऽ चपचपा गेल। अपन-अपन बाटी बामा हाथे उठा दहिना हाथे खाइत विदा भेल। माए लग पहुँच दुनू बच्चा अपन-अपन बाटी देखए देलक। बाटीमे घुघनीक मिरचाइक टुकड़ी आ कचड़ीमे सटल मिरचाइकेँ देखि माए कहलकै-

"बौआ, मिरचाइ बीछि कऽ रखि लिहँ। तोरा सभकेँ कड़ू लगतौ।"

तैबीच बचनू गमछाक एक भागमे मुरही-घुघनीकेँ मिला, चारि-चारिटा कचड़ी आ चारि-चारिटा माछक कुटिया फुटा, दुनू गोटेले रखलक। चबुतरेपर सँ बचनू घरवालीकेँ हाक पाड़ि कहलक-

"ई सभ लऽ जाउ।"

अदहा मुँह झँपने बचनूक पत्नी सरधा चबुतरापर पहुँच दुनू छिपली बचनूक आगूमे रखि देलक। एकटा छिपलीमे मुरही कचड़ी आ दोसरमे घुघनी-माछ बचनू दऽ देलक। झुर माछक तरूआ देखि सरधाक मन

हँसए लगल। मनमे एलै, कल्हुका जलखै तकक ओरियान भऽ गेल। दुनू छिपली तरा-ऊपरी रखि दुनू हाथसँ पकड़ि आँगन विदा भेल।

दुनू गोटे जीबछ आ बचनू- दुनू भाग बैसि बीचमे ताड़ीक डाबा, गिलास आ चखना रखलक। दुनू गिलासमे जीबछ ताड़ी ढारि, आगूमे रखि आँखि मूनि, ठोर पटपटबैत मंत्र पढ़ए लगल। कनी काल मंत्र पढ़ि, आँखि खोलि तीन बेर ताड़ीमे आँगुर डुबा निच्चाँमे झाड़ि बाजल-

"हुअ भाय, आब पीबह।"

छगाएल दुनू, तँए एक लगाइते तीन-तीन गिलास पीब लेलक। मन शान्त भेलै। मन शान्त होइते जीबछ सिगरेट निकालि एकटा अपनो लेलक आ एकटा बचनूओकेँ हाथमे देलकै। दुनू गोटे सिगरेट धड़ा पीबए लगल। सिगरेट पीबैत-पीबैत दुनूकेँ निशाँ चढ़ए लगल। निशाँ चढ़िते गप-सप्प करैक मन दुनू गोटेकेँ हुअ लगलै। एक मुट्ठी मुरही आ एक टुकड़ी माछ तोड़ि जीबछ मुँहमे लेलक। बचनूओ लेलक। मुँह महक घोंटि जीबछ बाजल-

"भाय, तोरा रिक्शा चला कऽ परिवार चलि जाइ छह?"

कचड़ी तोड़ि मुँहमे लैत बचनू उत्तर देलक-

"किए ने चलत। हमरा की कोनो कोठा बनबैक अछि जे गुजर नै चलत। तहूमे की हम रिक्शा बारहो मास थोड़बे चलबै छी। भरि बरसात चलबै छी। जहाँ बर्खा बन्न भेलै आकि महाकान्त भाइक चिमनीमे काज करै छी।"

"नोकरीओ करै छह?"

"एहेन नोकरी तँ भगवान सभकेँ देथुन। अलबेला लोक छथि महाकान्त भाय। हुनकर खाली पूजीटा छियनि। असली कारबारी हम दू गोटे छी। सरूप मुनसी आ हम। पजेबाक खरीद-बिकरीसँ लऽ कऽ कोइला मंगौनाइ, ओकर हिसाबबारी केनाइ हुनकर काज छियनि। आ हमर काज पथेरीक देखभाल केनाइ, समैपर ओकरा दमकल चला, खाधिमे पानि देनाइसँ लऽ कऽ बजारसँ समान कीनि कऽ अननाइ आ चिमनीपर सँ घर-परक

दौग-बरहा केनाइ रहैए।"

"तब तँ खूब कमाइ होइत हेतह?"

"कमाइ जँ करए चाही तँ ठीके खूब हएत। मुदा से नै करै छी। एक सए रूपैआ रोज होइए। ओ घरवालीक हाथमे दऽ दइ छिऐ। बाँकी खेलौं-पीलौं। किएक तँ नजाइज पाइ जँ घरमे देबै तँ ओइसँ भाभन्स नै हएत।"

दुनू गोटे डबो भरि ताड़ीओ आ चखनो खा-पीब गेल। एक दिस निशाँसँ दुनूक देह भँसियाइत, दोसर दिस जोरसँ पेशाब लागि गेलै। उठैक मोने ने होइ। मुदा पेशाबो जोरे होइत जाइत। दुनू गोटे उठि कऽ पेशाब करए गेल। जाबे पेशाब करैले बैसै ताबे बूझि पड़ै जे कपड़ेमे भऽ जेतै। मुदा कहुना-कहुना कऽ सम्हारि पेशाब करए बैसल। पेशाब बन्ने ने होइ। बड़ी काल पछाति पेशाबो बन्न भेलै आ भक्को खुजलै।

चबुतरापर दुनू गोटे आबि कऽ बैसल। जीबछ कहलकै-

"भाय, हमरा डान्स करैक मन होइए।"

जीबछक बात सुनि बचनू पल्था मारि बैस, ठेहुनपर दुनू हाथसँ बजबए लगल। मुदा ओइसँ अवाज नै निकलै। अवाज निकलै मुहसँ। जहिना-जहिना मुहसँ बोल निकलै तहिना-तहिना दुनू ठेहुनपर हाथ चलबै। तैबीच दुनू बच्चो चबुतरापर आबि थोपड़ी बजबए लगल। अँगनाक मुहथरिपर सरधा बैसि देखए लगली। जीबछ डान्स करए लगल। थोड़े काल पछाति बचनूक मुँह दुखा गेलै। मुदा जीबछ डान्स करिते रहल। दुनू बच्चो थोपड़ी बजैबते रहल। जहिना बाढ़िक रेतपर हेलनिहार चीत गरे सूति केतौ-सँ-केतौ भँसिआ कऽ चलि जाइत तहिना बैसल-बैसल सरधाक मन भँसियाइत। तैबीच बचनू उठि कऽ आँगन गेल। घैलची परक घैलसँ पानि फेक नेने आएल। उल्टा कऽ घैल रखि, हाथमे औंठी रहबे करै, दुनू हाथे घैलक पेनपर बजबए लगल। लाजवाब बाजा। नचैत-बजबैत दुनू गोटे थाकि गेल। सूति रहल।

भोर होइते दुनू गोटे उठि, मुँह-हाथ धोइ रिक्शा लऽ विदा भेल।

ऐ बेर आसिन अपन चालि बदलि लेलक। किएक तँ आन साल अधहा आसिनक पछाति हथिया नक्षत्र अबै छल। से ऐ बेर नै भेलै।

पहिने हथिए चढ़ल। दू दिन हथिया बितला पछाति आसिन चढ़ल। ओना बूढ़-बुढ़ानुसक कहब छन्हि जे दुर्गापूजामे हथिया पड़िते अछि, मुदा से नै भेलै। आसिनक इजोरिया पखक परीवकेँ दुर्गा पूजा शुरू होइत। ऐ बेर अमबसीए दिन हथिया चलि गेल। तहिना बर्खोक भेल। जइ दिन आसिन चढ़ल ओइ दिन घनघनौआ बर्खा भेल आ तेकर पछाति फुहीओ ने पड़ल। झाँटक कोन गप। हथिया लेल ओरिऔल जरनो-काठी आ अन्नो-पानि सबहक घरमे रहिए गेल। मुदा तैयो किसान सबहक मनमे खुशी नै कमल। किएक तँ जँ हथियामे धानक खेतमे ठेंगाक हूर गड़त तँ धान हेबे करत। मुदा किछु गोटेक मनमे शंका जरूर होइ जे निचला खेतमे ने पानि लगल अछि मुदा ऊपरका खेतक धान केना फुटत? किएक तँ ऊपरका खेतक पानि टघरि कऽ निचला खेतमे चलि गेल। किछु खेतक पानि काँकोड़क बोहरि देने तँ किछु खेतक पानि मूसक बिल देने बहि गेल। जइसँ बर्खाक तेसरे दिन ऊपरका खेत सभ सूखि गेल। ओना दशमीक मेलो देखिनिहारक आ मेलामे दोकानो-केनिहारक मनमे खुशी। किएक तँ रूख-सुखमे नाचो-तमाशा जमत आ देखिनिहारोक भीड़ जुटत। ओना पछिला सालक सभ छगाएल। किएक तँ जइ दिन सतमी मेला शुरू भेल ओइ दिन तेहेन झाँट आ पानि भेल जे मेलाक चुहचुहीए चलि गेलै।

सुखार समए रहने महाकान्त ओछाइनेपर पड़ल-पड़ल सोचए लगल। जहियासँ चिमनी शुरू केलौं तहियासँ एहेन समए नै पकड़ाएल छल। आन साल दियारीक पछाति चिमनीक काजमे हाथ लगबै छेलौं, से ऐ बेर भगवान तकलनि। कहुना-कहुना तँ दियारी अबैत-अबैत दू खेप भट्ठा जरूर लागि जाएत। सरकारोक योजना नीक पकड़ाएल। एक दिस खरन्जाक स्कीम तँ दोसर दिस इन्दिरा आबासक घर। तेतबे नै स्कूल आ अस्पताल सेहो बनत। ई सभ तँ अपने गामटा मे बनत से नै, आनो-आन गाममे बनत। सालो भरि ईंटाक महगीए रहत। ओते पुराइए ने पाएब। एते बात मनमे अबिते मुहसँ हँसी निकलल। तखने पत्नी रागिनी बेड टी नेने आबि चुप-चाप सिरमा दिस ठाढ़ भऽ पतिकेँ मुस्कीआइत देखलनि। पतिक मुस्की देखि रागिनी मोने-मन सोचए लागलि, की बात छिऐ जे ओछाइनेपर पड़ल-पड़ल मुस्करा रहल छथि। मुदा बिनु किछु बजनइ टेबुलपर चाह रखि, ओरिया कऽ नाक पकड़ि डोला देलकै। नाक

डोलैबते महाकान्त उठि कऽ बैसि रहल। आगूमे रागिनीकेँ ठाढ़ देखि चौबन्निया मुस्की दैत आँखिक इशारासँ पलंगपर बैसैले रागिनीकेँ कहलक। पतिक मूड देखि रागिनी ससरिए जाएब नीक बुझलक।

महाकान्त आ रागिनी, संगे-संग कौलेजमे पढ़ने। जहिए दुनू गोटे बी.ए.मे पढ़ै छल तहिए दुनूक बीच प्रेम भऽ गेल। दुनू सम्पन्न परिवारक। ओना पढ़ैमे दुनू ओते नीक नै जेते दुनूक रिजल्ट नीक होइ। दुनूकेँ मैट्रिको आ इन्टरोमे फस्ट डिविजन भेल रहए। तेकर कारण मेहनति नै पैरबी छल। नीक रिजल्ट दुआरे संगीओ-साथीक बीच आ शिक्षकोक बीच दुनूक आदर होइ। दुनूक बीच सम्बन्ध बी.ए. आनर्सक क्लासमे भेलै। किएक तँ आनर्समे कम विद्यार्थी रहने गप-सप्प करैक अधिक समए भेटै। दुनूक बीच सम्बन्ध गप-सप्पसँ शुरू भेल। तेकर पछाति किताबक लाथे डेरोमे एनाइ-गेनाइ शुरू भेल। सम्बन्ध बढ़िते गेलै। संगे बजार बुलनाइ, किताब-कापी खरीदनाइसँ लऽ कऽ कपड़ा, जुत्ता-चप्पल खरीदनाइ धरि संगे हुअ लगलै। सिनेमा तँ मेटनीओ शोमे देखए लगल। जइसँ आंगिक सम्बन्ध सेहो शुरूह भऽ गेलै। एकटा डबलरूम लऽ दुनू गोटे डेरो एकठाम कऽ लेलक। दुनूक बीचक सम्बन्धक चर्चा खाली विद्यार्थीए आ शिक्षके धरि नै रहि दुनूक पिता धरि पहुँच गेलै। मुदा दुनूक पिताक दू विचार। तँए बूझिओ कऽ दुनू अनठा देलक। महाकान्तक पिता सुधीर जुआन-जहानक खेल बुझैत तँ रागिनीक पिता रमानन्दक सम्पन्न परिवार आ पढ़ल-लिखल लड़िका बूझि बेटीक भार उतरब बुझैत।

एम.ए. पास केलापर दुनूक बिआह भऽ गेलै। सुधीरक परिवार एक पुरखियाह। अपनो भैयारीमे असगरे आ बेटो तहिना। ओना बेटी चारिटा, जे सासुर बसैत। परिवारक काजसँ महाकान्तकेँ कम्मे सरोकार। तँए भरि-भरि दिन चौखड़ी लगा जुओ खेलैत आ शराबो पीबैत। जे पितो बुझैत। महाजनीक कारोबार, तँए भरि दिन सुधीर रूपैएक हिसाबबारी आ धने लेन-देनमे बेस्त रहैत। महाकान्तक क्रियाकलाप देखि एक दिन खिसिआ कऽ सुधीर कहलखिन-

> “बौआ, बड़ कठिनसँ धन होइ छै। एना जे भरि-भरि दिन बौआएल घुमै छह, तइसँ कएक दिन लछमी रहथुहुन। तँए किछु उद्यम करह।”

पिताक बात महाकान्त चुपचाप सुनि लेलक। किछु बाजल नै। बेटाकेँ चुप देखि फेर कहलखिन-

''पाँच लाख रूपैआ दइ छिअ, चिमनी चलाबह। उत्तरबरिया बाधमे अपने बीस बीघा ऊँच जमीन छह, ओइमे चिमनी बना लैह।''

''बड़बढ़ियाँ।''

कहि महाकान्तो चुप भऽ गेल। पिताक मनमे रहनि जे जखने काजमे लागि जाएत तखने चालि-ढालि बदलि जेत्तै। किएक तँ काज ओहेन कारखाना होइए, जइमे मनुख पैदा लैत।

आने साल जकाँ अपन काज बचनू करए लगल। पथेरीक देखभालसँ लऽ कऽ हाट-बजार आ महाकान्तक घरपर जा रागिनीकेँ ब्राण्डीक बोतल पहुँचबै धरि। महाकान्तो अपन आने साल जकाँ निअमित काज करए लगल। सबेरे आठ बजेमे जलखै खा मोटर साइकिलसँ चिमनीपर चलि अबैत। चिमनीपर आबि तीनू गोटे -महाकान्त, सरूप, बचनू- भरि मन गाँजा पीब महाकान्त चिमनीक कार्यालयमे सूति रहैत। बारह बजेमे बचनू उठा दैत। उठिते महाकान्त मुनसीसँ रूपैआ मांगि बचनूएकेँ ब्राण्डी किनैले बजार पठा दैत आ अपने मुँह-हाथ धोइ खाइले घरपर विदा होइत। घरपर पहुँच धड़-फड़ कऽ खाइत आ चोट्टे घूमि कऽ चिमनीपर आबि सूति रहैत, जे चारि बजे उठैत। बचनूओ बजारसँ शराब खरीद महाकान्तक घरपर जा रागिनीकेँ दऽ दैत। कौलेजे जिनगीसँ दुनू गोटे -महाकान्तो आ रागिनीओ- शराब पीबैत। ओना रागिनी ब्राण्डीएटा पीबैत मुदा महाकान्त सभ किछु खाइत-पीबैत। गाँजा, भाँग, इंग्लीस, पलोथिन, अफीम, ताड़ी सभ किछु। जहन जे भेटल तहन सएह।

आइ जहन बचनू ब्राण्डीक बोतल लऽ रागिनी लग पहुँचल तँ रागिनीक नजरिमे नव विचार उपकलै। आन दिन रागिनी बचनूसँ बोतल लऽ रखि लैत। मुदा आइ आदरसँ बचनूकेँ हाथक इशारासँ पलंगपर बैसैक इशारा केलनि। दुनू गोटे, पलंगपर आमने-सामने बैसि गेल।

रागिनी बाजलि-

''बहुत दिनसँ मनमे छेलए जे अहाँसँ भरि मन गप करितौं। मुदा

अहाँ तेते औगताएल अबै छी जे किछु कहैक मौके ने भेटैए।''

बचनू-

''गिरहतनी, हम तँ मुरूख छी। अहाँ पढ़ल-लिखल छी। अहाँक गप्पक जवाब हमरा बुते थोड़े देल हएत।

रागिनी-

''कोनो की हम अहाँसँ शास्त्रार्थ करब जे जवाब देल नै हएत। अपन मनक बेथा कहब। जे सभकेँ होइ छै।''

मनक बेथा सुनि बचनू मोने-मन सोचए लगल जे हम सभ गरीब छी, हरिदम एकटा-ने-एकटा भूर फूटले रहैए। मुदा रागिनी तँ सभ तरहे सम्पन्न छथि। नीक भोजन, दुनू परानी पढल-लिखल। तहन की मनमे बेथा छन्हि जे हमरा कहती। मुदा तैयो मनकेँ असथिर कऽ रागिनी दिस देखए लगल। मनमे उत्सुकता बढ़ै। मुदा रागिनीक चेहरामे, डुमैत सुरूज जकाँ, मलिनता बढ़ैत।

रागिनी-

''हमरासँ अहाँ बहुत नीक जिनगी जीबै छी।''

अपन प्रशंसा सुनि बचनू गद-गद भऽ गेल। आँखि चौकन्ना हुअ लगलै। मनमे ओहेन-ओहेन विचार सेहो उपकए लगलै जेहेन आइ धरि मनमे नै आएल छेलै। मुदा किछु बाजै नै।

बचनूकेँ चौकन्ना होइत देखि रागिनी कहए लागलि-

''जहिना अकासमे चिड़ैकेँ उड़ैत देखै छिऐ, तहिना अहूँ छी। मुदा हम पिजरामे बन्न चिड़ै जकाँ छी। जहन पढ़ै छेलौं तहन यएह सोचै छेलौं जे कोनो कौलेजमे प्रोफेसर बनि जिनगी बिताएब। से सभ मोनेमे रहि गेल। भरि दिन अँगनामे घेराएल रहै छी। ने केकरोसँ कोनो गप-सप्प होइए आ ने अँगनासँ निकलि केतौ जा सकै छी। तहूमे असगरूआ परिवार अछि। लऽ दऽ कऽ एकटा सासु छथि। ने दोसर दियादनी आ ने कियो दोसर। भरि दिन पलंगपर पड़ल-पड़ल देह-हाथ दुखा जाइए।

जाधरि पढ़ै छेलौं ताधरि दुनियाँ किछु आरो बुझाइ छल। मुदा आब किछु आर बुझाइए। कखनो मन होइए तँ किछु पढ़ै छी नै तँ टी.बी. देखै छी। पढ़िए कऽ की हएत। ने दोसरकेँ बुझा सकै छी आ ने अपना कोनो काज अछि, जइले सीखब। जानवरोसँ बत्तर जिनगी बनि गेल अछि। जहिना गाए-महिंस भरि पेट खेलक आ खुट्टापर बान्हल रहल तहिना भऽ गेल छी। मुदा मनुख तँ मनुख छी। जाधरि अपना मनक बात दोसरकेँ नै कहबै आ दोसरक पेटक बात नै सुनबै, ताधरि नीक लगत। अनेरे लोक किए पढ़ैए। जँ लकीरक फकीरे बनि जीबैक छै?''

सूखल मुस्की दैत बचनू बाजल-

''गिरहतनी, अहाँकेँ कोन चीजक कमी अछि जे कोनो तरहक दुख हएत?''

रागिनी-

''अहाँ जे कहलौं ओ ठीके कहलौं। किएक तँ एहनो बुझिनिहारक कमी नै अछि। एहनो बहुत लोक अछि जे धनेकेँ सभ किछु बुझैए। मुदा धन तँ खाली शरीरक भरण-पोषण कऽ सकैए, मनक तँ नै। तीन सालसँ बेसी ऐठाम एला भऽ गेल मुदा ने एक्कोटा सिनेमा देखलौं आ ने एक्को दिन केतौ घुमै-फिरैले गेलौं। जाधरि बेटी माए-बाप लग रहैए ताधरि सभ किछु -धन-सम्पति कुटुम-परिवार- अपन बूझि पड़ै छै, मुदा सासुर पएर दैते सभ बीरान भऽ जाइ छै। तहिना माए-बापक बीच जे आजादी बेटीकेँ रहै छै ओ सासुर एलापर एकाएक बन्न भऽ जाइ छै।

बचनू-

''जँ केतौ जाइक मन होइए वा देखैक मन होइए तँ नैहर किए ने चलि जाइ छी?''

रागिनी-

''जहिना सासुर तहिना नैहरो भऽ गेल। जहिना सासुरमे पुतोहु

बनि जीबै छी तहिना नैहरोमे पाहुन बनि जाइ छी। जेना हम्मर किछु ऐ घरमे अछिए नै। जे घर अप्पन नै रहत ओइ घरमे केकरा कहबै जे हम फल्लाँठीम जाएब। जनम देनिहारि माएओ आने बुझैए। तैपर सँ भाए-भौजाइक जुइत। ई तँ नैहरक गप कहलौं आ ऐठामक जे होइए से हमहीं बुझै छी। बुढ़हा ससुर जहन आँगन औता तँ बूझि पड़त जे जेना अस्सी मन पानि पड़ल छन्हि। बुढ़ही-सासुसँ तँ कनी हँसिओ कऽ गप्प करता मुदा हमरा देखिए कऽ झड़कबाहि उठि जाइ छन्हि। जँ कहियो माथपर नुआ नै देखलनि तँ बुढ़हीकेँ अगुआ कऽ की कहता की नै, तेकर कोनो ठेकान नै। भरि-भरि दिन, पहाड़ी झरना जकाँ, आँखिसँ नोर झहरैत रहैए। कियो पोछनिहार नै।''

बचनू-

''गिरहतनी, हमरा बड़ देरी भऽ गेल। महाकान्त भाय बिगड़ता।''

रागिनी-

''अच्छा, चलि जाएब। कहै छेलौं जे हरिदम तरे-तर मन औंढ़ मारैत रहैए जे लछमी बाइ जकाँ तलवार उठा परदा-पौसकेँ तोड़ि दी, मुदा साहस नै होइए। केरा भालरि जकाँ करेज डोलए लगैए। आइ जहन अपन मनक बात अहाँकेँ कहलौं तँ मन कनी हल्लुक बूझि पड़ैए।''

बचनू-

''तहन तँ गिरहतनी हमहीं नीक छी।''

रागिनी-

''बहुत नीक। बहुत नीक। एते काल जे अहाँसँ गप केलौं से जेना बूझि पड़ैए जे जेना पाकल घाउक पीज निकललापर जे सुआस पड़ै छै तहिना भऽ रहल अछि। आब सभ दिन एक घंटा गप्प कएल करब। अहाँ कियो आन छी। घरेक लोक छी

किने।”

एक टकसँ बचनू रागिनीक आँखि-पर-आँखि दऽ हृदए देखए लगल। तहिना रागिनीओ बचनूक हृदए पढ़ैए लागलि।

ooo

चुनवाली

नीन्न टुटिते मखनी मोथीक बिछान समेटि ओसारक उत्तरबरिआ-पुबरिआ कोनमे ठाढ़ कऽ निच्चाँ उतरए लागलि आकि सीढ़ीपर पिछड़ि गेली। पएर पिछड़िते हाथसँ ओसार पकड़ए चाहली। मुदा जाबे सेरिया कऽ ओसार पकड़थि-पकड़थि ताबे ओलतीमे खसि पड़ली। झलफल रहने कियो दोसर उठल नै। थोड़बे पहिने एकटा छोटकी अछार भेल रहए। घरक चारसँ ठोपे-ठोप पानि चुबते छल। सीढ़ीपर सँ खसिते मखनीक दहिना ठेहुनक जोड़ छिटकि गेलनि। तत्काल छिटकब नै बुझलथि। मात्र एतबे बुझलथि जे ठेहुन कट दऽ उठलनि हेन। मनमे एलनि, कियो देखलक तँ नै तँए हाँइ-हाँइ उठए लगली। जोशमे उठि तँ गेली मुदा ठेहुनक कचकबसँ फेर ओसार पकड़ि सीढ़िएपर बैसि गेली। बैसिते मनमे विचार उठए लागलनि- केना मटकुरियाक बेटाक परबरिस चलतै..., ढेरबा बेटी छै बिआह कन्ना करत..., अपना कमाइक कोनो लूरि नै छै..., बहुओ धमधुसरीए छै..., अपना खेत-पथार नै छै..., गामक लोको तेहेन अछि जे केकरो कियो नीक नै करैत...। हे भगवान कोन बिपति दऽ देलह?

कनीकाल गुम्म रहि बेटाकेँ जोरसँ हाक पाड़ली-

"मटकुरिया, रौ मटकुरिया?

दुनू परानीओ आ दुनू धियो-पुतो निसभेर रहए। तँए ने मटकुरिया उठल आ ने कियो दोसर। पुनः दोहरा कऽ मखनी जोरसँ शोर पाड़ली-

"रौ बौआ, बौआ रौ। हम पिछड़ि कऽ खसि पड़लौं से उठिए ने होइए।"

औगता कऽ उठैत मटकुरिया बाजल-

"माए-माए, अबै छी।"

ताधरि फुलियो, कबुतरीओ आ बेटोक नीन टुटल। कहि केबाड़ खोलि मटकुरिया दौगल माए लग आबि पुछलक-

"केना कऽ खसलेँ?"

पाछूसँ स्त्रीओ आ बेटो-बेटी पहुँचल। बेटा तँ पाँचे बर्खक मुदा तैयो माए-बापक देखा-देखी करैत दादीकेँ पकड़लक। चारू गोटे उठा मखनीकेँ ओसारपर लऽ गेलनि। बिछान बिछा सुता देलकनि। कनी-कनी ठेहुन फुलए लगलनि। फुलब देखि फुलिया पतिकेँ कहलक-

"अहाँ पहिने डाकडर बजा लाउ। हम ताबे करूतेलसँ ससारि दइ छियनि।"

बेटीकेँ अढ़बैत पुन: बजलि-

"बुच्ची घरसँ तेलक शीशी नेने आ।"

मटकुरिया डाक्टर ऐठाम विदा भेल। तेलक शीशी आनए कबुतरी घर गेलि। तैबीच मंगनियाँ दादीकेँ कहए लगल-

"आँइ गइ बुढ़िया, एतने ऊपरसँ....।"

बेटाक मुँहपर फुलिया हाथ दऽ आगू बाजब रोकि देलक। मुदा पोताक बातसँ मखनीकेँ एक्को मिसिआ दुख नै भेलनि। मुस्की दैत बजली-

"बिलाइ खसा देलक।"

शीशीक मुन्ना खोलिते कबुतरी आएल। दुनू माइधी तरहत्थीपर तेल लऽ लऽ दुनू हाथमे मिला, दहिना पएर -जाँघ सहित- मे ओँसऽ लागलि। मखनीक ठेहुनक दर्द बढ़िते जाइत। जइसँ दुनू गोटेकेँ ससारब छोड़ि दइले कहलक। ताबे डाक्टर संग मटकुरीया सेहो पहुँचल। मखनीक ठेहुन देखिते डाक्टर कहलखिन-

"हिनका ठेहुनक जोड़ छिटकि गेल छन्हि। पलस्तर करबए पड़त। ताबे दर्द कम होइले इन्जेक्शन दऽ दइ छियनि। पलस्तरक समान सभ मंगबए पड़त।"

एक्के-दुइए गामक जनिजाति पहुँचए लागलि। जनिजाति संग धियो-पुता सेहो। लोकसँ मटकुरियाक आँगन भरि गेल। पलस्तरक समान मंगा डाक्टर पलस्तर करैत कहलखिन-

"चिन्ता करैक बात नै अछि। पनरह दिनमे ठीक भऽ जेतनि।"

कहि अपन फीस लऽ चलि गेला। मुदा लोकक आबा-जाही लगले रहल। रंग-बिरंगक गपसँ अँगना गनगनाइत।

भरि दिन सभ तूर मटकुरिया भुखले रहि गेल। ने भानसपर धियान गेलै आ ने केकरो भूखे बूझि पड़लै। घरमे चूड़ा रहैए, जे मंगनियाँ खेलक। बेर झुकैत-झुकैत अँगना खाली भेलै। खाली अपने पाँचो गोटे अँगनामे रहल। सबहक मनो असथिर भेलै। सभ -मटकुरिओ, फुलियो आ कबुतरीओ- अपना-अपना ढंगसँ सोचए लगल। ओना कहियो-काल, सासुकेँ मन खराब भेने वा केतौ गाम-गमाइत गेने, फुलिये चुन बेचए जाइत। सभ काज बुझले तँए मनमे बेसी चिन्ता नै। चिन्ता खाली एतबे जे कहुना सासु माने माएक पराण बचि जान्हि। मुदा खुशी बेसी। सोलह बर्खसँ सासुर बसै छी मुदा अखनि धरि घरक गार्जन नै बनलौं। लोककेँ देखै छिऐ जे सासुर अबिते अपन जुइत लगबए लगैए। भगवान हमरो दहीन भेला। आब हमहूँ गार्जन बनब। घरक गार्जन तँ वएह ने होइत जे कमाइए। जे उपारजने नै करत ओ घरक जुतिए-भाँति की लगौत। अगर जँ लगेबो करत तँ चलतै केना? छुच्छ हाथ थोड़े मुँहमे जाइए। काजक अपन रस्ता होइ छै। जे केनिहारे बुझैत। बिनु केनिहार जँ जुतिए लगौत तँ ओ या तँ दुरि हेतै वा गरे ने लगतै...।

ओना अखनि फुलियाक घरोबला आ सासुओ जीविते, तँए गार्जनीओ हाथमे आएब कठिन। मुदा तैयो आशा रहै। अखनि धरि सिन्नुरो-टिकुली लेल खुशामदे करै छलि, से आब नै करए पड़तै। तँए खुशी।

कबुतरीक मनमे ऐ दुआरे खुशी होइत जे जेते लूरि दादीकेँ छै ओते लूरि गाममे केकरो नै अछि। मुदा कमाइक तेहेन भुत लागि गेल छै जे जइ दिन मरत तही दिन छोड़तै। सभ लूरि संगे चलि जेत्तै। तँए नीक भेलै, अबाह भऽ गेल, आब तँ अँगनामे रहत। जखने अँगनामे रहए लगत तखने एका-एकी सभ लूरि सीखए लगब। मुदा दादीएकेँ की दोख देबै। भरि दिन दस सेरक छिट्टा माथपर नेने बुलैए तँ देह-हाथ दुखेबे करतै। साँझ खिन कऽ थाकल-ठहियाएल अबैए असुआकेँ पड़ि रहैए। से आब नै हेतै। निचेनसँ पावनिओ-तिहारक विधि-विधान आ गीतो-नाद सीखब। एतेटा भऽ गेलौं, ने अखनि तक एक्कोटा गीत अबैए आ ने बिआह-दुरागमनक अड़िपन बनौल होइए। कएक दिन मनमे अबैए जे

मालतीए जकाँ हमहूँ अपन गोसाँइ घरक ओसारमे पुरैनिक लत्ती, कदमक गाछ लिखी। से लुड़िओ रहत तब ने। साँझू पहर कऽ जेते खान जँतै छिऐ तेते खान समैओ भेटैए तँ नहियेँ होइए। किएक तँ बिछानपर पड़िते ओँघा जाइए। जँ पुछबो करै छिऐ तँ ऐ गीतक पाँति ओइ गीतमे आ ओइ गीतक भास ऐ गीतमे कहए लगैए। जइसँ किछु सीखि नै पबै छी।

मटुकलालकेँ ऐ दुआरे खुशी होइत जे बेटा-पुतोहुक रहैत बूढ़ माए एते खटए से उचित नै। मुदा कहबो केकरा करबै। हमरा कोनो मोजर दइए। दूटा धिया-पुता भेल। बेटीओ बिआह करै जोकर भऽ गेलि मुदा हमरा बच्चे बुझैए। हम की करूँ। तँए भगवान जे करै छथिन से नीके करै छथिन। भने आब भारी काज करै जोकर नै रहल। जे अपनो बूझत आ मनाही करबै तँ मानिओ जाएत। मरैक डर केकरा नै होइ छै। तहूमे बूढ़-बुढ़ानुसकेँ। तँए मोने-मन खुश। लोक हमरा तड़िपीबा बूझि बुड़िबक बुझए। तँए की हम बुड़िबक छी। कियो बुझैए तँ बुझऽ। जहिया बाबू मुइला तहिया जेते भार कपारपर आएल, से कियो आन सम्हारि दइए। की अपने करै छी। पसिखन्ने जाइ छी तँ की लुच्चा-लम्पट संग बैसि पीबै छी जे चोरी-छिनरपन्नी सीखब। या तँ असगरे बैसि कऽ पीबै छी या बड़का लोक लग बैसि कऽ पीबै छी। बड़का लोकक मुँहमे हरिदम अमृत रहैए। रमानन्दबाबूसँ गियनगर लोक ऐ इलाकामे दोसर के अछि। तिनकासँ हमरा दोस्ती अछि। हुनकर ओ बात हम गिरह बान्हि नेने छी जे जहिना कियो जनमैए, बढ़ि कऽ जुआन होइए। जुआनसँ बूढ़ भऽ मरि जाइए। ई तँ दुनियाँक निअमे छिऐ। सभकेँ हएत। जे नै बूझत ओ नै बूझह। मुदा हम तँ ओएह मानै छी...।

फेर मटकुरिया माए दिस नजरि घुमलै। मोने-मन सोचए लगल, माइक पएर टुटब कोनो अनहोनी थोड़े भेलै। ई तँ भगवानक लीले छियनि। भगवान कखनो अपना सिर अजश लेता। कोनो-ने-कोनो कारण भइए जाइए। तइले हमरा दुखे किए हएत। जहिना एते दिन बितल तहिना आगुओ बितत। एते दिन जहिना माएकेँ, बेचि कऽ घुमैत काल, आगूसँ पथिया आनि दइ छलिऐ तहिना आब घरोवालीकेँ आनि देबै। कियो हमरा देखा दिअ तँ जे एक्को दिन हमरा काजमे नागा भेल। गोसाँइ डुमै बेर, केतौ रही, केतबो पीब कऽ बुत्त रही मुदा तँए की अपन काज

कहियो छोड़ै छी...?

मटकुरियाक परिवारक खानदानी जीविका चुनक। महिला प्रधान रोजगार। किएक तँ चुनक बिकरी अँगने-अँगने होइत। शुद्ध गमैआ बेवसाय। ने चुन बनबैक समान बाहरसँ आनए पड़ैत आ ने बेचैक असुविधा। गामक अधिकांश परिवारमे चुनक खर्च। कियो पान खाइत तँ कियो तमाकुल। दुनूमे चुनक जरूरति। चुन बनाएबो कठिन नै। डोका जरा कऽ बनैत। अन्नेक कोठी जकाँ डोको जरबैक कोठी होइत। मुदा अन्नक कोठीक ऊपरमे छोट मुँह अन्न ढारैले बनौल जाइत, जहन कि चुनक कोठीक ऊपरका भाग खुलल रहैत। निच्चाँक मुँह दुनूक एक्के रंग। कच्चो मालक कमी नहियेँ। किएक तँ गरीब-गुरबा लोक डोकाक मासु खाइत। मासुओ पवित्र। किएक तँ डोका माटि खा जीवन-बसर करैत। डोकेक ऊपरका भागसँ माने खपलौइयासँ चुन बनैत।

चुनक बजारो गामे-घर। बिरले गोटेक घरमे चुनक खर्च नै होइत, नै तँ सबहक घरमे होइत। पहिने मटकुरियाक दादी-परदादी चुन बेचै छेली, मुइलाक पछाति माए बेचए लगलनि। सात दिनक सप्ताहमे पाँच दिन मखनी भौरी गामे-गामे करैत छेली। एक-एक गाममे एक-एक दिनक पार बनौने। आठ दिन खर्चक हिसाबसँ सभ कियो चुन किनैत। सभ काज अन्दाजेसँ। अन्दाजेसँ चूनो दैत आ अन्दाजेसँ -धान-मरूआ- बेचो लैत। कोनो हरहर-खटखट नै। किएक तँ मनक उड़ान छोट। ने कोठा-कोठीक इच्छा, ने सुख-भोगक। बान्हल मन तँए मात्र मनुख बनि जीबैटाक इच्छा।

बजारोक प्रतियोगिता नै। कारोबारमे छीना-झपटी नै। किएक रहतै। जहिना जातिक शासन तहिना समाजक दंडात्मक रूखि। समाजमे निश्चित जाति निश्चित काजसँ बान्हल। एकक काज दोसर नै करैत, तँए लक्कड़-झक्कड़ कम। जेना डोम, नौआ, धोबि, बरही कुम्हार इत्यादिक अपन-अपन जीविकाक धंघा। जे कड़ाइसँ पालन होइत। दुनू बिन्दुपर। कराओलो जाइत आ करबो करैत। सीमित क्षेत्रक बीच कारोबार। कियो अतिक्रमण नै करैत। जँ कहीं- केतौ अतिक्रमण होइत तँ जातिक बीच ओकर फरिछौट होइत। तँए सभ अपन-अपन सीमाक भीतर रहैत। हँ, ई बात जरूर होइत जे सीमाक भीतर भैयारीक बँटबारासँ विभाजित होइत।

मुदा मटकुरियाक परिवार एक पुरिखियाह, तँए एहेन प्रश्ने नै। रोजगारो लेल तहिना। सबहक अपन-अपन सीमित क्षेत्र। एक क्षेत्रमे दोसरक प्रवेश बर्जित। मुदा बेर-बेगरतामे एक-दोसराकेँ भार दऽ समाजक काजमे बाधा उपस्थिति नै हुअए दैत।

चुन बेचि मखनी खाली परिवारे नै चलबैत। महाजनीओ करैत। किएक तँ सोलहो आना श्रमे पूजी। मेहनति कऽ डोका एकत्रित करैत। डोका जरा कऽ चुन बनबैत। आ अन्नसँ चुन बदलैत। चुनक कीमतो अलग-अलग। जैठाम गरीब लोक चुनक कम कीमत दैत तैठाम सुभ्यस्त किछु बेसीए दैत। पाँचे गोटेक परिवार मखनीक। केते खाएत। तँए फजिलाहा अन्न सबाइपर लगबैत। सेहो बिनु लिखा-पढ़ीक। मुँह जवानी। जइसँ किछु ऊपरो होइत किछु बुड़िओ जाइत। पाँच गाममे मखनीक कारोबार। अगर जौं ऐसँ आगू कारोबार बढ़बए चाहती तँ सम्हारले ने हेतनि। किएक तँ डोका जमा करैसँ चुन बनबै धरिमे दू दिन समए लागि जाइत। आठे दिनपर बिकरीक बीट घुमैत। तँए पाँच गामसँ बेसी गाम सम्हारब कठिन।

टाँग अबाह होइते मखनी चुन बेचब छोड़ि देलनि। मुदा परिवारक रोजगार बन्न नै भेलै। आब फुलिया बेचए लागलि। चिन्हार गाम चिन्हार गहिंकी। तँए केतौ बाधा नै। मुदा मखनीक महाजनी बुड़ि गेलनि। किएक तँ पाँचो गाममे पाँच गोटे ऐठाम अपन धान-मरूआ रखै छेली, ओइठामसँ ओइ गाममे सबाइ लगबै छेली। अपन आवाजाही बन्न भेने बिसरि गेली। लेनिहारो बिसरि गेल। मुदा तइले मखनीक मनमे दुख नै भेलनि। खुशीए भेलनि। खुशी ऐ दुआरे भेलनि जे जाबत देहमे तागत छेलए ताबे अपनो, परिवारो आ दोसरोकेँ खुऔलौं। जिनगीक सार्थकता ऐसँ बेसी की हएत। यएह ने धरम छी। धर्ममय जिनगी बना बुढ़ाड़ी धरि जीब लेलौं, ऐसँ बेसी की चाही...।

तँए मोने-मन खुशी। समए आगू बढ़ल। कारोबारक रूपो बदलल। केना नै बदलैत? समैओक तँ कोनो ठेकान नै। कोनो साल अधिक बर्खा होइत तँ कोनो साल रौदी। अधिक बर्खा भेने तँ अधिक डोकाक वृद्धि होइत। मुदा रौदीमे कमि जाइत। बिसबासू कारोबार लेल वस्तुक उपलब्धि अनिवार्य। जे आब नै भऽ पबैत। मुदा समैओ तँ पाछू नै आगू

मुहेँ ससरत। पत्थल-चूना बजारमे आबि गेल। पर्याप्त वस्तुक उपलब्धि भऽ गेल। बाजारो बढ़ल। जैठाम उमरदार लोक तमाकुल-पान सेवन करै छला तैठाम आब स्कूल-कौलेजक विद्यार्थी सेहो करए लगल। तेतबे नै बाल-श्रमिक सेहो करए लगल। गामे-गाम चौक-चौराहा बनि गेल। जइसँ चाह-पान खेनिहारो बढ़ल। ओना तमाकुल-पानक अतिरिक्त पान-पराग, शिखर, रंग-बिरंगक गुटका सेहो बढ़ि गेल। तेकर अतिरिक्त सार्वजनिक उत्सव सेहो बढ़ल। परिवारक मांगलिक काज बिआह, मूड़न, सराध, सेहो नम्हर भेल। जइसँ पान-तमाकुलक खर्च बढ़ल। तँए चुनोक खर्च केते गुणा बढ़ि गेल।

मखनीक जगह फुलिया लेलक। ओना घरक रोजगार तँए फुलियोकेँ किछु सीखैक जरूरति नै। सभ बुझले। सासुक रहितो, कहियो-काल फुलियो बेचए जाइ छलि। किएक तँ जइ दिन मखनी नैहर जाइत तइ दिन फुलीये बेचैओले जाइत आ डोका आनि-आनि चुनो बनबैत। मुदा आब चुन बनबैक रूपे बदलि गेल। लोको डोकाक चुनक बदला पत्थल-चूना खाए लगल। ओना अखनो बूढ़-बुढ़ानुस सभ पत्थल-चूनाकेँ घटिया बुझैत। जे तेजी डोकाक चुनमे होइत ओ पाथरक चुनमे नै। मुदा हारल नटुआ की करत।

चुन बेचैक रूपो बदलल। अखनि धरि जे अंदाजसँ बिकरी होइ छल ओ आब तौल कऽ हुअ लगल। बेचक जगह पाइ लेलक। ओना अन्नोक चलनि सोलहन्नी समाप्त नहियेँ भेल हेन। आब ओतबे अन्न पड़ैत जे आनठाम रखैक जरूरत फुलियाकेँ नै होइत। पाइ बौगलीमे रखैत आ अन्न पथियामे। ओना कर्जखौक सेहो कमल। किएक तँ समए आगू बढ़ने खाइ-पीबैक उपए सेहो लोककेँ भेल। बोइन सेहो सुधरल। पाइक आमदनी किसानोकेँ हुअ लगल। लोकक पीढ़ि सेहो बदलल। जइसँ विचारोमे बदलाउ आएल।

सएक आगू बढ़ने कारोबार असान भेल। जइसँ मटकुरियाक परिवार सेहो आगू मुहेँ ससरल। मुदा मटकुरिया जहिनाक तहिना रहि गेल। पहिने जे मटकुरिया माए संग डोका आनै छल ओ आब एक्केठाम बजारसँ चुन कीनि कऽ लऽ अबैए। सूखल चुन। सूखल चुनकेँ गील बनबैमे सेहो अधिक फीरिसानी नहियेँ ।

फागुन मास। शिवरातिक तीन दिन पछाति। धुरझार लगन चलैत। मेला जकाँ बरियाती चलैत। अंग्रेजीबाजा आ लाउडस्पीकरक अवाजसँ वायुमंडल दलमलित। आइ सबेरे -आन दिन चारि बजे- मटकुरिया पसिखाना विदा भेल। समैओ सोहनगर। झिहिर-झिहिर हवा चलैत। अकासमे जहिना चिड़ै गीत गबैत तहिना हवामे गाछ-बिरिछ नचैत। पसिखाना पहुँचिते मटकुरियाकेँ पासी कहलक-

''भैया, आइ निम्मन बसन्ती माल अछि, खजुरिया नै ताड़क।''

पासीक बात सुनि मटकुरियाक मनमे खुशी उपकल। मोने-मन सोचलक, दू गिलास आरो बेसी चढ़ा देबै, बाजल-

''तब तँ आइ जतरा नीक बनल अछि।''

''अहाँ तँ हमर पुरान अपेछित छी भैया, तँए दू गिलास ओहिना मङनीए पिआएब।''

दू गिलास मङनी सुनि मटकुरिया सोचलक जे पहिल दिन छिऐ तँए आन दिनसँ कम केना लेब? यात्रा तँ पहिलुके दिन नीक होइ छै। वेचाराकेँ सगुन केना दुरि करबै। मुस्की दैत कहलक-

''बड़बढ़ियाँ। अपनो मिला कऽ नेने आबह।''

वसन्ती ताड़ी, पीबिते मटकुरियाकेँ रंग चढ़ए लगल। ताड़ी पीब मटकुरिया सोझे, पसिखन्नेसँ, पत्नीकेँ माथ परक पथिया आनए दछिन मुहेँ विदा भेल। गामक दछिनबरिआ सीमापर ठाढ़ भऽ आगू तकलक। जेते दूर नजरि गेलै तैबीच केतौ पत्नीकेँ अबैत नै देखलक। कनीकाल पाखरिक गाछ लग ठाढ़ भऽ सोचए लगल जे आगू बढ़ी वा एतै रूकि जाइ। अंग्रेजी बाजा आ लाउडस्पीकरक फिल्मी गीत कानमे पैसि-पैसि मनकेँ डोलबैत। मन पड़लै अपन बिआह। बिआह मन पड़िते फुलियाक रूप आगूमे ठाढ़ भऽ गेलै। गुनधुन करैत सोचलक जे ऐठाम ठाढ़ भऽ कऽ समए बिताएब, तइसँ नीक जे आरो थोड़े बढ़ि जाइ। आगू बढ़ल। किछु दूर आगू बढ़लापर पत्नीकेँ अगिला गाम टपल अबैत देखलक। बाधो कोनो नम्हर नै। फुलियाक नजरि सेहो मटकुरियापर पड़ल। दुनूक डेग तेज भेल। तेज होइक दुनूक दू कारण। मटकुरियाक मनमे जे जेते

जल्दी लगमे पहुँचब तेते जल्दी भार उतरतै। जहन कि पसीनासँ नहाएल फुलियाक मनमे शान्ति। शान्ति अबिते पथिया हल्लुक लागए लगलै। दुनूक मनमे केतेको नव-नव विचार आबए लगलै...।

लग अबिते मटकुरिया धोतीक ढट्ठा सरिऔलक। किएक तँ माथपर भारी एलासँ डाँड़क धोती डाँड़मे बैसि जाइत। ढट्ठा सेरिया गमछाक मुरेठा बान्हि दुनू हाथसँ पकड़ि फुलियाक माथ परक पथिया अपना माथपर लेलक। माथपर लइते किछु कहैक मन मटकुरियाकेँ भेलै। मुदा किछु बाजल नै। किएक तँ फेर मनमे एलै, वेचारी थाकल अछि, तँए मन अगियाएल हेतै। हो-ने-हो किछु करुयाएल बात बाजि दिअए। जहन कि एकाएक माथ परक भार उतरलासँ फुलियाक मन हल्लुक भेल। मुदा ऊहो किछु बाजलि नै, ओहिना देह कठियाएल। आगू-पाछू दुनू बेकती घर दिस विदा भेल। जेते आगू बढ़ैत तेते फुलियाक मन हल्लुक होइत आ मटकुरियाक मन भारी। पत्नीसँ किछु कहैक विचार मटकुरियामे कमए लगल। जेना मुँह खोललासँ भारी बढ़त। मुदा जेना-जेना आगू बढ़ैत तेना-तेना फुलियाक देहो-हाथ सोझ होइत आ पतिकेँ किछु कहैक मन सेहो होइत। मुदा किछु बजैत नै। किएक तँ पति-पत्नीक बीच गप्पक आनंद तहन होइत जहन दुनूक मन सम -ने बेसी सुख आ ने बेसी दुख- होइत। से अखनि धरि दुनूक बीच नै भेल छेलै। एते काल फुलियाक माथपर पथिया रहने मन पीताएल तँ आब मटकुरियाक हुअ लगल। ने फुलिया पतिकेँ किछु कहैत आ ने मटकुरिया पत्नीकेँ। मुदा बिच्चेमे रस्ता बाध अबैत-अबैत दुनूक मुहसँ हँसी निकलल। पथिया नेनइ मटकुरिया पाछू घूमि कऽ तकलक तँ देखलक जे फुलिया मुस्किया रहल अछि। फुलियोक नजरि मटकुरियाकेँ मुस्कियाइत देखलक। एक टकसँ एक-दोसरपर आँखि गड़ौने अपन जिनगी देखए लगल।

OOO

डीहक बँटबारा

अमानतक दिन। चारि बजे भोरेसँ पुड़ी-जिलेबी-तरकारी इत्यादिक सुगंध गामक हवामे पसरि गेल। सौंसे गामक लोककेँ बुझले तँए केकरो सुगंधसँ आश्चर्य नै होइ। भोरे श्रीकान्तो आ मुकुन्दोक पत्नी फूल तोड़ि नहा-सोना कऽ बरहम स्थान पूजा करए गेलि। हलुआइ दू-चुल्हियापर तरकारीओ बनबैत आ जिलेबीओ छनैत। कुरसीपर बैसल श्रीकान्त मोने-मन बरहमबाबाक कबुला केलक जे जँ हमरा मनोनुकूल नापी भेल तँ तोरा जोड़ा छागर चढ़ेबह। तहिना मुकुन्दो। गामक सुगंधित हवामे सबहक मन उधियाइत। चाह बनबैबला चाह बनबैमे बेस्त। पान लगबैबला पानमे। दुनू दिस कट्ठा-कट्ठा भरिक टेंट लागल। दड़ी आ जाजीम बिछौल। एक भागमे गाँजा पीनिहारक बैसार आ दोसर भागमे दारूक। जहिना बुचाइ कूदि कऽ कखनो हलुआइ लग जा देखैत तँ कखनो दारूबलाक बैसारमे जा दू-गिलास चढ़ा लैत। तहिना सरूपो। सभ कथूक ओरियान काल्हिए दुनू गोटे दुनू दिस कऽ नेने तँए अनतए जेबाक जरूरते नै केकरो, चाह-पानक इत्ता नै। जेकरा जेते मन हुअए से तेत्तै खाउ-पीबू। जलखैमे पुड़ी-जिलेबी डलना आ कलौमे खस्सीक माँस आ तुलसीफुल-भात। तँए भरि दिनक चिन्ता सबहक मनसँ पड़ाएल। जीविलाह सभ दुनू दिस टहलि-टहलि खाइत-पीबैत।

श्रीकान्तो आ मुकुन्दो इंजीनियर। दुनू एक्के वंशक। दुनूक परदादा सहोदरे भाए। पाँच कट्ठाक घराड़ी, जइमे दुनू गोटेक अदहा-अदहा हिस्सा। जहिएसँ दुनू गोटे नोकरी शुरू केलनि, तहिएसँ गाम छोड़ि देलनि। एक पुरिखियाह वंश तँए परिवारमे दोसर नै। पैंतीस सालक नोकरीक बीच कहियो दुनूमेसँ कियो गाम नै एला। जइसँ पहुलका बापक बनौल घर दुनूक खसि पड़लनि। गामक स्त्रीगण सभ ठाठ-कोरो, धरनिकेँ उजाड़ि-उजाड़ि जरा लेलक। ढिमका-ढिमकीकेँ सेरिया गामक छौड़ा सभ फील्ड बना लेलक। गामक जेते खेलौड़िआ छौड़ा सभ छल ओ सभ अपन-अपन खेलक जगह बाँटि लेलक। एकटा फील्ड कबड्डीक, दोसर गुड़ी-गुड़ीक, तेसर चिक्का-चिक्काक, चारिम गुल्ली-डंटाक आ पाँचम रूमाल चोरक बनि गेल। उकट्टी छौड़ा सभ एक दोसराक फील्डमे राता-राती

झाड़ा फीर दइ। मुदा खेल शुरू करैसँ पहिने दस-बीसटा गारि पढ़ि सभ अपन-अपन फील्ड चिक्कन बना लिअए। ओना दुनू गोटे -श्रीकान्तो आ मुकुन्दो- बाहरे घर बना नेने छथि मुदा मरै बेरमे दुनूकेँ गाम मन पड़लनि। साले भरिक नोकरी दुनूक बाँचल तँए तीन मासक छुट्टी लऽ लऽ गाम एला। गाम अबैसँ पहिने दुनू गोटे फोनक माध्यमसँ अबैक दिन निर्धारित कऽ नेने रहथि। किएक तँ परोछा-परोछी नापी करौलासँ आगू झंझटिक डर दुनूक मनमे रहनि।

घराड़ी नापी होइसँ दस दिन पहिने श्रीकान्त गाम एला। अपना तँ घरो नै, मुदा अबैकाल एकटा रौटी, सुतै-बैसैक समान संग भानसो करैक सभ किछु नेने एला। गाम आबि पितियौत भाइकेँ कहि सभ बेवस्था केलनि। सभ गर लगला पछाति भाएकेँ पुछलखिन-

“बौआ, गाममे के सभ मुँहपुरखी करैए?”

भाए कहलकनि-

“गाममे तँ कियो राजनीति नहियेँ करैए मुदा बुचाइ आ सरूप सभ धंधा करैए।”

“की सभ धंधा?”

“जेना कियो खेत किनैए वा बेचैए तैबीचमे पड़ि किछु कमा लइए। तहिना गाएओ-महिंसमे करैए। भोट-भाँटसँ लऽ कऽ कथा-कुटुमैती धरिमे सेहो किछु-ने-किछु हाथ मारिए लइए।”

भाएक बात सुनि इंजीनियर साहैब कनीकाल गुम्म भऽ गेला। मोने-मन सोचि-विचारि कहलखिन-

“कनी बुचाइकेँ बजौने आबह?”

“बड़बढ़ियाँ”

कहि भाए बुचाइकेँ बजबए विदा भेल। मोने-मन श्रीकान्त सोचए लगला जे गाममे तँ सबहक हालत तेनाहे सन अछि। देखै छिऐ जे जेहने घर-दुआर छै तेहने बगए बानि। दू चारिटा जे ईंटो घर देखै छिऐ सेहो भितघरे जकाँ। तँए गाममे ओहेन घर बना कऽ देखा देबै जे गामक कोन

बात, परोपट्टाक लोक देखए औत। पुरान लोक सबहक कहब छन्हि जे जेहेन हवा बहै ओइ अनुकूल चली। जुग पाइक अछि। जेकरा पाइ रहतै ओ बुधियार। जेकरा पाइ नै रहतै ओ किछु नै। असगर ब्रहस्पैतो फूसि। जेकरा पाइ छै वएह नीक घर बनबैए, नीक गाड़ीमे चढ़ैए। ओकरे धिया-पुता नीक स्कूल-कौलेजमे पढ़ैए। ओकरे परिवारक लोक नीक लत्ता-कपड़ा पहिरैए। बेटा-बेटीक बिआह नीक परिवारमे होइ छै। आइक जे सुख-सुविधा विज्ञान करौलकहेँ ओकर सुख भोगैए। यएह ने जुग संग चलब छी। समाजक बीच प्रतिष्ठा बनाएब तँ बामा हाथक काज छी। अधलासँ अधला काज करि कऽ पाइ कमा लिअ आ समाजकेँ भोज खुआ दियौ, बस जशे-जश, प्रतिष्ठे-प्रतिष्ठा। हाथमे पाइ अइछै, सभ किछु करि कऽ गौआँकेँ देखा देबै। बेटो-बेटीकेँ पढ़ा-लिखा, बिआह-दुरागमन करा कऽ निचेने छी। तहन तँ एकटा काज मात्र पछुआएल अछि, ओ अछि सामाजिक प्रतिष्ठा। सेहो बनाइए लेब।

मोने-मन श्रीकान्त विचारिते रहथि आकि बुचाइ संग भाए पहुँचलनि। लगमे अबिते बुचाइ दुनू हाथ जोड़ि बाजल-

> “गोड़ लगै छी काका। अहाँ तँ गामकेँ बिसरि गेलिऐ। सरकारक एयर कंडीशन मकान भेटले अछि तहन कथीले थाल-कादोमे आबि मच्छर कटाएब?”

अपनाकेँ छिपबैत श्रीकान्त बजला-

> “नै बौआ, से बात नै अछि। जखने नोकरीक जिनगी शुरू केलौं तखने दोसराक गुलाम बनि गेलौं। जे-जे हुकुम देत से से करए पड़त। तूँ सभ कम उमेरक छह तँए नै देखलहक, मुदा हम तँ अंग्रेजक शासन देखने छी किने! शासन तरे-तर चलै छै, जे सभ थोड़े बुझैए। अंग्रेजक पीठिपोहू छल ऐठामक राजा-रजबार आ ओकरा सबहक फाँड़ी छी जमीनदार सभ। ओ सभ जे ऐठामक लोक संग बेवहार करै छल आ करैए से तँ तहूँ सभ देखते छहक। मुदा ऐ सभ गपकेँ छोड़ह। तोरा जे बजौलियऽ से सुनह। साले भरि आब नोकरी अछि। नोकरी समाप्त भेला पछाति गामेमे रहब। तँए तीन मासक छुट्टी लऽ कऽ एलौं हेन

जे घराड़ीक अमानत करा घर बनाएब। बिनु घरे रहब केतए?''

बुचाइ-

''हँ, ई तँ जरूरीए अछि। मुदा हमरा किए बजेलौं?''

पासा बदलैत श्रीकान्त-

''मुकुन्द जीकेँ सेहो खबरि दऽ देने छियनि। ऊहो काल्हिसँ परसू धरि एबे करता। ऐठाम तँ दुइए गोटेक घराड़ी खाली अछि, तँए दुनू गोटेक रहब जरूरी अछि। तोरा तँ नै बूझल हेतह, हमर परबाबा आ मुकुन्दक परबाबा सहोदरे भाए छला। अढ़ाइ-अढ़ाइ कट्ठाक हिस्सा जमीन दुनू गोटेकेँ अछि। तँए कोनो पेंच लगाबह जे हमरा तीन कट्ठा हुअए।''

श्रीकान्तक पेटक मोलि बुचाइ देखि गेल। मुस्कीआइत बाजल-

''एँह, अहीले अहाँ एते चिन्तित छी। ई तँ बामा हाथक काज छी। अमीनकेँ मिला लेब, सभ काज भऽ जाएत। किएक तँ अमीनक गुनियाँ-परकालमे पाँच-दस धूर जमीन नुकाएले रहै छै। मुदा ऐ ले खरचा करए पड़त। हम तँ जोगारे ने बैसाएब, खर्च तँ अहींकेँ करए पड़त।''

पाइक गरमी श्रीकान्तकेँ रहबे करनि। मनमे ईहो बात रहनि जे भलहिं मुकुन्दो इंजीनियर छथि, दुनू गोटेक दरमहो एक्के रंग अछि मुदा पाइमे बरबरि कऽ लेता, से केना हेतै। मुस्की दैत कहलखिन-

''तोहर मेहनति आ हम्मर पाइ। सएह ने। जेते खर्च हएत, हएत। मुदा मैदानसँ जीति कऽ अबैक छह।''

श्रीकान्तक बात सुनि बुचाइ मोने-मन खुश भेल। मनमे एलै, नीक मोकिर हाथ लागल। भरिसक राशि घुमल हैं। ओह! बहुत दिनसँ अखबारो ने पढ़लौं जे कनी राशि देखि लैतिऐ। खैर नहियोँ पढ़लौं तैयो शुभ बूझि पड़ैए। जोशमे बाजल-

''काका, रूपैआ-पुत पहाड़ तोड़ैए। ई तँ मात्र अमानते छी। जे चाहबै, से हेतै। मुदा अहाँ कंजूसी नै करबै।''

कंजूसीक नाओं सुनि श्रीकान्त कहलखिन-

"मरदक बात छिऐ। जे बाजि देब ओ बिनु पुरौने छोड़ब।"

बैगसँ पाँच हजार रूपैआ निकालि श्रीकान्त बुचाइकेँ देलखिन। रूपैआ जेबीमे रखि बुचाइ प्रणाम कऽ विदा भेल।

गामक पेंच-पाँचमे बुचाइ माहिर मुदा समाजमे अनुचित हुअए, से कखनो नै सोचए। जहिया कहियो उकड़ू काज अबै तहन गुरुकाकासँ पूछि लैत। मोने-मन रस्तामे सोचए लगल जे ऐ बेर हिनका तेहेन सिखान सिखेबनि जे मरै काल तक मन रहतनि। जहिना सरकारी खजानासँ लऽ कऽ ठीकेदार धरिसँ समेटिलाहा रूपैआ केहेन होइ छै, से सिखता।

आँगन पहुँच बुचाइ चारि हजार पत्नीक हाथमे आ एक हजार अपना हाथमे रखलक। जहिना अगहनमे धानक ढेरी देखि, दुनू परानी किसानक मन खुशीसँ गदगदा जाइत तहिना दुनू परानी बुचाइकेँ भेलै। मुदा दुनूक खुशीमे अन्तर होइए। किसानक खुशी मेहनतिक फल देखि होइत जहन कि बुचाइक खुशी दलालीक। मुस्की दैत बुचाइ घरवालीकेँ कहलक-

"खिड़कीपर एकटा शीशी अछि, नेने आउ?"

मुँह चमकबैत घरवाली बाजलि-

"खाइ-पीबै रातिमे शीशी की करब?"

बुचाइ-

"शीशीओ नेने आउ आ खेनाइओ नेने आउ। दुनू संगे चलतै। जाबे भरि मन नै पीअब ताबे मूड नै बनत। बहुत बात सोचैक अछि। अहाँ नै ने हमर बात बुझबै?"

पत्नी-

"अहाँक बात बुझैक जरूरति हमरा कोन अछि। हमरा तँ अपने मन केनादन करैए। देह भँसिआइए।"

"अच्छा ठीक अछि, अहूँ दू घोंट पीब लेब।"

भोरे बुचाइ चौकपर पहुँचल। गामक बीचमे चौबट्टी। जइ चौबट्टीपर

चारू भरसँ तीस-पैंतीसटा छोट-छोट दोकान। दस-बारहटा दू-चारी घर, बाँकी कठघारा। ओना एक्कोटा नम्हर दोकान नै मुदा सभ कथुक दोकान। जइसँ गामक लोककेँ हाट-बजार जेबाक जरूरत कम पड़ैत। जहिया कहियो कोनो परिवारमे नम्हर काज होइत-जेना बिआह, सराध इत्यादि, तखने बजार जेबाक खगता पड़ैत। ओना भरि दिन चौकक दोकान खुजल रहैत मुदा गहिंकीक भीड़ साँझे-भिनसर होइत। भरि दिन लोक अपन-अपन काज-उदम करैत आ साँझू पहरकेँ दोकानक काज कऽ लैत। खाली चाहे-पानक बिकरी भिनसरु पहरकेँ बेसी होइत। चौकपर पहुँच बुचाइ दुनू चाहबलाकेँ एक-एक सए रूपैआ दऽ दोकानपर बैसलि सभकेँ चाह पीअबैले कहलक। गाँजा पिआकक सेहो तीन ग्रुप चलैत। चाह पीब पान खा बुचाइ चिलमक ग्रुपमे पहुँच, दू दम लगा, तीनू ग्रुपमे पचास-पचास रूपैआ गाँजा लेल दऽ देलक। सबहक मन खुशी भऽ गेलै। मुस्कीआइत बुचाइ अमीन ऐठाम विदा भेल। गाममे तीनटा अमीन। रामचन्द्र, खुशीलाल आ किसुनदेव। कहैले तँ तीनू अमीन मुदा पढ़ि कऽ अमीन रामचन्द्रेटा भेल। मिडिल पास केला पछाति रामचन्द्र हाइ स्कूलमे नाओं नै लिखा सकल। आब तँ लगेमे हाइ स्कूल खुगि गेल मुदा ओइ समैमे एक्कोटा हाइ स्कूल परोपट्टामे नै छल, जइसँ रामचन्द्र आगू नै पढ़ि सकल। बाहर पठा बेटा पढ़बैक ओकाइत रामचन्द्रक पिताकेँ नै। सर्वे अबैसँ दस-पनरह बर्ख पहिने मुजफुरपुरक एकटा अमीन गाममे आबि अमानतक स्कूल खोललक। छह मासक कोर्स। चारि विषयक- पैमाइस, क्षेत्रमिति, कानून आ चकबन्दीक-पढ़ाइ। ओना समानो सभ- गुनियाँ, परकाल, मास्टर, स्केल, लेन्स, राइटऐंगिल, प्लेन, टेबुल, कंघी, टाँक, थ्याजो रैटर, जंजीर, फीता रखने। पाँच रूपैआ महिना फीस लैत। मधुकान्तक दरबज्जेपर स्कूल खोललक। मधुकान्ते खाइओले दइ। जेकरा बदलामे मधुकान्तकेँ सेहो पढ़ा देलक। ओना गामोक आ गामक चारू भरक गामक विद्यार्थी सेहो पढ़लक। कुल मिला कऽ पनरह गोटे पढ़लक। मुदा जमीनक नापी-जोखी कम होइत, तँए रामचन्द्र छोड़ि सभ अमीनी छोड़ि देलक।

सर्वे अबैसँ महिना दिन पहिने बेगूसरायक एक गोटे आबि पँच-पँच सएमे अमानतक सर्टिफिकेट बेचए लगल। ओकरेसँ खुशीलालो आ

किसुनदेवो सर्टिफिकेट कीनि लेलक।

गामे-गाम सर्वे शुरू भेल। अमीन सबहक चलती आएल। नक्शा बनब शुरू होइते दलाली शुरू भेल। पाइ दऽ दऽ लोक अपन-अपन खेतक नक्शा बढ़बए लगल। लोकक दलाल अमीन आ सरकारक सर्वेयर। खुशीलालो आ किसुनदेवो उठि बैसल। मुदा रामचन्द्र कात रहल। गाए-महिंस, गाछ-बिरिछ बेचि-बेचि लोक रूपैआ बुकए लगल। रामचन्द्र दबि गेल मुदा खुशीलाल आ किसुनदेव, नाओं कमा लेलक। जेम्हर निकलैत तेम्हर लोक सभ चाहो-पान करबैत आ अमीन साहैब, अमीन साहैब कहि परनामो करैत। दुनू गोटे सर्वेक नांगड़ि पकड़ि किस्तवारसँ लऽ कऽ तसदीक खानापुरी, दफा-३, दफा-६,८,९ धरि दौग-बड़हा करैत रहल। जइसँ मोटर साइकिल मेन्टेन करए लगल।

खुशीलाल ऐठाम पहुँच बुचाइ श्रीकान्त दिससँ नापीक अमीन मुकर्रर कऽ लेलक। नापीक फीसक अतिरिक्त पक्ष लेबाक फीस सेहो गछि लेलक।

दोसर दिन मुकुन्दजी सेहो गाम पहुँचला। बाहरेसँ रहैक सभ ओरियान केने एला। गाम अबिते दूटा जन रखि परती छिलबा रौटी ठाढ़ करौलनि। जहन जन जाए लगलनि तहन पुछलखिन-

"गाममे के सभ नेतागिरी करैए?"

मुकुन्दजीक बात सुनि एक गोटे बुचाइक नाओं कहलकनि। बुचाइक नाओं सुनि बजा आनैले कहलखिन। दुनू गोटे विदा भेल। दुनू कोदारि लऽ एक गोटे घरपर गेल आ दोसर गोटे बुचाइ ऐठाम। मुकुन्दजी पत्नीकेँ कहलखिन-

"कनी चाह बनाउ?

पत्नी चाह बनबैक ओरियान करए लगली। गैस चुल्हिपर ससपेन चढ़ा बजली-

"केकरा लेल तीन महला मकान बनेलौं।"

पत्नीक बात सुनि मुकुन्दजीक करेज दहलि गेलनि। करेजकेँ दहलिते आँखिमे नोर आबि गेलनि। आँखि उठा पत्नी दिस देखि आँखि

निच्चाँ कऽ लेलनि। रूमालसँ नोर पोछि मुकुन्दजी मोने-मन सोचए लगला जे अपन हारल केकरा कहबै। सपनोमे नै सपनाएल रही जे पढल-लिखल मनुख एते नीच होइए। केते मेहनतिसँ बेटाकेँ पढ़ेलौं, नोकरी दिएलौं। नीक घर नीक पढ़ल-लिखल कन्या संग बिआह करेलौं। मुदा फल उल्टा भेटल। पढ़ल-लिखल लोक जे अपन सासु-ससुर संग एहेन बर्ताव करैए तँ लोक जीविए कऽ की करत? ऐसँ नीक मरनाइ। मुदा मृत्युओ तँ ओते असान नै होइत। तहन तँ जे भाग-तकदीरमे लिखल अछि, से भोगब। अगर जँ बुढ़ाढ़ीमे गनजने लिखल रहत तँ कियो बाँटि लेत। ओ तँ विधाताक रेख छी। के बदलि देत? मुड़ी गोंतने मुकुन्द घुनघुना कऽ बजैत। पत्नीक आँखि तँ ससपेनपर रहनि मुदा करेज पीपरक पात जकाँ, जे बिनु हवोक डोलैत रहैत। आँखिसँ समतल भूमिक पानि जकाँ नोर टघरैत रहए।

चाह बनल। दुनू गोटे आमने-सामने बैसि चाह पीबए लगला। एक घोंट कऽ चाह पीब दुनू गोटे दुनू गोटेक मुँह दिस देखैत। मुदा कियो किछु बजथि नै। जेना दुनूक हृदैक भीतर विर्ड़ो उठैत रहनि। दुइए घोंट चाह पीलनि, बाँकी सभ सरा कऽ पानि भऽ गेलनि। तही काल बुचाइ पहुँचल। अबिते बुचाइ दुनू हाथ जोड़ि, दुनू गोटेकेँ प्रणाम कऽ बैसल। बुचाइकेँ देखिते मुकुन्द मनकेँ थीर करैत पत्नीकेँ कहलखिन-

> ''भरि दिनक थकान देहकेँ खण्ड-खण्ड तोड़ैए। मन केनादन करैए। कनी एटैचीसँ एकटा बोतल नेने आउ। जाबे पीब नै ताबे कोनो बाते ने कएल हएत।''

पतिक बात सुनि पत्नी एटैचीसँ एकटा हजार लिटरक ब्राण्डीक बोतल आ दूटा गिलास निकालि कऽ आनि आगूमे रखि देलकनि। तीनू गोटे- मुकुन्द, राधा आ बुचाइ- त्रिकोण जकाँ तीनू दिससँ बैसल। बीचमे मोड़ुआ टेबुल लोहाक। टेबुलपर गिलास बोतल। बोतलक मुन्ना खोलि मुकुन्द दुनू गिलासमे ब्राण्डी देलखिन। एक गिलास अपनो लऽ एक गिलास बुचाइ दिस बढ़ौलनि। ब्राण्डी देखि बुचाइक मन तँ चटपटाए लगल मुदा अनभुआर लोक संग पीबैक परहेज करैत बाजल-

> ''काका जी, ई सभ हम नै पीबै छी। गाममे हमरा केतए ई

चीज भेटत। गरीब-गुरबा लोक छी, जँ कहियो मनो होइए तँ एक दम चीलममे लगा लइ छी। नै तँ पीसुआ भाँगक एकटा गोली चढ़ा दइ छिऐ।''

जिद्द करैत मुकुन्द कहलखिन-

''ई तँ फलक रस छिऐ। कोनो की मोहुआ दारू आकि पलोथिन छिऐ जे अपकार करतह।''

मुकुन्दक मनमे रहनि जे शराब पीआ बुचाइसँ सभ बात उगलबा लेब। जाबे गामक तहक बात नै बुझबै ताबे किछु करब कठिन हएत। दुनू गोटे एक-एक गिलास पीलनि। गिलास रखि मुकुन्द सिगरेटक डिब्बा आ सलाइ निकालि, एकटा अपनो हाथमे लेलनि आ एकटा बुचाइओकेँ देलखिन। दुनू गोटे सिगरेट पीबए लगला। सिगरेटक धुआँ मुहसँ फेकैत मुकुन्द कहलखिन-

''बुचाइ, हम तँ आब बुढ़हा गेलौं, तूँ सभ नौजवान छह। तोरे सभपर ने गामसँ लऽ कऽ देश तकक दारोमदार छै। शहरमे रहैत-रहैत मन अकछा गेल। साले भरि नोकरीओ अछि। तँए चाहै छी जे जल्दी नोकरी समाप्त हुअए जे गाम आबि अपन सर-समाजक बीच रहब। मुदा गाममे तँ अपना किछु अछि नै। लऽ दऽ कऽ थोड़े घराड़ी अछि। जेकरा नपा कऽ घर बनबए चाहै छी। तइमे तूँ कनी मदति कऽ दाए।''

बुचाइ-

''हमरा बुते जे हएत से जरूर कऽ देब। अहाँ तँ अपने तेत्तै कमा कऽ टलिया नेने छी जे अनकर कोन जरूरत पड़त?''

मुकुन्द-

''तूँ तँ जनिते छहक जे सभ दिन नीक एयर कंडीशन घरमे रहै छी, नीक गाड़ीमे चढ़ै छी, नीक लोकक बीच आमोद-प्रमोद करै छी, से केना हएत?

बुचाइ-

“अहाँ की कोनो खेती-पथारी करब आकि माल-जाल पोसब, जे तइले खेत-पथार चाही। लऽ दऽ कऽ रहैक घर चाही। से तँ घराड़ी अछिए।

मुकुन्द-

“कहलह तँ ठीके, मुदा रहैले तँ घर बनाबए पड़त। बिजली गाममे नै छै तइले जेनरेटर बैसबए पड़त, पानिक टंकी नै छै तइले कल संग-संग मोटर सेहो लगबए पड़त। गाड़ी रखैले घर आ साफ करैले सेहो जगहक जरूरत हएत। पैखाना नहाइले सेहो घर चाही, घरक आगूमे दसो धूरक फुलवाड़ी, बैसैले चबुतरा सेहो चाही। चारू भर छहरदेवाली बनबए पड़त। सभले तँ जमीने चाही।”

बुचाइ-

“हँ, से तँ चाहबे करी। मुदा हमरा की कहए चाहै छी?

मुकुन्द-

“तोरा यएह कहै छिअ जे अपना अढ़ाइए कट्ठा घराड़ी अछि तइमे सभ किछु केना हएत? कहुना कऽ दसो धूर बढ़बैक गर लगाबह।”

मुकुन्दक बात सुनि बुचाइक मनमे हँसी उठल। हँसीकेँ दबैत बाजल-

“देखियौ काका, पान-दस धूर जमीन अमीनक हाथमे रहै छै, मुदा ओ तँ तखने हएत जहन पंचो आ अमीनो पक्षमे रहत।”

मुकुन्द-

“तहीले ने तोरा बजेलियऽ। हमरा तँ केकरोसँ जान-पहिचान नै अछि। मुदा तोरा तँ सभसँ छह, तँए, तूँ हमरा अप्पन बूझि मदति करह।”

मोने-मन बुचाइ सोचलक जे ई पनहाएल गाए जकाँ छथि तँए

सेरिया कऽ हिनका सिखबैक अछि, चपाड़ा दैत बाजल-

''देखियौ काका, गामक लोक गरीब अछि, ओ जे पक्ष लेत से ओहिना किए लेत? गौआँक लिए जेहने अहाँ तेहने श्रीकान्तकाका। तहन तँ कियो जे नेत घटौत से बिनु मीठ खेने किए घटौत?''

मुकुन्द-

''तइले हमहूँ तैयारे छी। जेना जे तूँ कहबह से हम देबह।''

बुचाइ-

''अच्छा हम भाँज-भूज लगबैले जाइ छी। मुदा काल्हि खन श्रीकान्तकाका सेहो कहने रहथि। ओना हम हुनका कहि देने रहियनि जे अमानतक दिन हमहूँ रहब। तँए थोड़े दिक्कत हमरा जरूर अछि। मुदा तैयो दिन-देखार तँ हम अहाँक भेँट नै करब, साँझमे जरूर करब। जेना जे हेतै से सभ बात अहाँकेँ कहैत रहब आ अहूँ ओइ हिसाबसँ अपन गर अँटबैत रहब। ओना गाममे अखनि सरूप संग बेसी लोक छै, तँए अहाँकेँ ओकरासँ भेँट करा दइ छी। ओ जँ तैयार भऽ जाएत तँ कियो ओकरा रोकि नै सकतै।''

''बड़बढ़ियाँ।''

कहि मुकुन्द बैगसँ दस हजार रूपैआ निकालि बुचाइकेँ दऽ देलखिन।

रूपैआ गनि बुचाइ बाजल-

''ऐसँ की हएत? हम ने गामक पेंच-पाँच बुझै छिऐ। काजो तँ उकड़ूए अछि।''

''एते ताबे राखह। जेना-जेना काज आगू बढ़ैत जाएत तेना-तेना कहैत जइहऽ।''

''बड़बढ़ियाँ।''

कहि बुचाइ प्रणाम कऽ विदा भेल।

मोने-मन मुकुन्द सोचए लगला जे भलहिं श्रीकान्तो इंजीनियरे छथि मुदा जेते पाइ हम कमेलौं तेते हुनकर नन्नो ने देखने हेतनि। भऽ जाए पाइएक भिड़ंत। मोने-मन सोचबो करथि आ खुशीओ होथि।

मुकुन्द ऐठामसँ निकलला पछाति रस्तामे बुचाइ विचारए लगल, आरौ बहिं, आइ धरि एहेन-एहेन बुढ़बा चोट्टा नै देखने छेलौं। जिनगी भरि पाइए होंसतैत रहल मुदा सबुर नै भेलै। अच्छा, ऐ बेर दुनू सिखता। जइ गामक लोक आइ धरि सहि-मरि अपन बाप-दादाक गाम आ घराड़ी धेने रहल समाजक बेर-बिपतिमे संगे प्रेमसँ रहल ओइ गाममे जँ एहेन-एहेन चोट्टा आबि कऽ रहत तँ कए दिन गामकें सुख-चैनसँ रहए देत। सभकेँ टीकमे टीक ओझरा नाश करत की नै?''

दोसर दिन, सबेरे सात बजे बुचाइ सरूप ऐठाम पहुँचल। दुनूकेँ बच्चेसँ दोस्ती, तँए धियो-पुता भेलोपर दुनूक बीच रउए-रउ चलैत। सरूपकेँ दरबज्जापर नै देखि बुचाइ हाक पाड़ैए लगल-

''दोस छँ रौ, रौ दोस।''

अँगनाक दछिनबरिया ओसारपर बैसि सरूप दारूक बोतलक मुन्ना खोलैत रहए। बुचाइक अवाज सुनि, जवाब देलकै-

''दोस रौ, आ-आ। अँगने आ।''

घरक कोनचर लग अबिते बुचाइ सरूपक घरवालीकेँ देखि बाजल-

''दोस रौ, दोसतीनीक थुथुन बड़ लटकल देखै छियौ। रतुका झगड़ा अखनि तक फड़िएलौहेँ नै रौ। हम तँ रतुका झगड़ा रातिएमे उठा-पटक कऽ फड़िया लइ छी आ तूँ अखनि तक रखनइ छँ।''

बुचाइक बात सुनि सरूप-

''धुर-बूड़ि, सभ दिन एक्के रंग रहि गेलैं। कहियो तोरा बजैक ठेकान नै हेतौ।''

कहि पत्नीकेँ कहलक-

“एकटा गिलास नेने आउ?”

एकटा गिलास आनि पत्नी सरूपक आगूमे रखलक। दुनू गोटे एक-एक गिलास दारू पीलक। बोतलकेँ डोला कऽ देखि सरूप फेर दुनू गिलासमे ढारलक। तैबीच बुचाइ बाजल-

“एक गिलास दोसतीनीओकेँ दहुन?”

बुचाइक बात सुनि सरूपक पत्नी कला बाजलि-

“हम नै गाएक गोत पीबै छी।”

बुचाइ-

“कनी पी कऽ देखियौ जे केहेन ताउ चढ़ैए।”

सरूप-

“भोरे-भोर दोस किम्हर एलेँ?”

जेबीसँ पाँच हजार रूपैआक गड्डी निकालि बुचाइ सरूपक आगूमे रखैत बाजल-

> “ले, ई तोहर हिस्सा छियौ। गाममे दूटा मोकिर फँसलौहेँ। तँए सेरिया कऽ दुनूकेँ सिखबैक छौ। एकटाकेँ हम संग देबै आ दोसरकेँ तूँ दही। जहिना धिया-पुता दूटा मुसरीकेँ नांगड़ि पकड़ि लड़बैए तहिना दुनू गोटे दुनूकेँ लड़ा।”

सरूपक आगूमे रूपैआ देखि कलाक मुहसँ हँसी निकलल। हँसी देखि बुचाइ बाजल-

> “एकटा बात बुझै छिऐ दोसतीनी, लछमी दुइएटा होइए। एकटा घरवाली आ दोसर रूपैआ। दोस, तोहर भाग बड़ जोरगर छौ। किएक तँ दुनू तोरा लगेमे छौ।”

बुचाइक बात सुनि कला पाछू दिस मुँह घुमा लेलक। कलाकेँ पाछू मुहेँ घुरल देखि बुचाइ कहलक-

> “मुँह घुमौने नै हएत दोसतीनी। अहीमे सँ रूपैआ लिअ आ

दोकानसँ अंडा नेने आउ। भुजल चूड़ा आ अंडाक कोफ्ता खुआउ।''

एकटा पचसटकही लऽ कला अंडा आनए दोकान विदा भेल। खाली अँगना देखि बुचाइ सरूपकेँ फुसफुसाइत कहलक-

''दोस, दूटा जुएलहा चोर गाम एलौहेँ। दुनू जेहने 'चोर' तेहने 'लोभी'। दुनू अपन-अपन घराड़ी नपौत। दुनूकेँ अढ़ाइ-अढ़ाइ कट्ठा जमीन छै। जे खतिआनी छिऐ। किएक तँ दुनू एक्के वंशक छी। एक पुरखियाह अछि तँए दोसर-तेसर नै छै। दुनू चाहैए जे हमरा तीन कट्ठा हुअए तँ हमरा तीन कट्ठा हुअए। दुनूकेँ पाइक गरमी छै, तँए एक-दोसरकेँ निच्चाँ देखबै चाहैए। गामक लोक तँ दुनूक नजरिमे बोन झाँखुर छी। से थोड़े हुअए देबै। पाइओ खा जेबै आ सुपत-सुपत बँटबरो करा देबै।''

कनीकाल गुम्म रहि सरूप बाजल-

''आँइ रौ दोस, अपने सभ कोन नीक लोक छँ रौ। भरि दिन झूठ-फूस बजै छी, ताड़ी-दारू पीबै छी, तहन नीक केना भेलौं रौ।''

बुचाइ-

''धूर बूड़ि, तोरा निशाँ चढ़ि गेलौ, तँए नै बुझै छीही। तोहीं कह जे गाममे कोनो जातिक लोक किए ने हुअए मुदा जहन मरैए तँ कठिआरी जाइ छिऐ की नै? गरीबसँ गरीब लोक किए ने हुअए, कियो बिनु कफने जरौल गेल हेन? अपना हाथमे जँ पाइ नहियोँ रहल तँ दू-चारि गोटेसँ मांगि-चांगि पूरा दइ छिऐ। तेसर सालक गप मन छौ की नै। देखने रही किने जे मखनाक गाए बाढ़िमे भँसल जाइत रहै तँ भरि छाती पानिमे सँ पकड़ि अनलौं। मोतिया बेटीक बिआह कोन पेंचपर करा देलिऐ से बिसरि गेलही। खंजनमा-डोमक घरमे जे आगि लगल रहै तँ देखने रही की नै जे अपन घैलची परक घैल लऽ कऽ सभसँ पहिने आगि मिझबैले गेल रहिऐ। हमरा देखलक तहन पाछूसँ सभ गेल।

जइकँ चलैत माए केते दिन तक गरियबैत रहल जे तहूँ छुबा गेलँ आ घैलो छुबा गेल। आँइ रौ, गारिओ-फज्झति सुनि कऽ जे सेवा करै छी उ धरम नै भेल रौ।''

मुड़ी डोलबैत सरूप-

''हँ, से तँ ठीके कहै छँ।''

बुचाइ-

''हम श्रीकान्तकक्काक पछ लऽ कऽ रहब आ तूँ मुकुन्दकाकाकँ संग दहुन। जहिना इलेक्शनमे परचार करैक, ऑफिस चलबैक, चाह-पानक खर्च, लाउडस्पीकर आ सवारीक खर्च, बूथपर दसटा कार्यकर्ता रखैक खर्च, एजेंटक खर्च, नेता सबहक सुआगत लेल मेहराओ बनबैक खर्च नेतासँ लइ छिऐ तहिना अखनिसँ जाबे तक नापी हेतै ताबे तकक खरचा दुनू गोटेसँ दुनू गोटे लेब। हेतै तँ उचिते मुदा ठकसँ ठकब कोनो पाप थोड़े छी।''

सरूप-

''केना-केना पाइ लेबही से तँ प्लानिंग कऽ लेमे किने?''

बुचाइ-

''घबड़ाइ छँए किए, इलेक्शनोसँ बेसी लेबै। अमीनक घूस, पंचक घूस, चौक-चौराहाक चाह-पान, गाँजा-भाँग, ताड़ी-दारूक, लठैतक, केते कहबौ। जेना-जेना काज अबैत जेत्तै तेना-तेना टनैत जेबै। अखनि जे आएल हेन ओ सगुन छी। साँझमे जहन खूब अन्हार तेसरि साँझ भऽ जेत्तै तहन चलिहेँ। तोरा-दुनू गोटेकँ मुँह-मिलानी करा देबौ। चौकपर दूटा चाहक दोकान छेबे करै, एकटा पर साँझ-भिनसर तूँ बैसिहेँ आ एकटा पर हम बैसब। तूँ मुकुन्दजी दिससँ बजिहेँ जे हुनका तीन कट्ठा घराड़ी छन्हि आ दोसरपर हम बैसि बाजब। मुदा एकटा बात मन रखिहेँ जे जहन श्रीकान्तकाका चौकपर आबथि, तहन अपने दिससँ चाह-पान खुआ, हुनके बात बजिहेँ आ जहन मुकुन्दकाका औता

तँ हमहूँ बाजब। जइसँ हुनका सभकेँ हेतनि जे सौंसे गौआँ हमरे दिस अछि। अखनि तँ गौआँ सभकेँ चाहे-पान, गाँजा, ताड़ी पइर लगतै मुदा नापी दिन पुड़ी-जिलेबी जलखै आ मासु-भात भोजन करा देबै।''

सरूप-

''बड़बढ़ियाँ प्लानिंग छौ।''

बुचाइ-

''हम श्रीकान्तकाका दिससँ खुशीलाल अमीनकेँ ठीक केलौं हेन, तूँ मुकुन्दकाका दिससँ किसुनदेव अमीनकेँ ठीक करिहेँ। दुनू अमीन तँ दुनू पार्टीक हएत किने मुदा मध्यस्त अमीन तँ सेहो चाही। तइले रामचन्द्र भायकेँ पकड़ि लेब। तहिना गामक लोक तँ दुनू दिससँ बँटाएल रहत किने मुदा एक्कोटा तँ तेहल्ला पंच चाही। तइले गुरुकाकाकेँ पकड़ि लेब। जखने गुरुकाका पंच आ रामचन्द्र भाय अमीन रहता तखने एक्को तिल जमीन एम्हर-ओम्हर थोड़े हएत।''

दोसर दिन दुनू गोटे -बुचाइओ आ सरूपो- गुरुकाका लग पहुँचल। गुरुकाका दलानेपर रहथि। दुनू गोटे प्रणाम कऽ बैसल। दुनू गोटेकेँ देखि गुरुकाका पुछलखिन-

''की बात छिऐ हौ बुचाइ? दुनू भजारकेँ संगे देखै छिअ?''

बुचाइ-

''अहीं लग तँ एलौहेँ काका। श्रीकान्तोकाका आ मुकुन्दोकाका घराड़ी नपौता। तहीमे अपनो रहबै।''

गुरुकाका-

''की करता ओ सभ घराड़ी नपा कऽ। केहेन बढ़ियाँ तँ धिया-पुता सभ खेलाइए।''

सरूप-

“रिटायर केला पछाति गामेमे रहता। नोकरीओ लगिचाएले छन्हि। तँए अखने नपा कऽ घरमे हाथ लगौता।”

गुरुकाका-

“सुनै छी जे दुनू गोटे शहरेमे घर बनौने छथि, तहन गाममे बना कऽ की करता। हुनका सभकेँ गाममे थोड़े बास हेतनि। जिनगी भरि तँ बड़का-बड़का होटल देखलखिन, नीक रोडपर नीक सवारीमे चललथि, दामी-दामी वेश्यालय देखलनि, से सभ गाममे थोड़े भेटतनि। अनेरे गाममे आबि कऽ किए थाल-कादोमे चलता आ मच्छर कटौता।”

गुरुक्काक बात सुनि लपकि कऽ बुचाइ बाजए लगल-

“से नै बुझलिऐ काका, दुनू गोटे भारी चोट खा कऽ चोटाएल छथि। तँए गाम दिस झुकला।”

“से की?”

अकचकाइत गुरुकाका पुछलकनि।
बुचाइ कहए लगलनि-

“तेसर सालक घटना छिऐ। श्रीकान्तक्काक पत्नी ड्राइवरकेँ संग केने बजार गेली। बजारसँ समान कीनि जहन घुमली तँ दोसर गाड़ी सेहो पछुअबैत रहनि। जहन फाँक-पाँतरमे गाड़ी पहुँचलनि तँ पछिला गाड़ी आगू आबि रोकि देलकनि। गाड़ीसँ चारि गोटे उतरि हिनका गाड़ीमे बैसि ड्राइवरकेँ दोसर रस्तासँ गाड़ी बढ़बैले कहलक। वेचारा की करैत। बढ़ल। थोड़े दूर गेलापर गाड़ी रोकि, काकीकेँ उतारि ड्राइवरकेँ कहलकै, मालिककेँ जा कऽ कहियनु जे पाँच लाख रूपैआ नेने आबथि आ पत्नीकेँ लऽ जाथि। दू घंटाक समए दइ छिअ।”

ड्राइवर विदा भेल। एम्हर काकीकेँ चारि-पाँच ठूसी मुँहमे लगा देलकनि। जइसँ अगिला चारिटा दाँतो टूटि गेलनि। ठोह फाड़ि कऽ कानए लगली। कनिते काल मोबाइल दऽ कहलकनि जे पतिकेँ कहियनु

जे जल्दी रूपैआ लऽ कऽ आउ नै तँ हम नै बँचब। ताबे ड्राइवरो पहुँच कऽ कहलकनि। अपना हाथमे दुइए लाख रूपैआ छेलनि, जे हालक आमदनी रहनि बाँकी रूपैआ सभ बैंकमे रहनि। वएह दुनू लाख रूपैआ लऽ कऽ गेला आ पएर-दाढ़ी पकड़ि कऽ पत्नीकेँ छोड़ा अनलनि।''

बुचाइक बात सुनि ठहाका मारि हँसि गुरुकाका-

''मुकुन्द किए औता?''

मुस्की दैत बुचाइ-

''हुनकर तँ आरो अजीव बात छन्हि। एक दिन एकटा ठीकेदारक पार्टी चललै। जेते बड़का-बड़का हाकिम आ ठीकेदार सभ छल, सभ रहए। मुकुन्द अपन पुरना गाड़ी छोड़ि नवका गाड़ी, जे बेटाकेँ सासुरमे देने रहनि, लऽ कऽ गेला। जहन पार्टीसँ घूमि कऽ एला तँ पुतोहु कहलकनि- पुतोहुक गाड़ीपर चढ़ैत केहेन लागल?''

ऐ बातक चोट हुनका खूब लगलनि। बेटा-पुतोहुसँ मोह टूटि गेलनि। तँए गाममे रहता।

बुचाइक बात सुनि गुरुकाका गुम्म भऽ गेला। कनीकाल गुम्म रहि, मोने-मन विचारि कहलखिन-

''गाम तँ गामे छी। शुद्ध मिथिला। भारत। जे स्वर्गोसँ नीक अछि। मुदा सभ गामक अपन-अपन चरित्र आ प्रतिष्ठा छै। जे चरित्र आ प्रतिष्ठा गामक कर्मठ, तिआगी लोकनि बनौने छथि, अपन कठिन मेहनति आ कर्तव्यसँ सजौने छथि। ओकरा जीवित राखब तँ अखुनके लोकक कान्हपर भार अछि किने? नोकरीक जिनगीमे किछु कियो केलनि तइसँ समाजकेँ कोन मतलब। अपना लेल केलनि। समाजक एक अंग होइक नाते हुनको सबहक कान्हपर किछु भार छेलनि जे अखनि धरि नै कऽ सकला। मुदा तैयो जँ समाजमे आबि, समाज रूपी फुलवाड़ीमे फूल लगबए चाहता तँ बढ़ियाँ बात। से तँ लक्षणसँ नै बूझि पड़ैए। समाजमे रहैले समाजक चरित्रक अनुकूल अपन चरित्र बनौता, तखने ने समाजमे अँटाबेश हेतनि। ई तँ नै जे गदहा

गेल स्वर्ग तँ छान-पगहा लगले गेलै।''

गुरुक्काक बात सुनि बुचाइओ आ सरूपो पुछलकनि-

''काका, गामक विषएमे हम सभ किछु ने बुझै छी, से कनी बुझा दिअ?''

गुरुकाका-

''अखनि काजक बेर अछि तँए बहुत बात तँ नै कहि सकबह, मुदा जहन बुझैक जिज्ञासा छह तँ दूटा जरूर कहबह। देखहक, गामक पढ़ल-लिखल वा बिनु पढ़ल-लिखल लोक, पेट भरै दुआरे नोकरी करैले बाहर जाइ छथि, नीक बात। मुदा गामकेँ सोलहन्नी नै छोड़ि दथि। अखनि देखै छी जे अमेरिका, इंग्लैडसँ लोक तीन दिनमे गाम आबि सकै छथि। तँए सालमे कम-सँ-कम एक्को बेर, नै तँ हुनको गाम छियनि, केतेको बेर आबि सकै छथि। जइसँ गामक लोक आ खेत-पथार संग सम्बन्ध बनल रहतनि। मुदा से नै कऽ गामकेँ सोलहन्नी छोड़ि, अनतइ घर बना रहए लगै छथि। जे गामक दुर्भाग्य छी। जेकर फल होइए गामक ज्ञान निर्यात भऽ जाइए। जइसँ सूतल गाम सुतले रहि जाइए। संगे गामक बेवहार, कला-संस्कृति सभ टूटि जाइए। रिटायर केला पछाति वा जिनगीक अंतिम अवस्थामे, जँ कियो गाम आबि रहए चाहता तँ हुनका गाम केहेन लगतनि। डेग-डेगपर टक्कर आ बात-बातमे विवाद हेबे करतनि। दोसर बात सुनह, अपना गाममे वैदिकजी भेल छथि। जिनके पोता शुभकान्त छियनि। वेदक प्रकाण्ड विद्वान वैदिक जी। नाओं तँ छेलनि गंगाधर मुदा वैदिकजी नाओंसँ विख्यात भेला। अपनो राजमे आ आनो-आनो राजमे जहन पंडितक बीच शास्त्रार्थ होइ तँ हुनकर जवाब देनिहार कियो ने ठहरैत। अनेको तगमा आ प्रशस्ति पत्र भेटलनि। अखनो परोपट्टाक लोक हुनके नाओंपर अपना गामक नाओं वैदिक जीक गाम बुझैए। हुनके चलौल अपना गामक पानि छी। पहिने पानिक छुआछूत अपनो गाममे छल, मुदा ओ सभकेँ बैसार करि कऽ बुझा देलखिन जे दुनियाँमे

जेते मनुख अछि, सभ मनुख छी, तँए मनुख-मनुखक बीच छुआछूत नै हेबाक चाही। थोपड़ी बजा सभ हुनकर विचारक समर्थन कऽ देलक। ओइ दिनसँ पानिक छुआछूत गामसँ मेटा गेल तहिना दोसर भेल जोगिनदर। भिखारीदासक पक्का चेला। अजीब कला हुनकोमे छेलनि। जहिना नचैमे अगिया-बेताल, तहिना गीत गबैमे। जे पार्ट लऽ कऽ स्टेजपर अबैत, धऽ कऽ झहरा दैत। एहेन बिपटा अखनि धरि कोनो नाचमे नै देखलिऐहैँ। ओकरो परसादे गाममे भिखारीदासक नाच केतेको बेर भेल। जहन भिखारीदासक पार्टी छपरासँ पूब मुहेँ असाम, बंगाल, नेपाल विदा होइ तँ अपने गाममे रूकै। खाली खेनाइ आ इजोतक खर्च गौआँक होइ। तहिना जब तीन-चारि मासमे घुमै तँ फेर अँटकै। तहिना भेल महावीर। वेचारा बड़ गरीब छल। नोकरी करैले कलकत्ता गेल। मुदा नोकरी नै कऽ रिक्शा चलबए लगल। अजीब संस्कार ओकरोमे छेलै। रिक्शो चलबै आ गीतो-कविता बनबै। पहिने तँ लिखल-पढ़ल नै होइ। मुदा अ-आसँ सीखब शुरू केलक। किछुए दिन पछाति लिखबो आ पढ़बो सीखि लेलक। रिक्शापर जहन चलै तँ अपन बनौल गीत गाबए। एक दिन एकटा साहित्य प्रेमी रिक्शापर चढ़ल रहथि आ महावीर रिक्शो चलबै आ गीतो गाबै। उतरै काल कवि पूछि देलखिन। सभ बात महावीर कहलकनि। ओ एकटा कवि गोष्ठीमे आमंत्रित कऽ देलखिन। ओइ गोष्ठीमे पहुँच महावीर तीनटा कविता आ दूटा गीत गौलक। तइ दिनसँ कवि गोष्ठीमे आमंत्रित हुअ लगल। बंगाल सरकार दस हजारक पुरस्कार आ प्रशस्तिपत्रसँ सम्मानित केलकनि। तहिना भेल कारी खलीफा। जेकरा इलाकाक लोक खलीफा मानैत। बड़का-बड़का दंगलमे पहुँच ओ आन-आन जिलाक केतेको खलीफाकेँ पटकलक। ओकरा चलैत गाममे कियो केकरो बहु-बेटीकेँ खराब नजरिसँ नै देखैत। एक बेर एकटा घटना जमीनदारक सिपाही संग घटलै। एक सए लाठी सिपाहीकेँ समाजक बीचमे मारलकै। तही दिनसँ जमीनदार दू बीघा खेत ओहिना दऽ देलकै। एहेन-एहेन पंडित,

> कलाकारक बनौल गाम छी, तेकरा हम सभ अपना जीबैत केना दुइर कऽ देबै। आइ जँ गाम दुइर हएत तँ अगिला पीढ़ी केकरा गारि पढ़तै। तँए जँ दुनू गोटे मनुख बनि गाममे रहए चाहता तँ बड़बढ़ियाँ, नै तँ गाममे रहने कियो समाज तँ नै बनि जाइत।''

अमानत भेल। कोनो बेसी झमेल रहबे नै करए। पाँच कट्ठा कऽ दू भाग केनाइ। बँटवारा करैत रामचन्द्र अमीन कहलखिन-

> ''जिनका संदेह हुअए ओ चाहे कड़ीसँ वा फीतासँ वा लग्गीसँ आकि डेगसँ भजारि लिअ।''

OOO

भैयारी

मैट्रिक परीक्षा दऽ दीनानाथ आगू पढ़ैक आशसँ, संगीओ-साथी आ शिक्षको ऐठाम जा-जा विचार-विमर्श करैत रहए। बिनु पढ़ल-लिखल परिवारक रहने, कौलेजक पढ़ाइक तौर-तरीका नै बुझैत। ओना ओ हाइ स्कूलमे थर्ड करैत मुदा क्लासमे सभसँ नीक विद्यार्थी। सभ विषए नीक जकाँ परीक्षामे लिखने, तँए फेल करैक चिन्ता मनमे एक्को मिसिआ रहबे ने करैए।

मुरूख रहितो माए-बाप बेटाकेँ पढ़बैमे जी-जान अरोपने। ओना घरक दशा नीक नै मुदा पढ़बैक लीलसा दुनूक हृदैमे कूट-कूट कऽ भरल। जहन दीनानाथ मैट्रिक परीक्षा दइले दरभंगा सेन्टर जाइक तैयारी करए लगल, तहन माए अपन नाकक छक, जे डेढ़ आना माने छह पाइ भरि रहए, बेचि कऽ देलकै। अगर जौं माए-बापक मन बेटा-बेटीकेँ पढ़बैक रहत आ थोड़बो मेहनतिसँ ओ पढ़त तँ लाख समस्योक बावजूद ओ पढ़बे करत। तहीमे सँ एक दीनानाथो।

काल्हि एगरबजिया गाड़ीसँ परीक्षा दिअए जाएत तँए आइए साँझमे पिता-रामखेलौन पत्नी सुमित्राकेँ कहलक-

> "काल्हि एगारह बजे बौआ गाड़ी पकड़त तँए अखने केकरोसँ आध सेर दूध आनि कऽ पौड़ि दियौ। दहीक जतरा नीक होइ छै।"

माएओ मनमे जँचलै। आध सेर दूध पौड़ैक विचार माए केलक आ मोने-मन बरहम बाबाकेँ कबुला केलक जे अहाँ हमरा बेटाकेँ पास करा देब तँ कुमारि भोजन कराएब। संगे हाँइ-हाँइ कऽ चिकनी माटि लोढ़ीसँ फोड़ि अछींनजल पानिमे सानि, दियारी बना, साफ पुरना कपड़ाक टेमी बना, दियारीमे करूतेल दऽ साँझ दिअए बरहम स्थान विदा भेल। रस्तामे मोने-मन बरहम बाबाकेँ कहैत जे हे बरहम बाबा कहुना हमरा बेटाकेँ पास कऽ दिहक। तोरेपर असरा अछि।

स्कूलमे सभसँ नीक विद्यार्थी दीनानाथ, मुदा नीक रहितो क्लासमे थर्ड करैत। एकर कारण रहए जे हाइ स्कूल सेक्रेट्रीक मातहत चलैत।

जइसँ स्कूलक सर्वेसर्वा सेक्रेट्रीए। इज्जतो दुआरे आ फीसोक चलैत स्कूलमे फस्ट सेक्रेट्रीएक लगुआ-भगुआ करैत। जँ कहीं सेक्रेट्रीक समांग नै रहैत तहन हेडमास्टरक समांग फस्ट करैत। मुदा ऐ बैचमे सेक्रेट्रीओक समांग आ हेडमास्टरोक समांग। तँए सेक्रेट्रीक समांग फस्ट करैत आ हेडमास्टरक समांग सेकेण्ड आ दीनानाथ थर्ड। जे फस्ट करैत ओकरा पूरा फीस आ सेकेण्ड-थर्डकेँ अदहा फीस माफ होइ छेलै। ओना आन शिक्षक सभकेँ ऐ बातक क्षोभ होन्हि मुदा कैयो की सकै छला। किएक तँ आन शिक्षक सबहक गति कोठीक नोकरसँ नीक नै रहनि, सात घंटी पढ़ौनाइ आ डेढ़ सए रूपैआ महिना पौनाइ मात्र रहनि। मुदा तैयो ओ सभ इमानदारीसँ काज करैत रहथि। असिसमेंटक चलनि सेहो रहए। बीस नम्बरक हिसाबसँ सभ विषयक असिसमेंट होइत। खाली समाजे-अध्ययनक हिसाब अलग रहए। असिसमेंटक नम्बर परीक्षाक नम्बरमे जोड़ि कऽ रिजल्ट होइत। जे असिसमेंटक नम्बर सेक्रेट्री आ हेडमास्टरक हाथक खेल रहए। परीक्षाक तीन मासक पछाति रिजल्ट निकलै छल।

मास दिन परीक्षाक बित गेल। दू मास रिजल्ट निकलैमे बाँकी। माघक अंतिम समए। सरस्वती पूजा पाँच दिन पहिने भऽ गेल। शीतलहरी चलैत रहए। जइसँ मिथिलांचल साइबेरिया बनि गेल छल। दिन-राति दुनू एक्के रंग। बर्खाक बून्न जकाँ ओस टप-टप खसैत। सुरूजक दर्शन दू माससँ कहियो ने भेल। दिन-राति कखनि होइ ओ लोक अन्हारेसँ बुझैत। सभ अपन-अपन जान बँचबै पाछू लागल।

खेती-पथारीक काज सबहक बन्न। रब्बी-राइ ठंढ़सँ कठुआएल जइसँ बढ़बे ने करैत। झोली ओढ़ोला पछातिओ माल-जाल थर-थर कँपैत। जहिना महिंसक बच्चा तहिना गाएक बच्चा कठुआ-कठुआ मरैत। बकरी लेल तँ फौतीए आबि गेल। गाछ सभ परहक घोरन सुड्डाह भऽ गेल। चिड़ै-चुनमुनीसँ लऽ कऽ नढ़िया, खिखिर, साँप इत्यादि मरि-मरि जेतए-तेतए महकैत।

माघक पूर्णिमासँ दू दिन पहिने रामखेलौनकेँ लकबा लपकि लेलक। सौंसे देहक अदहा भाग सुन्न भऽ गेलै। क्रियाहीन। बिठुओ कटलापर किछु नै बुझैत। चिड़ै लोल सन टेढ़ मुँह भऽ गेलै। ओना उमेरो कोनो बेसी नै, चालीस बर्खसँ भीतरे छेलै। रतुका समए। शीतलहरीक चलैत

अन्हारो बेसी। ओना इजोरिया पख रहए, मुदा भादबक अन्हार जकाँ अन्हार छल। पिताक दशा देखि दीनानाथक मन घबड़ा गेलै। तहिना माएओक। मुदा तैयो मनकेँ थीर करैत दीनानाथ डाक्टर ऐठाम विदा भेल। किछु दूर गेलापर पएर तेना कठुआ गेलै जे चलिए ने होइ। मनमे भेलै, बाबूसँ पहिने अपने मरि जाएब। घरोपर घूमि कऽ नै गेल हएत। बीच पाँतरमे दीनानाथ असगरे। दुनू आँखिसँ दहो-बहो नोर खसए लगलै। मनमे एलै, आब की करब? मुदा फेर मनमे एलै, हाथसँ ठेहुन रगड़लापर पएर हल्लुक हएत। सएह करए लगल। जाँघ हल्लुक भेलै। हल्लुक होइते डाक्टर ऐठाम चलल।

डाक्टर ऐठाम पहुँचिते रोगीक भीड़ देखि दीनानाथ फेर घबड़ा गेल। मनमे एलै, सौंसे दुनियाँक रोगी एतै जमा भऽ गेल अछि। असगरे डाक्टर साहैब छथि आ दूटा कम्पाउण्डर छन्हि, केना सभकेँ देखथिन। मुदा रोगो एकरंगाहे, तँए बेसी मत्था-पच्ची डाक्टरकेँ करै नै पड़नि। धाँइ-धाँइ इलाज करैत जाथि। मुदा मेले जकाँ रोगी एबो करए। थोड़े काल ठाढ़ भऽ कऽ देखि दीनानाथ सिरसिराइते डाक्टर लगमे जा बाजल-

> ''डाक्टर साहैब, कनी हमरा एठीम चलिऔ। हमर बाबू एते बिमार भऽ गेल छथि जे अबै जोकर नै छथिन।''

दीनानाथक बात सुनि डाक्टर कहलखिन-

> ''बौआ, ऐठाम तँ देखिते छी, केना एते रोगी छोड़ि कऽ जाएब? जे ऐठाम पहुँच गेल अछि ओकरा छोड़ि कऽ जाएब उचित हएत।''
>
> ''समए रहैत जौं हमरा ऐठाम नै जाएब तँ बाबू मरि जेता।''
>
> ''अहाँ घबड़ाउ नै तत्खनात दूटा गोटी दइ छी। हुनका खुआ देबनि आ एतै नेने अबियनु।''

दीनानाथक मनमे पिताक मृत्यु नाचए लगल। मन मसोसि दुनू गोलि लऽ विदा भेल। मुदा घर दिस बढ़ैक डेगे ने उठए। एक तँ ठंढ़, दोसर मनमे निराशा आ तेसर शीतलहरीसँ रातिओ अन्हार। मुदा तैयो जिबठ बान्हि कऽ विदा भेल। कच्ची रस्ता रहने जेतए-तेतए मेगर आ

तैपर सँ केतेठाम टुटलो। जइसँ कए बेर खसबो कएल मुदा तैयो हूबा कऽ उठि-उठि आगू बढ़िते रहल। घरपर अबिते दुनू गोटी पिताकेँ खुऔलक। तैबीच माए गोइठाक घूर कऽ सौंसे देह सेदैत। अपना खाट नै। एते रातिमे केकरा कहतै। मुदा पितियौत भाइक खाट मन पड़लै? मन पड़िते पितियौत भाय लग जा कहलक-

"भैया, खाटो दिअ आ संगे चलबो करू। एहेन समैमे अनका केकरा कहबै। के जाएत?"

दीनानाथक बात सुनिते पितियौत भाय औगता कऽ उठि खाट नेनइ बढ़ल। खाटपर एक पाँज पुआर बिछा सलगी बिछौलक। दुनू पाइसमे बरहा बान्हि खाट तैयार केलक। खाट तैयार होइते दुनू गोटे रामखेलौनकेँ उठा ओइपर सुतौलक। बड़हामे बाँस घोंसिआ दुनू गोटे कान्हपर उठा विदा भेल। पाछू-पाछू सुमित्रो विदा भेली। थोड़े काल तँ दीनानाथ किछु नै बुझलक मुदा थोड़े काल पछाति कन्हा भकभकाए लगलै। कान्ह परक छाल ओदरि गेलै। जइसँ बाँस कान्हपर रखले ने होइ। लगले-लगले कान्ह बदलए लगल। मुदा जिबट बान्हि डाक्टर ऐठाम पहुँच गेल।

डाक्टर ऐठाम पहुँचिते डाक्टर साहैब देखलखिन। बिमारी देखारे रहए। धाँए-धाँए पाँचटा इन्जेक्शन लगा देलखिन। इन्जेक्शन लगा डाक्टर दीनानाथकेँ कहलखिन-

"हिनका खाटेपर रहए दियनु। बेसी चिन्ता नै करू। तहन तँ नम्हर बिमारी पकड़नइ छन्हि। किछु दिन तँ लगबे करत।"

रामखेलौनकेँ नीन आबि गेलै। खाटक निच्चाँमे तीनू गोटे - दीनानाथ, पितियौत भाय आ सुमित्रा- बैसल। सुमित्रा मोने-मन सोचैत, समए-साल तेहने खराब भऽ गेल अछि जे बेटा-पुतोहु केकरा देखै छै। जाबे पति जीबैत रहै छै ताबे स्त्रीगण गिरथाइन बनल रहैए। पुरुखकेँ परोछ होइते दुनियाँ अन्हार भऽ जाइ छै। बिनु पुरुखक स्त्रीगण ओहने भऽ जाइए जेहने सुखाएल गाछ। कहलो गेल छै जे साँइक राज अप्पन राज, बेटा-पुतोहुक राज मुँहतक्की। मुदा की करब? अपन कोन साध। ई तँ भगवानेक डाँग मारल छियनि। हे माए भगवती, कहुना हिनका नीक

बना दियनु। जँ से नै करबनि तँ पहिने हमरे लऽ चलू।

दोसर दिन डाक्टर रामखेलौनकेँ देखि कहलखिन-

> "हिनका घरेपर लऽ जैयनु। ऐठामसँ नीक सेवा घरपर हेतनि। बिमारी आब आगू मुहेँ नै बढ़तनि मुदा इलाज बेसी दिन करबै पड़त। हमर कम्पाउण्डर सभ दिन जा-जा सुइओ देतनि आ देखबो करतनि। तैबीच जँ कोनो उपद्रव बूझि पड़त तँ अपनो आबि कऽ कहब।"

कहि दूटा सुइआ फेर डाक्टर साहैब लगा देलखिन। दबाइक पुरजा बना देलखिन। एकटा सुइआ आ तीन रंगक गोटी सभ दिन दइले कहि देलखिन। गप-सप्प सभ कियो करिते छला आकि तैबीच रामखेलौन पत्नीकेँ कहलक-

> "किछु खाइक मन होइए।"

खाइक नाओं सुनिते दीनानाथक मुहसँ हँसी निकलल। लगले दोकानसँ दूध आ बिस्कुट आनि कऽ देलक। दूध-बिस्कुट खुआ दुनू भाँइ खाट उठा विदा भेल।

घरपर अबिते टोल-परोससँ लऽ कऽ गाम भरिक लोक देखए आबए लगल। शीतलहरी रहबे करै मुदा तैयो लोक अबैक ढबाहि लगल। दू घंटा धरि लोक अबैत रहल। दीनानाथ माएकेँ कहलक-

> "माए, बड़ भूख लागल अछि। पहिने भानस कर। भुखे पेटमे बगहा लगैए।"

दीनानाथक बात सुनि माए भानस करए विदा भेल। भूख तँ अपनो लागल मुदा कहती केकरा। बेर-बिपतिमे तँ ऐ ना होइते छै। दीनानाथक बात पितियाइन सेहो सुनलक। वेचारी पितियाइन सोचलक जे सभ भुखाएल अछि। बेरो उनैह गेलै। आब जे भानस करए लगत तँ साँझे पड़ि जेत्तै। तहूमे सभ भुखे लहालोट होइए। से नै तँ घरमे जे चूड़ा अछि से दऽ दइ छिऐ जइसँ तत्खनात तँ काज चलि जेत्तै। सएह केलक।

दीनानाथ आ सुमित्रा चूड़ा भिजा कऽ खाइते छल आकि माम -

सुमित्राक भाए- आएल। भाएकेँ देखिते सुमित्राक आँखिमे नोर आबि गेल। बिनु पएर धोनइ मकशूदन बहनोइ लग पहुँच देखए लगला। बहनोइक दशा देखि दुनू आँखिसँ दहो-बहो नोर खसए लगलनि। नोर पोछि वेचारे सोचए लगला जे हम तँ सियान छी तहूमे पुरुख छी। जँ हमहीं कानबै तँ बहिन आ भागिनक दशा की हेतै। धैर्य बान्हि बहिनकेँ कहला-

> "दाइ, ई दुनियाँ अहिना चलै छै। रोग-बिआदि सह-सह करैए। जइठीम गर लागि जाइ छै पकड़ि लइए। अपना सभ सेबे करबनि किने मुदा...। रूपैआ लेल दबाइ- दारूमे कोताही नै होन्हि। आइ भोरे पता लागल। पता लगिते दौगल एलौं। अपने गाए बिआएल अछि। काल्हि गाएओ आ जहाँ धरि हएत तहाँ धरि रूपैओ आनि कऽ दऽ देबौ। अखनि हम जाइ छी, काल्हि आएब।"

चारि दिन पछाति रामखेलौनक मुँह सोझ भऽ गेल। उठि कऽ ठाढ़ सेहो हुअ लगल। मुदा एकटा पएर नीक नै भेलै। कनी-कनी झखाइते डेग उठबैत।

सभ दिन भोरे आबि कऽ कम्पाउण्डर सूइओ दैत आ चला-चला देखबो करैत।

दू मास पछाति दीनानाथक रिजल्ट निकलल। फस्ट डिबीजन भेलै। नम्बरो नीक। छह सए तीन नम्बर। हेडमास्टरक समांगकेँ सेहो फस्ट डिबीजन भेलै। मुदा नम्बर कम। पाँच सए पैंतालिस आएल छेलै। सेक्रेट्रीक समांगकेँ सेकेण्ड डिवीजन भेलै। मुदा नम्बर बढ़ियाँ, पाँच सए चौंतीस। आगू पढ़ैक आशा दीनानाथ तोड़ि लेलक। किएक तँ घरमे कियो दोसर करताइत नै। एक तँ पिताक बिमारी, दोसर घरक खर्च जुटौनाइ, तैपर सँ छोट भाए अठमामे पढ़ैत। मुदा दीनानाथकेँ अपन पढ़ाइ छोड़ैक ओते दुख नै भेलै जेते परिवार चलौनाइसँ लऽ कऽ पिताक सेवा करैक सुख भेलै। जे बेटा बाप-माएक सेवा नै करत से बेटे की? अपन पढ़ैक आश दीनानाथ छोट भाए कुसुमलालपर केन्द्रित कऽ देलक।

अधिक काल मकशूदन बहिने ऐठाम रहए लगला। गाएओक सेवा आ खेतो-पथारक काज सम्हारए लगला। अपना ऐठामसँ अन्नो-पानि आनि-आनि दिअ लगलखिन। अपना घर जकाँ भार उठा लेलक। अपन दशा

देखि रामखेलौन मकशूदनकेँ कहलखिन-

"हम तँ अबाहे भऽ गेलौं। जाबे दाना-पानी लिखल अछि ताबे जीबै छी। मरैक कोनो ठीक नै अछि तँए अपना जीबैत केतौ दीनानाथक बिआह करा दियौ। बेटा-बेटीक बिआह-दुरागमन कराएब तँ माए-बापक धरम छिऐ। मुदा हम तँ कोनो काजक नै रहलौं। कम-सँ-कम देखियो तँ लेबै।"

बहनोइक बात सुनि मकशूदन गुम्म भऽ गेला। मोने-मन सोचए लगला जे समए-साल तेहने खराब भऽ गेल अछि जे नीक मनुख घरमे आनब कठिन भऽ गेल अछि। सभ खेल रूपैआपर चलि रहल अछि। मनुखक कोनो मोले ने रहलै। एहेन स्थितिमे नीक कन्याँ केना भेटत? तहन एकटा उपए जरूर अछि जे रूपैआ-पैसाक भाँजमे नै पड़ि, गुनगर कन्याँक भाँज लगाबी। जइसँ घरक कल्याण हेतै। पाहुन जहन हमरा भार देलनि तँ हम दान-दहेज नै आनि नीक कन्याँ आनि देबनि। बहनोइकेँ कहलखिन-

"पाहुन, रूपैआक पाछू लोक भँसिआइए। अगर अहाँ हमरा भार दइ छी तँ हम रूपैआक भाँजमे नै पड़ि नीक मनुख आनि कऽ देब। से की विचार?"

मकशूदनक बात सुनि बहिन धाँइ दऽ बाजलि-

"भैया, रूपैआ मनुखक हाथक मोलि छिऐ। मुदा मनुख तपस्यासँ बनैए। तँए हमरा नीक पुतोहु हुअए। रूपैआक भुख हमरा नै अछि।"

बहिनक बात सुनि मकशूदनक मनमे सबुर भेलनि। बजला-

"बहिन, जहिना तोरा सबहक पुतोहु तहिना तँ हमरो हएत किने। के एहेन अभागल हएत जे अपन घर अवाद होइत नै देखत?"

अपन पढ़ाइक आशा तोड़ि दीनानाथ मोने-मन अपना पएरपर ठाढ़ होइक
बाट ताकए लगल। संकल्प केलक जे जहिना नीक रिजल्ट पबैले

विद्यार्थी जी-तोड़ मेहनति करैए तहिना हमहूँ परिवारकेँ उठबैले जमि कऽ मेहनति करब।

बिऔहती लड़कीक भाँज मकशूदन लगबए लगला। मुदा मनमे एलनि जे हम तँ वर पक्ष छी तँए लड़की ऐठाम पहिने केना जाएब? कनीकाल गुनधुन करैत सोचलनि जे बेटा-बेटीक बिआह परिवारक पैघ काज होइए तँए एहेन-एहेन छोट-छीन बेवहारपर नजरि नहियेँ देब उचित हएत। तहूमे तँ हम लड़िकाक बाप नै माम छी। पाहुन जहन भार देलनि तँ नहियोँ करब उचित नै हएत।

अपना गामक बगलेक गाममे लड़कीक भाँज मकशूदनकेँ लगलनि। परिवार तँ साधारणे मुदा लड़की काजुल। काजमे तपल। किएक तँ माए हरिदम ओकरा अपने संग रखि खेत-पथारक, घर-आँगनक काजसँ लऽ कऽ अरिपन लिखब, दुआरिमे पूरनि, फूलक गाछ, कदमक फुलाएल गाछ संग-संग पावनि-तिहारमे गीत गौनाइ सभ सिखबैत। बड़द किनैक बहानासँ मकशूदन भेजा विदा भेला। पहिने दू-चारि गोटेक ऐठाम पहुँच बड़दक दाम करैत कन्यागतक दुआरपर पहुँचला। कन्यागत दुआरपर नै। मुदा लड़की बाल्टीमे पानि भरि अँगना अबैत। लड़कीकेँ देखि मकशूदन पुछलखिन-

"बुच्ची, घरवारी केतए छथि?"

बाल्टी रखि सुशीला बाजलि-

"बाड़ीमे मिरचाइ कमाइ छथिन। अपने चौकीपर बैसियौ। बजौने अबै छियनि।"

बाल्टी अँगनामे रखि सुशीला बाड़ीसँ पिताकेँ बजौने आएल। पड़ोसी होइ दुआरे दुनू गोटे दुनू गोटेकेँ चेहरासँ जानेपहिचानक मुदा मुहाँ-मुही गप नै भेने अनचिन्हार। कन्यागत पूछलखिन-

"किनकासँ काज अछि?"

मुस्कीआइत मकशूदन-

"अखनि दुइए गोटे छी, तँए मनक बात कहै छी। हमरो घर बीरपुरे छी। हमरा भागिन अछि। काल्हि खन पता चलल जे

अहाँकेँ बिऔहती बच्चिया अछि तँए ओइठाम कुटमैती कऽ लिअ।''

कुटुमैतीक नाओं सुनि कन्यागत गुम्म भऽ गेला। कनीकाल गुम्म रहि कहलखिन-

''हम गिरहस्त छी। सेहो नम्हर नै छोट। ऐठीमक गिरहस्तक की हालति अछि से अहाँ जनिते छी। तँए ऐ बेर बेटीक बिआह नै सम्हरत।''

कन्यागतक सूखल मुँह देखि मकशूदन कहलखिन-

''मनमे जे दहेजक भूत पकड़ने अछि से हटा लिअ। अहाँकेँ जहिना सम्हरत तहिना बिआह निमाहि लेब।''

मकशूदनक विचार सुनि कन्यागतक मुँह हरिआए लगलनि। दरबज्जेपर सँ बेटीकेँ हाक पाड़ि अढ़ेलखिन-

''बुच्ची, शर्बत बनौने आबह?''

बड़का लोटामे शर्बत आ गिलास नेने सुशीला दरबज्जापर आबि चौकीपर रखए लागलि। तैबीच पिता बजला-

''बुच्ची, ईहो कियो आन नै छथि। पड़ोसीए छिआह। बीरपुरे रहै छथि। दहुन शर्बत।''

दुनू गोटे शर्बत पीलनि। शर्बत पीब पिता कहलखिन-

''बुच्ची, चाहो बनौने आबह।''

सुशीला चाह बनबए गेल। दरबज्जापर दुनू गोटे गप-सप्प करए लगला।

मकशूदन-

''जेहने अहाँक कन्याँ छथि तेहने हमर भागिन। अजीब जोड़ा विधाता बना कऽ पठौने छथि। काल्हिए अहूँ लड़िकाकेँ देखि लिऔ। संयोग नीक अछि तँए शुभ काजमे बिलम नै करू।''

मकशूदनक विचारसँ जेते उत्साहित कन्यागतकेँ हेबाक चाहियनि

तेते नै होथि। किएक तँ मनमे घुरियाइत रहनि, कहुना छी तँ बेटीक बिआह छी। फुसलेने काज थोड़े चलत। मुदा कन्याक माए दलानक भीतक भुरकी देने अढ़ेसँ गप्पो सुनथि आ दुनू गोटेकेँ देखबो करैत रहथिन। मोने-मन उत्साहितो होइत जे फँसल शिकार छोड़ब मुरूखपना छी। माए-बापक सराध आ बेटीक बिआहमे केकरा नै करजा होइ छै। जानिए कऽ तँ हम सभ गरीब छी। गरीबकेँ जनमसँ लऽ कऽ मरै धरि करजा रहिते छै। तइले एते सोचै विचारैक कोन काज। करजो हाथे बेटीक बिआह कइए लेब। फस्ट डिवीजनसँ मैट्रिक पास लड़िका अछि। एहेन पढ़ल-लिखल लड़िका थोड़े भेटत। कहबीओ छै जे पढ़ल-लिखल लोक जँ हरो जोतत तँ मुरूखसँ सोझ सिड़ौर हेतै। आइक जुगमे मुरूखो बड़क बाप पचास हजार रूपैआ गनबैए। खुशीसँ मनमे होइ जे छड़पि कऽ दरबज्जापर जा कहियनि जे अगर अहाँ आइए बिआह करए चाही तँ हम तैयार छी। मुदा स्त्रीगणक मर्यादा रोकि दैत। तँए वेचारी अढ़ेमे अहुरिया कटैत। मुदा पतिक मन बदलल। मकशूदनकेँ कहलकनि-

> ''देखू, हम भैयारीमे असगरे छी मुदा गृहिणी तँ छथि। हुनकासँ एक बेर पूछि लइ छियनि। किएक तँ हम घरक बाहरक काजक गार्जन छी ने, घरक भीतरी काजक गार्जन तँ वएह छथि। जँ कहीं बेटी बिआह दुआरे किछु ओरिया कऽ रखने होथि तँ कइए लेब।''

कन्यागत भोला उठि कऽ आँगन गेला। आँगन पहुँचिते पत्नी झपटि कऽ कहए लगलनि-

> ''दुआरपर उपकरि कऽ लड़िकाबला एलाहेँ तँए अहाँ अगधाइ छी। जहन लड़िकाक भाँजमे घुमैत-घुमैत तरबा खियाएत आ बेमाएसँ खूनक टगहार चलत तहन बुझबै। तीन-तीन साल बेटीबला घुमैए तहन जा कऽ केतौ गर लगै छै। जा कऽ कहि दियनु जे अखनि हमर हालत नीक नै अछि मुदा जँ अहाँ तैयार छी तँ हमहूँ तैयार छी। वर देखैक दिन कौल्हुके दऽ दियनु।

पत्नीक बातसँ उत्साहित भऽ भोला आबि कऽ बजला-

''पत्नीक विचार सोलहो आना छन्हि। मुदा कहबे केलौं जे अखनि

हमर हालत बढ़ियाँ नै अछि।''

मकशूदन-

''काल्हि अहाँ लड़िका देखि लिऔ। जँ पसिन्न हएत तँ जहिना कुटमैती करए चाहब तहिना कऽ लेब। असलमे हमरा लोकक जरूरत अछि, नै की रूपैआ-पैसाक।''

आठे दिनक दिनमे बिआह भऽ गेल। भोलाक बहिनो आ साउसो नीक जकाँ मदति केलकनि। अपना घरसँ खाली एकटा सोनाक सुक्की - नअटा चौवन्नीक छड़- भोलाकेँ निकललनि।''

पनरह दिनक पछाति दीनानाथ पुबरिया ओसारपर बैस, पितासँ छीपि कऽ माएकेँ कहलक-

''माए, घरक दशा जे अछि से तहूँ देखते छीही। जेना घर चलैए तेना केते दिन चलत। साले-साल खेत बिकाइए। जइसँ किछुए साल पछाति सभ सठि जाएत। छोड़ैबला काज एक्कोटा ने अछि। जहिना कुसुमलालक पढ़ैक खर्च, तहिना बाबूक दबाइ आ पथ्यक। मुदा आमदनी तँ कोनो दोसर अछि नै। लऽ दऽ कऽ खेती। सेहो डेढ़ बीघा। तहूमे, ने पानिक जोगार अपना अछि आ ने खेती करैक लूरि। एते दिन तँ बाबू कहुना-कहुना कऽ करै छला, आब तँ सेहो नै हएत। हमहूँ जँ केतौ नोकरी करए जाएब सेहो नै बनत, किएक तँ बाबूक देखभाल सेहो करैक अछि। तहन तँ एक्केटा उपए अछि जे घरेपर रहि आमदनीक कोनो काज ठाढ़ करी।''

बेटाक बात सुनि माए गुम्म भऽ गेली। जइ घरमे आमदनी कम रहत आ खर्चा बेसी हएत से घर केना चलत। एते बात मनमे अबिते माएक आँखिसँ दहो-बहो नोर खसए लगलनि। आँचरसँ नोर पोछि बाजलि-

''बौआ, हम तँ स्त्रीगणे छी। घर-अँगनामे रहैवाली। तूँ जँ बच्चो छह तँ पुरुखे छह। जहन भगवाने बेपाट भेल छथुन तहन तँ किछु करए पड़तह।''

दुनू गोटेक -माएओ आ बेटोक- मुँह निच्चाँ मुहेँ खसल छल। ने

बेटाक नजरि माए दिस उठैत आ ने माएक नजरि बेटा दिस। जहिना मरुभूमिमे पियासल लोकक दशा होइत, तहिना दुनूक दशा भेल छल। केबाड़ लग ठाढ़ सुशीला दुनूकेँ देखैत। जोरसँ कियो ऐ दुआरे नै बजैत जे रोगाएल पिता वा पति जँ सुनता तँ सोगसँ आरो दुख बढ़ि जेतनि। केबाड़ लगसँ घुसकि ओसारपर आबि सुशीला बाजलि-

> “माए चिन्ता केलासँ दुख थोड़े भगतनि। दुखकेँ भगबैले किछु उपए करए पड़तनि। छोटका बौआ बच्चे छथि, बाबू रोगाएले छथि मुदा अपना तीनू गोटे तँ खटैबला छी। खटलासँ सभ किछु होइ छै।”

सुशीलाक बात सुनि सासु बजली-

> “कनियाँ, कहलिऐ तँ बड़बढ़ियाँ मुदा ओहिना तँ पानि नै डेङाएब।”

सासुक बात सुनि पुतोहु बाजलि-

> “हमर एकटा पित्ती धानक कुट्टी करै छथि। जहिना अपन परिवार अछि तहूसँ लचड़ल हुनकर परिवार छेलनि। तैपर सँ चारि-चारिटा बेटीओ छेलनि। मुदा जइ दिनसँ धानक कुट्टी करए लगला तइ दिनसँ दिने-दुनियाँ घूमि गेलनि। चारू बेटीओक बिआह केलनि, बेटोकेँ पढ़ौलनि। ईंटाक घरो बनौलनि आ पाँच बीघा खेतो कीनि लेलनि। अखनि हुनकर हाथ पकड़ैबला गाममे कियो ने अछि।”

पत्नीक बात सुनि दीनानाथक भक्क खुजल। भक्क खुजिते दीनानाथ खुशीसँ उछलि अँगनामे कूदल। दरबज्जापर आबि कागत-कलम निकालि हिसाब जौड़ए लगल। डेढ़ सेर धानमे एक सेर चाउर होइए। ओना धानक बोरा अस्सीए किलोक होइए जहन कि चाउरक सए किलोक। चारि सए रूपैए बोरा धान बिकैए तँ पान सए रूपैए क्विन्टल भेल। एक क्विन्टल धानक सड़सठि किलो चाउर भेल। दू-चारि किलो खुद्दीओ हएत जेकर रोटी पका कऽ खाएब। एक किलो चाउरक दाम साढ़े दस रूपैआसँ एगारह रूपैआ होइत। ऐ हिसाबसँ एक क्विन्टल धानक चाउरक

लगधग सात सए रूपैआ भेल। पान सएक पूजीसँ सात सएक आमदनी भेल। तैपर सँ तीस किलो गुड़ो। जेकर दाम साठि रूपैआ भेल। खर्चमे खर्च खाली जारनि, कुटाइ आ गाड़ीक भाड़ा। बाँकी सभ मेहनतिक फल भेल। अगर जँ एक बोराक कुट्टी सभ दिनक हिसाबसँ करब तँ पाँच हजारक महिना आमदनी जरूर हएत।

हिसाब जोड़ैत-जोड़ैत दीनानाथक मनमे शंका उठल जे हिसाबेमे तँ ने गलती भऽ गेल। कागत-कलम छोड़ि उठि कऽ टहलए लगल। मोने-मन हिसाबो जोड़ैत। मनमे कखनो हिसाब सही बूझि पड़ैत तँ कखनो शंका होइत। आँगन जा पानि पीलक। दू-चारि बेर माथ हसोंथलक। फेर आबि कऽ हिसाब जोड़ए लगल। मुदा हिसाब ओहिना कऽ ओहिना होइ। मनमे बिसवास जगलै। जइसँ काजक प्रति आकर्षण सेहो भेलै। फेर आँगन जा माएकेँ पुछलक-

> ''एक बोरा धान उसनैमे केते समए लगतौ?''

माए बाजलि-

> ''एक बोरा धान तँ दसे टीन भेल। दू-चुल्हियापर पाँच खेप भेल आ चरि चुल्हियापर अढ़ाइए खेप भेल। एक्के घंटामे उसनि लेब।''

माएक बात सुनि दीनानाथ तँइ केलक जे हमहूँ यएह रोजगार करब। पूजी लेल पत्नीक सोना सुक्कीमे सँ पाँचटा निकालि आ सबा भरि बेचि, धान कीनि कुट्टी शुरू केलक। जइसँ परिवारमे खुशहाली आबि गेलै।

कुशुमलाल बी.ए. पास कऽ मधुबनी कोर्टमे किरानीक नोकरी शुरू केलक। कोर्टेक बड़ाबाबूक बेटीसँ बिआह सेहो केलक। मधुबनीएमे डेरा रखि दुनू परानी रहए लगल। तीन-चारि बर्ख तँ संयमित जीवन बितौलक। खाली वेतनेपर गुजर करैत। मुदा तेकर पछाति पाइ कमाइक लूरि सीखि लेलक। जइसँ खाइ-पीबै संग-संग औरो लूरि भऽ गेलै। घरोवाली पढ़ल-लिखल। जहिना कमाइ तहिना खर्च। शहरक हवामे उधियाए लगल। सिनेमा देखैक, शराब पीबैक, नीक-नीक वस्तु किनैक आदति बढ़ैत गेलै। एक दिन पत्नी कहलकै-

''गाममे जे खेत अछि से अनेरे किए छोड़ने छी। ओइसँ की लाभ होइए। ओकरा बेचि कऽ अहीठाम जमीन कीनि अपन घर बना लिअ।''

स्त्रीक बात कुसुमलालकेँ जँचल। रवि दिन छुट्टी रहने गाम आबि भाए दीनानाथकेँ कहलक-

''भैया, हम अपन हिस्सा खेत बेचि लेब। मधुबनीएमे दू कट्ठा खेत ठीक केलौं हेन। से कीनि ओत्तै घर बनाएब। भाड़ाक घरमे तेते भाड़ा लगैए जे एक्को पाइ बचबे ने करैए जे अहूँ सभकेँ देब।''

कुसुमलालक बात सुनि दीनानाथ कहलक-

''बौआ, अखनि बाबू-माए जीविते छथुन, तँए हम की कहबह? हुनके कहुन।''

दीनानाथक जवाब सुनि कुसुमलाल पिताकेँ कहलक। रोगाएल रामखेलौन खिसिआ कऽ कहलक-

''डेढ़ बीघा खेत छौ। दस कट्ठा हमरा दुनू परानीक भेल, दस कट्ठा दीनानाथक भेलै आ दस कट्ठा तोहर भेलौ। अपन हिस्सा बेचि कऽ लऽ जो।''

खेत किनै-बेचैक दलाल गामे-गाम रहिते अछि। कुसुमलाल जा कऽ एकटा दलालकेँ कहलक। पाँच हजार रूपैए कट्ठाक हिसाबसँ दलाल दाम लगा देलक। कुसुमलाल राजी भऽ गेल। मुदा बेना नै लेलक। तरे-तर दीनानाथो भाँज लगबैत। साँझू पहर जहन कुसुमलाल मधुबनी विदा भेल तहन दीनानाथ कहलकै-

''बौआ, जेते दाम तोरा आन कियो देतह तेते हमहीं देबह। बाप-दादाक अरजल सम्पति छी, आन कियो जे आबि कऽ घराड़ीपर भट्ठा रोपत से केहेन हएत?

मुदा दीनानाथक बात कुसुमलाल मानि गेल। पचास हजारमे जमीन लिखि देलक। मधुबनीएमे कुसुमलाल घर बना लेलक। अपना गामक

लोकसँ ओते सम्बन्ध नै रहलै जेते सासुरक लोकसँ। सासुरक दू-चारि गोटे सभ दिन अबिते-जाइत रहैत। आदरो-सत्कार नीक होइ छेलै।

बीस बर्ख पछाति दीनानाथक बेटा मेडिकल कम्पीटीशनमे कम्पीट केलक। बेटी आइ.एस.सी.मे पढ़िते। पढ़ैमे दुनू भाए-बहिन ऊपरा-ऊपरी। तँए परिवारक सभकेँ आश रहै जे बेटीओ मेडिकल कम्पीट करबे करत। माए-बापक सेवा आ बेटा-बेटीक पढ़ाइ देखि दुनू परानी दीनानाथक मन खुशीसँ गद-गद। परिवारोक दशा बदलि गेल। मुदा तैयो दीनानाथ धानक कुट्टी बन्न नै केलक। आरो बढ़ा लेलक। मनमे ईहो होइ जे धनकुटिया मील गड़ा ली मुदा समांग दुआरे नै गड़बैत। टाएरगाड़ी कीनि लेलक। जइसँ खेतीओ करए आ भड़ो कमाइत।

कुसुमलालकेँ सेहो दूटा बेटा। दुनू पब्लिक स्कूलमे पढ़ैत। जेठका अठमामे आ छोटका छठामे। मधुबनीएमे डेरा रहितो दुनू होस्टलेमे रहैत। तैपर सँ सभ विषयक ट्यूशन सेहो पढ़ैत। तँए नीक खर्च होइत।

शराब पीबैत-पीबैत कुसुमलालक लीभर गलि गेलै। किछु दिन मधुबनीएमे इलाज करौलक मुदा ठीक नै भेने दरभंगाक अस्पतालमे भर्ती भेल। चारि मास दरभंगोमे रहल मुदा ओतौ लीभर ठीक नै भेलै। तहन पटना गेल। पटनोमे ठीक नै भेलै, संगहि शरीर दिनानुदिन खसिते गेलै। अंतमे दिल्लीक एम्समे भर्ती भेल। ओत्तौ ठीक नै भेलै। शरीर एते कमजोर भऽ गेलै जे अपनेसँ उठिओ-बैस ने होइ। हारि-थाकि कऽ मधुबनीक डेरापर आबि गेल। मुदा एते दिनक बिमारीक बीच दीनानाथकेँ जानकारीओ ने देलक। सारे-सरहोजि संग घुमैत रहल।

ओछाइनपर पड़ल-पड़ल सौंसे देहमे धाव भऽ गेलै। ढाकीक-ढाकी माछी देहपर सोहरए लगलै। केतबो कपड़ा ओढ़बै तैयो माछी घूसि-घूसि असाइ दऽ दइ। दिन-राति दर्दसँ कुहरैत। हरिदम घरवालीक मन तामसे लह-लह करैत। गरिएबो करैत। दुनू बेटामे सँ एक्कोटा लगमे रहैले तैयार नै। जेठका बेटा कहै-

''पप्पा जी, महकता है।''

जहन कखनो लगमे अबैत तँ नाक मूनि कऽ अबैत। छोटका बेटा सेहो तहिना। हरिदम बजैत-

''पप्पा जी, अब भूत बनेगा। लगमे रहेंगे तो हमको भी पकड़

लेगा।''

जइ ऑफिसमे कुसुमलाल काज करैत ओइ ऑफिसक एकटा स्टाफ दीनानाथकेँ फोनसँ कहलक-

''कुसुमलाल अंतिम दिन गनि रहल छथि तँए आबि कऽ मुँह देखि लियनु।''

फोन सुनि दीनानाथ सन्न भऽ गेल। जेना दुनियाँक सभ किछु आँखिक सोझहासँ निपत्ता भऽ गेलै। सुन-मशान दुनियाँ लागए लगलै। मनमे एलै, कियो केकरो नै। दुनू आँखिसँ नोर टधरए लगलै। नोर पोछि सोचए लगल, कियो झुठे ने तँ फोन केलक। फेर मनमे एलै, एहेन समाचार झूठ किए हएत। अनेरे कियो पैसा खर्च कऽ फोन किए करत। एहेन अवस्थामे कुसुमलाल पहुँच गेल मुदा आइ धरि किछु कहबो ने केलक। खैर जे हउ, मुदा हमरो तँ किछु धरम अछि। अपना कर्तव्यसँ कियो मनुख ऐ दुनियाँमे जीबैए। अखनि तँ अबेर भऽ गेल। काल्हि भोरुके गाड़ीसँ मधुबनी जाएब। एते विचारि माएकेँ कहलक-

''माए, एक गोटे मधुबनीसँ फोन केने छेला जे कुसुमलाल बहुत दुखित छथि तँए आबि कऽ देखियनु।''

दीनानाथक मुँहक बात सुनिते माएक देहमे आगि लागि गेलनि। जरैत मोने बाजलि-

''कुसुमा हमर बेटा थोड़े छी जे मुँह देखबै? उ तँ ओही दिन मरि गेल जइ दिन हमरा दुनू परानीकेँ छोड़ि चलि गेल। जँ ऐ धरतीपर धरमक कोनो स्थान हेतै तँ ओइमे हमरो केतौ जगह भेटत। जँ कोनो शास्त्र-पुराणमे पतिव्रता स्त्रीक चर्चा हेतै तँ हमरो हएत। आइ बीस बरखसँ ऐ हाथ-पएरक बले बिमार पतिकेँ जीवित रखि अपन चूड़ी आ सिनुरक मान रखने छी।''

माएक बात सुनि दीनानाथ मोने-मन सोचलक जे कुसुमलाल अगर हमरा कमा कऽ नहियेँ देलक तँ हमर की बिगड़ल। माएओ-पिताक दर्शन भोरे-भोर होइते अछि, बालो-बच्चा आनंदेसँ अछि। तहन तँ एक-वंशक छी जा कऽ देखि लिऐ।

दोसर दिन भोरुके गाड़ीसँ मधुबनी पहुँच दीनानाथ कुसुमलालक डेरापर पहुँचल। बाहरेक कोठरीमे कुसुमलाल पड़ल छल। चद्दरिसँ सौंसे देह झाँपल रहै। मुँह उघारिते कुसुमलाल बाजल-

"भ-इ-अ-अ।"

कहि सदा-सदाक लेल आँखि मूनि लेलक।
दीनानाथ-

"बौआ कुसुम, बौआ... बौआ... बउआ।"

OOO

बहिन

“आब अधिक दिन माए नै खेपती। ओना उमेरो नब्बे बर्खक धतपत हेबे करतनि। तहूमे बर्ख पनरह-बीसेकसँ कहियो बोखार के कहए जे उकासीओ ने भेलनि। एक तँ ओहिना पाकल उमेर तैपर सँ देहक रोगो पछुआएल, तँए भरिसक ऐ बेर उठि कऽ ठाढ़ हेबाक कम भरोस। किएक तँ एक-ने-एक उपद्रव बढ़िते जाइ छन्हि। अन्नो-पानि अरुचिए जकाँ भेल जाइ छन्हि।”

भखरल स्वरमे राधेश्याम पत्नीकँ कहलखिन।
पतिक बात सुनि, कनीकाल गुम्म रहि, रागिनी बाजलि-

“केकरो, औरुदा तँ कियो नहियेँ दऽ सकैए। तहन तँ जाधरि जीबै छथि ताधरि हम-अहाँ सेबे करबनि किने?”

“हँ, से तँ सएह कऽ सकै छियनि। मुदा जिनगीक कठिन परीक्षाक घड़ी आबि गेल अछि। एते दिन जे केलौं, ओकर ओते महत नै जेते आबक अछि। किएक तँ कखनो पानि मंगती वा किछु कहती, तइमे जौं कनिको देरी हएत आ कियो सुनि लेत तँ अनेरे बाजत जे फल्लां माए पानि दुआरे किकिहारि कटैत रहै छथिन। मुदा बेटा-पुतोहु तेहेन छै घूमि कऽ एको बेर तकितो ने छै। केकरो मुँहमे ताला लगेबै? देखिते छिऐ जे गाममे केना लोक झूठ बाजि-बाजि झगड़ो लगबैए आ कलंको जोड़ै छै। तँए चैबीसो घंटा केकरो-ने-केकरो लगमे रहए पड़त। जँ से नै करब तँ अंतिम समैमे कलंकक मोटरी कपारपर लेब।”

“कहलौं तँ ठीके, मुदा बच्चा सबहक हिसाबे कोन, तहन तँ दू परानी बचलौं। बेरा-बेरी दुनू गोटे रहब। अन्तुका काज अहूँ छोड़ि दियौ। किएक तँ अँगनेक काज बढ़ि गेल। बहिनो सभकँ जनतब दइए दियनु।”

“अपनो मनमे सएह अछि। जँ तीनू बहिन आबि जाएत तँ काजो बँटा कऽ हल्लुक भऽ जाएत। ओना अँगनासँ दुआरि धरि काजो

बढ़बे करत। जखने सर-सम्बन्धी, दोस्त-महिम बुझता तँ जिज्ञासा करए एबे करता। जहन दरबज्जापर औता तँ सुआगत बात करैए पड़त"।

मुड़ी डोलबैत रागिनी बजली-

"हँ, से तँ हेबे करत।"

"अखनि निचेन छी आ काजो करैएक अछि। तँए अखने तीनू बहिनो आ ममोकेँ जनतब दइए दइ छियनि। आन कुटुमकेँ अखनि जनतब देब जरूरी नै छै।"

कहि मोबाइलमे मामाक नम्बर लगौलनि। रिंग भेलै।

"हेलो, मामा। हम राधेश्याम।"

"हँ, राधेश्याम। की हाल-चाल?"

"माए, बड़ जोर दुखित पड़ि गेली।"

"अखनि हम एकटा जरूरी काजमे बँझल छी। साँझ धरि आबि रहल छीअ।"

मोबाइल बन्न कऽ राधेश्याम जेठ बहिन गौरीक नम्बर लगौलक।

"हेलो, बहिन। माए दुखित पड़ि गेलखुन।"

"अखनि हम स्कूलेमे छी आ अपनौं कौलेजेमे छथि। छुट्टीक दरखास दइए दइ छिऐ। साँझ धरि पहुँच जाएब।"

मोबाइल बन्न कऽ छोटकी बहिनक नम्बर लगौलक।

"सुनीता। हम राधेश्याम।"

"भैया, माए नीके अछि किने?"

"अखनि की नीक आ कि अधला। तीन दिनसँ ओछाइन धेने छथुन। तँए किछु कहब कठिन।"

"हम अखने छुट्टीक दरखास दऽ आबि रहल छी।"

"बड़बढ़ियाँ।"

कहि मझिली बहिन रीताक नम्बर लगौलक।

"हेलो, रीता। हम राधेश्याम। माए, बड़ जोर दुखित छथुन।"

"भैया, हम तँ अपने तेते फिरीसान छी जे खाइओक छुट्टी ने भेटैए। काल्हिएसँ दुनू बच्चाक प्रतियोगिता परीक्षा सेहो छिऐ"

बिनु स्विच ऑफ केनइ राधेश्याम मोबाइल रखि अकास दिस देखए लगला। ठोर पटपटबैत बड़बड़ाए लगला-

"बच्चाक परीक्षा..., मृत्यु सज्जापर माए...! केकरा प्राथमिकता देल जाए? एक दिस, जे बच्चा अखनि धरि जिनगीमे पएरो ने रखलक, सौंसे जिनगी पड़ल छै। दोसर दिस कष्टमय जिनगीमे पड़ल वृद्ध माए। खैर, सभकेँ अपन-अपन जिनगी होइ छै आ अपना-अपना ढंगसँ सभ जीबए चाहैए। हम चारि भाए बहिन छी तँए ने दोसरपर ओंगठल छी। मुदा जे असगरे अछि, से केना माए-बापक पार-घाट लगबैए। किछु सोचिते छल कि नव उत्साह मनमे जगलनि। नव उत्साह जागिते नजरि पाछू मुहेँ ससरलनि। चारू भाए-बहिनमे माए सभसँ बेसी ओकरे मानैत रहलखिन आ ओकर सेवो सभसँ बेसी भेलै। कारणो छेलै जे बच्चेसँ ओ रोगा गेल छलि। मुदा आश्चर्यक बात तँ ई जे जेकरा माए सभसँ बेसी सेवा केलनि उहए सभसँ पहिने बिसरि रहलि छन्हि।"

गोसाँइ डुमैत-डुमैत मामो आ दुनू बहिनो-बहनोइ पहुँच गेलखिन।

अबिते डाक्टर सुधीर -छोट बहनोइ- आला लगा सासुकेँ देखि कहलखिन-

"भैया, माए बँचती नै। मुदा मरबो दस दिनक बादे करती। तँए अखनि ओते घबड़ेबाक बात नै अछि। अखनि हम जाइ छी, मुदा बहिन डाक्टर सुनिता रहती। ओना हमहूँ दू-दिन तीन-दिनपर अबैत रहब।"

डाक्टर सुधीरक बात सुनि सभकेँ क्षणिक संतोख भेलनि। मामा

कहलखिन-

> “भागिन, ओना हम केकरो छींटा-कस्सी नै करै छियनि मुदा अपन अनुभवक हिसाबे कहै छिअ जे भरि दिन तँ स्त्रीगण सभ मुस्तैज रहथुन मुदा रातिमे नै। ओना हमरो गाम बहु दूर नहियेँ अछि। अखनि तँ औगताएले चलि एलौं। तँए अखनि जाइ छी। काल्हिसँ साँझू पहरकँ एबह आ भोर कऽ चलि जेबह। भरि राति दुनू माम-भगिन गप-सप्प करैत ओगरि लेब।”

दुनू बहनोइओ आ मामो चलि गेलखिन।

> “आइ सातम दिन माएकँ अन्न छोड़ब भऽ गेलनि। दू-चारि चम्मच पानि आ दू-चारि चम्मच दूध, मात्र आधार रहि गेल छन्हि।” -आँगनसँ दरबज्जापर आबि रागिनी पतिकँ कहलखिन।

पत्नीक बात सुनि राधेश्याम मोने-मन सोचए लगला। मनमे उठलनि चारू भाए-बहिनक पारिवारिक जिनगी। केतेक आशसँ माए-पिता हमरा चारू भाए-बहिनकँ पोसि-पालि, पढ़ा-लिखा, बिआह-दुरागमन करा परिवार ठाढ़ कऽ देलनि। जहिना गौरी जेठ बहिन एम.ए. पास अछि। तहिना एम.ए. पास बहनोइओ छथि। हाइ स्कूलमे बहिन नोकरी करैए तँ कौलेजमे बहनोइ। परिवारक प्रतिष्ठा, समाजोमे बढ़बे केलनि जे कमलनि नै। तहिना छोटकीओ बहिन अछि। बहिनो डाक्टर आ बहनोइओ डाक्टर। तहिना तँ पिताजी मझिलीओ बहिनकँ केलनि। दुनू परानी इंजीनियर अछि। बम्बइमे दुनू गोटे नोकरी करैत अछि।

जहिना तीनू बहिन पढ़ल-लिखल अछि तहिना बहनोइओ छथि। अजीव नजरि पितोजीक छेलनि। मनुखक पारखी छला। तँए ने बहिनक बिआह समतुल्य बहनोइ संग केलनि। एक माए-बापक तीनू बेटी, पढ़ल-लिखल, एक परिवारमे पालल-पोसल गेली, मुदा तीनूक विचारमे एते अंतर केना अबि गेल। ऐ प्रश्नक जवाब राधेश्यामकँ बुझैमे एबे ने करनि जइसँ मन घोर-घोर होइत रहनि। एक दिस माएक अंतिम अवस्थापर नजरि जान्हि तँ दोसर दिस मझिली बहिनक बेवहारपर।

विचारक दुनियाँमे राधेश्याम औनाए लगला। प्रश्नक जवाब भेटबे ने करनि। अपन परिवारपर सँ नजरि हटा बहिन सबहक परिवार दिस

दौड़ौलनि।

गौरीक ससुर उमाकान्त हाइ स्कूलक शिक्षक रहथिन। अपने बी.ए. पास मुदा पत्नी साफे पढ़ल-लिखल नै। नाओं-गाओं लिखल नै अबनि। ओना पिता पंडित रहथिन। मुदा बेटीकेँ परिवार चलबैक लूरिकेँ बेसी महत देथिन। जइसँ कुशल गृहिणी तँ बनि जाएत, मुदा ने चिट्ठी-पुरजी पढ़ल होइ छै आ ने लिखल। ओना जरूरतो नै रहैए। किएक तँ ने पति-पत्नीक बीच चिट्ठी-पुरजीक जरूरत आ ने कुटुम-परिवार संग। मुदा दुनू परानी उमाकान्त आ सरिताक बीच असीम सिनेह। मास्टर साहैबकेँ अपन बाल-बच्चासँ लऽ कऽ विद्यालयक बच्चा सभकेँ पढ़बै-लिखबैक मात्र चिन्ता। जइ पाछू भरि दिन लगलो रहथि। जहन कि पत्नी सरिता परिवारक सभ काज सम्हारैत। अखनुका जकाँ लोकक जिनगीओ फल्लर नै, समटल रहए...।

गौरीक परिवारपर सँ नजरि हटा राधेश्याम छोटकी बहिन डाक्टर सुनिताक परिवारपर देलनि। जहिना बहिन डाक्टरी पढ़ने तहिना बहनोइओ। जोड़ो बढ़ियाँ। सुनिताक ससुर वैद्य रहथिन। जड़ी-बुटीक नीक जानकार। जहिना जड़ी-बुटीक जानकार तहिना रोगो चिन्हैक। जइसँ समाजमे प्रतिष्ठो नीक आ जिनगीओ नीक जकाँ चलनि। तँए अपन चिकित्साक वंशकेँ जीवित रखै दुआरे बेटाकेँ डाक्टरी पढ़ौलनि। पत्नीओ तेहने। अँगनाक काज सम्हारि, बाध-बोनसँ जड़ीओ-बुटी आनथि आ खलमे कुटबो करैत रहथिन। दबाइ वैद्यजी अपने बनाबथि किएक तँ मात्राक बोध गृहिणीकेँ नै रहनि...।

छोटकी बहिनक परिवारपर सँ नजरि हटा मझिली बहिनक परिवारपर देलनि। रीताक ससुर मलेटरीक इंजीनियरिंग विभागमे हेल्परक नोकरी करै छला। अपनै विचारसँ मलेटरीक बेटीसँ बिआहो -लभ-मैरिज- केने रहथिन। मलेटरीक नोकरी, तँए पाइओ आ रूआबो। हाथमे हरिदम हथियार तँए मनो सनकल। मुदा बेटा-बेटीकेँ नीक जकाँ पढ़ौलनि। जहिना रीता इंजीनियरिंग पढ़ने तहिना घरोबला। दुनू बम्बइक कारखानामे नोकरी करैत। कमाइओ नीक खरचो नीक, तहिना मनक उड़ानो बेसी...। एकाएक राधेश्यामक मनमे उठलनि जे आब तँ माएक अंतिमे समए छी तँए एक बेर रीताकेँ फेर फोन करि कऽ जनतब दऽ दिऐ।

मोबाइल उठा रीताक नम्बर लगौलनि। रिंग भेल-

"हेलो, हम राधेश्याम।"

"हेलो, भैया। अखनि हम स्टाफ सबहक संग काजमे बेस्त छी।"

रीताक जवाब सुनि राधेश्याम सन्न रहि गेला। रातिक दस बजैत। इजोरियाक सप्तमी अन्हार-इजोतक बीच घमासान लड़ाइ छिड़ल। किछु पहिने जइ चन्द्रमाक ज्योति अन्हारपर शासन करैत, वएह चन्द्रमा पछड़ि रहल छथि। तेज गतिसँ अन्हार आगू बढ़ि रहल अछि। तैबीच छोटकी बहिन डाक्टर सुनीता आँगनसँ आबि भाय राधेश्यामकेँ कहलकनि-

"भैया, हम तँ भगवान नै छी, मुदा माएक दशा जइ तेजीसँ बिगड़ि रहल छन्हि, तइसँ अनुमान करै छी जे काल्हि साँझ धरि पराण छूटि जेतनि।"

एक दिस माएक अंतिम दशा आ दोसर दिस रीताक विचारक बीच राधेश्यामक धैर्यक सीमा डगमग करए लगलनि। विचित्र स्थिति। जिनगीक तीनिबट्टीपर बौआए लगला। तीनिबट्टीक तीनू रस्ता तीन दिस जाइत। एक रस्ता देवमंदिर दिस जाइत तँ दोसर दानवक काल-कोठरी दिस। बीचक रस्तापर राधेश्याम ठाढ़। एकाएक निर्णए करैत राधेश्याम सुनिताकेँ कहलखिन-

"कनी गौरीओकेँ बजाबह।"

आँगन जा सुनिता गौरीकेँ बजौने आएल। दुनू बहिनक बीच राधेश्याम बजला-

"बहिन, जहिना हमर बहिन रीता तहिना तँ तोरो सबहक छिअ। तँए, तहूँ सभ एक बेर फोन लगा माएक जनतब दऽ दहक। हम निर्णए कऽ लेलौं जे जहिना ऐ दशामे माएकेँ रहनौं, ओकरा अपन धिया-पुतासँ अधिक नै सुझै छै तहिना हमहूँ ओकरा भरोसे नै जीबै छी। तँए जँ माएक जीवितमे नै औत तँ मुइला पछाति

नहो-केश कटबैक जनतब नै देबै। हमरा-ओकरा बीच ओतबे काल धरि सम्बन्ध अछि जेते काल माएक पराण बँचल छै। कहलो गेल छै 'भाए-बहिन महिंसक सींग, जखने जनमल तखने भीन।' मन तँ होइए जे भने ओ अखनि स्टाफ सबहक बीच अछि, तँए अखने सभ बात कहि दिऐ। मुदा कहनौं तँ किछु भेटत नै, तँए छोड़ि दइ छिऐ।''

बाजि राधेश्याम भनभनाए लगला-

''जहिना अकासमे उड़ैत चिड़ैकेँ वंश रहितो परिवार नै होइ छै तहिना जँ मनुखोक होइ तँ अनेरे भगवान किएक बुधि-विवेक दइ छथिन। किएक ने मनुखोकेँ चिड़ैइए-चुनमुनी आकि चरिटंगा जानवरेक जिनगी जीबए देलखिन?''

बजैत-बजैत राधेश्यामो आ दुनू बहिनोक करेज फाटए लगलनि। आँखिसँ नोर टघरए लगलनि। भाए-बहिनक टुटैत सम्बन्धसँ सभ अचंभित हुअ लगला। सबहक हृदैमे रीता नाचए लगलनि। बच्चासँ बिआह धरिक रीताक जिनगी सबहक आँखिमे सटि गेलनि। एक दिस रीता बम्बइक घोड़दौड़ जिनगीक प्रतियोगितामे आगू बढ़ए चाहै छलि तँ दोसर दिस देबालमे टांगल फोटो जकाँ सबहक हृदैमे चुहटि कऽ पकड़ने। जहिना बाँसक झोंझसँ बाँस काटि निकालैमे कड़चीक ओझरी लगैत तहिना धिया-पुताक ओझरीमे रीता पड़ल।

तीनू ननदि-भौजाइ माने गौरीया, सुनिता आ रागिनी, माए लग बैसि मोने-मन सोचए लगली। कियो-केकरो टोकैत नै। तीनू गुमसुम। खाली आँखि नाचि-नाचि एक-दोसरपर जाइत। मुदा मन श्वेतवाण रामेश्वरम् जकाँ। एक दिस जिनगी रूपी भूमि स्थल जकाँ विशाल भूभाग देखैत तँ दोसर दिस मृत्यु रूपी अथाह समुद्र। यएह छी जिनगी आ जिनगीक खेल। जइ पाछू पड़ि लोक आत्माकेँ बलि चढ़बैए। तैबीच माएक मुहसँ निकललनि-

''रीता...।''

रीताक नाओं सुनि तीनू गोरेक हृदैमे ऐहेन धक्का लगलनि जइसँ तीनू तिलमिला गेली।

रातिक एगारह बजैत। गामक सभ सूति रहल। इजोरिओ डुमैपर। झल-अन्हार। दलानक आगूमे, कुरसीपर बैसि राधेश्याम आँखि मूनि अपन वंशक सम्बन्धमे सोचैत रहथि। मनमे एलनि, आइ सप्तमीक चान डूमि रहल अछि, अन्हार पसरि रहल अछि, मुदा कि कल्हुका चान आइसँ कम ज्योतिक हएत? की अगिला ज्योति पछिला अन्हारक अनुभव नै करत? सभ दिनसँ अन्हार-इजोतक बीच संघर्ष होइत आएल अछि आ होइत रहत...। फेर मनमे उठलनि, आजुक राति हमरा लेल ओहेन राति अछि जे भरिसक माएक जिनगीक अंतिम राति हएत। जिनका संग हजारो राति बितल ओइपर विराम लागि रहल अछि...। विचारक दुनियाँमे राधेश्याम उगैत-डुमैत रहथि। तखने शबाना पोती संग पहुँचली। दलान-आँगनक बीच रस्तापर दुनू गोटे चुपचाप ठाढ़ि। दुनू डराएल। राधेश्याम आँखि मुनने तँए नै देखैत। परोपट्टामे हिन्दु-मुसलमानक बीच तना-तनी। जइ डरसँ शबाना दिनमे नै आबि अन्हारमे आएल। किएक तँ सरोजनीक सिनेह घीच कऽ लऽ अनलकै। रेहना शबानाकेँ कहलक-

"दादी, ऐठीम किए ठाढ़ छीही, अँगना चल ने?"

रेहनाक अवाज सुनिते राधेश्याम आँखि तकलनि तँ दुनू गोटेकेँ ठाढ़ देखलनि। पुछलखिन-

"के?"

शबाना बाजलि-

"बेटा, राधे।"

"मौसी।"

"हँ।"

एत्तीराति कऽ किएक एलँहें?"

"बौआ, से तूँ नै बुझै छहक जे गाम-गाममे केहेन आगि लागि रहल छै। पाँचम दिन सुनलौं जे बहिन बड़ जोर अस्सक छथि। जखने सुनलौं तखने मन भेल जे जाइ। मुदा की करितौं? मन छटपटाइ छेलए। बेटाकेँ पुछलिऐ तँ कहलक जे

से तूँ नै देखै छीही रस्ता-बाटमे इज्जत-आवरूक लुट्टीस भऽ रहल छै। मार-काट भऽ रहल छै। एहेन स्थितिमे केना जेमए। मुदा मन नै मानलक। जिनगी भरि दुनू बहिन संगे रहलौं, आइ वेचारी मरि रहल अछि तँ मुहोँ नै देखब? जी-जाँति पोतीकेँ संग केने एलौं।''

कुरसीपर सँ उठि राधेश्याम शबानाक बाँहि पकड़ि आँगन दिस बढ़ैत बहिनकेँ कहलखिन-

''मौसी एलखुन। पएर धोइले पानि दहुन।''

राधेश्यामक बात सुनि दुनू बहिनो आ पत्नी-रागिनीओ घरसँ निकलि आँगन एली। गौरी बाजलि-

''मौसी, शबाना मौसी!''

''हँ।''

शबानो आ रेहनो पएर धोइ सोझे बहिन सरोजनी लग पहुँच दुनू पएर पकड़ि कानए लगली। कनैत देखि सरोजनी पुछलखिन-

''कनै किए छँ। हम कि कोनो आइए मरब? एत्ती रातिकेँ किए एलैहें?''

शबाना कहलकनि-

''बहिन, रस्ता-पेरा बन्न अछि। दू बर्खसँ भौरिओ-बट्टा बन्न भऽ गेल। जहनसँ अहाँ दऽ सुनलौं, तखनेसँ मनमे उड़ी-बीड़ी लागि गेल तँए दिन-देखार नै आबि चोरा कऽ अखनि ऐलौं हेन।''

सरोजनी बहुत कठीनसँ बजली-

''धिया-पुता नीके छौ कीने?''

शबाना कहलकनि-

''शरीरसँ तँ सब नीके अछि, मुदा कारबार बन्न भऽ गेल छै।''

''गामो दिस गेल छलेँ?''

“नै। कन्ना जाएब....। तेसर सालक बाढ़िमे अहूँक गाम कटि कऽ कमला पेटमे चलि गेल आ हमरो गाम कोसीमे। आब सुने छी जे हमरो गाम भरनापर बसल हैं आ अहूँक गाम कमलाक पछबरिया छहरक पछबरिया बाधमे। घनश्यामपुर तक तँ रस्ता छइहो मुदा ओइसँ आगू रस्ते सभपर मोइन फोड़ि देने छै। पौरुकाँ जे जाइत रही तँ लगमा लगमे डुमए लगलौं।”

सरोजनी गौरीकेँ इशारासँ कहलक-

“दाइ, बड़ राति भेलै। मौसीकेँ खाइले दहक।”

शबाना बाजलि-

“बहिन, पहिने हम केना खाएब? पहिने बौआ राधेश्यामकेँ खुआ दियौ। खा कऽ सूति रहत। हम भरि राति बहिनसँ गप-सप्प करब। बहुत दिनक गप्प पछुआएल अछि।”

शबानाक बात सुनि राधेश्याम मोने-मन सोचए लगलाह जे दुनियाँमे बहिनक कमी नै अछि। लोक अनेरे अप्पन आ बीरान बुझैए। ई सभ मनक खेल छिऐ। हँसी-खुशीसँ जीवन बितबैमे जे संग रहए, वएह अप्पन। शवानाकेँ कहलक-

“मौसी, माए तँ ने खाली हमरे माए छी आ ने अहींक बहिन। सबहक अप्पन-अप्पन छिअए, तँए कियो अप्पन करत किने?”

पुबरिए घरक ओसारपर राधेश्याम सूतल। बाँकी सभ पुबरिया घरमे बैसि गप-सप्प करए लगली। गौरी मौसीकेँ पुछली-

“मौसी, अहाँ दुनू बहिन तँ दू गामक छिऐ। दुनू गोटेमे चीन्हा-परिचए कहिया भेल?”

शबाना बाजलि-

“जहिएसँ ज्ञान-पराण भेल, तहिएसँ अछि। हमरा बाप आ तोरा नानाकेँ दोस्तीआरए रहनि। कोस भरि पूब हमर गाम झगडुआ अछि आ कोस भरि पच्छिम बहिनक। अखनि तँ दुनू गाम उपटि कऽ दोसरठीम बसल अछि। मुदा पहिने बड़ सुन्दर दुनू गाम

छेलै।

गौरी-

“मौसी, हम तँ बच्चेमे, बहुत दिन पहिने गेल रही। तइ दिनमे तँ बड़ सुन्दर गाम रहए।”

शबाना-

“हँ, से तँ रहबे करए। मुदा आब देखबहक तँ बिसबासे ने हेतह जे यएह गाम छिऐ। हँ, तँ कहै छेलिअ, काकाकेँ बहुत खेत-पथार रहनि। चारि जोड़ा बड़द खुट्टापर, चारि-पाँचटा महिंसो रहनि। मुदा हमरा बापकेँ खेत-पथार नै रहए। गामेमे खादी-भंडार छेलै। सौंसे गामक लोक चरखो चलबै आ कपड़ो बीनै। सभसँ नीक कारीगर रहए हमर बाप। घरक सभ कियो सुतो काटी आ कपड़ो बनबी। सलगा, चद्दरि, गमछी आ धोती बीनैमे हमरा बापक हाथ पकड़िनिहार कियो नै। बहिनक गामक सभ हमरे बापसँ कपड़ा किनए। सौंसे गामसँ अपेछा रहए। पाँचे-सात बर्खक रही तहिएसँ बहिनक ओठीम जेबो करिऐ आ खेबो करिऐ।”

शबानाक बात सुनि गौरीकेँ अचरज लगलै। मोने-मन सोचए लगली जे एक तँ गरीब तहूमे मुसलमान। तैबीच दोस्ती...। मुस्की दैत बिच्चेमे रागिनी मौसीकेँ पुछलकनि-

“कोन पुरना खिस्सा मौसी जोति देलखिन। ई कहथु जे दुनू बहिनक बिआह एक्के दिन भेलनि?”

“धूर्र कनियाँ! अहाँ की बजै छी। हमरासँ बहिन दू-तीन बरख जेठ छथि। बहिनक बिआहसँ दू बरख पाछू कऽ हमर बिआह भेल। काका हमरा बापकेँ कहलखिन जे पुबरिया आ दछिनबरिया इलाका कोसिकन्हा भऽ गेल तँए आब कथा-कुटुमैती उत्तरेभर करब नीक हएत।”

कनी गुम रहि शबाना पुन: बाजलि-

“बेटी, कपारक दोख भेल। आब अपनो बुझै छी जे नैहरक काजक जे महौत छेलै से ऐ काजक -भौरीक- नै अछि। मुदा की करितौं? ऐ ठीम उ काज अइछे नै। ने खादी-भंडार छै आ ने कारोबार अछि।”

मुस्की दैत रागिनी बाजलि-

“मौसी, अपना बिआहमे तँ हम कनियैंटा रही। सभ गप मनो ने अछि। हिनका तँ मन हेतनि, बिआहमे झगड़ा किए भेल रहए?”

कनीकाल गुम रहि शबाना ठाहाका मारि हँसि, बाजलि-

“अहाँक बावू बड़ मखौलिया रहथि। हँसी-चौलमे केकरो नै जीतए देथिन। घरदेखीमे एलथि। हम दुनू बहिन खूब छकौलियनि। पीढ़ी तरमे खपटा, बैसैले आ रूइयाँ तरि कऽ खाइले सेहो देलियनि। खा कऽ जहाँ उठला कि एक डोल करिक्का रंग कपारपर उझलि देलियनि। मुदा हुनका लिए धनि सन। तहिना बरियातीमे ऊहो छकौलकनि। सबहक धोतीमे चारि-पाँच दिनक सड़लाहा खइर लगा देलकनि। पहिने तँ बरियाती सभ अपनमे रक्का-टोकी केलक। मुदा जहन भाँज लगलै जे घरवारी सभकेँ सड़लाहा खइर लगा देलक। तहन बरियातीओ सभ टुटल। मुदा कहे-कही भऽ कऽ रहि गेलै। मारि-पीटि नै भैल।”

कहि हँसए लागलि। सभ हँसल।

राधेश्याम ओसारपर सूतल रहथि। मुदा एक्को बेर आँखि बन्न नै भेलनि। किएक तँ मनमे शंका होइत रहनि जे अनचोकेमे ने माए मरि जाए। खिस्से-पिहानीमे राति कटि गेल।

भोर होइते शबाना राधेश्यामकेँ कहलक-

“बौआ, अपन मन अछि जे आब बहिनकेँ एक काठी चढ़ाइए कऽ जाएब। मुदा गामे-गाम जे आगि लगल देखै छिऐ तइसँ डर होइए?”

राधेश्याम-

''मौसी, ऐठाम कियो किछु नै बिगाड़ि सकै छौ। जहिया तक तोरा रहैक मन होउ, निर्भीकसँ रह।''

शबाना बाजलि-

''बौआ, मन होइए जे बहिनक सभ नुआ-बिस्तर हम खीच दिऐ। फेर ई दिन कहिया भेटत''

राधेश्याम-

''दुनू बहिनक बीच हम की कहबौ मौसी। जे मन फुड़ौ से कर।''

OOO

घरदेखिया

नीन्न टुटिते लुखियाक नजरि दिन भरिक काजपर पड़लनि। काज देखि मनमे अबूह लागए लगलनि। असकता गेली। मुदा तैयो हूबा बान्हि कऽ उठए चाहलनि आकि आँखि पुबरिया घरक छप्परपर गेलनि। बिहाड़िमे मठौठ परक खढ़ उड़िया गेल छेलै। हड्डी जकाँ बत्ती झक-झक करैत रहै। मनमे एलनि, की कहत बरतुहार? कहत ने जे मसोमातक घर छिऐ तँए मठौठ उजड़ल छै। खौंझ उठलनि। ठोर पटपटबैत बजली-

> "जेहने नाशी डकूबा बिहाड़ि तेहने झड़कलहा कारकौआ। जुट बान्हि-बान्हि औत आ लोलसँ खढ़ उजाड़ि-उजाड़ि छिड़ियौत।" नजरि निच्चाँ होइते दछिनबरिया टाटपर पड़लनि। बरसातमे टाटक आलन गलि कऽ झड़ि गेल छेलै। मात्र कड़ची-बत्तीटा झक-झक करै छेलै। जइसँ ओहिना दछिनबरिया बँसबिट्टी देखि पड़ैत छेलै। बेपर्द आँगन...।

लुखियाक मन खिन्न हुअ लगलनि। मनमे एलनि, पुरना साड़ी टाटमे टांगि देबै। मुदा बरतुहारक आँखिमे की कोनो गेजर भेल रहतै जे नै देखत। तहूमे साड़ीसँ केते अन्हराएत। ओहिना सभ किछु देखत। आरो मन निच्चाँ खसैत जाइत रहनि। बाप रे! की कहत बरतुहार? दीअर-नागेसरपर तामस उठए लगलनि। कोन जरूरी छेलनि जे कौल्हुके दिन दऽ देलखिन। घर-अँगना चिक्कन कऽ लैतौं तहन अबैक दिन दैतऽथिन। कोनो की हमर बेटा बाढ़िमे दहाएल जाइ छेलए। पाँच दिन आगुएक दिन भेने की होइतै? तामस बढ़लनि। तैबीच आँखि टाटपर सँ निच्चाँ उतरलनि। नजरि पड़लनि अँगनाक पनिबटपर। झक-झक करैत झुटका। उबड़-खाबड़ सौंसे आँगन। तहूमे जे झुटका सेरियाममे अछि ओ तँ नै मुदा जे अलगल अछि ओ तँ चुभ-चुभ गरैए। सौंसे अँगना सेरियबैमे कम-सँ-कम दस छिट्टा माटि लागत। दस छिट्टा माटि उघि, ढेप फोड़ि, सेरिया कऽ पटबैमे तँ भरि दिन लागि जाएत। तहन आन काज केना हएत? काजक तरमे लुखिया दबाएल जाइत रहथि। तामस आरो लहरए लगलनि। अबूहो लगनि। ओछाइनेपर पड़ल-पड़ल भारसँ दबैत जाएत।

दुइए माइपुत की सभ करब? तहूमे आइ ऐ छौड़ाकँ केना किछु करैले कहबै। ओकरे देखैले ने घरदेखिया औत। छौड़ाकँ तँ अपने मारिते रास काज हेतै। कानी छँटौत। अंगा-घोती खीचत। आइरन करबैले गंजपर जाएत। गमकौआ साबुनसँ नहाएत। तेल लेत। बाबरी सीटत। तेहेनठाम कोदारि-खुरपी चलबैले केना कहबै। लोहे छिऐ, जौं किनसाइत लागिए जाए। तहन तँ आरो पहपटि हएत। कथकिया जे हाथ-पएरमे पट्टी बान्हल देखतै तँ की कहत? मनक तामस निच्चाँ मुहेँ ससरए लगलनि। तामस उतरिते नजरि घरदेखियाक खेनाइ-पिनाइपर पहुँचलनि। आन काज तँ रहिओ-सहि कऽ भऽ सकैए मुदा दूध तँ एक दिन पहिने पौड़ल जाएत। जँ से नै पौड़ब तँ दही केना हएत। शुभ काजमे जँ दहीए नै हएत तँ काजक कोन भरोस। एक तँ महिंसबला सभ तेहेन अछि जे दूधसँ बेसी पानिए मिला दइए। नबका मटकुरीओ ने अछि जे पानिओ सोखि लइतै। मनमे खौंझ उठए लगलनि। मुदा नजरि चाउर-दालि दिस बढ़िते तामस दबलनि। बेटाक घरदेखिया औत, हुनका केना खेसारी दालि आ मोटका चाउरक भात खाइले देबनि। लोको दुसत आ अपनो मन की कहत। कियो किछु कहऽ आकि नै मुदा कुल-खानदानक तँ नाक नै ने कटा लेब। जँ इज्जतिए नै तँ जिनगीए की? मन पड़लनि घैलमे राखल कनकजीर चाउर। कनकजीर चाउरक भात आ नवका कुटुम मनमे अबिते लुखियाक हृदए पघिलल केरा जकाँ पलड़ए लगलनि। मोने-मन भातक प्रेमी दालिक मिलान करए लगली। मेही भातमे मेही दालिक मिलान नीक हएत। मुदा खेरही-मसुरी दालि तँ भोज-काजमे नै होइत। होइत तँ बदाम-राहड़िक। मुदा राहड़ि तँ घरमे अछि नै। बोडमरना बाढ़िओ तेना दू सालसँ अबैए जे एक्को डाँट राहड़ि नै होइए। तत्-मत् करैत फेर मन झुझुआ गेलनि। बिनु आमिले राहड़िक दालि केहेन हएत? आमक मास रहैत तँ चारि फाँक कँचके आम दऽ दितिऐ। सेहो नै अछि। फेर मन आगू बढ़लनि, पहिल-पहिल समैध-समधीन बनब आ एगारहोटा तरकारी खाइले नै देबनि से केहेन हएत। गुन-धुन करए लगली। गुन-धुन करिते बर-बरी-अदौरी मन पड़लनि। एक्के दिनमे केना ओरियान हएत? घाटिए-बेसन बनबैमे तँ तीन दिन लागत। तहन केना हएत? फेर तामस पजरए लगलनि। मन फेर खौंझा गेलनि। बाजए लगली-

"ई सभटा आगि लगौल नगेसराक छी। जाबे ओकरा छितनीसँ चानि नै तोड़ब ताबे ओकरा बुधि नै हेतै। तमसाइले नागेसरक आँगन दिस बजैत बढ़ली। पुरुख छी आकि पुरुखक झड़। जइ पुरुखकेँ काजक हिसाबे ने जोड़ए औत ऊहो कोनो पुरुखे छी। ओइसँ नीक तँ मौगी।

नागेसर नदी दिस गेल छला। नागेसरकेँ नै देखि लुखिया डेढ़िए पर अनधुन बाजए लागलि। मुदा नागेसरक पत्नी भुरकुरिया चुप-चाप सुनैत। किछु बजैत नै। किएक तँ मोने-मन सोचैत जे दिओर-भौजाइ बीचक बात छी, तैबीच हम किएक मुँह लगबी। बजैत-बजैत लुखियाक पेटक बात सठलनि। बात सठिते तामसो उतरलनि। बोलीक गरमीकेँ कमैत देखि भुरकुरिया बाजलि-

"अँगना चलथु दीदी। बीड़ी पीब लेथु, तहन जइहथि।"

घरसँ बीड़ी-सलाइ निकालि दुनू गोटे ओसारपर बैसि गप-सप्प करए लगली। सलाइ खड़ैंत भुरकुरिया बाजलि-

"दीदी, आब पीहुओकेँ जुआन होइमे देरी नै लगतनि। कंठ फूटि गेलै।"

भुरकुरियाक बात सुनि लुखिया हरा गेली। जुआन बेटाक सुख मनमे नाचए लगलनि। लुखियाकेँ आनन्दित होइत देखि पुनः भुरकुरिया कहलकनि-

"भैयोसँ बेसी भीहिगर जवान पीहुआ हेतनि।"

खुशीसँ लुखियाक हृदए बमकि गेलनि, बजली-

"कनियाँ, खाइ-पीबैमे छौड़ाकेँ कोनो की कोताही करै छिऐ। एक तँ भगवान नउएँ-कउएँ कऽ एकटा बेटा देलनि। तेकरो जँ सुख नै होइ तँ एते खटबे केकरा ले करै छी। बापक मन तँ परुँके बिआह करैक रहनि मुदा तैबीच अपने चलि गेल। आब साल लगलै तँ ऐ बेर जेना-तेना बिआह कइए देबै।"

कहि आँगन दिस विदा भेली। अँगनासँ निकलिते मन नागेसरपर

गेलनि। सोचए लगली, नागेसरे वेचाराक कोन दोख छै। ऊहो की कोनो अधला केलक। हुनको मनमे ने होइत हेतनि जे झब दे पुतोहु घर आबनि। अखनि तँ वएह ने बाप बनि ठाढ़ छथिन। मुदा काज औगताएल केलनि। गरीब छी, तेकर माने ई नै ने जे इज्जत नै अछि। इज्जतकेँ तँ बचा कऽ राखए पड़ै छै। नव कुटुमैती भऽ रहल अछि। नव कुटुम दुआरपर औता। हुनका जँ पाँच कौर खाइओले नै देबनि से केहेन हएत। स्वागत की कोनो धोतीए-टाकाटा सँ होइ छै? आकि दूटा बोल आ दू कौर अन्नोसँ होइए। जेहेन पाहुन रहता तेहने ने बेवहारो करए पड़त। फेर मनमे तामस उठए लगलनि। एहेन पुरुखे की जिनका धियो-पुतोक बिआह करैक लूरि नै होन्हि। तैबीच मन पड़लनि चाह-पान। चाहो-पानक ओरियान तँ करए पड़त। एहेन नै ने हुअए जे एक दिस करी आ दोसर दिस छूटि जाए। चाहे-पानटा किए, बीड़ीओ-तमाकुलक ओरियान करए पड़त ने। ई की कोनो शहर-बजार छिऐ जे लोक एक्के-आधटा अम्मल डेबैए। ई तँ गाम छिऐ, ऐठाम तँ एक-एक आदमी पनरह-पनरहटा अमल डेबैए। अपनइ विचारमे लुखिया ओझरा गेली। किछु फुड़बे ने करनि। बुकौर लागए लगलनि। आँखिमे नोर ढबढ़बा गेलनि। मनमे उठए लगलनि जे घर तँ पुरुखेक होइए। एते बात मनमे अबिते लुखिया बाटपर आबि नागेसरक बाट देखए लगली। नदी दिससँ अबैत नागेसरपर नजरि पड़लनि। नजरि पड़िते बजली-

> ''काल्हि घरदेखिया औता आ अहाँ निचेनसँ टहलान मारै छी।''

नागेसर-

> ''अच्छा चलू। बैसि कऽ सभ विचारि लइ छी।''

दुनू गोटे आँगन दिस बढ़लथि। ओचान खड़ैत पीहुआकेँ देखि नागेसर कहलखिन-

> ''अखनि तूँ ऐंठार चिक्कन करै छेँ की जा कऽ बाबरी छँटा एमे? काजक अँगना छियौ तँए पहिने बाहरक काज समेटि लेमे की घरे-अँगनाक काज करै छेँ। जो, जल्दी जो।''

खड़ा रखि पीहुआ विदा भेल। लुखियाक नजरि बदललनि। जहिना चश्माक शीशाक रंग दुनियाँक रंगकेँ बदलि दइ छै, तहिना लुखियाक

नजरि नागेसरक बदलल रूपकेँ देखलक। बदलल रूप देखिते सिनेह उमड़ि पड़लनि। सिनेहसँ बजली-

''एते लगक दिन किए देलिऐ? चारि दिन आगूक दितियनि। भरिए दिनमे सभ काज सम्हारल हएत?''

लुखियाक समस्याकेँ हल्लुक बनबैत नागेसर कहलखिन-

''आइ पहिल दिन छी घरदेखिया घर-बर देखए औत आकि खाइन-पीन करै ले? पसिन्न हेतनि तँ खेता-पीता, नै तँ अपना घरक रस्ता धरता। अखनि तँ ओ बटोही बनि कऽ औता। तँए हमरो ओते सुआगतक ओरियान करैक जरूरत नै अछि। जहन पीहुआ पसिन हेतनि, बिआह करब गछता, तहन ने किछु, आकि समधीन बनैले बड़ औगताएल छी? होइए जे कखनि समधि संग होरी खेलाइ?''

समधि संग होरी खेलाएब सुनि लुखियाक मन उड़ए लगलनि। बजली-

''हम की कोनो समैधिए भरोसे फगुआ रखने छी, दिअर कोन दिनले रहत?''

लुखियाक मनसँ चिन्ता पड़ा गेल। मुस्की दैत बजली-

''बाटो-बटोही जँ दुआरपर औता तँ एक लोटा पानिओ ने देबनि?''

नागेसर-

''से तँ देबे करबनि। यएह इज्जत तँ हमरा सबहक बाप-दादाक देल अमोल धरोहर छी।''

खुशीसँ भँसियाइत लुखिया कहलनि-

''पुरुखक थाह हम नै पाएब।''

नागेसर-

''कनी कालमे बजार जाएब। जे सभ जरूरीक वस्तु अछि से

सभ कीनि आनब। तइले एते माथा-पच्ची करैक कोन जरूरी अछि। अतिथिक सुआगत मात्र नीक-निकुत खुऔनइ होइत? आकि प्रेम-पूर्वक तुकपर खुऔने होइत। बैसैले चद्दरि साफ केलौं? सिरमो खोल खीचि लेब।''

''सिरमामे खोल कहाँ अछि? ओहिना पुरना साड़ीक बनौने छी। ओहूले दूटा खोल किनने आएब।''

''बड़बढ़ियाँ।''

दोसर साँझ आँगनमे बैसि नागेसर पीहुआकेँ पुछलक-

''तोरा जे नाओं पुछथुन्ह तँ की कहबुहुन?''

पीहुआ बाजल-

''से की हमरा नाओं नै बूझल अछि। बउओ, माएओ आ गामो नाओं बूझल अछि।''

''ओते नै पुछै छियौ। अपनेटा नाओं बाज?''

''पीहुआ''

''धुर बुड़िबक। पीहुआ नै पुहुपलाल कहिहनु।''

''से हमर नाओं पुहुपलाल कहाँ छी। पहिने सभ कहैत रहए मुदा आब तँ सभ पीहुए कहैए। अहिना ने लोकक नाओं बदली होइत रहै छै।''

मुँह बिजकबैत लुखिया कहलक-

''हँसी-चौलमे लोक तोरा पीहुआ कहै छौ आकि जनमौटी नाओं छियौ।''

छठियार राति, दाइ-माइ पुहुपलाल नामकरण केलखिन। जहन ओ आठ-दस बर्खक भेल, तहन जाड़क मास बाधमे फानी लगबए लगल। गहींर खेत सभमे सिल्लिओ आ पीहुओ आबि-आबि धान चभैत। जेकरा ओ फानी लगा-लगा फँसबैत। अपनो खाइत आ बेचबो करैत। कछु दिन पछाति स्त्रीगण सभ पीहुआबला कहै लगलै। फेर किछु दिनक पछाति

भौजाइ सभ पीहुआ कहए लगलै। मुदा तेकर एक्को मिसिआ दुख ने पीहुएकँ होइत आ ने पीहुआ माइए-बापकँ। तँए पुहुपलाल बदलि पीहुआ भऽ गेल।

मोने-मन नागेसर विचारलनि जे ई पीहुआ एना नै सुधरत। अखनि सिखाइओ देबै तैयो बजै कालमे बाजिए देत। से नै तँ दोसर गरे काज लिअए पड़त। लुखियाकँ कहलखिन-

"मोटरी खोलि सभ समान मिला लिअ।"

दुनू दिओर-भौजाइ सभ समान मिलबए लगल। धोती देखि दुनूक बीच मतभेद भऽ गेलनि। कन्यागतक बिदाइ लेल एक्के जोड़ धोती नागेसर कीनि कऽ अनने छला। किएक तँ बुझलनि जे बेटीबला धोती नै पहिरैए। मुदा से बात लुखिया बिसरि गेल छेली। तँए बजली-

> "दू गोटे औता, तहन एक जोड़ धोतीसँ की हएत? कम-सँ-कम तँ जोड़ो भरि करबनि। जेकरा बेसी रहै छै ओ पाँचो टूक कपड़ा बिदाइ करैए।"

सामंजस्य करैत नागेसर-

> "हमरो सासुरक धोती रखले अछि। काज पड़त तँ दऽ देबनि।"

> "गुलाबीए रंगमे रंगल अछि। एकरो गुलाबीएमे रंगि लेब। रंगो कीनि कऽ नेनइ आएल छी।"

दोसर दिन, सबेरे सात बजे कन्यागत दुनू बापूत पहुँचला। कन्यागतकँ
अबैसँ पहिनइ नागेसर एकचारीमे बिछान बिछा, तैयार केने छला। नबका खोलक सिरमो सिरा दिस देने छला। कन्यागतकँ अबिते नागेसर ठेंगा-छत्ता रखि पएर धोइले लोटा बढ़ौलकनि। चाह-पान आनए लुखिया पछुआरे बाटे लफरल चौक दिस विदा भेली। जाधरि दुनू बापूत डोमन हाथ-पएर धोइ कुशल-छेम करैत, बिछानपर बैसला ताधरि लुखियो चौकपर सँ चाह-पान कीनि आएलि। नागेसरक दुनू आँखि दुनू दिस। तँए देखि लेलनि जे चाह आबि गेल। पीहुआकँ कहलनि-

''बौआ, चाह नेने आबह?''

''पानो।''

''पहिने चाह लाबह। पछाति पान अनिहऽ।''

पीहुआक बोली डोमन सुनि लेलनि। तँए नाओं-गाओं पुछैक जरूरते ने रहलनि। दोहारा नमगर देह। मोने-मन डोमन लड़िका पसिन कऽ लेलनि। आँखिक इशारासँ डोमन बुचनकेँ पुछलखिन। आँखिएक इशारासँ बुचन सेहो स्वीकृति दऽ देलकनि। दुनू बापूतक मुँहमे हँसी नाचि गेलनि। मुदा लगले डोमनक मनमे एकटा शंका पैसि गेलनि। शंका ई जे मरदा-मरदी परिवार नै अछि तँए हो-ने-हो कोनो छोट-छीन बाधा ने बीचमे आबि भंगठा दिअए। चाह पीब पान खा डोमन नागेसरकेँ कहलखिन-

> ''समैध, जाधरि भानस होइए ताधरि बाध दिससँ घूमि अबैले चलू। हँ, एकटा बात तँ कहबे ने केलौं, तीमन-तरकारी बेसी नै करब। सात-आठ दिनसँ लगातार माछ खेलौं, पेट गड़बड़ भऽ गेल अछि। गाममे रहितौं तँ मड़बज्झू भात आ केरा चाहे भांटाक सन्ना संगे खइतौं। मुदा से तँ ऐठाम नै हएत। तँए दालि-भात एकटा तरकारी-सजमनि चाहे झिमनीक- बना लेब। तहूमे बेसी मसल्ला नै देबै।''

बीड़ी-सलाइ गोलगलाक जेबीमे रखि नागेसर लुखियाकेँ कहए आँगन गेला। ओना टाटक अढ़सँ लुखियो सुनि लेने छेली। तँए जवाब दइले मन उबियाइत रहनि। अवसर पाबि लुखिया बजली-

> ''एते रास जे तीमन-तरकारीक ओरिआन केने छी से की हएत। अपने नै खेता तँ आँगनवालीले मोटरी बान्हि देबनि।''

अपियारीमे फँसैत माँछ जकाँ लड़िकाक माएकेँ फँसैत देखि डोमन बजला-

''तइले की हेतै, हिनको मोटरी बान्हि कन्हापर नेने जेबनि।''

आँखि दाबि नागेसर लुखियाक बोली रोकए चाहलनि। मुदा लुखिया मुँहक बात बरतुहार दिस नै बढ़ि नागेसरे दिस खसलनि-

''बड़ बुधियार छथि। बूझब जे बेटाक बिआह केलौं तँ गामो-घर आ समधिओ नीक भेटला। तँए जेना-तेना कुटमैती कइए लेब।''

लुखियाक बात सुनि नागेसरक मन हल्लुक भेलनि। लुखिया अपन भार दऽ बाधा हटौलक। नै तँ बेर-बेर बाता-बाती होइत। समए पाबि डोमन जोरसँ बजला-

''समधीने लग नुड़ियाएल रहब आकि चलबो करब?''

लुखियाक मन भीतरसँ चप-चप होइत। बजैले लुस-फुस करैत। डोमनक बात सुनि बजली-

''हिनकेटा समधीन लगड़गर छन्हि, आनकँ कि किछु छै?''

मुस्की दैत नागेसर आँगनसँ निकलि बाध दिस विदा भेला। आँखि उठा-उठा डोमन गाम-घर देखैत जाइत रहथि। टोलसँ निकलि पच्छिम मुहेँ एक पेड़िया धेलनि। गाछी टपि हाथक इशारासँ पच्छिम मुहेँ देखबैत नागेसर कहलकनि-

''पछबारि भाग जे चतरलाहा गाछ देखै छिऐ ओहए गामक सीमा छी।''

दुनू बापूत देखि डोमन पुछलखिन-

''उत्तरबरिया सीमा?''

ओंगरीसँ देखबैत नागेसर-

''ओ ढिमका जे देखै छिऐ, सएह छी।''

''दछिनबरिया।''

''तीन चारिटा जे छोटका गाछ एकठाम देखै छिऐ ओ सीमेपर अछि। पीराड़क गाछ छिऐ।''

बाधकँ हियासि डोमन आँखिक इशारासँ बुचनकँ देखेलखिन। दुनू गोटे मोने-मन अन्दाजलनि जे दू सए बीघासँ ऊपरेक बाध अछि। तैबीच नागेसर बजला-

"बुझलौं, बाबूक अमलदारीमे तँ सम्मिलिते छल मुदा हमरा दुनू भाँइमे बँटबारा भऽ गेल। उत्तरसँ हमर छी आ दछिनसँ भातिजक।"

डोमन-

"खोपड़ी केतए बनौने छी?"

नागेसरकेँ पछिला घटना मन पड़लनि। ओंगरीसँ देखबैत कहए लगलखिन-

"ओइ बँसबाड़ि आ गाछीक बीच एकटा खाधि छै। जइमे बिसनारिक गाछ सभ छै। भदबारिमे पानि भरि जाइए। बाँसोक पात आ गाछो सबहक पात ओइमे खसि-खसि सड़ैए। बिसनारिओक गाछ सभ सरि जाइए। जइसँ कारी खट-खट पानि भऽ जाइ छै। ढाकीक-ढाकी मच्छर फड़ि जाइ छै। ओही खाधिमे भैयाकेँ कालाजारक मच्छर काटि लेलकनि। केतबो दबाइ-बिरो भेलनि, मुदा नै ठहरलखिन।"

डोमन पुछललनि-

"अहाँ सभकेँ सरकारी अस्पतालमे दबाइ नै दइए?"

"से जँ दैतै तँ एते लोक मरबै करैत। बीस आदमीसँ ऊपरे हमरा गाममे कालाजारसँ मरल। अस्पतालमे किछु छै थोड़े, ओहिना ईंटाक घरटा ठाढ़ अछि। दबाइकेँ के कहए जे कुरसीओ-टेबुल बेचि नेने अछि।"

बजैत-बजैत नागेसरक आँखि नोरा गेलनि। गमछासँ आँखि पोछि आगू बढ़ि गेला। तीनू गोटे खोपड़ी लग पहुँचला। बाधक बीचमे कट्ठा दुइएक परती, परतीएपर दुनू फरीकक खोपड़ीओ आ पाँचटा अनेरूआ गाछो, दूटा साहोरक, दू-टा पितोहिया आ एकटा बजरकेराइक। साहोरक गाछ सभसँ पुरान मुदा देखैमे सभसँ छोट। बजरकेराइ सभसँ कम दिनक मुदा सभसँ नम्हर। पितोहिया गाछक निच्चाँमे तीनू गोटे दुबिपर बैसि गप-सप्प करए लगला।

डोमनकेँ पुछलखिन-

“राखी केना गिरहत सभ दइए?”

“बीघामे पाँच घुर धानो आ गहुमो।”

“रब्बी, राइ माने दलिहन-तेलहन?”

“अंदाजेसँ देलक। अपनो सभ उखाड़ि दइ छिऐ। जइसँ बोइनो भेल आ राखीओ।”

दुनू बापूत डोमन मोने-मन हिसाब जोड़ए लगला। अगर कट्ठामे एक क्विन्टल उपजत तँ पच्चीस किलो बीघामे भेल। जँ से नै पचासो किलोक कट्ठा हएत, तैयो साढ़े बारह किलो बीघा भेल। सए बीघासँ ऊपरेक बाध अछि। तइसँ या तँ पच्चीस क्विन्टल, नै तँ साढ़े बारह क्विन्टल राखी -धान- सालमे जरूर होइतै हेतनि। तेकर पछाति गहुम भेल, मरूआ भेल, आरो-आरो दलिहन-तेलहन भेल। दुइए मायपुत केते खाएत? हमरो बेटीकेँ अन्नक दुख नै हेतै। मुस्की दैत डोमन बेटा दिस तकलथि। बेटो बाप दिस ताकि आँखिएसँ गप-सप्प कऽ लेलक। कनी काल चुप रहि डोमन नागेसरकेँ पुछलखिन-

“कथी-कथीक खेती बाधमे होइए?”

“पान साल पहिने तक तँ अन्नेटा उपजै छल। टो-टा कऽ सेरसो-तोड़ीक खेती। मुदा आब खेती बदलि रहल अछि।”

मुस्की दैत पुन: आगू बजला-

“की कहब, बुझू तँ राजा छी। दू सए बीघाकेँ अपन बपौती सम्पति बुझै छी। दुनू सए बीघाक मालिक छी। एक बेर टाँहि दइ छलिऐ तँ जुआन-जुआन घसवहिनी सभ नाङरि सुटुका कऽ पड़ा जाइ छलि। मुदा आब से नै करै छी। खसल-पड़ल खेतक आ आड़ि पड़क घास कटैले केकरो मनाही नै करै छिऐ...।”

किछु मन पाड़ि फेर बजला-

“हँ तँ कहै छेलौं जे जइ दिनसँ लोक बोरिंग गड़ौलक आ कोसीओ नहरि एलै तइ दिनसँ तँ बूझि पड़ैए जे घरसँ बाध धरि लछमी सदिकाल नाचिते रहै छथि। केकरो देखबै धानक बीआ पाड़ैए तँ कियो रोपैले बीआ उखाड़ैए। कियो कमठौन करैए तँ कियो धान कटैए, तँ कियो बोझ उघैए। कियो दाउन करैए, तँ कियो धान ओसबैए, तँ कियो अग्गो रखैए। कियो धन-उसनियाँ करैए तँ कियो पथार सुखबैए। कियो मीलपर धान कुटबैए तँ कियो चाउर फटकैए। केते कहब।”

डोमन पुछलखिन-

“आनो-आनो चीजक खेती हुअए लागल हएत?”

नागेसर बजला-

“एँह की कहब! पचासो किसिमक तँ धानेक खेती हुअए लागल अछि। ओते धानक की नाउओं मन अछि। धान संग-संग खाद-पानि दऽ कऽ गहुम, दलिहनक खेती सेहो हुअए लागल अछि। एते दिन तँ सेरसौए-तोरक खेती होइ छल। आब सूर्यमुखीक खेती सेहो होइए। राशि-राशिक तीमन-तरकारी सेहो हुअए लागल अछि। बीघा दसेमे पनरह-बीस गोटे नवका आमक कलम सेहो लगौलक अछि। एँह, की कहब, आन्ध्राक आम, मद्रासी आम सभ सेहो लोक लगौलकहेँ। अजीब-अजीब आमो सभ अछि। ऐ बेर रोपू तँ पौरुकेँ सँ फड़ए लगत। जेहने देखैमे लहटगर लागत तेहने खाइओमे।”

डोमन नागेसरकेँ पुछलखिन-

“आमक ओगरबाहि केना दइए?”

“तीन आममे एक आम सरही आ चारि आममे एक कलमी। से जइ दिन तोड़ल जाएत तइ दिनक कहलौं, तैबीच खसल-पड़ल आमक हिसाब नै। तेहेन आम सभ अछि जे टुकलेसँ धिया-पुता खाए लगैए। खटहो आमकेँ चुन लगा कऽ मीठ बना लइए। धियो-पुतो तेते बुधियार भऽ गेल अछि जे अँगनेसँ चुन नेने

जाएत आ आममे लगा कऽ खाएत।''

डोमन पुछलखिन-

''आरो की सभ आमदनी बाधसँ अछि?''

''सभटा की मनो अछि। (ओंगरीसँ देखबैत) दछिनबारि भाग बीघा बीसेक गहींर खेत छल। चौरी। गोटे साल नै, ने तँ पहिने सभ साल धान दहाइए जाइ छेलै। मुदा आब, जहियासँ पानिक सुविधा भेल, सभ गिरहत अपन-अपन खेतकेँ आरो खुनि कऽ पोखरि जकाँ बना-बना माछ पोसए लगल हेन। आन्ध्र प्रदेशक एकटा माछ छै 'इलिस'। एँह, की कहब, (मुँह चटपटबैत) अपना सभ कहै छिऐ रहु, मुदा ओइ इलिस आगूमे किछु ने छी। जहिना बढ़ैमे तहिना सुआद। हमरा की कोनो रोक अछि, हमहीं ओगड़ै छिऐ ने, जहिया मन भेल तहिया बन्सीमे दूटा मारि लेलौं आ सभ खेलौं। सभसँ मुश्किल आब बनौनाइ भऽ गेल। काजेसँ ने छुट्टी। के ओते मेठैन करि कऽ खाएत। आब सुरूज माथपर आबि गेल। चलू। भानसो भऽ गेल हएत। गरमे-गरम खाइमे नीक होइ छै।''

तीनू गोटे बाधसँ घर दिसक रस्ता धेलनि। थोड़े आगू बढ़ला तँ बँसबारिमे एकटा चिड़ैकेँ बजैत सुनलनि। बाजबो अजीब ढंगक। मुस्की दैत नागेसर डोमनकेँ पुछलखिन-

''कहूँ तँ ई चिड़ै की बजैए?''

कनी अकानि कऽ डोमन बजला-

''ई तँ पान-बीड़ी सिगरेट बजैए।''

बात सुनि नागेसर ठहाका दऽ हँसला। कनीकाल हँसि बजला-

''ई चिड़ै अहाँ गाम सभ दिस नै हएत। जहिया कोसीक बाढ़ि अबै छेलै तहिएसँ ई चिड़ै हमरा गाममे अछि। ई बजैए- बढ़मा, बिसुन, महेश।''

विचारक भिन्नताक कारणे डोमन पुनः चिड़ैक बोली अकानए

लगला। बुचन सेहो अकानए लगल। अपना बातमे मजबूती आनैले नागेसर सेहो अकानए लगला। दुनू चुप। दुनू अपन-अपन दुबिधामे। डोमन बुचनकेँ पुछलकनि-

"बौआ, तूँ तँ इसकुलो देखने छहक, तोँही कहऽ?"

मामूली सबालमे हारि मानब केकरा पसिन्न होइत। डोमनक मन विचारकेँ मथैत।

डोमनक बात सुनि बुचन बाजला-

"बाबू, हमरा बूझि पड़ैए जे 'तुलसी, सूर, कबीर' कहैए।"

तीनूक तीन मत, तँए विवादक प्रश्ने नै, तीनू अपन-अपन रमझौआमे ओझड़ाएल। तँए तीनू चुपचाप आगू-पाछू घर दिस विदा भेला।

घरपर अबिते डोमन बजला-

"लोटा नेने आउ। कनी डोल-डाल दिससँ भऽ अबै छी।"

नागेसर आँगनसँ दू लोटा पानि आनि कऽ देलकनि। लोटामे पानि देखि बुचन पुछलखिन-

"बाबू, आगूमे कल-तल नै छै?"

बिच्चेमे लपकि कऽ डोमन बजला-

"अखनि तूँ बच्चा छह, नै बूझल छह?"

कहि आगू मुहेँ गाछी दिस विदा भेला। गाछी पहुँच एकटा सरही आमक गाछक निच्चाँमे दुनू बापूत बैसि विचार-विमर्श करए लगला।

बुचन-

"बाबू, कुटुमैती करै जोकर परिवार अछि। समलाइके मे बिआह-सादी, दुश्मनी आ दोस्ती छजैए। लड़िकाक बाप नै छै तँ की हेतै। गाम-घरमे लोक मइटुग्गरकेँ अधला बुझैए।"

डोमन बुचनक बातो सुनैत आ मुड़ीओ डोलबैत रहथि मुदा मोने-मन परिवारक आमदनी आ ओइ आमदनीकेँ समटैक लूरि सोचैत रहथि। जइ हिसाबसँ आमदनीक जड़ि देखि रहल छी ओइ हिसाबसँ सम्हारैक लूरि नै

छन्हि। जँ दुनू एक सतहपर आबि जाए तँ परिवारकेँ आगू मुहेँ ससरैमे बेसी समए नै लगत। एतेटा बाध छै। अलेल घास सभ दिन रहतै। बाध ओगड़ैमे की लगै छै? एक-दू बेर ऐ भागसँ ओइ भाग घुमब मात्र छै। अगर जँ अपनो काज ठाढ़ कऽ लथि तँ बैसारीओ नै रहतनि आ आमदनीओ बढ़ि जेतनि। हमरा बेटीकेँ ऐ घर एलासँ एकटा काजुल आ बुधियार समांग बढ़तनि। जानकीकेँ सभ हिसाब- कनमा, अधपइ, पौआ, असेरा, सेर, अढ़ैया, पसेरी, धारा आ मनसँ लऽ कऽ बोरा-क्वीनटल धरि, जोड़ैक लूरि छै। तहिना कोड़ी -बीस वस्तु, सोरे- सोलह, सोरहा -सोलह सोरे, दर्जन- बारह, ग्रुस- बारह दर्जन, जोड़ा-धानक आँटी दस, गाही- पाँच, गंडा- चारि, जोड़ा- दू, आ पल्ला- एक सभ बुझैए। मनमे खुशी एलै। बाजल-

"बौआ, ओना जानकी गिरहस्तीक काज सम्हारि दूटा गाएओक सेवा कऽ लेत। मुदा तइसँ दूधेटा क आमदनी बढ़त। जरूरत छै खेतीओ बढ़बैक। तँए नीक हएत जे एकटा गाए आ एकटा बड़द दऽ दियनि। एकटा बड़द आ एकटा हरबाह भेने दू समांग अपन भऽ जेतनि। जइसँ बीघा दू बीघा खेतीओ कऽ सकै छथि।"

बुचन-

"अपना खेत जे नै छन्हि?"

बुचनक बात सुनि डोमन हँसए लगला। हँसैत बजला-

"बौआ, समए एहेन आबि गेल अछि जे खेतोबला सभ खेती छोड़ि नोकरीएक पाछू बौआ रहल अछि। जइसँ खेती केनिहारक अभाव भऽ रहल छै। गिरहस्तीक हाल बिगड़ि गेल छै। जबकि जरूरत अछि खेतमे मेहनतिक। जे सभ किसान नै बूझि रहला अछि।"

बुचन-

"केना बूझत?"

डोमन गंभीर होइत बजला-

> ''बौआ खेतीमे बड़ बुधिक काज छै मुदा खेती दिन-दिन मुरूखेक हाथमे पड़ल जाइ छै, से सोचलहक हेँ?''

तर्क-वितर्क कऽ दुनू बापूत तँइ कऽ लेलक जे कुटमैती करबे करब। मुदा एकटा जटिल प्रश्न आबि कऽ आगूमे ठाढ़ भऽ गेलनि। ओ ई जे बिआह उट-पटाँग ढंगसँ नै होइ? रस्तासँ पाइक उपयोग होइ। गुन-धुन करैत दुनू बापूत घर दिस विदा भेला।

जाधरि डोमन पैखाना दिससँ आबथि ताधरि लुखिया चारि-पाँच बेर दौग-दौग आँगनसँ बान्हपर जा-जा देखलनि। मनमे उड़ी-बीड़ी जेना लागल रहनि। जे कुटमैतीमे कोनो तरहक गड़बड़-सड़बड़ ने हुअए। नै तँ लोक पिक्की मारत। कहत जे मौगीक मुख्तियारी छी ने। बिनु मरदक मौगी बेलगामक होइते अछि। कहलो गेल छै-

> ''राँड़ मौगी साँढ़।''

फेर मनमे उठलनि जे किछु होउ बिआह तँ हमरे बेटाक हएत। तँए केकरो ओँगरी बतबैक रस्ता नै रहए देबै। जहिना बरतुहार कहता तहिना हमहूँ करब। जँ दुनू गोटेक मिलान रहत तँ किए कोइ आँखि उठौत। एते बात मनमे अबिते बरतुहारकेँ लुखिया अबैत देखलनि। बान्हपर सँ दौगले आँगन आबि हाँइ-हाँइ कऽ थारी साँठए लगली।

हाथ-पएर धोइते नागेसर डोमनकेँ कहलकनि-

> ''पहिने भोजने कऽ लिअ।''

आगू-आगू लोटा नेने नागेसर आ पाछू-पाछू दुनू बापूत डोमन आँगन एला। पीढ़ीपर बैसिते नागेसर थारी आनि आगूमे देलकनि। आँखि घुमा कऽ देखि डोमन बजला-

> ''समैध, समधीनोकेँ अढ़मे बजा लियनु। बिआहक सभ गप पक्का-पक्की कइए लेब। बैसारपर जखने गप उठाएब आकि चारू दिससँ लोक आबि अन्टक-सन्ट गप चालि देत।''

आँखिक इशारासँ नागेसर भौजाइकेँ हाक पाड़ि बैसैले कहलक। तैबीच डोमन कहलखिन-

''समैध, समधीनकेँ पुछियनु जे केना बेटाक बिआह करती?''

नागेसरकेँ अगुआ लुखिया बजली-

''अहाँ सभ मरदा-मरदी गप करू। हमरा कोनो चीजक लोभ नै अछि। नीक मनुख घर आबए, बस एतबे लोभ अछि।''

मोने-मन नागेसर सोचैत रहथि जे हमर केतबो मोजर अछि, तइसँ की? कोनो की हमरा बेटा-बेटीक बिआह हएत? तँए हम अनेरे मुँह दुरि किए करब। बाजला-

''समैध, अहाँ अपने मुहसँ बजीऔ जे केना करब?''

भात-दालि सनैत डोमन बजला-

''समैध, जहिना अहाँक भातिजक बिआह हएत तहिना तँ हमरो बेटीक हएत...।

लुखियाकेँ खुश करै दुआरे पुन: आगू बजला-

''हमर बेटी साक्षात् लछमी छी। साल भरि की दसोसाल घूमि कऽ लड़की ताकब तँ ओहेन नै भेटत। तहूमे आब? आब तँ लोक मनुख थोड़े घर आनैए, आनैए रूपैआ।''

नागेसर टाटक अढ़मे बैसलि भौजी दिस तकैत बाजला-

''खर्च-बर्च करैले किछु तँ चाहबे करी....।''

नागेसरक बातकेँ कटैत लुखिया बजली-

''नै! हम केकरो बेटीकेँ पाइ लऽ कऽ अपना घर नै आनब।''

नागेसर भौजीक गप्प सुनि चुप भऽ गेला।
मुस्की दैत लुखिया बजली-

''जहन दुआरपर आबि बेटा मंगलनि तँ हम दऽ देलियनि। आब हमरा की अछि। दू कर अन्न आ दू बीत कपड़ाटा चाही। घर

तँ आब ओकरे सबहक -बेटे-पुतोहुक- हेतै।''

डोमन बजला-

''समैध, पाँच गोटे जे बरियाती चलब, हुनकर सुआगत हम नीक जकाँ करबनि। बर-कनियाँ लेल जे नव घर ठाढ़ करैक वस्तु अछि से तँ देबे करब। तेकर अतिरिक्त एकटा बड़द आ एकटा लगहरि गाए सेहो देब।''

सुनिते सबहक मुहसँ हँसी निकलल। बिआहक दिन तँइ भऽ गेल। मुस्की दैत लुखिया बजली-

''आब की हम कहबनि जे समधीनो हमरे दऽ दोथु।''

ठहाका दैत डोमन उत्तर देलकनि-

''बाह-बाह, तब तँ दुनू रोटी चाउरेक।''

चारि बजे सूति-उठि चाह पीब, पान खा डोमन नागेसरकेँ कहलखिन-

''समैध, सभ बात तँ तँइ भाइए गेल। आब चलब।''

दुनू जोड़ धोती नागेसर आँगनसँ आनि आगूमे रखि देलकनि। धोती देखि डोमन बजला-

''समैध, केतबो गरीब छी तँए की मुदा इज्जति बचा कऽ रखने छी। बेटी दुआरपर केना धोती पहिरब?''

टाटक भुरकी देने लुखिया देखैत रहथि। डोमनक बात सुनि दोगसँ बजली-

''समैधकेँ कहियनु जे जहन बेटी औत तहन ने बेटीक घर हेतनि, ताबे तँ हमर छी कीने। हम दइ छियनि।''

ठहाका दैत डोमन बजला-

''जहन हमर बेटी ऐ घर औत तहन ने ओ समधीन हेती आकि अखने?''

तैबीच पीहुआ, सभकेँ गोड़ लगलक। एक्कैस रूपैआ डोमन पीहुआ हाथमे देलखिन।

थोड़े दूर अरिआति नागेसर घुमैत बाजल-

> "समैध, आब बढ़िऔ। नवम् दिनक दिन भेल। अहाँ काजमे लागि जाउ आ हमहूँ लागि जाइ छी।"

डोमन दुनू बापूत विदा भेला। आगू बेटीक बिआहक ओरिआओन रहनि किन्तु मनपर नचैत रहनि लुखियाक गप्प-

> "केकरो बेटीकेँ पाइ लऽ कऽ अपन घर नै आनब।" देह सिहरि गेलनि बेटा दिस तकलनि। ऊहो आब बिआह जोगर भऽ गेल...।

OOO

पछताबा

इंजीनियरिंगक रिजल्ट निकलिते रघुनाथ संगी-साथी संग नोकरी करए अमेरिका जेबाक तैयारी कऽ नेने छल। सासुरसँ गाम आबि पिताकेँ कहलनि-

> ‘‘बाबू, आइए रतुका गाड़ी पकड़ि चलि जाएब। परसू दस बजे सुभाषचन्द्र एयरपोर्टसँ जहाज फ्लाइ करत।’’

जहिना पाकल आम तोड़ैले कियो गाछपर चढ़ैए आ आम तोड़ैसँ पहिनइ खसि पड़ैए, तहिना शिवनाथोकेँ भेलनि। अचंभित होइत पुछलखिन-

> ‘‘किए? तोरा जोकर काज अपना ऐठाम नै छै?’’

पिताक बात सुनि कनीकाल गुम्म भऽ रघुनाथ बाजल-

> ‘‘ओइठाम अधिक दरमाहा दइए। संगहि अपना ऐठामक रूपैआसँ ओतुका रूपैओ महग छै।’’

अमेरिकाक सम्बन्धमे शिवनाथ किछु नै जनै छथि खाली एतबे बूझल छन्हि जे ऊहो एकटा देश छी। किछु काल गुम्म रहि कहलखिन-

> ‘‘तइसँ की, हम ओइ वंशक छी जे देशक गुलामी मेटबैले गोली खाए स्वतंत्र देशक उपहार-भार देलनि। तोरा सन-सन पढ़ल-लिखल जँ देशसँ चलि जाएत तँ तोहर सनक काज के करत आ केना हएत?’’

पिताक बातकेँ अनसून करैत गोड़ लागि, बैग लऽ ओ चुपचाप विदा भऽ गेल। शिवनाथ दुनू परानीक नजरि ताधरि रघुनाथक पीठपर रहलनि जाधरि ओ गाछीक अढ़ नै भऽ गेल। अढ़ होइते दुनूक मन ऐ रूपे चूर-चूर भऽ गेलनि जहिना ऐनापर पाथरक लोढ़ी खसलासँ होइए। अखनि धरि दुनूक मनमे पैघ-पैघ अरमान पैघ-पैघ सपना छेलनि जे एकाएक फुटल बैलूनक हवा जकाँ वायुमंडलमे मिलि गेलनि। बाढ़िक पानिमे डुमल खेतमे जहिना पानि सुखिते नव-नव पौघक अंकुर उगए लगैए

तहिना शिवनाथोक मनमे नव-नव विचार उगए लगलनि, अखनि दुनियाँ भलहिं गामे-घरक रूपमे किएक ने बूझि पड़ैत हुअए मुदा बापो-बेटाक दूरी हजारो कोस हटि रहल अछि। की हम सभ फेर गुलामीक रस्ता पकड़ि रहल छी आकि आजादीक रस्ता धऽ चलि रहल छी। एक दिस मातृभूमि लेल पिताक तियाग आ दोसर दिस बेटाक भटकल रस्ता...। भलहिं बेटाक आशा हुअए मुदा एहनो लोक तँ छथि जिनका बेटा नै छन्हि। मन पड़लनि पिताक ओ बात जे मृत्युसँ चौबीस घंटा पहिने मृत्यु-सय्यापर कहने रहथिन-

> ''बाउ, हमर खून वीरक खून छी जे भारतमाताकेँ चढ़ौलियनि। भलहिं अखनि लड़ाइक दौड़ अछि मुदा ओ खून स्वतंत्रता लइए कऽ छोड़त। तूँ सभ स्वतंत्र देशक स्वतंत्र मनुख हेबह। तँए अपन देशकेँ परिवार बूझि सभकेँ भाए-बहिन जकाँ इमानदारीसँ सेवा करैत रहिहऽ। जइसँ हमर आत्मा अनवरत प्रसन्न रहत। सेवाक मतलब खाली एतबे नै होइत जे देशक सीमाक रक्षा करैए बल्की ईहो होइत जे माथपर ईंटा उघि सड़क बनबैत आ हर-कोदारिसँ अन्न उपजबैए।''

पिताक बात मन पड़िते शिवनाथक हृदए तरल पानिसँ ठोस पाथर बनए लगलनि। नव-नव विचार मनमे जागए लगलनि। पत्नीक खसल मन देखि कहलखिन-

> ''अहाँ, एते सोगाएल किए छी?''

आँचरक खूटसँ दुनू आँखिक नोर पोछि रुक्मिणी कँपैत अवाजमे बजली-

> ''की सपना मनमे रहए आ कि देखि रहल छी। जौं से बुझितिऐ तँ एते देहकेँ किए धौजनि करितौं। नढ़िया-कुकुर जकाँ अनेर छोड़ि दैतिऐ।''

पत्नीक बेथा सुनि शिवनाथक हृदए पसीज गेलनि। मुदा अपन बेथाकेँ मनमे दबैत मुस्कीआइत कहलखिन-

> ''अखनि धरिक जे जिनगी रहल ओ कर्तव्यनिष्ठक रहल। अपन

कर्तव्य इमानदारीसँ निमाहलौं। सभकेँ अपना-अपना आशापर अपन जिनगी ठाढ़ कऽ जीबाक चाही। जहिना बर्खाक एक-एक बुन्न रस्ता धए चलैत-चलैत अथाह समुद्रमे पहुँच जाइए तहिना अपनो सभ अपन काजकेँ परिवारसँ आगू बढ़ा समाज रूपी समुद्रमे फेंटि दी। बेटा अछि तँए बेटापर अपन भार देमए चाहै छेलौं मुदा जिनका अपना बेटा नै छन्हि ओ केकरापर अपन भार देथिन। तँए अपनो सभ वएह बुझू! बाबूजी एते अरजि कऽ दऽ गेलथि जे इज्जत संग हँसैत-खेलैत जिनगी जीबैत रहब।''

सन् १९४२क असहयोग आन्दोलन सुनगैत-सुनगैत सौंसे देश पजरि गेल। जइमे मिथिलांचलोक योगदान केकरोसँ कम नै अछि। दसकोसी लोकक मन एते उत्साहित भऽ गेलनि जे चान-सुरूजमे आजादीक झंडा फहराइत देखथि। सुतली रातिमे ओछाइनपर सँ चहा कऽ उठि नारा लगबैत सड़कपर आबि जाइ छला। जे मिथिला याज्ञवल्क्य, गौतम, नारद सन-सन ऋषि पैदा केलक ओ पंचानन झा आ पुरन मण्डल सन वीर अभिमन्यु सेहो पैदा केने अछि। दसकोसीक वीर सिपाही माथमे कफन बान्हि, लाठीमे झंडा फहरा झंझारपुर सर्कल, रेलबे स्टेशन आ पोस्ट आफिसमे आगि लगबैले संग-संग रेल-लाइन तौड़ैले सर्कलक मैदानमे एकत्रित भेला। अंग्रेज पलटनक केन्द्र सर्कल छेलै। आन्दोलनकारीकेँ एकत्रित होइत देखि ऊहो सभ अपन बन्दूकमे गोली भरि-भरि तैयार भऽ गेल। आन्दोलनकारी भारत माताक नारा जगबैत आगू बढ़ल। अनधुन गोली पलटन सभ चलौलक। एक नै अनेक गोली पंचानन आ पुरनक छातीमे लगलनि। दुनू गोटे नारा लगबैत दम तोड़ि देलनि। खाली दुइए गोटेकेँ गोली नै लागल छेलनि, अनेको गोटे गोलीसँ घाइल भेला। ओइ घाइलमे शिवनाथक पिता देवनाथो छला। दहिना जाँघमे गोली लागल छेलनि। गोली तँ जांघक माँस-चमराकेँ कटैत हड्डी तोड़ैत निकलि गेलनि। मुदा घाइल भऽ ऊहो खसि पड़ला। पितियौत भाए हुनकर लटकल जांघक माँसकेँ तौनीसँ बान्हि, हुनका पीठपर उठा घरपर अनलकनि। चिकित्साक समुचित बेवस्था नै, तैपर गामे-गाम सिपाही दमन शुरू केलक। गामक-गाम आगि लगौलक। मर्द-औरतकेँ पकड़ि-पकड़ि बन्दूकक कुन्दा आ पएरक बूटसँ मारि-मारि बेहोश केलकनि। ओछाइनपर

पड़ल देवनाथक हृदैमे आगि धधकैत रहनि मुदा किछु करैक शक्ति नै रहि गेलनि। जीवन-मृत्युक बीच लटकल रहथि। तीसम दिन पराण छूटि गेलनि।

दस बर्खक शिवनाथ १५ अगस्त १९४७ ई. कँ आजादीक समए पनरह बर्खक भऽ गेल। पतिक मुइने शिवनाथक माए-राधाक मन टुटलनि नै बल्की आगिमे तपल सोना जकाँ आरो चमकए लगलनि। पाकल आमक आंठी जकाँ करेज आरो सक्कत भऽ गेलनि। गुलामीसँ मिझाएल दीपकेँ आजादीक नव तेल-बत्ती भेटलै, जइसँ नव-ज्योति प्रज्वलित भेल। अखनि धरिक अबेवस्थित परिवारकेँ दुनू माए-बेटा मिलि सुढ़ियाबए लगला, बेवस्थित बनबए लगला। अढ़ाइ बीघा खेतकेँ अपन दुनियाँ आ कर्मक्षेत्र बूझि दुनू माए-बेटा जी-जानसँ मेहनति करए लगला, जैपर परिवार नीक नहाँति ठाढ़ भऽ गेलनि। ओना शिवनाथक बिआह बच्चेमे भऽ गेल छेलै मुदा दुरागमन पछुआएल रहै। परिवारक बढ़ैत काज देखि बेटाक दुरागमन माए करा लेलनि।

देश आजाद होइते गामे-गाम स्कूल बनए लगल। ओना पढ़लो-लिखल लोक कम छला मुदा जेतबे छला ओ ओइ रूपे विद्या-दानमे भीड़ि गेला, जइसँ सभ गाममे तँ नै मुदा अधिकांश गाममे लोअर प्राइमरी स्कूल ठाढ़ भऽ गेल। केतौ-केतौ मिड़लो स्कूल आ हाइओ स्कूल बनल। केतौ-केतौ कौलेजो ठाढ़ भऽ गेल। अखनि धरि जे स्कूल ठाढ़ भेल ओ सामाजिके स्तरपर, सरकारी स्तरपर बहुत कम बनल। स्कूल खोलैक पाछू लोकक मनमे धरमस्थानक बूझब छेलै। गुरुओजी ओहने रहथि जे मात्र भोजनपर सेवा करैत रहथि। शनीचरा मात्र जीविकाक आधार छेलनि। पाइ लऽ कऽ पढ़ाएब पाप बूझल जाइ छेलै। ओना मिड़ल स्कूल, हाइ स्कूल आ कौलेजमे महिनवारी फीस लगै छल, जे संस्थागत सहयोग छल। स्कूल-कौलेज खुजने विद्याक ज्योति प्रज्वलित भेल मुदा अंडी तेलमे जरैत डिबियाक इजोत जकाँ, जखैनकि जरूरी अछि हजार वोल्ट बौलक इजोत जकाँ। ओना ठाम-ठीम संस्कृत विद्यालय सेहो अछि, मुदा...।

दुरागमनक तीन साल पछाति शिवनाथकेँ बेटा भेलनि। रघुनाथक जनम

होइते राधाक हृदए खुशीसँ सूप सन भऽ गेलनि। मनमे नाचए लगलनि बाँसक ओ बीट जइमे दिनानुदिन बेसी बाँसोक जनम होइत आ नमगर, मोटगर सुन्दर-सुडौलौ होइत। मनक खुशीसँ दुनियाँ फुलवाड़ी सदृश बूझि पड़ए लगलनि। बाधक-बाध धानक फूल, गाछीक-गाछी आमक मंजर, जामुन, लताम इत्यादिक फूलसँ सजल ई दुनियाँ सोहनगर लागए लगलनि। मुदा जहिना आसिन मास अकासकेँ करिया मेघ झँपने रहैए आ केतौ-केतौ मेघक फाटसँ सुरूजक इजोत निकलैए आ सेहो गाछे-बिरिछपर अँटकि जाइए, धरती-जमीन ओहिनाक-ओहिना अन्हार रहि जाइए, तहिना।

छबे मासक रघुनाथकेँ राधा अपन मुँह चमका-चमका दा-दा-दा सिखबए लगली। दादामे देवनाथक ओ रूप देखै छेली जे माथपर वीरक मुरेठा बान्हि, हरोथिया लाठीमे लाल झंडा टांगि, हँसैत गोली खेने रहथि।

चारि बर्ख टपिते शिवनाथ रघुनाथक नाओं गामक स्कूलमे लिखा देलखिन साले-साल टपैत रघुनाथ गामक स्कूल टपि गेल। मिड़ल स्कूल टपि साइंस रखि रघुनाथ केजरीवाल हाइ स्कूल झंझारपुरमे नाओं लिखौलक। जहिना विज्ञान विषए पढ़ैमे नीक लगै तहिना अंग्रेजीओ। जइसँ ठाकुरबाबू आ लत्तीबाबू बेसी मानथिन। चारि बर्ख पछाति प्रथम श्रेणीमे मेट्रिक पास केलक। बाढ़ि-रौदिक दुआरे उपजो-बाड़ी नीक नै होइ जइसँ परिवारो लड़खड़ाइते चलैत। बाहर जा कऽ आगू पढ़ब असंभव जकाँ रहै। मुदा संजोग नीक रहलै जे जनतो कौलेजमे साइंसक पढ़ाइ शुरू भेलै। रघुनाथो कौलेजमे नाओं लिखौलक।

रघुनाथकेँ कौलेजमे नाओं लिखेलाक सालभरि पछाति राधा -दादी- मरि गेली। पिताक श्राद्ध तँ शिवनाथ केनइ नै रहथि मुदा माएक श्राद्ध नीक जकाँ केलनि। जइसँ पाँच कट्ठा खेतो बिका गेलनि। तइले मन मलिन नै भेलनि। किएक तँ भोजमे खूब जश भेलनि। दू साल पछाति रघुनाथ फस्ट डिविजनसँ आइ.एस.सी. पास केलक। सत्तरि प्रतिशतसँ ऊपरे नम्बर एलै। आइ.एस.सी.क रिजल्ट सुनि शिवनाथकेँ बेटा पढ़बैक उत्साह बढ़लनि। खेत बेचब अधला नै बुझेलनि। मनमे एलनि जे रघुनाथ पढ़ि कऽ नोकरी करत आकि खेती करत। तहन खेतक जरूरते की रहतै। संगहि हमहूँ समाजकेँ एकटा सक्षम मनुख देबै।

इंजीनियरिंग, डाक्टरी पढ़बैमे केहेन खर्च होइ छै से तँ नीक जकाँ

बुझथि नै। मनमे होन्हि जे पाँच-दस कट्ठा जमीन बेचि बेटाकेँ पढ़ा देबै। मनमे उत्साह रहबे करनि तँए महग बूझि घराड़ीएमे सँ दू कट्ठा बेचि इंजीनियरिंग कौलेजमे बेटाक नाओं लिखा देलनि। नाओं लिखौलाक डेढ़ बर्ख बीतैत-बीतैत अदहा जमीन बिका गेलनि। आगूक अढ़ाइ बर्ख बाँकी देखि चिन्ता घेरए लगलनि। मन मानि गेलनि जे सभ खेत बेचनौं पार नै लागत। सोचैत-विचारैत तँइ केलनि जे पढ़ैक खर्चपर रघुनाथक बिआह करा देबै। बिआह भेनौं ओकरा पढ़ैमे बाधा थोड़े हेतै, पाँच बर्खक बादे दुरागमन कराएब। समस्याक समाधान होइत देखि मनमे खुशी एलनि। फेर मोनमे उठलनि जे समैओ बदलि रहल अछि। पहिने माए-बाप बेटा-बेटीक बिआहकेँ अप्पन कर्तव्य बुझै छला तँए पुछब जरूरी नै बुझथि। मुदा आब पूछब जरूरी भऽ गेल अछि। परिस्थिति देखि रघुनाथो बिआह करब मानि लेलक मुदा शर्त एकटा लगौलकनि जे लड़की रंग-रूपमे सुन्दर हुअए। जँ गुणवानक शर्त रहितनि तहन तँ ओझरा जइतथि। मुदा से नै भेलनि। बिआहक चर्च शिवनाथ चला देलखिन।

इंजीनियर वर तँए कथकियाक ढबाहि लागि गेलनि। मुदा कोनोक गाम अधला बूझि पड़नि तँ कोनोक परिवारक कुल-गोत्र। केतौ लड़की दब तँ केतौ उमरगर लड़की भाँज लगनि। होइत-हबाइत एकठाम कथा पटि गेलनि। गाम तँ नीक नै मुदा लड़कीओ गोर आ पढ़ैक खर्चो गछि लेलकनि। बिआह भऽ गेलै। बिआहक पछाति दुनू समधि विचारि लेलनि जे सालो भरि जे भार-दौरक फेरीमे पड़ब से नीक नै। तँए भार-दौरक बेवहार छोड़िए दियौ। दुनू गोटे सएह केलनि।

इंजीनियरिंगक अंतिम परीक्षा दऽ रघुनाथ सभ सामान लऽ सासुर आबि गेल। ओना दुरागमन बाँकीए मुदा सासुर तँ सासुरे छी, तँए चलि आएल। रिजल्ट निकलैमे तीन मास लागत। काजो तँ अखनि किछु नहियेँ अछि, तँए निश्चिन्तसँ सासुरमे रहैक विचार रघुनाथ कऽ लेलक। दसे दिन पछाति विदेशमे इंजीनियरक भेकेन्सी खूब भेलै। सभसँ बेसी अमेरिकामे भेलै। नव टेकनोलौजी एने नव जुगक आगमन भेल। नव मशीन नव इंजीनियरकेँ जनम देलक। मुदा पुरना तकनीको आ इंजीनियरो, अछैते औरुदे, फाँसीपर लटकए लगला। जहिना गामक-गाम हैजासँ मरैए तहिना इंजीनियरक जमात पटपटाए लगला। मुदा दबाइक करखन्ने नै जे

दबाइ बनौत!

परीक्षाक पेपर रघुनाथक नीक भेल तँए फेल करैक अन्देशे नै रहै। हाइए स्कूलसँ अमेरिकाक उन्नतिक आ सुख-मौजक सम्बन्धमे किताबो-पत्रिकामे पढ़ने आ लोकोक मुहेँ सुनने रहए। तँए मनमे गुदगुदी लगैत रहैए। ई भिन्न बात जे आठ मासमे अस्सीटा बैंक अमेरिकामे दिवालिया भेल!

रघुनाथ फस्ट डिवीजनसँ पास केलक। एक तँ फस्ट डिवीजन रिजल्ट, तैपर अमेरिकाक नौकरी। खुशीसँ रघुनाथक मन उड़िया गेलै। आवेदन केलाक आठे दिन पछाति चिट्ठी भेटलै। स्त्रीक गहना बेचि कऽ दुनू परानीक टिकट बनबौलक। ससुर पढ़ै धरिक खर्चा गछने रहनि तँए टिकटक खर्च दइसँ इन्कार केलकनि।

मिशिगन राज्यक राजधानीक शहर लानसिंग। ठंढ़ इलाका। ने अपना सभ जकाँ छह ऋतुक मौसिम बनैत आ ने ओकर हास-परिहास होइत आ ने रंग-बिरंगक गाछ-बिरिछ अपना सभ जकाँ होइत। लानसिंगक सतरह तल्लाक छोट-छोट तीन कोठरीक आँगन। जइमे ने सभ दिन सुरूजक रोशनी अबैए आ ने भोरे कौआ आबि ओसारपर बैसि सारि-सरहोजिक समाचार सुनबैए। रहैत-रहैत दुनू परानी रघुनाथकेँ पनरह बर्ख बित गेलनि। जवानीक सभ सपना मोने-मन गुमसड़ि रहल छेलनि।

रघुनाथकेँ अमेरिका गेने शिवनाथक जिनगीक गाछ मौलाएल नै, चतरि कऽ पाखरिक गाछ जकाँ झमटगर भऽ गेलनि। दुनू बेकतीक विचारो सुधरलनि। वंशगत सम्बन्ध क्षीण होइत-होइत सूखि गेलनि, सामाजिक सम्बन्ध मोटा कऽ जुआएल गाछक शील जकाँ बनि गेलनि। जहिना कोनो समांगकेँ मुइलापर परिवारक लोक आस्ते-आस्ते बिसरि जाइए, तहिना रघुनाथोकेँ दुनू परानी शिवनाथ सोलहन्नी बिसरि गेला। साल भरिक छाया आ सएक-सए बरिषक बर्खी करैक खगते नै रहलनि। वंश अंत हएत से सदः आँखिसँ शिवनाथ देखै छला। स्वतंत्र देशक गुलाम बुधि। केना नै बिसरितथि? ने कहियो एक्कोटा पत्र लिखि मन राखए चाहलनि आ ने कोनो मनोरथ मनमे संजोगि कऽ रखने रहथि। पढ़ल-लिखल तँ शिवनाथ नै मुदा 'हरिवंश पुराण'क कथा, गप-सप्पक क्रममे बेसी काल दोसराक मुहेँ सुनै छला।

स्वतंत्रताक पछाति विकासपुरक लोकोक विचार सुधरलनि। केना नै सुधरितनि? बूढ़-बच्चा छोड़ि गामक सभ लाठी-झंडा लऽ झंझारपुर सर्कल आगि लगबए जे गेल रहथि! आँखिसँ सभ किछु देखने रहथि! ओना हजार बीघा रकबाक गाम विकासपुर, जइमे साढ़े चारि सए परिवार हँसी-खुशीसँ कताक पुश्तसँ एकठाम रहैत आएल छला। स्वतंत्राक पूर्व मलिकाना -जमीनदारक- गाम रहए। मालगुजारीक लेन-देनमे सबहक जमीन निलाम भऽ जमीनदारक हाथमे चलि गेल छेलै। कियो अपन खेतक दखल तँ हुनका नै देलकनि मुदा बटेदार बनि उपजा बाँटि-बाँटि दिअ लगलनि। जागल गामक लोक देखि जेतबे-तेतबे दाम लए मालिक खेत घुमा देलकनि। अपन खेतकेँ स्थायी पूजी बूझि श्रमक पूजी जोड़ि जिनगीकेँ ठाढ़ करए लगला। बाढ़ि-रौदीक प्रकोप सालो-साल होइते रहै छेलै मुदा विचार आ कर्म बदलने ऊहो अभिशाप नै वरदान बनि गेलै। बाढ़ि देखि माथपर हाथ लऽ नै बैस, ओकर प्रतिकार करैक रस्ता अपनौलनि। तहिना रौदिओक प्रति केलनि। जइसँ बाढ़ि-रौदीसँ बचैक उपए कऽ लेलनि। सबहक एहेन धारणा बनि गेलनि। जे बाढ़िक उपद्रव मात्र सौन-सँ-कातिक चारि मास होइए बाँकी बारह मासक सालमे आठ मास तँ बचैए। जे आठ मास जमि कऽ मेहनति कएल जाए तँ बारहो मास हँसी-खुशीसँ गुजर चलि सकैए। तेतबे नै, पानि तँ आगि नै छी जे सभ किछुकेँ जरा देत। पानि तँ उत्पादित पूजी छी, तँए जरूरत अछि ओकर उपयोग करैक। तहिना रौदिओक सम्बन्धमे धारणा बनौने रहथि। खेतमे रंग-बिरंगक अन्न, फल, तरकारी अछि। ने सभ अन्न लेल एक रंग पानिक जरूरत होइए आ ने फले-तरकारी लेल। अधिक वर्षा भेने अधिक पनिसहू फसल होइए आ कम वर्षा भेने कम पनिसहू हएत। तैपर थोड़ेक सुविधा सरकारो देलक। नब्बे प्रतिशत अनुदानमे बोरिंग आ पचास प्रतिशत अनुदानमे पम्पसेट देलक। जइसँ पर्याप्त बोरिंग-पम्पसेट गाममे भऽ गेलै। किसानक हाथमे पानि चलि आएल। समाजक किसानक कान्हमे कान्ह मिला शिवनाथो चलए लगला। कम खेत रहितो हुनका अन्न-पानि उगरिए जाइ छन्हि।

छह बजे भोरे रघुनाथ धीपल-सराएल पानि मिला अदहा-छिदहा नहा, कपड़ा पहिर, चाह-बिस्कुट खा ड्यूटी चलि जाथि। असगरे श्यामा

डेरामे रहि जाइ छेली। ने अंग्रेजी भाषाक बोध छेलनि जे दोकानो-दौरीक काज कऽ सकितथि आ दोसरोसँ गप-सप्प करैत समए बितैबितथि। ओना बगलेक फ्लेटमे आरो-ओरो भारतीय -इंडियन- सभ रहैए। मुदा ऊहो कियो केरलक तँ कियो मद्रासक छथि। भाषाक दूरी देखि श्यामा मोने-मन सोचए लगली जे मनुखसँ नीक पशु होइए जे अपन स्वभावसँ एक-दोसरासँ मेलो रखैए। मनुख तँ मनुक्खे छी जे बोलेसँ राजा बनि जाइए। जहिना पिजराक सुग्गा अकासमे उड़ैत सुग्गा देखि कनैए तहिना कोठरीमे बैसलि श्यामाकेँ मोने-मन कुही होइ छेलनि। मनमे होइ छेलनि, कोन जनमक पाप कएल अछि जे एहेन गति भऽ गेल अछि। नैहरसँ सासुर धरिक सभ किछु हरा गेल।

भिनसरे डेरासँ निकलि रघुनाथ कार्यालय पहुँच जाइ छथि। कार्यालयेमे खाइ-पीबैक बेवस्था सेहो छै। मशीने संग रघुनाथ बारह घंटा बितबै छथि। बुधिसँ लऽ कऽ हाथ धरि मशीने संग भरि दिन रहैत-रहैत मशीन बनि गेलनि। संवेदनशून्य मनुख। जइमे दया, श्रद्धा, प्रेमक केतौ जगह नै। मुदा आइ रघुनाथकेँ कार्यालय पहुँचिते मनमे उड़ी-बीड़ी लागि गेलनि। काजक दिस एको-मिसिआ धियाने नै जाइ छेलनि। छुट्टीक दरखास दऽ कार्यालयसँ डेरा विदा भेला। डेरा आबि, देहक कपड़ा आ जुत्ता बिनु खोलनइ पलंगपर, चारू नाल चीत भऽ ओँघरा गेला। जहिना जेठ मासक तबल धरतीपर बिहरिया बर्खाक बुन्न खसिते गरमी-सरदीक बीच घनघोर लड़ाइ शुरू भऽ जाइए तहिना रघुनाथक मनमे वैचारिक संघर्ष हुअ लगलनि। एहेन जोरसँ वैचारिक बिहारि मनमे उठि गेलनि जे बुधि चहकए लगलनि। चहकैत बुधिसँ अनासुरती निकलए लगलनि-

> “हमरासँ सएओ गुना ओ नीक छथि जे अपना माथपर पानिक घैल उठा मातृभूमिक फुलवाड़ीक फूलक गाछ सींचि रहल छथि। अपन माए-बाप, समाज संग जिनगी बिता रहल छथि। आइ जे दुनियाँक रूप-रेखा बनि गेल अछि ओ किछु गनल-गूथल लोकक बनि गेल अछि। जिनगीक अंतिम पड़ावमे पहुँच आइ बूझि रहल छी जे ने हमरा अपन परिवार चिन्हैक बुधि भेल आ ने गाम-समाजकेँ...। दुनू आँखिसँ दहो-बहो नोर चुबि गालपर होइत पलंगपर खसए लगलनि।

शिवनाथ हँसैत ओछाइनपर सँ उठि पत्नीकेँ हाक पाड़लखिन-

"केतए छी, कनी एम्हर आउ?"

मुस्की दैत लग आबि रुक्मिणी बजली-

"भोरे-भोरे की रखने छी जे हाक पाड़लौं।"

"मनमे आबि रहल अछि जे अपन दुनू परानीक श्राद्ध कइए लैतौं। जँ हम पहिने मरि जाएब तँ अहाँक श्राद्ध हएत की नै। नै जँ पहिने अहीं मरि जाएब तँ हमर श्राद्ध हएत की नै।"

"अखनि हम थोड़े मरैवाली भेलौं हेन, जे मरब।"

"अपन बिआह बिसरि गेलिऐ? जहन अहाँ छह बर्खक रही आ हम सात बर्खक रही तहिए ने बिआह भेल रहए। मन अछि आकि नै जे खरहीसँ नापि कऽ जोड़ा लगौल गेल रहए।"

किछु काल गुम्म रहि रुक्मिणी बजली-

"अपन बिआह-दुरागमन आ माए-बाप जँ लोक बिसरि जाएत तँ ऊहो कोनो लोके छी।"

मुस्की दैत शिवनाथ कहलखिन-

"हमरा आँखिमे अहाँ वएह छी जे दुरागमन दिन झाँपल पालकीमे बैसि नैहरसँ सासुर आएल रही। अहीं कहूँ जे हमरा किए ने अहाँक चूड़ीक खनखनीक अवाजमे स्वर लहरी आ माथक सेनूरमे जिनगीक मधुर फल देखाए पड़त। पचहत्तरि पार कऽ अस्सी बर्खक बीच दुनू गोटे पहुँच चुकल छी तँए खुशी अछि। आँखिक सोझमे देखै छी जे बिआहक पाँचे दिन पछाति चूड़ीओ फूटि जाइ छै आ माथो धुआ जाइए। तैठाम हम-अहाँ भाग्यशाली छी की नै?"

पतिक बात सुनि रुक्मिणी मुस्कीआइत पतिक आँखिमे अपन आँखि गाड़ि पाछूसँ आगू धरिक जिनगी देखए लगली।

डाक्टर हेमन्त

सभ दिन चारि बजे भोरे उठैबला डाक्टर हेमन्त आइ छह बजे भिनसर उठला। अबेरे कऽ नीन टुटलनि। एना किए भेलनि? एना ऐ दुआरे भेलनि जे आन दिन परिवारसँ लऽ कऽ अस्पताल धरिक चिन्ता दबने रहै छेलनि। तँए कहियो भरि-भरि राति जगले रहि जाथि तँ कहियो-कहियो लगले-लगले निन्न टूटि जान्हि। कोनो-कोनो राति अनहोनी-अनहोनी सपना देखि चहा-चहा कऽ उठनि तँ कोनो-कोनो राति पत्नीसँ झगड़ैत रहि जाथि। छह बजे नीन टुटिते हेमन्त घड़ी देखलनि। मुदा अबेरो कऽ निन्न टुटने मनमे एक्को मिसिआ चिन्ता नै। मन हल्लुक, एकदम फुहराम। जेना मनमे चिन्ताक दरस नै। आन दिन ओछाइनेपर ढेरो चिन्ता घेरि लन्हि। अनेको समस्या, अनेको उलझन मनकेँ गछारि दन्हि। केसक की हाल अछि, बेटाकेँ नोकरी हएत की नै। क्लिनिकमे कम्पाउण्डरक चलैत रोगी पतरा रहल अछि। चोट्टा सभ दारू पीब-पीब अन्ट-सन्ट करैत रहैए आ पाइएक भाँजमे पड़ल रहैए। जइसँ मुँह-दुबर रोगी सबहक कुभेला होइ छै। अस्पतालोसँ बेर-बेर सूचना भेटैए जे ड्यूटीमे लापरवाही करै छिऐ। बातो सत्य छै मुदा की करब? केस छोड़ि देब तँ पिताक अरजल सम्पति बहि जाएत। क्लिनिकमे कम्पाउण्डर सभकेँ जँ किछु कहबै तँ क्लिनिके बन्न भऽ जाएत। जइसँ जेहो आमदनी अछि सेहो चलि जाएत। पुरान कम्पाउण्डर सभ अछि। सभ दिन छोट भाए जकाँ मानैत एलिऐ तेकरा किछु कहबै सेहो उचित नै। मुदा हमहींटा तँ डाक्टर नै छी, बहुतो छथि। रोगीकेँ की, जैठाम नीक सुविधा हेतै तैठाम जाएत...।

ओझड़ाएल जिनगी हेमन्तक। तँए सोझ-साझ विचार मनमे अबिते ने रहनि। मुदा आइ अबेर कऽ उठनौं मनमे कोनो ओझरी नै रहनि। किएक तँ काल्हिए कोर्टमे लिखि कऽ दऽ देलखिन जे, पिताक सम्पतिसँ कोनो मतलब नै अछि, तँए केससँ अलग कएल जाए। दोसर बेटोकेँ नोकरी भऽ गेलनि जे ज्वाइन करए काल्हिए माए आ स्त्री संग गेल। पिताक देल सम्पतिक लड़ाइमे अपनो बीस बर्खक कमाइ गेल रहनि। मुदा प्राप्तिक

नाओंपर जान बचा लड़ाइसँ अलग भेला। हेमन्तक मनमे उठलनि जे जहिना पिताक सम्पतिमे किछु नै प्राप्त भेल तहिना तँ रमेशोकेँ हमरा अरजल सम्पतिमे नै हेतै। मुदा हमरा आ रमेशमे अन्तर अछि। हम तीन भाँइ छी, जहिक बीच विवाद भेल मुदा रमेश तँ असगरे अछि। ओना हेमन्तक मनक चिन्ता काल्हिए समाप्त भऽ गेल रहनि मुदा काजक बेस्तता मनकेँ असथिर हुअए नै देलकनि। एके बेर आठ बजे रातिमे असथिर भेला। तेकर पछाति पर-पैखाना करैत, हाथ-पएर धोइत, खाइत नअ बजि गेलनि। भरि दिनक झमारल तँए ओछाइनपर पहुँचिते नीन आबए लगलनि। रेडियो खोलि समाचार सुनए चाहलनि, सेहो नै भेलनि। रेडियो बजिते रहल आ अपने सूति रहला।

नीन टुटिते डाक्टर हेमन्तकेँ चाहक तृष्णा एलनि। मुदा घरमे कियो नै। असगरे। नोकर ऐ दुआरे नै रखने जे काल्हि धरि पत्नी, बेटा-पुतोहु सभ रहनि। जे सभ घरक काज सम्हारैत रहथिन। ओना चाहक सभ समचा घरेमे मुदा बनौनिहारे नै। बिछानपर सँ उठि नित्य-कर्म केलनि। मनमे एलनि जे चाह पीब। मुदा चाह औत केतएसँ। से नै तँ पहिने दाढ़िए बना लइ छी आ क्लिनिक जाए लगब तँ रस्तेमे चाह पीब लेब। मुदा भोरे-भोर चाहक दोकानपर तँ ओ जाइए, जेकरा घर-परिवार नै रहै छै। हमरा तँ सभ किछु अछि। ओह! से नै तँ अपने चाह बना लेब। चाह बना, कुरसीपर बैसि चाह पीबए लगला आकि तखने फाटकपर सँ आवाज आएल-

"डाक्टर साहैब, डाक्टर साहैब।"

टेबुलपर कप रखि, फाटक दिस बढ़ैत डाक्टर हेमन्त कहलखिन-

"हँ, अबै छी।"

फाटकक बाहर डाकिया कन्हामे झोरा लटकौने हाथमे दूटा लिफाफ आ रसीद नेने ठाढ़। डाकियाकेँ देखि मुस्की दैत हेमन्त पुछलखिन-

"भोरे-भोर कोन शुभ-सन्देश अनलौं हेन?"

मुदा डाकिया किछु बाजल नै। खाँखी शर्टक ऊपरका जेबीसँ पेन निकालि, रसीदो आ पेनो बढ़ा देलकनि। दुनू रसीदपर हस्ताक्षर कऽ दुनू

लिफाफ नेने फेर कुरसीपर बैसि डाक्टर हेमन्त चाहक चुस्की लिअ लगला। एकटा लिफाफकेँ टेबुलपर रखि, दोसरकेँ खोलि पढ़ए लगला। सरकारी पत्रमे लिखल रहए-

> "पत्र देखिते डेरा छोड़ि दिअ। बाढ़िसँ बहुत अधिक जान-मालक नोकसान भेल अछि, तँए आइए लछमीपुर पहुँच जेबाक अछि। तइमे जौं कोनो तरहक आनाकानी करब तँ पुलिसक हाथे पठौल जाएब। एक काँपी पुलिसोक थानामे भेज देल गेल अछि।"

पत्र पढ़िते हेमन्तकेँ ठकमुड़ी लागि गेलनि। मोने-मन सोचए लगला जे घरमे असगरे छी। केना छोड़ि कऽ जाएब। समए-साल तेहेन भऽ गेल अछि जे दिनो-देखार डकैती होइए। केतौ डकैती तँ केतौ चोरि, केतौ अपहरण तँ केतौ हत्या हरिदम होइते रहैए। एहेन स्थितिमे घर छोड़ब उचित नै हएत। मुदा जहन नोकरी करै छी तँ आदेश मानै पड़त। जौं से नै मानब तँ जहिना बीस बर्खक कमाइ कोट-कचहरीक ईंटा गनैमे गेल तहिना जे पाँच बर्ख नोकरी बँचल अछि ऊहो ससपेंड, डिस्चार्जमे जाएत...।

डाक्टर हेमन्तकेँ कहियो जिनगीमे चैन नै। घोर-घोर मन होइत गेलनि। चाहो सरा कऽ पानि भऽ गेलनि। गुन-धुन करैत दोसर पत्र खोलला। पत्रमे लिखल रहए-

> "डाक्टर हेमन्त, काल्हि चारि बजे पछबरिया पोखरिक पछबरिया महारमे जे पीपरक गाछ अछि, ओइ गाछ लग पहुँच हमरा आदमीकेँ दू लाख रूपैआ दऽ देबै। नै तँ परसू ऐ दुनियाँकेँ नै देखि सकब।"

पत्र पढ़िते केरा-भालरि जकाँ हेमन्तक करेज डोलए लगलनि। सौंसे देहसँ पसीना निकलए लगलनि। थरथराइत हाथसँ पत्र खसि पड़लनि। मनक विचार विवेक दिस बढ़ए लगलनि। जहिना कियो सघन बोनमे पहुँच जाइत आ एक दिस बाघ-सिंहक गर्जन सुनैत तँ दोसर दिस सुरूजक रोशनी कम भेने अन्हार बढ़ैत जाइत, तहिना हेमन्तकेँ हुअ लगलनि। खाली मन छटपटा गेलनि। की करब, की नै करब, बुझबे ने करथि। जहिना भोथहा कोदारिसँ सक्कत माटि नै खुनाइत तहिना हेमन्तोक

विचार समस्याकेँ समाधान नै कऽ पबैत। रस्तेमे विलीन भऽ जाइत। कियो दोसर नै! जे मनक बात सुनैत, जइसँ मन हल्लुक होइतनि। तखने अस्पतालक एकटा कम्पाउण्डर रिक्शासँ आबि गेटपर पहुँच बाजल-

"डाक्टर साहैब...?

कम्पाउण्डरक अवाज सुनि औगता कऽ उठि हेमन्त गेट दिस बढ़ला। गेटपर रिक्शा लागल। रिक्शापर दूटा काटुन लादल। कम्पाउण्डरो आ रिक्शोबला रिक्शासँ हटि, बीड़ी पिबैत। डाक्टर हेमन्तपर नजरि पड़िते कम्पाउण्डर हाथक बीड़ी फेक, आगू बढ़ि प्रणाम करैत कहलकनि-

> "लगले तैयार भऽ चलू, नै तँ पुलिस आबि कऽ बेइज्जत करत। बेइज्जत तँ हमरो करैत मुदा पुलिसकेँ अबैसँ पहिने हम काटुन रिक्शापर चढ़बैत रही। तँए किछु ने कहलक। रस्तामे अबै छेलौं तँ मोहनबाबूकेँ गरियबैत सुनलियनि। तँए देरी नै करू। नबे बजे गाड़ी अछि। सबा आठ बजैए। अपना दुनू गोटे एक टीममे छी।"

जहिना जूड़शीतलमे मुइलो नढ़ियापर लाठी पटकैत तहिना कम्पाउण्डरक बात सुनि हेमन्तकेँ भेलनि। मिरमिराइत स्वरमे बजला-

> "दिनेश, हमरा तँ रातिएसँ तेते मन खराब अछि जे किछु नीके ने लगैए। एक्को मिसिआ देहमे लज्जतिए ने अछि। होइए जे तिलमिला कऽ खसि पड़ब।"

कम्पाउण्डर-

> "दबाइ खा लिअ। थोड़बे कालमे ठीक भऽ जाएब।"

हेमन्त-

> "देहक दुख रहैत तहन ने, मनक दुख अछि। ओ केना दबाइसँ छुटत।"

हेमन्तक मन आगू-पाछू करैत देखि कम्पाउण्डर कहलकनि-

“एक तँ ओहिना मन खराब अछि...।”

कम्पाउण्डरक बात सुनि हेमन्तक मन आरो मौला गेलनि। मनमे अनेको प्रश्न उठए लगलनि। देरी हएत तँ जबाबो देमए पड़त। मुदा घरो छोड़ब तँ नीक नै हएत। जखने घर छोड़ब तखने उचक्का सभ सभटा लूटि-ढडेरि कऽ लऽ जाएत। अपने नै रहने क्लिनिको नहियेँ चलत। अखनि जँ रमेशोकेँ अबैले कहबै सेहो केना हएत? काल्हिए तँ ऊहो ज्वाइन केलकहेँ। अगर जँ ओकरा माइएकेँ अबैले कहबनि तँ ऊहो जपाले। किएक तँ रोज देखै छिऐ अपहरणक घटना। हड़बड़बैत कम्पाउण्डर कहलकनि-

“अहाँ दुआरे हमहूँ नै मारि खाएब। हम जाइ छी।”

अधमड़ू भेल हेमन्त-

“दू मिनट रूकह। कपड़ा बदलै छी।”

हाँइ-हाँइ कऽ हेमन्त कपड़ा बदलि, बैगमे लुंगी, गमछा, शर्ट, पेन्ट, गंजी रखि विदा भेला। रिक्शापर चढ़िते रहथि आकि पुलिसक गाड़ी पहुँच गेल। तेते हड़बड़ा कऽ विदा भेल रहथि जे मोबाइल, घड़ी, दाढ़ी बनबैक वस्तु छुटिए गेलनि। पुलिसक गाड़ी देखि जे हड़बड़ा कऽ रिक्शापर चढ़ैत रहथि तखने चश्मा खसि पड़लनि। जेकर एकटा शीशो आ फ्रेमो टूटि गेलनि। पुलिसक गाड़ीकेँ घुमैत देखि मनमे शान्ति एलनि। रिक्शापर चढ़ि थोड़े आगू बढ़ला आकि डाक्टर सुनीलकेँ बच्चा सबहक संग बजारसँ डेरा जाइत देखलखिन। सुनीलबाबूकेँ देखि कम्पाउण्डरसँ पुछलखिन-

“सुनीलबाबू सभकेँ ड्यूटी नै भेटिलनि अछि, की?”

कनीकाल चुप रहि कम्पाउण्डर कहलकनि-

“नीक-नहाँति तँ नै बूझल अछि मुदा बूझि पड़ैए जे, जे सभ अस्पतालमे बेसी समए दइ छथिन हुनका सभकेँ छोड़ि देल गेलनि अछि।”

कम्पाउण्डरक बात सुनि डाक्टर हेमन्तकेँ अपनापर ग्लानि भेलनि। मन पड़लनि सुनीलबाबूक परिवार आ जिनगी। सुनीलबाबू सेहो डाक्टर।

दू भाँइक भैयारी। पितो जीविते। चारि बहिन। चारू सासुर बसैत। बहिन सबहक सासुर देहातेमे। जैठाम पढ़ै-लिखैक नीक बेवस्था नै। ओना अपनो सुनीलबाबू गामेमे रहि पढ़ने रहथि। डाक्टरी पास केलापर गाम छोड़लनि। हुनकर भैया दरभंगेक हाइ स्कूलमे शिक्षक। परिवारो नम्हर। माए-बाप संग दुनू भाँइक पत्नी आ बच्चा। तैपर सँ चारू बहिनक पढ़ै-लिखैबला बच्चा सभ। सुनीलबाबूक जिनगी आन डाक्टरसँ भिन्न। मात्र दू घंटा अपन क्लिनिक चलबैत रहथि। आठ घंटा समए अस्पतालमे दथि। अपना क्लिनिकमे चारिटा कम्पाउण्डर आ जाँच करैक सभ यंत्र रखने। जाँच करैक पाइमे सभ कम्पाउण्डरकेँ परसेनटेज दथि। जइसँ काजो अधिक होइत। कम्पाउण्डरो सभकेँ नीक कमाइ भऽ जाइत तँए इमानदारीसँ ऊहो सभ श्रम करैत। ओना सभ काज कम्पाउण्डरे कऽ लैत मुदा हिसाब-बाड़ी आ जाँचक चेक अपनेसँ करथि। जइसँ अस्पतालोमे जाँच करौनिहार दोहरा कऽ अबैत। आ आन-आन प्राइवेट खानगी जाँच घरक काज सेहो पतराएल। तेतबे नै डाक्टर सुनीलक चर्चा सीतामढ़ी, दरभंगा, सुपौल आ समस्तीपुर जिलाक गाम-गामक लोकक बीच होइत। जहिना धारक पानि शान्त आ अनवरत चलैत रहैत, तहिना सुनीलक परिवार। कोनो तरहक हड़-हड़-खट-खट परिवारमे कहियो नै होइत। डाक्टर सुनीलक परिवारक सम्बन्धमे सोचैत-सोचैत डाक्टर हेमन्त अपनो परिवारक सम्बन्धमे सोचए लगला। मन पड़लनि पिता। पिता बंगालसँ डाक्टरी पढ़ि गामेमे प्रैक्टीश शुरू केलनि। किएक तँ सरकारी अस्पताल गनल-गूथल। मुदा रोगीक कमी नै। कमी इलाज आ इलाज कर्ताक। नम्हर इलाका। दोसर डाक्टर नै। गाम-घरमे ओझा-गुनी, झार-फूक, जड़ी-बुटीसँ इलाज चलैत। ओना हेमन्तक पिता-डाक्टर दयाकान्त सभ रोगक जानकार, मुदा तीनिए तरहक रोगक -टुटल हाथ-पएरक पलस्तर, साँपक बीख उतारब आ बतहपन्नी- इलाजसँ पलखति नै। तँए ओझो-गुनीक चलती पूर्ववते। कमाइओ नीक। जइसँ दू महला मकानो आ पचास बीघा खेतो किनलनि। तीनू बेटोकेँ खूब पढ़ौलनि। जेठका ओकील, मझिला डाक्टर आ छोटका प्रोफेसर। जाधरि दयाकान्त जीबैत रहलखिन ताधरि गामो आ इलाकोमे सुसभ्य आ पढ़ल लिखल परिवारमे गिनती होन्हि। तीनू भाँइओक बीच अगाध सिनेह। जेठ-छोटक विचार

सबहक मनमे। जइसँ माएओ-बाप खुशी। ओना माए पढ़ल-लिखल नै मुदा परम्परासँ सभ बुझैत। जखैनकि पिता आधुनिक शिक्षा पाबि आधुनिक नजरिसँ सोचथि। तीनू भाँइक मेहनति देखि पिताकेँ ई खुशी होइत जे परिवारक गाड़ी आगू मुहेँ नीक जकाँ ससरत। बेटा सबहक बिआह इलाकाक नीक-नीक परिवारमे पढ़ल-लिखल लड़की संग केलनि। दहेजो नीक भेटलनि।

दयाकान्त मरि गेलखिन मुदा स्त्री जीविते रहनि। तीनू भाँइ अपन-अपन जिनगीमे ओझराएल। अपन-अपन परिवार संग रहैत, घरपर खाली माइएटा। तीनू भाँइक परिवारक गारजनी स्त्रीक हाथमे। एक-दोसरसँ आगू बढ़ैक हरिदम प्रयास करैत। जइसँ गामक सम्पतिपर नजरि जाए लगलनि। गामक सम्पति अधिकसँ अधिक हाथ लागए तइ भाँजमे बौद्धिक व्यायाम नीक-नहाँति शुरू भेल। मुकदमा बाजी भेल। एकटा कोठरी आ दू बीघा खेत माएकेँ कोटसँ भेटलनि। बाँकी घरो आ खेतो जप्त भऽ गेलनि। एक सए चौआलीस लागि गेलै जइसँ पुलिसक ड्यूटी भऽ गेलै। बीस बर्ख पछाति डाक्टर हेमन्त लिखि कऽ कोर्टमे दऽ देलखिन जे हमरा ऐ सम्पतिसँ कोनो मतलब नै।

दरभंगा प्लेटफार्मपर डाक्टर हेमन्त देखलनि जे दर्जनो डाक्टर जा रहल छी। दर्जनो कम्पाउण्डरो छै। मुदा सबहक मुँह लटकल। एक्को मिसिआ मुँहमे हँसी नै। जहिना ठनका ठनकलापर सभ अपने-अपने माथपर हाथ रखि साहोर-साहोर करैत तहिना बाढ़िक इलाकाक ड्यूटीसँ सबहक मनपर भारी बोझ, जइसँ सभ मोने-मन कबुला-पाती करैत। हे भगवान, हे भगवान करैत। कियो-केकरो टोकैत नै। आँखि उठा कऽ देखि फेर निच्चाँ कऽ लैत।

निर्मली जाइवाली गाड़ी पहुँचल। गाड़ी पहुँचिते सभ हड़बड़ करैत, अपनो आ समानो सभ उठा-उठा गाड़ीमे चढ़ौलनि। हेमन्तो चढ़ला। कम्पाउण्डरकेँ बीड़ीक तृष्णा चढ़लै। दुनू काटुन गाड़ीमे चढ़ा अपने उतरि कऽ पानक दोकान दिस बढ़ल। तखने पनरह-बीसटा तरकारीवाली आबि गाड़ीक डिब्बामे कियो छिट्टा चढ़बैत तँ कियो मोटा। तेसर यात्री सभ, तरकारीवालीक काँइ-कच्चर सुनि-सुनि आगू बढ़ि जाइत। कम्पाउण्डरो हाँइ-हाँइ कऽ चारि दम बीड़ी पीब दौगल आबि बोगीक आगूमे ठाढ़ भऽ

गेल। तरकारीवाली सबहक झुण्ड देखि कम्पाउण्डरकेँ मनमे हुअ लगलै जे हमरा चढ़िए ने हएत। चुपचाप निच्चाँमे ठाढ़। गाड़ीक भीतर बैसल एकटा पसिन्जर उठि कऽ आबि एकटा मोटाकेँ निच्चाँ धकेल देलक। जइ तरकारीवालीक मोटा खसल रहै ओ ओइ आदमीक गट्टा पकड़ि निच्चाँ उतारल। निच्चाँ उतारिते घोरन जकाँ सभ तरकारीवाली लुधकि गेल। गारिओ खूब पढ़लक आ मारबो केलकै। तखने बोगीक मुँह खाली देखि कम्पाउण्डर चढ़ि गेल। गाड़ीकेँ पुक्की दैते सभ हाँइ-हाँइ कऽ चढ़ए लगल मुदा झगड़ा नै छुटलै। गारि-गरौबलि होइते रहल। जेते हल्ला सौंसे गाड़ीमे लोकक बजलासँ होइत रहै, ओते खाली ओइ एक्के डिब्बामे होइ। अकछि कऽ डाक्टर हेमन्त सीटपर सँ उठि समान रखैबला ऊपरकापर जा कऽ बैगकेँ सिरमामे रखि सूति रहला। ओँघराइते अपना जिनगीपर नजरि गेलनि। मोने-मन सोचए लगला जे पिताजी तँ हमरे सबहक सुख लेल ने ओते सम्पति अरजलनि। मुदा की हमरा सभकेँ ओइ सम्पतिसँ सुख होइए? अपनो कमाइ तँ कम नै अछि। मुदा चौबीस घंटाक दिन-रातिमे चैनसँ केते समए बीतैए? जहिना खाइ काल फोन अबैए तहिना सुतै काल। की यएह छी सुखसँ जिनगी बिताएब? मुदा ऐ प्रश्नक उत्तर सोचमे ऐबे ने करनि। फेर मन उनटि कऽ जिनगीक पाछू मुहेँ घुरलनि। मनमे एलनि, जे माए धाकड़ सन-सन तीन बेटाक छी, वेचारीकेँ कियो एक लोटा पानि देनिहार नै। किएक ने वेचारीक मनमे उठैत हेतनि जे ऐ बेटासँ बिनु बेटे नीक? हमरो अहिना ने हएत, तेकर कोन गारंटी।

गाड़ी घोघरडीहा पहुँचल। यात्री सभ उतरबो करए आ बजबो करए जे किसनीपट्टीसँ आगू लाइन डूमि गेल छै, तँए गाड़ी आगू नै बढ़त। कम्पाउण्डर उठि कऽ हेमन्तक पएर डोलबैत पुछलकनि-

> ''डाक्टर साहैब, नीन छिऐ।''
>
> ''नै''
>
> ''सभ उतरि रहल अछि। गाड़ी आगू निर्मली नै बढ़त। उतरि जाउ?''

कम्पाउण्डरक बात सुनि हेमन्तक मनमे अस्सी मन पानि पड़ि गेलनि। मुदा उपए की? अधमडू जकाँ उतरलथि। प्लेटफार्मपर

रिक्शाबला, टमटमबला हल्ला करैत जे कोसीक पछबरिया बान्हपर जाएब।''

एकटा रिक्शाबलाकेँ हाथक इशारासँ कम्पाउण्डर हाक पाड़ि पुछलक-

''हम सभ लछमीपुर जाएब। तोरा बूझल छह?''

रिक्शाबला-

''हमरो घर लछमीएपुर छी। बाढ़ि दुआरे ऐठाम रिक्शा चलबै छी।''

कम्पाउण्डर-

''ऐठीमसँ केना-केना रस्ता हेतै?''

रिक्शाबला-

''ऐठीमसँ हम बान्हपर दऽ आएब। ओइठीमसँ नाव भेटत, जे लछमीपुर पहुँचा देत। ऐठीमसँ हम नेने जाएब आ अपने भैयाबला नावपर चढ़ा देब।''

कम्पाउण्डर-

''बड़बढ़ियाँ, काटुन चढ़ाबह।''

सभ कियो रिक्शापर चढ़ि विदा भेल। पुबरिया गुमती लग जैठाम चाउरक बड़का मिलक खंडहर अछि तेतए पहुँच रिक्शावलाकेँ हेमन्त पुछलखिन-

''लछमीपुर केहेन गाम अछि?''

रिक्शाबला-

''बड़ सुन्दर गाम अछि। सन्मुख कोसीसँ मील भरि पछिमे अछि। गामक सभ मेहनती। बाढ़िक समैमे हम सभ रिक्शा चलबै छी आ जहन पानि सटैक जाइ छै तहन जा कऽ खेती करै छी। गाएओ-महिंस पोसने छी। केते गोटे नाव चलबैए आ केते गोटे मछबारि करैए। हमरा गामक लोक पंजाब, डिल्ली नै

जाइए। आन-आन गाममे तँ पंजाब, डिल्लीक धरोहि लागि जाइ छै। से हमरा गाममे नइए। माछक नाओं सुनिते कम्पाउण्डर पुछलक-

“तब तँ माछ खूब सस्ता हेतह?”

“हँ, कोनो की जीरा रहै छै। सभ अनेरूआ। एहेन सुअदगर माछ शहर-बजारमे थोड़े भेटत। शहर-बजारक माछ तँ सड़ल-सुड़ल पानिक डबरा महक रहैए।”

कोसीक पछबरिया बान्हपर पहुँचिते रिक्शाबला अपन भौयाक घाटपर रिक्शा लऽ गेल। भाएक रिक्शा देखिते भागेसर नावपर सँ बान्हपर आएल। दुनू भाँइ दुनू काटुन नावपर रखलक। अदहा नावपर तख्ता बिछौने आ अदहा ओहिना। तख्तापर पटेरक पटिया बिछौल। नावपर बैसि हेमन्त पूब मुहेँ तकलनि तँ बूझि पड़लनि जे समुद्रमे जा रहल छी। सौंसे देह सर्द भऽ गेलनि। मनमे डर पैसि गेलनि जे केना ऐ पानिमे जाएब। मन पड़लनि दरभंगाक पीच परक कार। मुदा एक्सिडेंट तँ ओतौ होइ छै। ओतौ लोक मरैए। फेर मनमे एलनि जे महेन्द्रूक नाव जकाँ नावमे इंजनो नै छै। जँ कहीं बीचमे लग्गी छूटि-टूटि जेत्तै तँ भँसिए जाएब। केतए जाएब केतए नै। अनासुरती मनमे एलनि जे अखनि धरि कम्पाउण्डरकेँ नोकर जकाँ बुझै छेलिऐ ओ उचित नै। ई तँ छोट भाए तुल्य अछि। नव विचार मनमे उठिते कम्पाउण्डरकेँ कहलखिन-

“बौआ, धन्य अछि ऐठामक लोक। जे सचमुच देवीक पूजो करैए आ लड़बो करैए। किए ने जिबठगर हएत।”

नाव खुगलै, माङि सोझ कऽ नैया कमलेसरीक गीत उठौलक। नैयाकेँ लग्गी उठबैत आ पानिमे रखैत देखि डाक्टर हेमन्त मोने-मन सोचए लगला जे एहेन मेहनति केनिहारकेँ कोन जरूरत दबाइ आ व्यायामक छै। मन पड़लनि रामेश्वरम। समुद्रक झलकैत पानि। जइमे लहरि सेहो उठैत। तहिना तँ ओहूठाम पानिक लहरि अछि। फेर मन पड़लनि जेसलमेरक बालु। अहिना उज्जर धप-धप केतौ-सँ-केतौ बालु। कमलेसरीक गीत समाप्त होइते नाविक कोसी मैयाक गीत उठौलक। अजीब साजो। जहिना नावमे खट-खटक अवाज तहिना लग्गीक। लग्गीक पानि देहोपर

खसै मुदा तँए की ओकर पसीना निकलब रूकलै?

डाक्टर हेमन्तक मन फेर उनटलनि। मिलबए लगला समुद्रक लहरि आ कोसीक धाराकेँ। समुद्र रूपी समाजमे सेहो समुद्र जकाँ लहरिओ उठैए आ धारक बेग जकाँ सेहो रहैए। कहियो काल समुद्रक लहरि जकाँ सेहो लहरि समाजमे उठैए मुदा ओ धीरे-धीरे असथिर भऽ जाइए। मुदा कोसीक धार जकाँ जे बेग चलैत ओ पैघसँ पैघ पहाड़केँ तोड़ि धारो बना दैत आ समतल खेतो। पुरानसँ पुरान गामक अधला परम्पराकेँ तोड़ि नवमे बदलि दैत। जहिना मौसिम बदललापर गाछक पुरान पात झड़ि नव पातसँ पुनः लदि जाइत, तहिना। असीम विचारमे डुमल हेमन्तक मुँह अनासुरती नाविककेँ पुछलक-

"केते दूर अहाँक गाम अछि?"

नैया-

"छह कोस।"

"केते समए जाइमे लागत?"

"भट्ठा दिस जाएब। तँए जल्दीए पहुँच जएब।"

जल्दीक नाओं सुनि हेमन्तक मनमे आशा जगल। मुदा ओ आशा लगलेमे जाए लगलनि। किएक तँ सौंसे पानिए देखथि, गाम-घरक केतौ पता नै। चिन्तित भऽ चुपचाप भऽ गेला। अपना सुढ़िमे नैया गीत गबैत। मनमे कोनो विकारे नै। मुदा हेमन्तकेँ कखनो गीत नीको लगनि आ कखनो झड़कबाहिओ उठनि। तखने एकटा मुर्दा भँसल जाइत रहए। सबहक नजरि ओइ मुर्दापर पड़ल। मुर्दा देखि हेमन्तक नजरि अस्पतालक मुर्दापर गेलनि। मुदा दुनूक दू कारण। एकक जिनगीक अंत रोगसँ तँ दोसराक बाढ़िसँ। नब-नब समस्या उठि-उठि हेमन्तक मनकेँ घोर-मट्ठा कऽ देलकनि। मनक सभ विचार हराए लगलनि। तैबीच एकटा किलो चारिएक रौह माछ कूदि कऽ नावमे खसल। माछ देखि हेमन्तोक आ कम्पाउण्डरोक मन चट-पट करए लगलनि। लग्गीकेँ माड़िपर रखि भागेसर माछकेँ पकड़ि, पानि उपछैबला टीनमे रखलक। माछकेँ टीनमे रखि नैया बाजल-

"अहाँ सबहक जतरा बनि गेल।"

नैयाक शुभ बात सुनि हेमन्तक मन फेर ओझरा गेलनि। मनमे उठए लगलनि जे जतरा केकरा कहबै। घरसँ विदा भेलौं तेकरा आकि कार्यस्थल तक पहुँचैकेँ आकि काज सम्पन्न कऽ घर पहुँचलाकेँ कहिऐ? तहूसँ आगू जे काजक बीचोमे नव काज उत्पन्न भऽ जाइत। फेर नैयाकेँ पुछलखिन-

"आब केते दूर अछि?"

हाथ उठा आँगुरसँ दछिन दिस देखबैत नैया कहलकनि-

"वएह हमर गाम छी। गोटे-गोटे जमुनीक गाछ देखै छिऐ? अदहा कोस करीब हएत।"

अदहा कोस सुनि कम्पाउण्डर चहकि उठल-

"डाक्टर साहैब, पाँच बजैए। अदहा घंटा आरो लागत। साढ़े पाँच बजे तक पहुँच जाएब।"

"भने सबेरे-सकाल पहुँच जाएब।"

कहि डाक्टर हेमन्त देखए-सोचए लगला, अकासमे चिड़ै सभ नै उड़ैए। किएक तँ चिड़ै ओइठाम उड़ैत जैठाम रहैक ठौर होइत। मुदा से तँ नै। सौंसे बाढ़िए पसरल। मुदा तैयो गोटे-गोटे मछखौका चिड़ै जरूर उड़ैए...।

लछमीपुर दिस अबैत नावकेँ देखि गामक धियो-पुतो, स्त्रीगणो आ गोटे-गोटे पुरुखो घाटपर ठाढ़ भऽ एक दोसरसँ कहैत।

"चाउर-आँटाबला छिऐ।"

"नुओ-बसतर हेतै।"

"तिरपालो हेतै।"

"बड़का हाकीम सभ छिऐ।"

घाटपर आबि नाव रूकल। मुदा पेंट-शर्ट पहिरने डाक्टर आ कम्पाउण्डरकेँ देखि जनिजाति सभ मुँह झाँपए लागलि। मरद सभ सहमि

गेल। धिया-पुता डरा गेल। नावकेँ बान्हि नैया सुलोचनाकेँ कहलक-

> "हे गइ सुलोचना, डाकडर सैब सभ छथिन। बक्सामे दबाइ छिऐ। हम दबाइ उतारै छी तूँ टीन उतार। टीनमे एकटा नम्हर माछ छौ। खूब नीक जकाँ माछकेँ तरि डाकडर सैबकेँ खुआ दहुन।"

माछ उतारि सुलोचना अँगना लऽ गेल। टीन रखि बाड़ीक कलपर आबि हाथ धोलक, आँचरसँ हाथ पोछि, स्कूलक ओछाइन झाड़ि बिछबए लागलि। बिछान बिछा, दौग कऽ आँगनसँ बड़का जाजीम आ दूटा सिरमा आनि लगौलक। हेमन्तो आ दिनेशो आगूमे ठाढ़। मुदा ओते लोकक बीच हेमन्तोक आ दिनेशोक नजरि सुलोचनेक देह आ काजपर नचैत। बिछान बिछा सुलोचना हेमन्तकेँ कहलकनि-

> "डाक्टर साहैब, बिछान बिछा देलौं, आब आराम करू।"

दिनेश चुप्पे। मुदा हेमन्त बजला-

> "बुच्ची, देह भारी लगैए। ओना नावपर आरामेसँ एलौं। मुदा तैयो देह भरियाएल लगैए। पहिने नहाएब।"

> "बड़बढ़ियाँ।"

कहि सुलोचना आँगन बाल्टी-लोटा आनए गेलि। आँगनसँ बाल्टी-लोटा नेने कलपर पहुँचल। दुनूकेँ माटिसँ माँजि, बाल्टीमे लोटा रखि, पानि भरि, हेमन्तकेँ कहलक-

> "डाक्टर साहैब, नहा लिअ।"

चहारदेबालीसँ घेरल टंकीपर नहाइबला डाक्टर हेमन्त खुला धरती-अकासक बीच नहाइले जेता। तँए किछु सोचै-विचारैक प्रश्न मनमे उठि गेलनि। मुदा बहुत सोचैक जरूरत नै पड़लनि। अपना-अपना उमरबला सभकेँ डोरीबला पेंट तैपर सँ केकरो लुंगी तँ केकरो चरिहत्थी तौनी पहिरने देखलखिन। ऊहो सएह केलनि। मुदा बारह बर्खक सुलोचना कलपर सँ हटल नै। मातृत्वक दुआरिपर पहुँचल सुलोचनामे फूलक टुस्सी जरूर अबि गेल छेलै। मुदा हेमन्तोक मनमे डाक्टरक विचार। ओना

डाक्टर हेमन्त शरीरक सभ अंगक गुण-धर्म बुझथि मुदा एहनो तँ वस्तु अछि जे गर्म हवाक रूपमे रहैत। जइमे आनन्द आ सृजनक गुण होइत। सुलोचनोमे फूलक कोढ़ी जे सुगंधक वाल्यावस्थामे प्रस्फुटित होइत, महमही हवामे...। एक लोटा माथपर पानि ढारला पछाति हेमन्तक मनमे एलनि जे अखनि हम दुनियाँक ओइ धरतीपर छी जैठाम जीवन-मरण संगे रहैए। मुदा तैठाम एहेन सौम्य-सुशील-अल्हड़ वाला केते खुशीसँ चहचहा रहल अछि।

तीन साल पहुलका बात छिऐ। जइ बाढ़िमे केतेक गाम, केतेको मनुख आ केतेको सम्पति नष्ट भेल छल। तँए की? जे बँचल अछि ओ ओइ गामकेँ छोड़ि देत। कथमपि नै। मुदा बाढ़ि अनहोनी नै रहए। बैरेजक फाटक खोलल गेल रहए। फाटको खोलैक मजबुरी रहए। किएक तँ बैरेजक उत्तर तेते पानिक आमदनी भऽ गेलै जे दुर्दशाक अंतिम शिखरपर पहुँच सकै छेलै। मुदा सुदूर गाममे जानकारीक साधन नै आ ने बँचैक उपए। कोसीक दुनू बान्हक बीच समुद्र जकाँ पानि पसरि गेलै। थाहसँ अथाह धरि। कुनौलीसँ दछिन, कोसी धारक कातमे एकटा गाम। ओही गामक सुलोचना। जेकर सभ किछु मनुखसँ घर धरि दहा गेलै। मुदा सुलोचना जे बँचल से पढ़ैले कुनौली गेल छलि तँए। स्कूलसँ घर जाइ काल बाढ़िक दृश्य देखलक। दृश्य देखि बान्हेपर बपहारि काटए लागलि। तखने लछमीपुरक चारि गोटे बजारसँ समान खरीद नाव लग अबैत रहए। सुलोचनाकेँ कनैत देखि जीयालाल पुछलकै-

"बुच्ची, किए कनै छेँ?"

कनैत सुलोचना-

"बाबा, हम पढ़ैले गेल छेलौं। तैबीच हमर गामे दहा गेल। आब हम केतए रहब?"

जीयालाल-

"हमरा संगे चल। जहिना बारहटा पोता-पोतीकेँ पोसै छी तहिना तोरो पोसबौ।"

जीयालालक विचार सुनि सुलोचनाक हृदैमे जीबैक आशा जगल।

कानब रूकि गेलै। मुदा कखनो-काल हुचकी होइते। नावपर सभ समान रखि चारू गोटे बान्हपर आबि चीलम पीबैक सुर-सार करए लगल। एक भागमे सुलोचनो किताब नेने बैसलि। बटुआ खोलि रघुनी चीलम, कंकड़क डिब्बा आ सलाइ निकालि बीचमे रखलक, एक गोटे चीलमक ठेकी निकालि, चीलमो आ ठेकीओकेँ साफ करए लगल। दोसर गोटे डिब्बासँ कंकड़ निकालि तरहत्थीपर औँठासँ मलए लगल। चीलम साफ भेलै। ओइमे ठेकी दऽ कंकड़बला हाथमे देलक। कंकड़बला चीलममे कंकड़ बोझि दुनू हाथसँ चीलमक पछिला भाग पकड़ि मुँहमे भिरौलक। मुँहमे भिरैबते रघुनी सलाइ खड़रि कंकड़मे लगबए लगल। दू-चारि बेर मुँहक इंजनसँ प्रेशर दैते चीलम सुनगि गेल। चीलमकेँ सुनगिते तेते जोरसँ दम मारलक जे धुआँ संग धधरो उठि गेलै। मुदा चीलमक दुषित हवासँ धधड़ा मिझा गेल। बेरा-बेरी चारू गोटे चीलम पीब मस्त भऽ नाव दिस विदा भेल। साँझू पहरकेँ जहिना गाए-महिंस बाधसँ घर दिस अबैत। जेकरा पाछू-पाछू छोट-छोट नेरू-पर्डू झुमैत, लुदुर-लुदुर मगन भऽ चलैत, तहिना सुलोचना लछमीपुरबला सबहक संगे पाछू-पाछू नावपर पहुँचल। नावपर चढ़िते लग्गा चलौनिहार कोसी महरानीक दुहाइ देलक। सुलोचनो बाजलि-

“जय।”

नाव खुगल। लछमीपुरक चारू गोटेक मन सुलोचनाक जिनगीपर। मुदा सुलोचनाक परिवारक बिछोह, दुखसँ सुख दिस जाए लगल। जे सुलोचना गाम आ परिवारक केतौ अता-पता नै देखलक, ओइ सुलोचनाक मनमे उठए लगल जे गाम-घर भलहिं दहा गेल मुदा माए-बाप जरूर जीबैत हएत। किएक तँ मनुख निर्जीव नै सजीव होइत। बुधि-विवेक होइत। तँए ओ दुनू गोटे जरूर केतौ जीबैत हएत। जे आइ-ने-काल्हि जरूर मिलबे करत। तँए सुलोचनाक मनमे जिनगी भरिक दुख नै, किछु दिनक दुख अछि। जे कहुना नै कहुना कटिए जाएत। नाव लछमीपुर पहुँचल। जीयालालक बारहोटा पोता-पोती दौग कऽ नाव लग आएल। पोता-पोतीकेँ देखि जीयालाल कहलक-

“बाउ, तोरा सभले एकटा बहिन नेने एलिअ।”

सुलोचना पोता-पोती सबहक पहुन भऽ गेलि। दोसर दिन जीयालाल एकटा घर बना, सुलोचनाकेँ गामक बच्चा सभकेँ पढ़बैले कहलक। गामक बच्चा सभकेँ सुलोचना पढ़बए लागलि। वएह सुलोचना छी।

हेमन्तो आ दिनेशो नहाएल। नहा कऽ जाबे हेमन्त कपड़ा बदलि, केश सेरिया, तैयार भेला ताबे सुलोचनो आ जीयालालक जेठकी पोती, कमलीओ चूड़ा भूजि, माछ तड़ि लेलक। दूटा थारीमे चूड़ा-भुजा आ तड़ल माछ साँठि दुनू बहिन दुनू थारी नेने हेमन्त लग पहुँच आगूमे रखि देलकनि। बड़का फुलही थारी तइमे चूड़ाक ऊपरमे माछक नम्हर-नम्हर तड़ल कुट्टिया पसारल। थारी रखि कमली पानि आनए गेलि। सुलोचना आगूमे बैसि गेलि। दुनू गोटे खाइत-खाइत दसो माछक कुट्टिया आ थारीओ भरि चूड़ा खा लेलनि। शुद्ध आ मस्त भोजन। पानि पीब ढेकार करैत दिनेश बाजल-

> ''डाक्टर साहैब, आइ धरि हम एते नै खेने छेलौं।''

हेमन्त-

> ''से तँ हमरो बूझि पड़ैए।''

सुलोचना-

> ''डाक्टर साहैब, चाहो पीबै?''

हेमन्त-

> ''पीबै तँ जरूर मुदा दू घंटा पछाति। ताबे किछु काज करब। ओना साँझ पड़ि गेल मुदा जाबे फरिच्छ छै ताबे दसो-पाँचटा रोगी जरूर देखि लेब।''

सुलोचना-

> ''अच्छा, अहाँ तैयार होउ, हम रोगीसभकेँ बजौने अबै छी।''

कम्पाउण्डर काटुन खोलि दबाइ निकालि पसारि देलक। रोगी आबए लगल। रोगी देखि-देखि हेमन्त कम्पाउण्डरकेँ कहैत जाथिन आ कम्पाउण्डर दबाइ दैत जाए। अस्पताल जकाँ तँ सभ रंगक रोगी नै। किएक तँ बाढ़िक इलाका तँए गनल-गूथल रोग। दबाइओ तेहने। तीनिए

दिनमे सौंसे गामक रोगीकेँ देखि डाक्टर हेमन्त निचेन भऽ गेला। मुदा सात दिनक डयूटी। तहूमे कठिन रस्ता। मुदा पानि टुटए लगलै। पाँचम दिन जाइत-जाइत रस्ता सूखि गेल। मुदा थाल-खिचार रहबे करए।

आठम दिन भोरे हेमन्त सुलोचनाकेँ कहलखिन-

"बुच्ची, आइ हम चलि जाएब।"

सुलोचना-

"ई तँ मिथिला छिऐ डाक्टर साहैब, बिनु किछु खेने-पीने केना जाएब?"

कहि सुलोचना चाह बनबए गेलि। तखने एकटा दोस्तसँ भेँट करए कम्पाउण्डर गेल। असगरे हेमन्त। मोने-मन सोचए लगला जे सात दिनक समए जिनगीक सभसँ कठिन आ आनन्दक रहल। ई कहियो नै बिसरि सकै छी। बिसरैबला अछिओ नै। आइ धरि एहेन जिनगीक कल्पनो नै केने छेलौं, जे बितल। एहेन मनुखक सेवो करैक मौका पहिल बेर भेटल। मौके नै भेटल, बहुत किछु देखैक, भोगैक आ सीखैक सेहो भेटल। आइ धरि हम एहेन रोगीकेँ जेकरा सचमुच जरूरत छै, सेवा नै केने छेलौं, खाली पाइ कमेने छेलौं। गाम-घरमे जेकरा पाइ छै वएह ने दरभंगा इलाज करबए जाइए। जेकरा पाइ नै छै ओ तँ गामेमे छड़पटा कऽ मरैए।

तैबीच सुलोचना चाह नेने आएल। कप बढ़बैत बाजलि-

"मन बड़ खसल देखै छी, डाक्टर साहैब।"

"नै! कहाँ। एकटा बात मनमे आबि गेल तँए किछु सोचए लगलौं।"

सुलोचना-

"ऐठीम केहेन लगैए डाक्टर साहैब?"

सुलोचनाक प्रश्नक उत्तर नै दऽ हेमन्त चुप्प रहला।

हेमन्तकेँ चुप देखि सुलोचना बाजलि-

"हम तँ बच्चा छी डाक्टर साहैब, तँए बहुत नै बुझै छी। मुदा

तैयो एकटा बात कहै छी। जहिना चीनी मीठ होइए आ मिरचाइ कड़ू। दुनूमे कीड़ा फड़ि ओइमे अपन-अपन जीवन-यापन करैए। चीनीक कीड़ाकेँ जँ मिरचाइमे दऽ देल जाए तँ एको क्षण जीवित नै रहत। उचितो भेलै। मुदा की मिरचाइक कीड़ा चीनीमे देला पछाति जीवित रहत? तहिना गाम आ बाजारक जिनगी होइए।''

सुलोचनाक बात सुनि डाक्टर हेमन्त मोने-मन सोचए लगला जे बात ठीके कहलक। अहिना तँ मनुखोमे अछि। मुदा ओ हएत केना। जाबे समाजिक जीवनमे समरसता नै औत ताबे अहिना होइत रहत।

दस बजे भोजन कऽ दुनू गोटे -हेमन्त आ दिनेश- लुंगी-गंजी पहिर सभ कपड़ो आ जूत्तोकेँ बैगमे रखि, पएरे विदा भेला। हेमन्तक बैग सुलोचना आ दिनेशक बैग कमली लऽ पाछू-पाछू चलली। किछु दूर गेलापर हेमन्त कहलखिन-

''बुच्ची, आब तों सभ घूमि जा।''

हेमन्तक बात सुनि सुलोचनाक आँखि नोरा गेल। डाक्टर हेमन्तकेँ बैग पकड़बैत बाजलि-

''अंतिम प्रणाम, डाक्टर साहैब।''

एकाएक हेमन्तक हृदैसँ प्रेमक अश्रुधारा प्रवाहित हुअ लगलनि। मुहसँ प्रणामक उत्तर नै निकललनि। मुड़ी निच्चाँ केने आगू बढ़ि गेला। मुदा किछुए आगू बढ़लापर बूझि पड़लनि जे चारिटा तीर -सुलोचना आ कमलीक आँखि- पाछूसँ बेधि रहल अछि। पाछू उनटि कऽ तकलनि तँ देखलखिन जे दुनू गोटे ठाढ़े अछि। मन भेलनि जे हाथक इशारासँ जाइले कहि दिऐ मुदा अपना रूपपर नजरि पड़ि गेलनि। खाली पएर जाँघ तक समटल उलटा कऽ मोड़ल- लुंगी, देहमे सेन्डो गंजी, माथक केश फहराइत। तैपर सँ थालक छिटका घुट्ठीसँ लऽ कऽ माथ धरि पड़ल। हाथक इशारासँ सुलोचनाकेँ हाक पाड़लखिन। दुनू -सुलोचनो आ कमलीओ- हँसैत आगू बढ़ल। लगमे देखि हेमन्तोक हृदैमे हँसी उपकल। मुस्की दैत हेमन्त बजला-

''बुच्ची, हम अपन दरभंगाक पता कहि दइ छिअ। अबिहऽ।''

सुलोचना-

"हम तँ शहर-बजारमे हराइए जाएब डाक्टर साहैब। अहाँ जाबे हमरा गाममे छेलौं ताबे बूझि पड़ै छल जे दरभंगा अस्पताल गाममे अछि।"

कहि सुलोचना डाक्टर हेमन्तक पएर छूबि गोड़ लागि घूमि गेलि।

बान्हपर आबि दुनू गोटे थाल-कादो धोइ, पेन्ट-शर्ट पहिर स्टेशन दिस बढ़ला। गाड़ी पकड़ि दरभंगा पहुँच गेलथि।

OOO

बाबी

दुर्गापूजा शुरू होइसँ एक दिन पहिने घर छछाड़ै आ दियारी बनबैले सिरखरियावाली बुढ़िया गाछीक मटि-खोभसँ मनही छिट्टामे चिक्कनि माटि नेने अँगना अबै छेली। रस्ते कातक चौमासक टाटपर बाबी करैला तोड़ैत रहथि आकि सिरखरियावालीक नजरि पड़लनि। नजरि पड़िते ओ एक हाथे छिट्टा पकड़ने आ दोसर हाथे चाइनिक घाम आँगुरसँ काछि कऽ फेक बाबीकेँ कहलनि-

''बाबी, छठिकेँ केते दिन छै?''

बाबीक नजरि जुआएल आ सड़ल करैलापर छेलनि। किएक तँ अजोह करैला तीतो बेसी आ सुअदगरो कम होइए। तेतबे नै, पकैओक डर। सड़ल करैला सभकेँ ऐ दुआरे लत्तीकेँ बिहिया-बिहिया ताकथि जे जँ ओकरा तोड़ि नै लेती तँ दोसरोकेँ सड़ौतनि। सिरखरियावालीक अवाज सुनि बाबी रस्ता दिस देखि पुनः करैला ताकए लगली। किएक तँ माथपर भारी देखि गप-सप्प करब उचित नै बुझलनि। एक तँ भरल छिट्टा माटि तैपर खुरपी गाड़ल देखलखिन। मोने-मन सोचलनि जे छठिक अखनि मासोसँ बेसीए हेतै तहन एहेन कोन हलतलबी बेगर्ता भऽ गेलै। जौं महिना- परिव-तिथि जोड़ि कऽ कहए लगब तँ अनेरे देरी हेतै। जेते देरी लगतै तेते भारीओ लगतै। तँए बाबी आँखि उठा कऽ देखि बिनु किछु कहनइ, नजरि निच्चाँ कऽ लेलनि। मुदा सिरखरिओवाली रगड़ी। मनमे होइ जे अखनि नै बूझि लेब तँ फेर बिसरि जाएब। जँ बिसरि जाएब तँ किछु-ने-किछु छुटिए जाएत। अखनि तँ मटिखोभमे मन पड़ल जे पौरुका दशमीएक मेलामे तीनटा कोनियाँ एकटा सूप आ एकटा छिट्टा कीनि नेने रही। जइसँ छठि पावनि केलौं। बाबीक नजरि निच्चाँ केने देखि सिरखरियावाली दोहरा कऽ टोकलकनि-

''गरीब-दुखियाक बात आब थोड़े बाबी सुनै छथिन, जे सुनतीहिन।''

सिरखरियावालीक बात बाबीक करेजकेँ छूबि लेलकनि। मुदा क्रोध नै भेलनि सिनेह उमड़ि गेलनि। एकाएक बाबी अपन बोली बदलि लेलनि।

चौअन्निया मुस्की दैत कहलखिन-

"कनियाँ, मनमे आएल जे चारिटा करैला तोरो तरकारीले दिअ। तँए हाँइ-हाँइ करैला ताकए लगलौं। कनीए ठाढ़े रहऽ?"

सिरखरियावाली-

"जे पुछलियनि से कहबे ने करै छथि आ करैला दऽ कऽ फुसलबैले चाहै छथि।"

विचित्र अन्तर्द्वन्द बाबीक मनकेँ घोर-मट्ठा करए लगलनि। एक दिस माथपर भारी देखथिन आ दोसर दिस आइसँ छठि धरि जोड़ैक समए। तहूसँ उकडू बूझि पड़नि जे सोझ मासक सबाल नै अछि। दू मास बीचक बात छी। सेहो एहेन मास जइमे लुंगीयाँ मिरचाइक घौंदा जकाँ पावनिक घौंदा अछि। जाधरि सभ सोझरा कऽ नै कहबै ताधरि अपनो मन नै मानत आ ऊहो नै बूझत। ताल-मेल बैसबैत कहलखिन-

"कनियाँ, अखनि जाउ। हमहूँ तीमनक ओरियानमे लगल छी आ अहूँक माथपर भारी अछि।"

सिरखरियावालीक मनमे होइ जे छठि सन पावनि छी, जौं हिसाबसँ ओरियान नै करैत जाएब तँ कएटा चीज छुटिए जाएत। आन पावनि जकाँ तँ छठि हल्लुक नै अछि। बड़ ओरियान, बड़ खर्च छै ऐमे। बाजलि-

"दशमी मेलामे जे कोनियाँ, सूप, छिट्टा कीनि नेने रहै छी तँ बुझै छिऐ जे एते काज अगुआएल रहैए।"

बाबी-

"कनियाँ, एकटा काज करू। छिट्टाकेँ निच्चाँमे रखि दियौ जे अहूँक देह हल्लुक भऽ जाएत आ हमरो हिसाब जोड़ि-जोड़ि बुझबैमे नीक हएत।"

"बाबी, भारी उठबैत-उठबैत तँ माथ सुन्न भऽ गेल अछि। ई माटि केते भारी अछि।"

"कनियाँ, बहुत हिसाब जोड़ि कऽ बुझबए पड़त।"

''ओते अखनि नै कहथु। खाली छठिएटा कहि दथु। गोटे दिन निचेनसँ आबि कऽ सभ बूझि लेब।''

आँगुरपर बाबी हिसाबो जोड़थि आ ठोर पटपटा कऽ बजबो करथि-

''आइ आसिनक अमवसीए छी। आइए भगवतीकेँ हकारो पड़तनि आ बघा-सँपहाक निमिते खाइओले देल जेत्तै। काल्हि कलशस्थापनसँ दुर्गा पूजा शुरू हएत जे नओ-दस दिन धरि चलत। दशमी तिथिकेँ यात्रा हएत। तेकर पाँचे दिन पछाति कोजगरा हएत। कोजगरा परातसँ कातिक चढ़त। कातिक अमावश्याकेँ दियाबाती.... लक्ष्मी पूजा.... कालीपूजा। परात भेने गोधन पूजा, दोसर दिन भरदुतिया आ चित्रगुप्तो पूजा। भरदुतिया प्रातसँ छठिक विधि शुरू भऽ जाएत। पहिल दिन माछ-मरूआ बाड़ल जाएत.... दोसर दिन नहा कऽ खाएल जाएत.... तेसर दिन खरना.... चारिम दिन छठिक साँझुका अर्घ। पाँचम दिन भिनसुरका अर्घ भेलापर उसरि जाएत। आँगुरपर गनैत-गनैत बाबी बजली-

''कनियाँ, सबा मास करीब छठिक अछि।''

''सबा मास केते भेलै बाबी?''

''दू बीसमे तीन दिन कम।''

''हम तँ सभ बेर दशमीए मेलामे कोनियाँ, सूप, छिट्टा कीनि लइ छी। तेकरा कए दिन छै?''

''सात पूजाकेँ भगवतीकेँ डिम्हा पड़लापर मेला शुरू भऽ जाइए। जेकरा आठ दिन छै। मुदा एकटा बात पुछै छिअ जे एते अगता किए किनै छह? ताबे ऐ पाइसँ दोसर-तेसर काज करबअ से नै। जहन पावनि लगिचा जेत्तै तहन कीनि लेबह?''

''पहिने किनलासँ दू-पाइ सस्तो होइए आ एकटा चीजोसँ निचेन भऽ जाइ छी। एक बेर अहिना नै किनलौं तँ भेबे ने कएल। आब की करितौं तहन पुरने कोनियों-सूपो आ छिट्टोकेँ चिक्कनसँ

धोइ देलिऐ आ ओहीसँ पावनि कऽ लेलौं।''

सिरखरियावालीक बात सुनि बाबी बेवहार दिस बढ़ली। मोने-मन बुदबुदेली- छठि पावनिक महात्म्य बहुत बेसी अछि। खास कऽ किसान लेल। एक दिस पूर्वजक मिठाइ-पकवान तँ दोसर दिस डोमक बनौल कोनियाँ, सूप, छिट्टा। तेसर दिस कुम्हारक बनौल कूड़ -बिनु मोड़ल कान, पनिभरा घैलमेमे मोड़ल कान होइत, जइमे चौमुखी दीप जरैत। ढकना, सरबा। तँ चारिम दिस अपन उपजौल फल-फलहरी, तीमन-तरकारीक वस्तु संग मसल्लोक वस्तु। बहुतो अछि। तैपर सँ डुमैत सुरूजक पहिल अर्घ। मोने-मन विचारि बाबी चुप्पे रहली। मनमे भेलनि जे ई तँ ओइ इलाकाक छी जइ इलाकाक स्त्रीगण रौद-बसातकेँ गुदानिते ने अछि। खेतक काज करैमे भुते। भगवानोकेँ हारि मनबैवाली। बाबीक मनमे होन्हि जे चुप भऽ गेलौं तँ वेचारी चलि जाएत।

मुदा ले बलैया, ई तँ काग-भुसुण्डी जकाँ डूमि गेल। भानसकेँ अबेर होइत जाइत देखि बाबीकेँ अकच्छ लगनि। जहन कि हेजाक मरीज जकाँ, सिरखरियावालीकेँ पियास बढ़ले जाइत। अचता-पचता कऽ बाबी पुछलखिन-

''कनियाँ, बेटी सबहक हालत की छह?''

बेटी नाओं सुनिते सिरखरियावाली किछु मन पाड़ि बाजलि-

''बाबी, हिनकासँ लाथ कोन। तीनूक हालत हमरासँ नीक छै। भगवान गरदनि कट्टी केलनि तँए ने, ने तँ की हमहीं अहिना रहितौं।''

बाबी-

''भगवान केकरो अधला थोड़े करै छथिन जे तोरा केलखुन?''

मुड़ी डोलबैत सिरखरियावाली-

''तँ केलनि नै! हमरा पँच-पँच बरीसपर बच्चा देलनि। पाँच बरिसपर देलनि से नीके केलनि जे जहन एकटा छँटि जाइ छल तहन दोसर होइ छल। मुदा अगता तीनू बेटीए जे देलनि से

गरदनि कट्टी नै केलनि। जँ अगता तीनू बेटा रहैत, नै तँ मेलो-पाँच करि कऽ तँ...। अखनि ई भारी काज अपने करितौं की पुतोहु करितए। पचता बेटा भेल, जे अखनि लिधुरिए अछि।

बाबी-

"जेठकी बेटीक सासुर केतए छह?"

"उत्तर भर। खुटौना टीशन लग। वेचारीकेँ खेत तँ कम्मे छै मुदा सभ तूर मेहनतिया अछि। एक जोड़ा बड़द रखने अछि। दूटा लगहरि महिंस खुट्टापर छै आ तीनटा पोसीयाँ लगौने अछि। अन्नो-पानि तेते उपजा लइए जे साल-माल लगिए जाइ छै।"

बाबी-

"नाति-नातिन छह किने?

"हँ, तीनटा अछि। तीनू लिधुरिए अछि। तंग-तंग बेटी रहैए। तीनूक नेकरम करैत-करैत तबाह रहैए। तैपर सँ घर-गिरहस्तीक काज।"

बाबी-

"दोसर बेटीक सासुर केतए छह?"

"पूभर। कोसी कात।"

बाबी-

"कोसी कात किए केलह?"

"बाबी, जानि कऽ कहाँ केलिऐ। गाम तँ नीके रहए मुदा केतए-सँ-ने-केतएसँ कोसी चलि एलै। कोसीओ एलै तँ अन्न-पानिक कोनो दुख नै होइ छै। मुदा अपना सभ जकाँ चिष्टा नै। गाममे महिंस बेसी छै, जइसँ रस्ता-पेरा हैंक-हैंक भेल रहै छै।

बाबी-

"छोटकी?"

''पच्छिम भर, पाही। ई हम्मर रानी बेटी छी। जेते दिन ऐठाम रहैए रंग-बिरंगक तीमन-तरकारी खुअबैए। भानस करैक एहेन लूरि दुनूमे केकरो नै छै। जहिना भानस-भात करैमे, तहिना बोली वाणी। गीतो-नाद जे गबैए, से होइत रहतनि जे सुनिते रही। तहिना चिष्टो चर्या, ओढ़बो-पहिरब।''

बाबी-

''बड़ बेर उठलै। आब तहूँ जा।''

''आइ हमरा गंजन लिखल अछि। विचारने छेलौं जे माटि आनि कऽ धान काटि आनब। गरमा धान से नहियेँ भेल। काल्हि फेर घरे-अँगना नीपैमे लागि जाएब।''

गामक सभ बाबीकेँ मेह बुझैत। छथिओ। जँ केकरो मन खराब वा कोनो आफत-असमानी होइत तँ बाबी सभसँ पहिने आबि सेवा-टहलमे लागि जाइत। तहिना जँ कहियो बाबीक मन खराब होइत तँ गामक लोक जी-जानसँ लागि जाइत। किएक तँ सबहक मनमे ई अंदेशा बनल जे बाबीक मुइने गामक बहुत विधि-बेवहार समाप्त भऽ जाएत। ओन बाबी पढ़ल-लिखल नै, चिट्ठीओ पुरजी ने पढ़ल होइ छन्हि। जरूरतो नै। किएक तँ सालो भरिक पावनि आ ओकर विधि, संग-संग मांगलिक काज उपनयन, बिआह इत्यादि विधि कंठस्थ छन्हि। कोन गीत कोन अवसरपर गौल जाएत, सभ जीपर राखल। तहिना पूजाक आराधनासँ लऽ कऽ आरती धरि।

सभ किछु रहितो बाबीक मनमे एकटा कचोट समरथाइएसँ लगल रहि गेलनि। ओ ई जे एकटा बेटा भेला पछाति दोसर सन्ताने नै भेलनि। अपन इच्छा रहनि जे एकटा बेटा, एकटा बेटी हुअए। मुदा बेटा तँ भेलनि मुदा बेटी नै। जे कचोट सभकेँ कहबो करथिन। कहथिन जे सृष्टिक विकास लेल पुरुष नारी दुनूक जरूरत अछि। नै तँ विकास रूकि जाएत। ने एकछाहा पुरुषेसँ काज चलत आ ने एकछाहा नारीएसँ।

भरदुतियाक परात बाबी माछ-मरूआ बाड़लनि। काल्हि नहा कऽ खेती। परसू खरना करती। खरना पावनि लेल बाबी सतरिया धानक अरबा चाउर सभ साल रखै छथि। किएक तँ पनरहे घरक टोलक

खरनासँ लऽ कऽ घाटपर हाथ उठबै धरिक काज बाबीएक जिम्मा। मुदा खरना दिन गज-पट भऽ जाइ छन्हि। किएक तँ कियो महिक्का धानक अरबा चाउर आ गुड़ दइ छन्हि तँ कियो मोटका धानक अरबा चाउर आ गुड़। अरबा तँ अरबे छी। मोटका-महिक्काक भेद नै। तँए बाबीकेँ खीर रन्हैमे पहपटि भऽ जाइ छन्हि। फुटा-फुटा कऽ केना करती। तँए सबहक अरबा चाउरकेँ खाइले रखि लइ छथि आ अपन सतरिया चाउरसँ खीर रान्हि खरना करै छथि। खाली खरने नै करै छथि, मनमे ईहो रहै छन्हि जे परिवारक हिसाबसँ एते खीर घुमा दिऐ जे घरमे चुल्हि नै चढ़ै।

षष्ठी। आइ साँझुका अर्घ हएत। तड़गरे बाबी सूति उठि कऽ पावनिक ओरियानमे लागि गेली। बहुत चीज भेबो कएल आ बहुत बाँकीओ अछि। मुदा भरि दिन तँ ओरियबैक समए अछि। तैबीच डेढ़ियापर सँ बाबी, बाबी सुनलनि। मुदा टाटक अढ़ रहने बोली नै चीन्हि सकली। मनमे भेलनि जे आइ पावनि छी तँए कियो किछु पुछैले आएल हएत। ओसारेपर सँ कहलखिन-

''के छी। अँगने आउ।''

पथियामे दूटा नारियल, पान छीमी केरा, दूटा टाभ नेबो, दूटा दारीम, दूटा ओल, दूटा अडुआ, दूटा टौकुना, दूटा सजमनि, एक मुट्ठी गाछ लागल हरदी, एक मुट्ठी आदी नेने रहमतक माए आँगन पहुँच बाबीक आगूमे रखि बाजलि-

''बाबी, अपनो डाली ले आ हिनको ले नेने एलियनि हेन।''

पथियासँ सभ वस्तु निकालि ओसारपर रखि निङहारि-निङहारि बाबी देखए लगली।

बच्चेमे रहमत बिमार पड़ल, ओकरे कबुला माए केने रहथिन। तँए पान सालसँ ऊहो छठि पावनि करै छथि। जे बात बाबीओकेँ बूझल। ओना बाबी अपने आँगनमे भुसबा, ठकुआ बनबथि। मुदा तेकर दाम रहमतक माए दऽ दन्हि। पथिया लऽ रहमतक माए विदा हुअ लगली की बाबी कहलखिन-

''कनियाँ, कनी ठाढ़ रहू। रतुका खरनाक नबेद नेने जाउ।''

घरसँ केरा पातपर खीर आनि रहमतक माएकेँ दऽ देलखिन। हाथमे नबेद अबिते रहमतक माएक मन खुशीसँ नाचि उठल। बेटाकेँ निरोग जिनगी जीबैक आशा सेहो भऽ गेलनि। मोने-मन दिनकरकेँ गोड़ लागि विदा भेल। अँगनासँ निकलिते छलि की एक पाँज कुसियारक टोनी नेने परीछन पहुँच गेल। एक टोनी बाबीकेँ आ एक टोनी रहमतक माएकेँ दैत सुरसुराएले निकलि गेल। किएक तँ अँगनेमे सभले टोनी बना नेने छल। बाबीकेँ कुसियारक टोनी दैत रहमतक माए कहलकनि-

"हमरा आइ हाट छी बाबी, तँए कनी देरीसँ घाटपर आएब।"

बाबी-

"हम तँ छीहे कनियाँ, तइले तोरा किए चिन्ता होइ छह। दिनकर-दीनानाथ केकरो अधला करै छथिन, जे तोरा करथुन? अपन भरि निअम-निष्ठा रखैक चाही।"

रहमतक माए चलि गेल।

बाबी फुटा-फुटा सभ वस्तु रखए लगली। तखने दछिनबरिया अँगनामे हल्ला सुनलखिन। ओसारपर सँ उठि डेढ़ियापर ऐली की सुनलखिन जे खुशिया बेटा केराक घौरसँ एकटा छीमी तोड़ि कऽ खा गेलै तइले माए चारि-पाँच खोरना मरलकै। बेटाकेँ कनैत देखि खुशिया घरवालीपर बिगड़ए लगल। तेकरे हल्ला छेलै। अपने डेढ़ियापर सँ बाबी कहलखिन-

"पावनिक दिन छिऐ। तहन तूँ सभ भोरे-भोर हल्ला करै छह। दुधमुहाँ बच्चा जँ एक छीमी केरा तोड़ि कऽ खाइए गेलै तइले एते हल्ला किए करै छह।"

बाबीक बात सुनि दुनू बेकती खुशिया तँ चुप भेल मुदा छौड़ा हुचकि-हुचकि कनिते रहल। तही बीच सोनरेवाली आबि बाबीकेँ कहलकनि-

"बाबी, नीक की अधला तँ हिनके कहबनि किने। देखथुन जे पाइ दुआरे ने छिट्टा भेल ने कोनियाँ।"

सोनरेवालीक बात सुनि बाबी गुम्म भऽ गेली। कनीकाल गुम्म रहि कहलखिन-

> “नै पान तँ पानक डंटीओसँ काज चलैए। जेकरा छै ओ सोना-चानीक कोनियाँमे हाथ उठबैए आ जेकरा नै छै ओ तँ बाँसेक सुपतीसँ काज चलबैए। तइले मन किए ओछ केने छह। सभकेँ की, सभ किछु होइते छै। जेकरा जेते विभव होइए ओ ओते लऽ कऽ पावनि करैए। तँए की दिनकर केकरो कुभेला करै छथिन।”

तैबीच दीपवाली पाँच बर्खक बेटाकेँ हाथ पकड़ने घिसियबैत पहुँच कहलकनि-

> “बाबी, देखथुन जे ई छौड़ा तेहेन अगिलह अछि जे हाथीकेँ पटकि देलकै। ई तँ गुण भेल जे एक्केटा टाँग टुटलै, नै तँ टुकड़ी-टुकड़ी भऽ जाइत।”

मुस्की दैत बाबी कहलखिन-

> “देखहक कनियाँ, ई सभ देखाबटी छिऐ। मनुखक मनमे श्रद्धा हेबाक चाही। ऐले बच्चाकेँ किए दमसबै छहक। छोड़ि दहक।”

सुरूज उगले सभ घाटपर पहुँच डाली पसारलक। नवयुवती सभ गीत गाबए लगली। हाथ उठौनिहारि पानिमे दुनू हाथ जोड़ि ठाढ़ भेली। एक्के तालमे ढोलिया ढोल बजबए लगल। पोखरिक चारू महार दीपसँ जगमगा गेल। परदेशीओ सभ छठि पावनि करए गाम आएल। एक गोटेकेँ नाच कबुला रहै ओ नाच करबए लगल। ताबे दूटा छौड़ा दारू पीब फटाका फोड़ए लगल। दुनू बेमत। एक गोटेक फटाकामे कम अवाज भेलै की दोसर पिहकारी मारि देलक। अपन डुमैत प्रतिष्ठाकेँ जाइत देखि ओ पिहकारी देनिहारक कालर पकड़लक। दुनू अपन-अपन परदेशीआ भाषामे गारि-गरौबलि शुरू केलक। गारि-गरौबलिसँ मारि फँसि गेलै। दुनू दुनूकेँ खूब मारलक।

दोसर दिन भिनसुरका अर्घ। खूब अन्हरगरे सभ घाटपर पहुँचल। हाथ उठौनिहारि पानिमे पैसिली। चौमुखी दीपसँ सौंसे प्रकाश पसरि गेल।

सूर्योदय होइते दीपक ज्योति मलिन हुअ लगल। हाथ उठए लगल।

बच्चा-बुच्ची संग रहमतक माए पोखरिक महारपर आँचर नेने दुनू हाथ जोड़ि बाबीपर आँखि गड़ौने। तखने मुसबा गिलासमे दूध नेने पहुँचल। किनछरिमे पैसि एक ठोप, दू ठोप दूध सभ कोनियाँमे छिटए लगल।

हाथ उठा बाबी पानिसँ निकलि, साड़ी बदलि, छठिक कथा कहए लगलखिन। कथा कहि आँकरी छीटि पावनिक विसर्जन केलनि।

अखनि धरि जे ढोलिया एक तालमे ढोल बजबै छल ओ समदाउनिक ताल धेलक। नटुओ समदाउन गाबए लगल।

सभ अपन-अपन कोनियाँ समेटि छिट्टामे रखि, ढोलियाकेँ एकटा ठकुआ एक छीमी केरा दऽ दऽ विदा भेल।

ooo

कामिनी

अन्हरगरे भैयाकाका लोटा नेनइ मैदान दिससँ आबि रस्तेपर सँ बोली देलखिन...।

हमहूँ मैट्रिकक परीक्षा दइले जाइक ओरियान करैत रही। ओना हमर नीन बड़ मोट अछि मुदा खाइए बेरमे माएकेँ कहि देने रहिऐ जे कनी तड़गरे उठा दिहेँ नै तँ गाड़ी छूटि जाएत। किएक तँ साढ़े पाँचे बजे गाड़ीक अछि। आध घंटा स्टेशन जाइओमे लगैए। तँए, पौने पाँच बजे घरसँ विदा होएब तखने गाड़ी पकड़ाएत। जँ ई गाड़ी छूटि जाएत तँ भरि दिन रस्तेमे रहब। निर्मलीसँ जयनगर लेल एक्केटा डायरेक्ट गाड़ी अछि। नै तँ सभ गाड़ी सकरीमे बदलए पड़ै छै। तहूमे बसबला सभ तेहेन चालाकी केने अछि जे एक्कोटा गाड़ीक मेले ने रहए देने अछि। जइसँ तीन-चारि घंटा सकरीक प्लेटफार्मपर बैसू तहन दरभंगा दिससँ गाड़ी औत। तहूमे तेहेन लोक कोंचल रहत जे चढ़बो मुश्किल। तँए ई गाड़ी पकड़ब जरूरी अछि। तेतबे नै, अपन स्कूलक विद्यार्थीओ सभ यएह गाड़ी पकड़त। अनभुआर इलाका तँए असगर-दुसगर जाएबो ठीक नै। सुनै छी जे ओइ इलाकामे उचक्को बेसी अछि। जँ कहीं कोनो समान उड़ौलक तँ आरो पहपटिमे पड़ि जाएब। भैयाकक्काक बोली सुनि चिन्हैमे देरी नै भेल। किएक तँ हुनकर अवाज तेहेन मेही छन्हि जे आन केकरो बोलीसँ नै मिलैत। बोली अकानि हम दरबज्जेक कोठरीसँ कहलियनि-

> ''काका, आउ-आउ। हमहूँ जगले छी। पँचबजिया गाड़ी पकड़ैक अछि तँए समान सभ सेरियबै छी।''

रस्तापर सँ ससरि काका दरबज्जाक आगूमे आबि कहलनि-

> ''कनी हाथ मटिया लइ छी। तहन निचेनसँ बैसबो करब आ गप्पो करब।''

कहि पूब मुहेँ कल दिस बढ़ला। हमहूँ हाँइ-हाँइ समान सेरियाबए लगलौं। कलपर सँ आबि काका ओसारक चौकी तरमे लोटा रखि अपने चौकीपर बैसला। चौकीपर बैसिते गोलगोलाक जेबीसँ बिलेती तमाकुलक पात निकालि तोड़ैत बजला-

“भाय साहैब कहाँ छथुन?”

“काल्हिए बेरू पहर नवानी गेला, से अखनि धरि नै एला।”

हमर बात सुनि, भैयाकाका चुनौटीसँ चुन निकालि तरहत्थीपर लैत बजला-

“अखनि जाइ छी, हएत तँ ओइ बेरमे फेर आएब।”

कक्काक आपस होएब हमरा नीक नै लागल। किएक तँ लगले एला आ चोट्टे घूमि जेता। तँए बैसै दुआरे बजलौं-

“अहाँ तँ काका गाममे दगबिज्जो कऽ देलिऐ। एते खर्च करि कऽ कियो कन्यादान नै केने छला। अहाँ रेकर्ड बना लेलिऐ।”

अपन प्रशंसा सुनि भैयाकाका मुस्कीआइत बजला-

“बौआ, जुग बदलि रहल अछि। तँए सोचलौं जे नीक पढ़ल-लिखल वर संग बेटीक बिआह करब। हमरो बेटी तँ बड़ पढ़ल-लिखल नहियेँ अछि। मुदा रामायण, महाभारत तँ धुरझार पढ़ि लइए। चिट्ठीओ-पुरजी लिखिए-पढ़ि लइए। घर-आश्रम जोकर तँ ऊहो पढ़नइ अछि। ओकरा की कोनो नोकरी-चाकरी करक छै, जे स्कूल-कौलेजक सर्टिफिकेट चाही। अपना सभ गिरहस्त परिवारमे छी तँए बेटीकेँ बेसी पढ़ाएब नीक नै।”

“किए?”

“अपना सबहक परिवारमे गोंत-गोबरसँ लऽ कऽ थाल-कादो धरिक काज अछि। ओ तँ घरेक लोक करत। तइमे देखबहक, जे स्त्रीगण पढ़ल-लिखल अछि ओ ओइ काजक भीड़ि नै जाए चाहतह। आब तोंही कहऽ जे तहन गिरहस्ती चलतै केना?”

कक्काक तर्कक जवाब हमरा नै फुड़ल। मुदा चुप्पो रहब उचित नै बूझि कहलियनि-

“जहन जुग बदलि रहल अछि तहन तँ सभकेँ शिक्षित होएब जरूरी अछि किने? सभ पढ़त सभ नोकरी करत। नीक तलब

उठौत। जइसँ घरक उन्नति आरो तेजीसँ हएत। तहूमे महिला आरक्षण भेने नोकरीओमे बेसी दिक्कत नहियेँ हएत।''

भैयाकाका-

''कहलह तँ बड़ सुन्दर बात मुदा एकटा बात कहऽ जे दुनू गोटे, मर्दे-औरत आ एक्के स्कूल आकि ऑफिसमे नोकरी करत तहन ने एकठाम डेरा रखि परिवार चलौत। मुदा जहन पुरुष दोसर राज्य वा दोसर जिला वा दस कोस हटि कऽ नोकरी करत तहन केना चलतै। परिवार तँ पुरुष-नारीक योगसँ चलैए किने? परिवारमे अनेको ऐहेन काज अछि जे दुनूक मेलसँ हएत। मनुख तँ गाछ-बिरिछ नै ने छी जे फलक आँठी केतौ फेक देबै तँ गाछ जनमि जाएत। आब तँ तहूँ कोनो बच्चा नहियेँ छह जे नै बुझबहक। मनुखक बच्चा नअ मास माने दू सए सत्तरि दिन माएक पेटमे रहैए। चारि-पाँच मासक पछाति माएक देहमे बच्चाक चलैत केते रंगक रोग-बिआदिक प्रवेश भऽ जाइ छै। किएक तँ माएक संग-संग बच्चोक विकास लेल अनुकूल भोजन, आराम आ सेवाक आवश्यकता होइत। तहन माए असगरे की करत? नोकरी करत आकि पालन करत? अइले तँ दोसरेक मदतिक जरूरत होइत।''

''आन-आन देशमे तँ मर्द-औरत सभ नोकरी करैए आ ठाठसँ जिनगी बितबैए।''

भैयाकाका-

''आन देशक माने ई बुझै छहक, जेते दोसर देश अछि सबहक रीति-नीति जीवन शैली एक्के रंग छै? नै। एकदम नै। किछु देशक एक रंगाहो अछि। मुदा फराक-फराक सेहो अछि। हँ, किछु एहेन अछि जैठाम मनुख सार्वजनिक सम्पति बूझल जाइए। ओइ देशक बेवस्थो दोसर रंगक अछि। सभ तरहक सुविधा सबहक लेल अछि। तैठाम लेल ठीक अछि। मुदा अपना ऐठाम अपना देशमे तँ से नै अछि। तँए ऐठाम लेल ओते नीक नै अछि जेते अधला।''

अपनाकेँ निरुत्तर होइत देखि बातकेँ विराम दइक विचार मनमे उठए लगल। तैबीच आँगनसँ माए आबि गेली। माएकेँ देखिते हम अपन समान सरियबैले कोठरी दिस बढ़ि गेलौं।

भैयाकाकाकेँ देखि माए कहलकनि-

"बौआ, अहाँ तँ गाममे सभकेँ उन्नैस कऽ देलिऐ। आइ धरि गाममे बेटी बिआहमे एते खर्च कियो ने केने छला।"

अपन बहादुरी सुनि मुस्कीआइत भैयाकाका कहलखिन-

"भौजी कामिनीकेँ असिरवाद दियौ जे नीक जकाँ सासुर बसए।"

माए-

"भगवान हमरो औरुदा ओकरे देथुन जे हँसी-खुशीसँ परिवार बनाबए। पाहुन-परक तँ सभ चलि गेल हेता?"

भैयाकाका-

"हँ भौजी। काल्हि सत्यनारायण भगवानक पूजा कऽ हमहूँ निचेन भऽ गेलौं। पाहुनमे-पाहुन आब एक्केटा सरहोइजेटा रहि गेल अछि। ऊहो जाइले छटपटाइए। मुदा ओकरा पाँच दिन आरो रखए चाहै छी।"

माए-

"जहिना एकटा बेटीक बिआहक काजकेँ खेलौना जकाँ गुड़केलौं, तहिना सरहोजिकेँ आब गुड़कबैत रहू।"

सरहोजि दिस इशारा होइत देखि काका बूझि गेलखिन। मकइक लावा जकाँ बत्तीसो दाँत छिटकबैत बजला-

"धरमागती पूछी तँ भौजी एते भारी काज, जइमे ने खाइक पलखति होइ छल आ ने पानि पीबैक। तीन राति एक्को बेर आँखि नै मुनलौं। मुदा सरहोजिकेँ धैनवाद दिऐ जे घिड़नी जकाँ दिन-राति नचैत रहल। ओते फ्रीसानी रहए तैयो कखनो मुँह

मलिन नै। हरिदम मुहसँ लबे छिटकैत। तँए सोचै छी जे पाँच दिन पहुनाइ करा दिऐ।''

माए-

''बच्चा कएटा छै?''

''एक्कोटा नै। तीनिए सालसँ सासुर बसैए। उमेरो बीस-बाइस बर्खसँ बेसी नहियेँ हेतै।''

''आब तँ लोककेँ बिआहे साल बच्चा होइ छै आ अहाँ कहै छी जे तीन सालसँ सासुर बसैए।''

''एँह, हमरा तँ अपने पान साल पछाति भेल आ अहाँ तीनिए सालमे हदिआइ छी। अच्छा एकटा बात हमहीं पुछै छी, भैया ने हमरासँ साल भरि जेठ छथि मुदा अहाँ तँ साल छौ मास छोटे हएब। अहूँ कोन-कोन गहबर आ ओझा-गुनी लग गेल रही।''

अपनाकेँ हारैत देखि बात बदलैत माए बाजलि-

''सभ मिला कऽ केते खर्च भेल?''

भैयाकाका-

''धरमागती पूछी तँ भौजी हमहूँ कंजुसाइ केलिऐ। मुदा तैयो पाँच लाखसँ ऊपरे खर्च भेल। तीन लाख तँ नगदे गनि कऽ देने छलिऐ। तैपर सँ डेढ़ लाखक समान, गहना, बरतन, लकड़ीक समान, कपड़ा देलिऐ। पचास हजारसँ ऊपरे बरियातीक सुआगतमे लागल। तैपर सँ झूठ-फूसमे सेहो खर्च भेल।''

''एते खर्च केलिऐ तहन किए कहै छिऐ जे हमहूँ कंजुसाइ केलिऐ?''

''देखिओ भौजी, हमरा दस बीघा खेत अछि। तेकर बादो केते रंगक सम्पति अछि। गाछ-बाँस, घर-दुआर, माल-जाल। ऐ सभकेँ छोड़ि दइ छी। खाली खेतेक हिसाब करै छी। अपना गाममे दस हजार रूपैए कट्ठासँ लऽ कऽ साठि हजार रूपैए

कट्ठाक जमीन अछि। ओना सहरगंजा जोड़बै तँ पैंतीस हजार रूपैए कट्ठा भेल। मुदा हम्मर एक्कोटा खेत ओहेन नै अछि जेकर दाम चालीस हजार रूपैए कट्ठासँ कम अछि। बेसीओक अछि। मुदा चालिसे हजारक हिसाबसँ जोड़ै छी तँ आठ लाख रूपैए बीघा भेल। दस बीघाक दाम अस्सी लाख भेल। तीन भाए-बहिन अछि। हमरा लिए तँ जेहने बेटा तेहने बेटी। अनका जकाँ तँ मनमे दुजा-भाव नै अछि। आब अहीं कहूँ जे कोन बेसी खर्च केलिऐ।''

बातक गंभीरताकेँ अंकैत माए बाजलि-

''अहाँ विचारे बेटीक बिआहमे केते खर्च बापकेँ करैक चाहिऐ?''

भैयाकाका-

''देखियौ भौजी, जे बात अहाँ पुछलौं ओकर जवाब सोझ-साझ नै अछि। किएक तँ जेते रंगक लोक आ परिवार अछि तेते रंगक जिनगी छै। मुदा अनका जे होउ, हमरा मनमे ई अछि जे बेटा-बेटी एक-रंग जिनगी जीबए। मुदा समस्यो गंभीर अछि। धाँइ दे किछु कहि देने नै हेतै।''

''एते लोक सोचै छै?''

''से जँ नै सोचै छै तँए ने, एना होइ छै। जँ अपने कोनो बात नै बुझिऐ तँ दोसरसँ पुछैओमे नै हिचकिचेबाक चाही।''

कामिनीक बिआह लालाबाबू संग भेल। जेहने हृष्ट-पुष्ट शरीर कामिनीक तेहने लालबाबूक। दुनूक रंगमे कनी अन्तर। जैठाम लालबाबू लाल गोर तैठाम कामिनी पिंडश्याम। ने अधिक कारी आ ने अधिक गोर, जइसँ दाइ-माइक अनुमान जे किछु दिनक पछाति दुनूक रंग मिलि जाएत, अर्थात् एकरंग भऽ जाएत।

बिआहक तीन मास पछाति लालबाबूक बहाली कौलेजक डिमोंसट्रेटरक पदपर भेल। नोकरी पबिते सासुरेक दहेजबला रूपैआसँ दरभंगामे डेढ़कट्ठा जमीन कीनि घर बना लेलक। गामसँ शहर दिस बढ़ल। जइसँ जिनगीमे बदलाउ हुअ लगलै। एक दिस बजारूआ

आधुनिकता जोर पकड़ए लगलै तँ दोसर दिस ग्रामीण जिनगीक रूप टुटए लगलै। रंग-बिरंगक भोग-विलासक वस्तुसँ घर सजबए लगल। पाइक अभावे ने बूझि पड़ैत रहइ। किएक तँ भैयारीमे असगरे। तँए गामक सभ सम्पति बेचि-बेचि आनए आ मौज करए। मिथिलाक कन्या कामिनी। तँए पतिक काजमे हस्तक्षेप नै करए चाहैत। पति-पत्नीक बीच ओहने सम्बन्ध जेहेन अधिकांशक।

शिक्षाक स्तर खसल। अजाति सभ सरस्वतीक मंदिरमे प्रवेश केलक। जैठाम प्राइवेट टयूशन पढ़ाएब अधला काज बूझल जाइ छल, से प्रतिष्ठित भऽ गेल। परिणाम भेल जे टयूशनकेँ अधला आ पाप बुझनिहार शिक्षक स्वयं मुरूखक प्रतीक बनि गेला। अवसरक लाभ अज्ञानीकेँ बेसी भेलै। पाइ-कौड़ीबला लालबाबू केना नै अवसरक लाभ उठबैत। बीसे हजारमे एम.एस.सी. फिजिक्सक सर्टिफिकेट कीनि लेलक। विश्वविद्यालओमे कानून पास केने जे नवशिक्षकक बहालीमे कौलेजक डिमोसट्रेटरकेँ प्राथमिकता देल जाएत। लालोबाबू फिजिक्सक प्रोफेसर बनि गेल। हाइ स्कूल वा सरकारी ऑफिस जकाँ प्रोफेसरकेँ ड्यूटीओ नै। सालमे कौलेज छह मास बन्ने रहैत बाँकी समैमे कहियो ड्यूटी हएत कहियो नै हएत। तैपर सँ अपन सी.एल. आ मेडिकल पछुआइले।

पाँच बर्ख बीतैत-बीतैत लालबाबूक माए-बाप मरि गेल। मरने लाभे। घराड़ी धरि बेचि कऽ बैंकमे लालबाबू जमा कऽ लेलक। मुदा एकटा बात जरूर केलक, ओ ई जे घराड़ीक रूपैआसँ पाँचटा आलमारी आ जेते किताबसँ आलमारी भरत, ओते किताब जरूर कीनि लेलक। एक तँ पाइक गर्मी दोसर किताबक गर्मी, अध्ययनक गर्मी नै देखलाहा गर्मीसँ लालबाबूक मति ऐहेन बदलि गेलै जेहेन ठंढ़ा पानि आ ठंढ़ा दूधसँ चाह बनैत। अखनि धरि छह बर्खमे दूटा सन्तान सेहो भेलै। अपन दुनियाँक बीच कामिनी नचैत तँए लालबाबूक जिनगी केना देखैत? दोसर उचितो नै किएक तँ हर युवा आदमीकेँ अपन जिनगीक बाटपर नजरि राखक चाहिऐ।

साँझू पहर लालबाबू होटलसँ सीधे आबि कोठरीमे कपड़ा बदलए लगल। देहक सभ कपड़ा उतारि लेलक। ऊपर सँ लऽ कऽ भीतर धरि शरीरमे आगिक ताव जकाँ लहकैत। पंखाक बटन दबलक। मुदा

भगवानक मूर्तिक आगूक जे कोठरीक दिवारक खोलियामे रखने छल, से बौल जरौने बिनु अपन कोठरीक बौल केना जरबैत। तँए पहिने ओ बौल जरौलक। मुदा मूर्ति आगू बौल जरौला पछाति अपन कोठरीक बौल जरौनाइ बिसरि गेल। पियाससँ कंठ सुखैत। मुदा टंकीपर जाइक डेगे ने उठै। लटपटाइत। कहुना कऽ कुरसीपर बैसल आकि टेबुल तरक जगपर नजरि पड़लै। दिनुके पानि राखल। जग उठा पीब गेल। जग रखि कुरसीपर अंगोठि मोने-मन अकासक चिड़ैकेँ हियासए लगल। उड़ैत मृगनयनीपर नजरि गेलै। कौलेजक छात्रा मृगनयनीकेँ किछु देर देखि पत्नी कामिनीपर नजरि देलक। मनमे उठलै दू बेटीक जिनगी। फेर मन देखलकै चहकैत मृगनयनी। निर्णए केलक जे अपना घर मृगनयनीकेँ जरूर आनब। रसे-रसे मन शान्त हुअ लगलै।

दोसर दिन कोर्ट होइत लालबाबू मृगनयनी संग घर पहुँचल। मृगनयनीकेँ देखि कामिनी घबड़ाएल नै। मन पड़लै दादी मुँहक सुनल खिस्सा। तँए पुरुख लेल दूटा पत्नी होएब कोनो अधला नै। अपन दुनियाँमे मस्त। काजक कोनो घटती नै, कनी-मनी बढ़तीए। तँए जुआनीक आनन्द कामिनीमे।

बिआहक आठ बर्ख बाद जे लालबाबू डिमोसट्रेटरसँ प्रोफेसर बनल, ओ आइ स्त्रीक खिलौना बनि गेल! एहेन-एहेन लोकक केते आश।

आठ बजे साँझ। बजारसँ दुनू परानी मृगनयनी आ लालबाबू मोटर साइकिलसँ उतरि कोठरीमे पहुँचल। अगल-बगलक कुरसीपर बैसि ब्राण्डीक बोतल निकालि टेबुलपर रखलक। मुदा टेबुल कहऽ चाहै जे 'भाय सोझहा-सोझही बेइज्जत नै करह', हम किताब रखैबला छी, नै कि बोतल। मुदा वेचाराक विचार, मिथिलाक कन्याँ जकाँ, तँए सभ किछु सहि लैत। जहिना राज-दरबारमे मिथिलाक राजा-जनककेँ जननिहार पंडित सहि लथि।

असेरी गिलाससँ दुनू बेकती एक-एक गिलास ब्राण्डी चढ़ा अपन दुनियाँमे विचरण करए लगल। प्रश्न उठल कामिनीक।

मृगनयनी-

"हम्मर एकटा विचार सुनू।"

"बाजू।"

''पत्नीक सभ सुख जँ एक पत्नीसँ पूर्ति हुअए तहन दोसर रखबाक कोन खगता?''

''कोनो नै।''

''तहन सौतीन कामिनीकेँ रखि कऽ की फेदा?

कनी गुम्म भऽ लालबाबू सोचए लगल। मन पड़लै कामिनी। निस्सकलंक, स्वच्छ, कोमल-कोमल पंखुड़ी गंध युक्त कामिनी।

दोहरा कऽ मृगनयनी बाजलि-

''बस, यएह पुरुखक कलेजा छी। कामिनीकेँ रस्तासँ हटाएब हम्मर जिम्मा भेल।''

मृगनयनीक रूप देखि विधातो अपन गल्तीपर सोचितथि, नारी-पुरुषक बीच जेहेन थलथला पुल बनोलिऐ तेहेन नारी-नारीक बीच किए ने बनोलिऐ! मृगनयनी आ लालबाबूक बीचक बात कामिनीओ सुनैत। जहिना मृगनयनीक करेजमे कामिनीक प्रति आगि धधकैत तहिना मृगनयनीओक प्रति कामिनीक करेजमे आगि पजरि गेल। मुदा अपनाकेँ सम्हारैत ओ घरसँ निकलि जाएब नीक बुझलक। किएक तँ तीन जिनगीक प्रश्न आगूमे आबि ठाढ़ भऽ गेलै। तहूमे दूटा ओहेन जिनगी जे दुनियाँमे अखनि पएरे रखलक अछि। चुपचाप कामिनी अपन रहैबला कोठरी आबि दुनू बेटीकेँ एक टक देखि, छह बर्खक रीताकेँ पएरे आ तीन बर्खक सीताकेँ कोरामे नेने घरसँ निकलि गेल। मनमे आगि लगल, तँए कोनो सुधि-बुधि नै।

स्टेशन आबि कामिनी ट्रेन-गाड़ीक पता लगौलक। चारि घंटा पछाति गाड़ी। दुनू बच्चा संग कामिनी प्लेटफार्मपर गाड़ीक प्रतीक्षामे बैसि रहलि। मनमे अनेको रंगक प्रश्न उठए लगलै। मुदा सभ प्रश्नकेँ मनसँ हटबैत ऐ प्रश्नपर अँटकल जे जे माए-बाप जनम देलक ओ जरूर गड़ा लगौत। जँ नै लगौत तँ बड़ीटा दुनियाँ छै, बूझल जेतै। तँए सभसँ पहिने माए-बाप लग जाएब। डेढ़ बजे रातिमे गाड़ी पकड़ि, दुनू बच्चा संग भोरमे अपना नैहरक स्टेशन उतरल। भुखे तीनू लहालोट होइत। मुदा ऐठामक नारीमे तँ सभसँ पैघ ई गुण होइत जे धरती जकाँ सभ दुखकेँ सहि लइए। मुदा दुनू बेटीक मुँह देखि चिन्ताक समुद्रमे डुमए लगल। की केकरोसँ भीख मांगि बच्चाकेँ खुआबी? कथमपि नै। की बच्चाक जिनगीकेँ

एतै अन्त हुअए दिऐ? अपन साध कोन! मुदा नाना ऐठाम तक पहुँचत केना? जी-जाँति कऽ एकटा मुरही-कचड़ीक दोकानपर कामिनी पहुँच मुरही बेचैवाली बुढ़ियाकेँ कहलक-

> "दीदी, हमर नैहर दुखपुर छी। ओत्तै जाइ छी। दुनू बच्चा रातिमे खेलक नै, तँए भुखे लहालोट होइए। दू रूपैआक मुरही-कचड़ी उधार दिअ। काल्हि पाइ दऽ देब।"

बिनु किछु सोचनइ-विचारने बुढ़िया बाजलि-

> "बुच्ची, तोरा पाइ नै छह तँ की हेतै। हमरो एहेन-एहेन चारि गो पोता-पोती अछि। हम बच्चाक भुख बुझै छिऐ।"

कहि दुनू बच्चाकेँ मुरही-कचड़ी देलक। तीनू खा कऽ विदा भेल।

कामिनीक नैहर पहुँचैत-पहुँचैत सुरूज एक बाँस ऊपर चढ़ि गेल। दुखपुरक दछिनबरिआ सीमापर एकटा पाखरिक गाछ। पाखरिक गाछसँ आगू बढ़ैक साहसे ने कामिनीकेँ होइ। गाछक निच्चाँमे बैसि ठोह फाड़ि कानए लगल। दुखपुरक सएओ ढेरबा बचिया घास छिलैत बाधमे। कामिनीक कानब सुनि सभ पथिया-खुरपी नेनइ पहुँच गेलि। दुनू बच्चाकेँ दू गोटे कोरामे लऽ कामिनीकेँ संग केने घरपर एली।

OOO

जगदीश प्रसाद मण्डल

जन्म- ५ जुलाइ १९४७

पिताक नाओं : स्व. दल्लू मण्डल, माताक नाओं : स्व. मकोबती देवी, पत्नी- श्रीमती रामसखी देवी, पुत्र- सुरेश मण्डल, उमेश मण्डल, मिथिलेश मण्डल। मातृक- मनसारा, घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा।

मूलगाम- बेरमा, भाया- तमुरिया, जिला-मधुबनी, (बिहार) पिन- ८४७४१०

मोबाइल- ०९९३१६५४७४२

ई-पत्र- jpmandal.berma@gmail.com

शिक्षा- एम.ए. (हिन्दी आ राजनीति शास्त्र) मार्क्सवादक गहन अध्ययन। हिनकर साहित्यमे मनुखक जिजीविषाक वर्णन आ नव दृष्टिकोण दृष्टिगोचर होइत अछि। गामक जिनगी लघुकथा संग्रह लेल विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार २०११क मूल पुरस्कार आ टैगोर साहित्य सम्मान २०११; एवं बाल-प्रेरक विहनि कथा संग्रह ''तरेगन'' लेल ''बाल साहित्य विदेह सम्मान'' २०१२ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कार रूपेँ प्रसिद्ध) प्राप्त।

साहित्यिक कृति-

उपन्यास- (१) मौलाइल गाछक फूल (२००९), (२) उत्थान-पतन (२००९), (३) जिनगीक जीत (२००९), (४) जीवन-मरण (२०१०), (५) जीवन संघर्ष (२०१०), (६) सधबा-विधवा (२०१३), (७) बड़की बहिन (२०१३), (८) नै धाड़ैए (२०१३), (९) भादवक आठ अन्हार

नाटक- (१) मिथिलाक बेटी (२००९), (२) कम्प्रोमाइज (२०१०), (३) झमेलिया बिआह (२०१२), (४) रत्नाकर डकैत (२०१३), (५) स्वयंवर (२०१३)

लघुकथा संग्रह- (१) गामक जिनगी (२००९), (२) अर्द्धांगिनी (२०१२), (३) सतभैंया पोखरि (२०१२), (४) उलबा चाउर (२०१३)

विहनि कथा संग्रह- (१) बजन्ता-बुझन्ता (२०१२), (२) तरेगन (बाल-प्रेरक विहनि कथा संग्रह) (२०१० पहिल संस्करण, २०१३ दोसर संस्करण)

एकांकी संग्रह- (१) पंचवटी (२०१२)

दीर्घकथा संग्रह- (१) शंभुदास (२०१२)

कविता संग्रह- (१) इंद्रधनुषी अकास (२०१२), (२) राति-दिन (२०१२), (३) सतबेध (२०१३)

गीत संग्रह- (१) गीतांजलि (२०१२), (२) तीन जेठ एगारहम माघ (२०१२), (३) सरिता (२०१३), (४) सुखाएल पोखरिक जाइठ (२०१३)